

॥ श्रीः ॥

देवज्ञविनोद.

(सिद्धान्तभाषा.)

निसकं।

रामगठनिवासी पं० मनीरामजी शर्माने
विविधग्रथोमे आधारमे निर्माण किया

रही

खेमराज श्रीकृष्णदासने

बंधई

निम्न " श्रीविद्वत्पेश्वर " (स्टोम्) यन्त्रालयमें

मुद्रितकर पत्राक्षित किया

Sa 561

MAN

द्वितीयावृत्ति

संवत् १९५९ शके १८२४

सर्वाधिकार मयकतान रक्षयित्वा रक्ष्यन्ते ।



शाम्भूदनिवासी-पं० मनीरामश्रीजर्मा.



ऋग्यपुस्तकें--(ज्योतिषग्रंथाः)

नाम	की. र. बा.
लीलावती सान्वय भाषाटीका अत्युत्तम... ..	१-८
बृहज्जातकसटीक भद्रोत्पलीटीकासमेत जिल्द	१-१२
बृहज्जातकमहीधरकृत भाषाटीकासह अत्युत्तम	१-८
वर्षदीपकपञ्जीमार्ग [वर्षजन्मपत्र बनानेका]	०-४
मुहूर्त्तचिन्तामणि ममिताक्षरा रफू रु. १ ग्लेज	१-८
मुहूर्त्तचिन्तामणि पीयूषधारा टीका	२-८
ताजिकनीलकण्ठी सटीक तंत्रत्रयात्मक	१-०
ताजिकनीलकण्ठी तंत्रत्रयात्मक महीधरकृत भाषा टीका अत्युत्तम टैपकी छपी	१-८
ज्योतिषसार भाषाटीकासहित	१-०
मानसागरीपद्धति (जन्मपत्रवनानेमेंपरमोपयोगी)	१-०
बालबोधज्योतिष	०-२
ग्रहलाघव सान्वय सोदाहरण भाषाटीका समेत	१-०
जातकसंग्रह (फलादेश परमोपयोगी)	०-१२
चमत्कारचिन्तामणि भाषाटीका... ..	०-४
जातकालंकारभाषाटीका	०-६
बृहत्पाराशरहोराशास्त्रम्--पूर्वखण्डसारांश मूल व उत्तर खण्ड संस्कृतटीका तथा भाषाटीकासहित	५-०
जातकालंकारसटीक	०-६
जातकाभरण	०-१२
मश्रचंडेश्वर भाषाटीका	०-१२
पंचपक्षी सपरिहार भाषाटीका समेत	०-६
लघुपाराशरी भाषाटीका अन्वयसहित	०-३
मुहूर्त्तगणपति	०-१२

संपूर्ण पुस्तकोंका "बड़ा सूचीपत्र" अलग है ॥ इनके टिकट भेजकर मुफ्त मेंगालीजिये.

पुस्तकोंके मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयके मालिक, सेतवाडी-बंबई.

दैवज्ञविनोदकी-भूमिका ।



ज्योतिष शास्त्ररूपी रत्नाकर सागरमें अनेक रत्न जगमगाहट कर रहे हैं जिनोंको आग्रह करके लेनेको सज्जन महज्जन राजा महाराजा आदि अनेक पुरुष उस्तुकभी हैं परंतु साधारण विद्वानोंको खरा रत्न मिलना बड़ा दुस्साध्य है तो औरोंको तो बातही क्या है प्रथम इस समुद्रसे रत्न निकालनेमें विद्या और बुद्धिबल पूर्ण होना चाहिये फिर पछे शरीरका उद्योगी पूर्ण हो और तीसरे किसीका आश्रय हो तब तो एक दोरत्न बड़े मुष्किलसे मिल सकतेंहैं नहीं तो काचके खोटे बनावटी रत्नोंसेही अपना गुजारा करलो और भोली भाली मजाकोंभी मसज करदो परंच “विना शास्त्रेण यो ब्रूयात्तमाहु-
 प्रह्ववातिनम्” इस वचनके देखनेसे ऐसे गुजारा करना ठीक नहीं ज्योतिष शास्त्र कुछ छोटा मोटा शास्त्र नहीं है किंतु सब शास्त्रोंसे शिरोमणी यही ज्योतिषशास्त्र है जिनको आगम निगम जैन बौद्ध चार्वाक स्मार्त वैष्णव शैव शाक्त फारसी यवन और बड़े बड़े अंग्रेजलोग मान देते हैं और सहस्रों रूपया खर्च करके नये नये आकाशके दूरदर्शी यंत्र बनवाते हैं जिनके द्वारा सूर्यग्रहणादिकोंकी यथा स्थिति आस पासके तारे ग्रहका उदयास्तकालआदि यथार्थ देखतेंहैं और अपनी आत्माका बड़ा कृतकृत्य मानतेंहैं जैसा यह ज्योतिष शास्त्र सार्वजनिक शास्त्र है ऐसा और शास्त्र इसके दर्जे नहीं लाग सका इसका मत सब मतोंमें मिलताहै जैसे वेदानुपायी लोग सूर्य चन्द्रादिक ७ वार मानतेंहैं ऐसे मुसल्मानभी सातही मानतेंहैं और इंग्रेज लोगभी सातही मानतेंहैं और वेदांग ज्योतिष शास्त्रमें जैसा पृथ्वीका मान और ग्रहोंकी नीची ऊंची कक्षा मानीहैं ऐसे उन लोकोंनेभी ऐसाही मानाहै जिस शास्त्रका सहमत सभीका मिलताहै वह शास्त्र सर्वोत्तम और पूज्य मानाजाताहै इस शास्त्रका ज्ञानकार हिन्दुस्थानके निवासी जनोंसे मानपावे उसमें तो आश्चर्यही क्या परंतु अन्य विलायतोंके वसनेवाले जो कि ईरानी पारसी इंग्रेज आदि लोगोंसेभी बड़ा मान पाताहै काशीनिवासी श्रीमान् बापुदेव शास्त्रीजनि इंग्रेज लोगोंसे, महामहोपाध्यायका पद ग्रहण कियाथा और पूरा गणितका ज्ञानकार जानकार वे लोग इनका बड़ाभारी आदर करतेये महाराष्ट्र देशके निवासी वे ० रा० रा० केरु लक्ष्मण छत्रेजीनेभी इंग्रेजी प्रोफेसर और अप्सरोंसे अच्छा मान पायाहै और आजकालके वर्तमान समयमें दक्षिण देशके बांगलकोट निवासी वे, डा. सं. रा. रा. बेंकटेशकेत्तकर शर्माजीभी गणित शास्त्रके पूरे विद्वान हैं ॥ और इन्होंने गणितके ग्रंथभी उत्तम संस्कृतमें श्लोकबद्ध निर्माण कियेहैं और मुद्रितभी हुयेहैं परंतु उन ग्रंथोंका विशेष प्रचार अद्यावधि कहीं देखनेमें नहीं आता कारण कि ग्रीन देशके निवासी मिटर लबर हानसेन न्युकम्बसाहिव आदि इंग्रेज विद्वानोंने केन्द्रज्युति १ मन्दकर्ण २ पात ३ नीच ४ शर ५ ओर मध्यमगति ६ यह मूलोंक उत्तमोत्तम ग्रंथोंके बलसे यहको बंधके यथार्थ निश्चय करके उन्होंने इंग्लिश भाषामें ग्रंथ बनायेहैं और उन्हीं ग्रंथोंसे बना हुआ नाटिकल एल्मनाक आदि इंग्लिश पंचांगभी देखेगयेहैं और उन्हीं ग्रंथोंका आश्रय लेके उक्त केतकरजीने यह ग्रंथ निर्माण कियेहैं ॥ जिन ग्रंथोंके आश्रयसे हिन्दुस्थानका पंचांग निर्माण किया जाय तो ठीक दृक् तुल्य होसकतै परंतु धर्मशास्त्रोंसे उनके तिथ्यादिकोंमें विरोध आताहै ॥ कारण कि वेदांग आर्य ग्रंथोंसे एकतिथि ६ घटीसे न्यून और ५ घटीसे अधिक कभी नहीं होसकती और उनके गणितसे ९ वा १० घटीकी घट बच होसकतै जिससे त्रतोपवासादिमें कुछका कुछ हेर फेर

भूमिका.

होना संभव है अतः इन ग्रंथोंका प्रचार होना बड़ा मुश्किल है हों यदि भौमादि पंचताराओंका उदयास्तसंबंधि गणित व्योतिर्वेद इन ग्रंथोंसे निज निज पंचांगोंमें निवेशभी करले तो किसी प्रकारका हर्जा नही क्योंकि कालके अंतरसे ग्रहगणितमें अंतर हमेशा पढताही रहताहै जिसको श्रीगणेशदेवज्ञ आप कहतेहैं “ब्रह्माचार्यवासिष्ठकश्यपमुखैर्यत्खेटकमोदितं तत्तत्कालजमेव तथ्य-मथ तद्दूरीक्षणेऽभूच्छलधम् ॥ प्रापातोथ मयासुरः कृतयुगातेर्कात्स्फुटं तोषिताचञ्चास्तिस्म कलौतु सांतरमथाभुञ्जारुपाराशरम् ॥ १ ॥ तज्ज्ञात्वार्यभटःखिलं बहुतिये कालेऽक्रोत्स्फुटं तत्सस्तं किल दुर्गोसिंहमिहिराद्यैस्तान्निबद्धं स्फुटम् ॥ तच्चाभूच्छिथिलं तुजिष्णुतनयेनाकारिवेधात्स्फुटं ब्रह्मोत्सया श्रितमेतदप्यथवहौ कालेभक्तसांतरम् ॥ २ ॥ श्रीकेशवः स्फुटतरं कृतवान् हिंसौरार्यासत्रमेतद-पि षष्टि मितेगतेह्ये ॥ दृष्टाभ्यं किमपि तत्तनयो गणेशः स्पष्टयथा स्वकृतदृग्गणितैक्यमत्र” ॥ ३ ॥

भाचार्य-ब्रह्मा, बृहस्पति, वशिष्ठजी और कश्यपजी आदि महर्षियोंने ग्रहगणितशास्त्र बनाये थे सो उसी समयमें द्रवतुल्य थे पीछे अधिक कालके होनेसे सातर उनको देखके मयासुरनाम दैत्यने सूर्य नारायणसे मार्थना करी तब सूर्यसिद्धांत बना और सूर्यसिद्धांतमें अंतर देखके पाराशर ग्रंथ हुआ पाराशरके विशेष कालांतरसे आर्यभट्टने आर्यसिद्धांत निर्माण किया आर्यसिद्धांतकी सातर देखके दुर्गसिंह वराहमिहिर आदि आचार्योंने अपने अपने सिद्धांत बनाये और उनमें अंतर देखके जिष्णुतनय ब्रह्मगुप्तने ब्रह्मसिद्धांत बनाया और ब्रह्मसिद्धांतके पीछे भास्कराचार्यने सिद्धांतशिरोमणि कर्णकुतुबल आदि बनाये और उनमें अंतर देखके केज्जावाचार्यने निज नामका ग्रंथ निर्माण किया और इसके ६० वर्ष पीछे इनके पुत्र गणेशदेवज्ञने ग्रहलाघव बनाया जिसको आज ३८१ वर्ष व्यतीत हुये है ॥ यद्यपि बहुत वर्षोंके बीतनेसे इसके भौमादिकोंके गणितमें कुछ कुछ अंतर आताभीहै तथापि ग्रहलाघवका गणित फिरभी और ग्रंथोंसे ठीक है इसके पीछे ग्रहगणितको मुधारके नवीन ग्रंथ बनानेवाला आचार्य कोई नहीं हुआ अब इन सिद्धांतोंके बाबत कोई यह शंका करे कि कर्ण ग्रंथमें तो स्थूल मंदोच्चादिकोंके पढनेसे कालांतरसे ग्रहांतरहोभी सकताहै ॥ परंतु सिद्धांतोंके गणितमें अंतर पढनेका क्या कारण है? जिसका यह समाधान है कि प्रतिवर्ष अयनकी गति चलतीही रहतीहै और ग्रहगणित सब अयनके आश्रित है जब वामन भगवानका जन्म भाद्रपद शुक्ला १२ का हुआथा तब अयनस्थिति मेव और तुला ऊपरथी जिससे उनका जन्म उत्तरायणमें शास्त्रकारोंने लिखाहै ॥ और युधिष्ठिर महाराज राज्य भरतेथे उस समयमें दक्षिणायन और उत्तरायणका स्थान आलेशर्थ और धनिष्ठाघ भागमें था और वर्तमान समयमें दक्षिणायन और उत्तरायणका स्थान मूल और आर्द्रा नक्षत्र ऊपर है ॥ यह अयनगति बड़ी जटिल है जिसमें जुदे जुदे आचार्योंका मतभेद है ग्रीनदेशके इपेजों ने ५० पल प्रति वर्षकी मानीहै और किसी आचार्यने ५५ और किसीने ५७ पल मानीहै किसीने ५९ पल मानीहै और गणेशदेवज्ञादिकोंके मतसे ६० पल अयनकी गति विराम होतीहै जिससे विशेष वर्षोंके अंतरसे सिद्धांतगणितमें भी अंतर होना संभव है ॥ क्योंकि बहुतका बदलना शरदी गर्मीका न्यूनाधिक होना केवल अयनके आश्रित है जब अधिक कालके बीतनेसे ऋतुमें फेर फार होताहै तब तो ग्रहगणितमें अंतर होना संभवही है जिससे वर्ष वर्ष के प्रति उत्तम व्योतिर्वेद ग्रहगणित देखते रहेंगे और नलिकाआदियंत्रोंसे वेध करते रहेंगे तो उनका बाणी कभी मिथ्या नहीं होगी ऐसे भी इस ग्रहलाघवका नतिसंस्कार बिगडा हुआ मुधारकर इसी ग्रंथमें उसकी सारिणी बनाके लिखाहै सो विद्वान्मन योग्यशुद्धिसे देखेंगे तो स्वयं अनुभव होनायगा भरे पृद्ध प्रपितामहा-

भूमिका.

दिकोंके पूर्वज कूर्मजातिके क्षत्रियोंके पुरोहित थे और यद् क्षत्रों नैपथ्य देशके राजा थे और उनसे इनको भेटमें गांगवती ग्राम मिलाया और इसी ग्रामके नामसे हमारे पूर्वज गांगवत कहलायें। फिर समयके फेरफारसे यजमानोंका राज्य आमेरका हुवा तबसे हमारे पूर्वजभी इस आमेर राज्यांतगत निवास किया इसी आमेराधिपतीके सात राणियों थीं जिसमें खींचीक्षत्री कुलकी कन्या आमेराधिपतीको विवाही उसके साथमें सेदोजी पाराशर ब्राह्मण आयेंथे उनको शकुन शास्त्रका अच्छा ज्ञानथा किसी समयमें उनकी शकुनकी बात ठीक मिलनेसे महाराजा पसन्न होके खींचणजीके संतानका सैठेजीको पुरोहित बनाया छै राणियोंका और आपका पुरोहित गांगवतोंकोई रस्ता ॥ फिर समयकी मिलोमतासे छै राणियोंके संतानका अभाव हुवा एक केवल खींचणजीके संतान हुई जिससे छे राणी और महाराजा देवलोक हुये बाद कूर्मर्षशकी पुरोहिताई गांगवत ब्राह्मणोंसे समाप्त होके पाराशर पुरोहितोंको प्राप्तभई तबसे भेरे वृद्ध प्रपितामहादिकोंका निवास स्थान जैपुर राज्यांत-गत खंडेलेके राजपर्वे गोवडी ग्राममें हुवा फिर किसी कारणसे भेरे पितामहादिकोंको सीकर राज्यांत गत रामगढ निवास किये आज ८० वर्षके अनुमान हुये ॥ मैं गौड गांगवतवंशज भारद्वाज १. आंगिरस २. बार्हस्पत्य ३. त्रिववराञ्चित भारद्वाजगोत्र माध्यन्दिनीशास्त्रका विद्वानोंका सेवक हूं ॥ भेरे पितामहका नाम सदारामजी था और भेरे पिताका नाम रूपरामजी था रूपरामजीके ज्येष्ठपुत्र-नरहरि और कनिष्ठ पुत्र मनीराम हुवा रूपरामजीके सहोदर सुरूपरामजीके पुत्र श्रीवल्लभको अपुत्र जाण बांधव भावसे भेरेको श्रीवल्लभजीका दत्तपुत्र बनाया भेरेको जन्म वैकमीय संवत् १९१७ के प्रथम आश्विन शुक्ल ४ मंगलवार निशीथ समयको है और भेरे ज्योतिष शास्त्र ज्येष्ठ भ्राता नरहरिजीसे पढाई और पीछे उच्चैण निवासी श्रीशंदापनवंशोद्भव दीनानाथजी महाराजसे पढाई तथापि इस ग्रंथमें किसी स्थानमें त्रुटि देखके विद्वज्जन मुझ दीन रूपर क्षमाकरेंगे क्योंकि यह ग्रंथ भाषाका देवज्ञोंके विनोदार्य है और साधारण छात्रोंके पढने योग्य है छात्रलोग इससे परिचित होंगे तो उनकी सिद्धांतोंमें प्रवेश करनेकी गति सम्पक् प्रकारसे होजायगी और वे नक्षत्रसूचीके दोषोंसे अलग होके दर्शनीय होजायेंगे शास्त्रमें लिखा है कि तिथिकी उत्पत्ति जाने नहीं और ग्रहसाधनभी नहीं जानै और ज्योतिषविद्याकी उपजाविका करै यह नक्षत्रसूची फहलाता है और सिद्धांतपाठके दर्शन करनेसे दशदिनका पाप दूर होता है और श्राद्धमें पूज्य और भोजनाई है नक्षत्रसूची श्राद्ध और धर्मकृत्यमें त्याज्य गहणायै है इससे नक्षत्रमुचकत्त्व दोष दूरकरने के लिये इस ग्रंथका अवश्य पठन पाठन ज्योतिर्विदोंको करना परमावश्यक है ॥

पं० मनीरामशर्मा.

दैवज्ञविनोदस्थविषयानुक्रमः ।

विनोदसंख्या	पृष्ठाङ्कः	विनोदसंख्या	पृष्ठाङ्कः
(१) मङ्गलाचरणम्	१	भौमविशेष लानेकी विधि	१
सुहृतेनिर्णयः -	२	सूर्यादिकोंके कान्ति साधन विधि	४६
(२) अमूर्तकालकी मीमांसा	३	अपनांश लानेकी विधि	५०
मूर्तकालकी मीमांसा	१	विषुवत्वभा लानेकी विधि	१
कालांगवर्णनम्	४	छायाके साधन विधि	५१
(३) भूगोलवर्णनम्	५	मध्यमार्क लानेकी विधि	१
देशव्यवस्था	११	मध्याह्न छाया और कर्णके लानेकी विधि	१
दिग्ब्यवस्था	१३	इष्ट दिनमें अर्द्धाग्रके लानेकी विधि	५२
(४) स्वगोलवर्णनम्	१९	सममण्डल कर्णके लानेकी विधि	१
(५) सृष्ट्यादि अद्गुण	२२	प्रकारान्तरसे सममण्डल कर्णके लानेकी	
मासपातिवर्षपर्यौरानयनम्	२६	विधि	१
(६) मध्यमप्रदानयनविधिः	२५	अग्रज्यासे कोणशून्यछाया कर्णसाधन	
चन्द्रोच्चानयनम्	२६	विधिः	५३
चन्द्रपातः	२७	इष्टघटीकी छाया और कर्णसाधनकी विधि	१
भौमः	१	तारतालिकृतनतके लानेकी विधि	१
श्रीयोच्चपुष्यः	१	इष्टछायासे घटीलानेकी विधि	५४
गुरुः	२८	इष्टमासे छायाके साधनविधिः	१
श्रीमोक्षशुक्रः	१	प्रत्येकराशि तिनके स्वाहोरात्रार्द्ध लानेकी	
शनिः	२९	विधि	१
(७) प्रदानां मन्द्रोच्चतानयनम्	१	स्वदेशी लग्न करनेकी विधि	५५
(८) भौमादीनां पातानयनम्	३१	मध्यलग्न लानेकी विधि	५६
देशान्तरानयनम्	३४	(११) चन्द्रप्रदान लानेकी विधि	१
(९) प्रदानां क्रमेण स्रुष्टीकरणम्	१	चन्द्रविंश लानेकी विधि	५७
स्पष्टपरिधि लानेकी विधि	३५	तमोमानलगनेकी विधि	१
गत्यानयनम्	१	समलिति करनेकी विधि	१
(१०) भौमादिकोंके पात स्पष्ट कर-		स्थित्यर्द्ध लानेकी विधि	५८
नेकी विधि	४५	मार्गके लानेकी विधि	१
चन्द्रादिकोंके विंशतानयनविधि	१	स्थित्यर्द्ध स्थिर करनेकी विधि	१

विनोद सख्या	पृष्ठाङ्कः	विनोदसख्या	पृष्ठाङ्कः
स्पाशिकमर्दाई स्थिर करनेकी विधि	५९	रवि और गुरु शुकके दिनमान लानेकी विधि	११
मोक्ष स्थित्यद्दे स्थिर करनेकी विधि....	"	गुरु दिनमान लानेकी विधि	७८
इष्टस्पर्श श्रास लानेकी विधि....	६०	गुरुकी दृक्कर्म साधनकी विधि-गुरुयाग्य निक्षेप	७१
मोक्षेष्टयास लानेकी विधि	"	दृक्कर्म शुकके साधन विधि	"
इष्टयाससे इष्टघटीके लानेकी विधि	"	तत्कालीन गुरुविशेष लानेकी विधि....	८०
मोक्षयाससे मोक्षइष्ट काल साधन विधि	६१	शुकविशेष लानेकी विधि	"
स्पर्शकालीनवलन लानेकी विधि	"	गुरु और शुकके स्पष्टविष्कर्म लानेकी विधि	८०
मध्यवलन लानेकी विधि	"	(१४) ग्रहके और नक्षत्रके योग होनेकी गणितविधि	८१
विशेषादिमान लिखाओंके अंगुल करनेकी विधि	"	शुक और रोहिणीके समलिप्ता करनेकी विधि	"
(१२) सूर्यग्रहणके साधनकी विधि	६२	रवि और शुक रोहिणीके दिनमान लानेकी विधि	"
रविमण्डल लानेकी विधि:	"	शुकको दिनमान लानेकी विधि	"
चन्द्रमण्डल साधन विधि	६३	रोहिणीके दिनमान लानेकी विधि	"
पर्वत लेवन लानेकी विधि	"	नतोन्नतसाधन विधि	८२
मध्यलग्न लानेकी विधि	"	दृक्कर्म साधनकी विधि	"
अवनति लानेकी विधि	६५	तत्कालविशेष लानेकी विधि	८३
चन्द्र विशेष लानेकी विधि	६६	(१५) ग्रहोदयास्ताविधि	"
स्थित्यद्दे लानेकी विधि	"	शुकके दृक्कर्म साधनविधि	"
स्पाशिक लंघन लानेकी विधि	"	रवि और शुकके अन्तर प्राणसाधनकी विधि	८४
मध्यलग्न लानेकी विधि	"	रवि और शुककी बालगत लानेकी विधि	"
मोक्ष लंघनलानेकी विधि	"	नक्षत्रोदयास्तसाधनकी विधि	"
रिष्यत्यद्देके लंघनांतर संस्कार देनेकी विधि	७२	इन दोनोके अंतर प्राणसाधनविधि	८५
इष्टयासलानेकी विधि....	"	दृक्कर्मसाधनविधि	"
इष्टकालीन विशेष लानेकी विधि	"	चन्द्रोन्नतिसाधनविधि	"
मोक्षेष्टयास लानेकी विधि	७३	चन्द्रदिनमानलानेकी विधि	८६
स्पर्शनकालीन वलन लानेकी विधि	७४	चन्द्रदृक्कर्मसाधनविधि	"
मध्यकालीन वलन लानेकी विधि	७५	रविकालांशसाधनविधि	"
मोक्षकालीन वलन लानेकी विधि	"	मध्याह्नचन्द्रकी प्रभा और करण लानेकी विधि	"
स्पाशिक शर लानेकी विधि	"		
मोक्षविशेषवार लानेकी विधि	७६		
विशेषादिकोंके अंगुलीमान करनेकी विधि	"		
(१३) ग्रहयुद्धोदाहरणम्	"		
गुरु और शुकके समलिप्तिका करनेकी विधि	"		

विनोदसंख्या	पृष्ठाङ्कः ।	विनोदसंख्या	पृष्ठाङ्कः
श्रेयाशीतव्याख्यासुम् ८७	नक्षत्रसाधनविधिः १
चतुर्थकेन्द्रके पञ्चारम्भभागाः ८९	योगसाधनविधिः ९९
चतुर्थकेन्द्रके मार्गारम्भभागाः ११	तिथिगृह्णित्ति और क्षय जाननेकी विधि ११
महोके आर्यसिद्धांतके मतसे विषयव्यासाः ११	नक्षत्र और योगके रूपदृग्गना विधि ११
नक्षत्रकलादिमुनाः ११	अधिकमास और क्षयमास रूप जानने- की विधि.... ११
नक्षत्रोंके ग्रहपक्षेपशाभागाः ११	(१८) मातृवर्षे उपकरणसारिणी	
रोदिर्णके वेध जाननेकी विधि ११	धुपा १००
ग्रहनक्षत्रके परापर आगवि सो जाननेकी विधि ११	प्रत्यक्षे उपकरणसाधनार्थ धनरूपचा- नक्षत्राः.... ११
ग्रह और नक्षत्रोंके कलांश जाननेकी विधि	९०	आर्यवर्षे उपकरणसाधनार्थ धनरूपचा- नक्षत्राः.... ११
(१६) फाटज्ञानम् ११	एक क्षेपकाः ११
चन्द्रदर्शनम् ११	सीरपक्षे उपकरणसाधनार्थ कणचा- नक्षत्राः.... ११
त्रैलोक्यकगणितरी व्याख्या ९१	अधिक और क्षयमाससारिणी १०१
परिकर्माष्टक समझेकी विधि ९२	तिथ्यादिकोंकी सारिणी १०२
भगवार्थिमानम् ११	गुणितार्थः रोदिर्णवर्षः १०३
मन्त्रोचभगवार्थः ११	गुणितः मि० ग०० १०४
पातभगवार्थः ९३	आर्षार्थः पुनर्पत्तयः १०५
ज्यात्रंमण्डलाः ११	गर्भ० पुण्यैः १०६
एकमन्त्रादंगण्डलाः ११	आदित्यवर्षः १०७
परमापरमण्डलाः ११	गुणितः १०८
महोके परिपक्षाः ११	उपकरणः पन्थाके पानितः १०९
गुणाधिकमासकी व्याख्या ११	विश्वार्थः कृष्णवर्षावर्षः ११०
भूदण्डलक्षणम् ९४	गणितार्थः विश्ववर्षः १११
गणामारीयक्षणम् ११	दृष्टि० भ० मृत्प्राणवर्षः ११२
(१७) च्छात्र बनानेकी विधि ९५	विद्यार्थः मृत्प्राणवर्षः ११३
तिथिगृह्णित्ति एवैकी विधि ९६	गुणितवर्षः ११४
धुप एवैकी विधि ११	उपकरण० पदार्थ० धनवर्षः ११५
तिथिगृह्णित्तेन्द्र एवैकी विधि ११	पनिवर्षः कुम्भ० प० प० ० ११६
गणत और योग कर्षेन्द्र एवैकी विधि ११	गुणितवर्षवर्षः ११७
भोक्तृगणतविधिः ११	दिलेके पानित उपकरणवर्षः ११८
भोक्तृगणतविधिः ९८	मन्त्रेण कर्षेकी विधि ११९
वेद्युच बनानेकी विधि ११	उपकरणवर्षः १२०
गणतवर्षवर्षविधि ११		
विद्युच बनानेकी विधि ११		

विनोदसख्या	पृष्ठाङ्कः	विनोदसख्या	पृष्ठाङ्कः
सारिणीमें मध्यमग्रह करनेकी विधि	”	चन्द्रलब्धिकोष्टकम्	”
तात्कालिक मध्यमग्रह करनेकी विधि	”	चन्द्रशेषकोष्टकम्	१३३
सूर्यस्पष्ट करनेकी विधि	”	उच्चलब्धिकोष्टकम्	”
चरसंस्कार देनेकी विधि	१२२	उच्चशेषकोष्टकम्	१३४
सूर्यकी गति लानेकी विधि	”	राहुलब्धिकोष्टकम्	१३५
स्पृल अयनांशा पलभा चरखण्डा और		राहुशेषकोष्टकम्	”
चरपल करनेकी विधि	”	राहुशेषकोष्टकम्	१३६
चन्द्रमाके त्रिफलसंस्कार देनेकी विधि	१२३	भौमलब्धिकोष्टकम्	”
चन्द्रस्पष्ट करनेकी विधि	”	भौमशेषकोष्टकम्	१३७
चन्द्रमाकी गति लानेकी विधि	”	बुधलब्धिकोष्टकम्	”
उक्तदोनोंसे मूहमपश्चाद् बनानेकी विधि	१२४	बुधशेषकोष्टकम्	१३८
भौमादिपांचोंके स्पष्ट करनेकी विधि	”	गुरुलब्धिकोष्टकम्	१३९
मंदस्पष्टग्रह करनेकी विधि	१२५	गुरुशेषकोष्टकम्	”
स्पष्टग्रह करनेकी विधि	”	शुक्रलब्धिकोष्टकम्	१४०
भौमादिकोंकी गति स्पष्टकरनेकी विधि	”	शुक्रशेषकोष्टकम्	१४१
इन पांचोंके उदयास्तवक्रमार्ग बाननेकी		शानिलब्धिकोष्टकम्	”
विधि	१२६	शानिशेषकोष्टकम्	१४२
उदयास्तवक्रमार्गके दिन और इष्ट लानेकी		अयनांशाः--रविचक्रनिघ्नध्रुवोन्नक्षेपकाश्च	१४३
विधि	”	द्विपश्चात्तद्विधिसंमध्यमरविः	१४४
मुख्यनगरोंके अक्षांशपलभारेखांतर पलानि	१२७	मन्दफलं सूर्यस्य द्विपश्चात्तद्विधौ	”
प्रसिद्ध देश वा नगरोंके लम्बमान	१२८	चन्द्रचक्रनिघ्नध्रुवोन्नक्षेपकाः	१४५
देशांतरमानलम्बसारिणी	१२९	उच्चचक्रनिघ्न ध्रुवोन्नक्षेपकाः	”
प्रसिद्ध नगरोंके चरखण्डा	”	राहुचक्रनिघ्नध्रुवोन्नक्षेपकाः	१४६
सूह्यमाति चक्रम्	”	भौमचक्रनिघ्न ध्रुवोन्नक्षेपकाः	१४७
द्विपश्चात्तद्विधौ रामदुर्गे चरफलम् अय०	१३०	बुधचक्रनिघ्न ध्रुवोन्नक्षेपकाः	”
त्रयोदशदिनात्मकं चाल०	”	गुरुचक्रनिघ्न ध्रुवोन्नक्षेपकाः	१४८
पञ्चदशदिनात्मकं चालनम्	”	शुक्रचक्रनिघ्न ध्रुवोन्नक्षेपकाः	१४९
सप्तदिनात्मकं चालनम्	”	शानिचक्रनिघ्नध्रुवोन्नक्षेपकाः	”
चतुर्दशदिनात्मकं चालनम्	”	सूर्यतरका लम्बमध्यमघटीपलसारिणी	”
षोडशदिनात्मक चालनम्	”	तत्कालचन्द्रमध्यमकरण घटीपल	१५१
वक्रमार्गादयास्तभागाः	”	तत्कालोच्चकरणमें घटीपल युक्त करना	”
सूर्ये लब्धिकोष्टकम्	१३१	तत्कालोच्चमें घटीपल युक्त करना	१५२
सूर्यशेषकोष्टकम्	”	तत्काल राहुघटीपलहीन करना	”

विनोदसख्या	पृष्ठाङ्कः	विनोदसख्या	पृष्ठाङ्कः
तत्काल भौम घटीपल्लयुक्त करना १५३	स्पष्टकालांश लानेकी विधि २१६
तत्कालबुधघटीपल्लयुक्त करना "	उदयास्तके गतगम्यदिन जाननेकी विधि	"
तत्काल गुरुघटीपल्लयुक्त करना १५४	अभीष्ट दिनादि लानेकी विधि "
तत्काल शुक्रघटीपल्लयुक्त करना १५५	अगस्त्यमुनिके उदयास्तके साधनकी विधि "
तत्काल शनिघटीपल्लयुक्त करना "	सुगमरीतिसे प्रभवादिसेवत्सरमेवज्ञ करनेकी विधि २१७
स्पष्टसूर्यसारिणी १५६	रोहिणी ऊपर ग्रहवेष करे वा नाहो जिसके	
चन्द्रस्पष्टसारिणी १६०	जाननेकी विधि "
भौम शीघ्रफलसारिणी १६१	सप्तर्षियुक्त स्पष्ट जाननेकी विधि "
अन्त्यांकफलसारिणी १६८	सारिणीसे लग्नस्पष्ट करनेकी विधि "
अन्त्याकगतिफलसारिणी "	(२१) व्यग्रभुजभागाच्छरसारिणी	
भौममन्दफलसारिणी १६९	अङ्गुलादि.... २१८
बुधशीघ्रफलसारिणी १७२	तिथिसारिणीगतैष्ययोगे चन्द्रभूभाषिम्भ	"
अन्त्याङ्कगतिफलसारिणी १७८	चन्द्रग्रहणे भासोपरि घटीसारिणीस्थिति	"
बुधमन्दफलसारिणी "	रविराहयंज्ञोपरि रविषिम्भसारिणी	२१९
गुरुशीघ्रफलसारिणी १८१	नतसंस्कृतसायनसूर्योपरिनतिसारिणी	"
गुरुमन्दफलसारिणी १८७	रविग्रहणे भासोपरि स्थितिघटीपल्लानि	"
शुक्रशीघ्र-अन्त्याङ्कफलसारिणी १९०	भासोपरि सूर्यग्रहणे प्रथमदिग्ग्रहयः	"
अन्त्याङ्कगतिफलसारिणी १९७	भासोपरि सूर्यग्रहणे द्वितीयदिग्ग्रहयः	"
शुक्रमन्दफलसारिणी "	लग्नसारिणी अयनांशा अक्षप्रभा चरखण्डा०	
शनिशीघ्रफलसारिणी २००	अक्षांशाः २२०
शनिमन्दफलसारिणी २०६	दशमचतुर्षसारिण्ययनांशाः २२१
रामदुर्गेचन्द्रस्पत्रिफलं द्विपञ्चाशद्वधौ		क्रान्तिसारिणी २२२
घटिकादि २०९	कलाविकलाफलम्	"
रामविनोदेअधधीष्टसंस्कारसारिणी "	क्रान्तिसाधनसारिणी....	"
रामगठकी सायनमेवादिदिनमानसारिणी	२१०	कलाधिककलाफलम्	"
(१९) मङ्के नक्षत्र और राशिचार- करनेकी विधि २११	क्रान्तिसारिणी २२३
ग्रहणके परिलेख २१२	कलाविकलाफलम्	"
सूर्यग्रहण स्पष्ट करनेकी विधि "	क्रान्तिसारिणी....	"
दिन और मातृव्य सण्डके लानेकी विधि	२१३	कलाविफलम्....	"
(२०) शुक्रोदयास्तसाधनकी विधि	२१४	क्रान्तिसारिणी २२४
इकर्मसाधनविधि २१५	कलाविनलाफलम्	"
		क्रान्तिसारिणी "
		कलाविकलाफलम्	"

विनोदसंख्या	पृष्ठाङ्कः	विनोदसंख्या	पृष्ठाङ्कः
क्रान्तिसारिणी	२२५	विजयः	२२
कलाविकलाफलम्	"	जयः	२३३
क्रान्तिसारिणी	"	मन्मथः	"
कलाविकलाफलम्	"	दुर्मलः	"
क्रान्तिसारिणी	२२६	हेमलम्बः	"
कलाविकलाफलम्	"	विशम्भः	२३५
वक्तिप्रह्लादकरणमवेशसारिणी	यार्गीप्रह	विकारी	"
पादमवेशसारिणी	२२७	शर्वरी	"
संनत्सर लानिकी विधि-	"	प्लवः	"
प्रभवः	२२८	शुभकृत्	"
विभवः	"	शोभनः	२३५
शुक्रः	"	क्रोधी	"
प्रमोदः	"	विश्रावसुः	"
प्रजापतिः	"	परामवः	"
अङ्गिराः	"	प्लवङ्गः	"
मुमुक्षुः	"	कीलकः	२३६
भावः	२२९	सौम्यः	"
युवा	"	साधारणः	"
धाता	"	पिरीधकृत्	"
ईश्वरः	"	परिधावी	२३७
बहुधान्यः	"	ममाधी	"
प्रमाधी	२३०	आनन्दः	"
विक्रमः	"	राक्षसः	"
शृषः	"	नलः	"
नित्रभानुः	"	पिङ्गलः	२३८
सुभलुः	"	वालः	"
तारणः	२३१	सिद्धार्थः	"
पार्थिवः	"	रौद्रः	"
व्ययः	"	दुर्मतिः	"
संजिन्	"	दुन्दुभिः	२३९
संन्यासी	२३२	रुधिरात्री	"
विरोधी	"	रक्तसः	"
रिदुतः	"	क्रोधिनः	"
गगः	"	क्षयः	"
नन्दनः	"		

विनोदस्थया	पृष्ठाङ्कः-	विनोदस्थया	पृष्ठाङ्कः
(२२) संवत्सरफलानि २४०	स्पष्टरविः (ग्रहलावो) २१
राजफलम् २४२	(२४) पंचांगलेखनक्रमः २१
मन्त्रिकल २४	वाहनानि २७०
सस्येशफल २४४	वर्षभवेशाकुण्डली बनानेकी विधि २७०
धान्येशफल २४	गर्भलक्षणम् २१
भेषेशफल २४५	चन्द्रोदय जाननेकी विधि २१
रसेशफल २४	इथेजी महीनेके नाम २१
नारिसेशफल २४६	मुसलमानो महीनेके नाम २७१
फलेशफल २४	मोंगलाई तेवहार २१
धनेशफल २४	पारसी महीनेके नाम २१
हृगेशफल २४७	इथेजी सन् बनानेकी विधि २१
चतुर्मेवफल २४	मुसलमानो द्विजरी सन् बनानेकी विधि २१
भाष्यव्ययसारिणी अष्टोत्तरीमेतेन २४८	पारसी सन् बनानेकी विधि २१
कुयोगसारिणी २४	याहुदी सन् बनानेकी विधि २१
आनन्दादियोगसारिणी २४९	चन्द्रलेखनविधिः २७२
गुरुद्वयवशेन वर्षनामफलम् २५०	सायनसंक्रान्तिरचनाविधिः २१
अधिकमासफलम् २५	विवाह लग्न बनानेकी विधि २१
गुरुशानिचारफलम् २५१	पंचांगशुद्धिः २१
विशेषशानिचारफलम् २५६	दशदोषसारिणीपवेशः २७३
(२३) सस्य जन्मपत्री २५९	युति २१
दृष्ट्यवरोधकयोगविचारः २६०	यामित्रदोषः २७४
समर्थयोगाः २६१	बाणपञ्चकदोषः २१
वनस्पातिके विशेष फल फूलैमि वस्तुओंकी		एकार्गलदोषः २१
उत्पत्ति जाननेकी विधि २६२	लपग्रहदोषः २१
वत्सवासचक्रम् २६३	क्रान्तिसाम्यदोषः २१
राहुवासचक्रम् २६	दग्धातिथिदोषः २१
मूलवासचक्रम् २६	विवाहे दशदोषसारिणी २७५
संक्रान्तिनामफलचक्रम् २६४	लातसारिणी २१
संक्रान्तिसमयफलचक्रम् २६	पातसारिणी २१
संक्रान्ति करणोपरि वाहनादिसारिणी २६	युतिश्रद्धयुतः क्रूरः २१
द्वादशसंक्रान्तिपर्वकालाः २६५	वेधयन्त्रः २१
संक्रान्तिफलम् २६	यामित्रदोषसारिणी २७६
षस्तुनः राशिसारिणी २६६	मृत्युपञ्चकयन्त्रम् २१
स्पष्टरविः (रामविनोदे) २६७	एकार्गलयन्त्रम् २१

विनोदसख्या	पृष्ठाङ्कः	विनोदसख्या	पृष्ठाङ्कः
उपग्रहयन्त्रम् २७७	श्रावणमासः २८४
क्रान्तिसाम्ययन्त्रम् २७७	भाद्रपदमासः २८५
दग्धतिथियन्त्रम् २७७	आश्विनमासः २८६
विश्वामदा ग्रहाः २७७	कार्तिकमासः २८७
लघ्नाद्भिर्जितग्रहाः २७७	मार्गशीर्षमासः २८८
लघ्नशुद्धिः २७८	पौषमासः २८९
सुगमरीतिसंस्मृत्क्रान्तिसाम्यदेखनेकी २७८	माघमासः २९०
विधि २७८	फाल्गुनमासः २९१
(२५) व्रतादिनिर्णयसप्तकलादितिथि	२७९	प्रदोषनिर्णयः २९२
चतुर्दशमन्वादन्यः २७९	संकष्टचतुर्धा निर्णयः २९३
दशावतारजन्यन्त्य २८०	एकादशीनिर्णयः २९४
चतुर्युगादि २८०	एकादशीनामानि २९५
चैत्रमासनिर्णयः २८१	ग्रहणपर्यंकालनिर्णयः २९६
वैशाखमासः २८१	ग्रहणे धर्मशास्त्रविचारः २९७
ज्येष्ठमासः २८१	कपिलाष्टमी २९८
आषाढमासः २८२	धारुणीयोगः २९९
श्रवणमासनिर्णयः २८२	व्यतीपातयोगः ३००
यशुर्वेदीयश्रावणीनिर्णयः २८२	गजच्छायायोगः ३०१
सामवेदीयश्रावणीमुख्यकालः २८३	अर्धोदययोगः ३०२
अथवेदीयभा० २८३	ग्रन्थ बनानेका प्रयोजन ३०३
		मङ्गलादिकम् ३०४

इति द्वैतज्ञाविनोदविषयानुक्रमः समाप्तः ।

द्वैवज्ञविनोदः ।

अथ प्रथम विनोदः १.

श्रीविनायकाय नमः ॥ प्रथम शास्त्रके प्रारंभमें अव्यक्त और अचिंत्यरूप परमात्माको अनेक धन्यवाद है कि, जिसकी कृपाकटाक्षके प्रकाश से सूर्यादिमंडल अखिल विश्वमें प्रकाशित हो रहे हैं और उसीकी आज्ञासे कालज्ञानको सूचित करते हैं. और वही जगत्के उत्पत्तिका मूल है. जिसके भयसे इंद्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, धनद, रुद्र इत्यादि देव अपने अपने कर्मोंमें नियुक्त हो रहे हैं. अतएव उसी करुणावरुणालय सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरको 'प्रणाम करके और उनकी कृपासे महाराष्ट्र राजाजी श्रीमाधवसिंहजी बहादुर सीकरनेरशेके रामगढ़निवासी मनीरामशर्माने जगत्का उपकार समझके यह "द्वैवज्ञविनोद" नाम ज्योतिष ग्रंथ बहुत ग्रंथोंका सार लेके आर्यभाषा (हिंदुस्थानी) में संग्रह किया है. उक्त ज्योतिष शास्त्रके तीन भेद हैं. सिद्धांत १ संहिता २ होरा ३ इन तीन भागोंमें आय भाग जो कि, सिद्धांत शास्त्र है उसीका कथन यहां होता है. अब सिद्धांतों किसको कहते हैं ? बुद्ध्यादि प्रलयांतकालकी रचना जिसमें हो वही सिद्धांत कहलाता है. सिद्धांतोंमें कौन सिद्धांत मुख्य है ब्रह्म ३ सूर्य २ आर्य ३ यही तीन सिद्धांत मुख्य हैं और इन्हींकाही गणित विश्वप्रचलित और मान्य है उक्त सिद्धांतोंमें पृथ्वी और आकाशकी रचना लिखी वही इस ग्रंथमें यथार्थ लिखी है. जिससे अधिक और भी अनुभवसिद्ध बातें जो कि, प्रत्यक्षप्रमाणमें ठीक ठीक हों वे भी यहां लिखी गई हैं. अब ध्यान देना चाहिये कि, इस संपूर्ण ब्रह्मांडका कारण इच्छारहित सत् चित् आनंदस्वरूप ब्रह्म परमात्माकी प्रकृति (माया) है. वह माया नित्य है. जैसे सूर्यकी प्रतिच्छाया. और वही माया जड है. अतः चैतन्य परमात्माके संयोगसे इस संसारने नटवत् मायया करती हुई प्रथम बुद्धि उपजाती गई. वह बुद्धि कैसी कि, इच्छामयी.

महत्त्व जिसके स्वरूप हैं. महत्त्वसे अहंकार हुआ. वह अहंकार रजोगुण, १ सतोगुण २ तमोगुणमय ३ तीन प्रकारसे हुआ. रजोगुण और सतोगुण यह दोनोंसे दश इंद्रियाँ उत्पन्न हुईं और उक्त दोनोंसे मनभी उत्पन्न हुआ. दश इंद्रियोंमें कर्ण १ त्वचा २ नेत्र ३ जिह्वा ४ नासिका ५ यह पांच ज्ञानेंद्रियें कहलाती हैं और वाणी १ हाथ २ पैर ३ लिंग ४ गुदा ५ इन्होंका नाम कर्मेन्द्रिय हैं. तमोगुण और सतोगुणसे अहंकार मिलके पंचतन्मात्रा-जो कि, शब्द, १ स्पर्श, २ रूप, ३ रस ४ गंध ५ उत्पन्न हुआ है और पंचतन्मात्रासेही पंच महाभूत जो कि शब्दसे आकाश, १ स्पर्शसे वायु, २ रूपसे अग्नि, ३ रससे जल, ४ गंधसे पृथ्वी, ५ उत्पन्न हुए हैं, उक्त पांच ज्ञानेंद्रियोंमें कर्णविषय शब्द, १ त्वचा विषय स्पर्श, २ नेत्रविषय रूप ३ जिह्वा विषय स्वाद ४ नासिका विषय सुगंध दुर्गंधका पहिचानना. ५ और कर्मेन्द्रियोंमें वाणी विषय शब्द, १ हाथ विषयग्राह्य २ पैर विषय हलन चलन, ३ लिंगविषय मैथुनादि, ४ गुदाविषय मलका परित्याग करना. प्रधान, प्रकृती, शक्ति, नित्या, विकृति, यह प्रकृतीकेही विशेषण हैं. महत्त्व, १ अहंकार, २ पंचतन्मात्रा, ७ प्रकृती, ८ दश इंद्रियाँ, १८ एक मन, १९ पंच महाभूत २४ एवं चौबीस तत्वोंसे मिलके शरीररूपी घर बनता है फिर जीवात्मा शुभ अशुभ कर्मोंके अधीन हो उक्त शरीररूपी घरमें मन दूतके वश हो निवास करता है. अतएव जीवसंयुक्त शरीरको नामही देही है ॥

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते सृष्ट्युत्प-

त्तिकथनं नाम प्रथमविनोदः ॥ १ ॥

अथ कालमीमांसां व्याख्यास्यामः ।

मनुष्य देहीके सुखके साधन वेदमें लिखे दर्श पूर्णमास याग और अमुक तिथी, वार, नक्षत्र, योग, करण, लग्न, नवमांशोंमें अमुक काम करनेसे सुख होना या दुःख होना यह विवेक ज्योतिष शास्त्रसेही जाना जायगा. अतएव

ज्योतिषशास्त्र वेदभगवान्के नेत्र हैं. जैसे नेत्रोंसे वर्तमान वस्तुओंको मनुष्य देख सकताहै वैसे ज्योतिष शास्त्रसे भूत भविष्य और वर्तमान कालकी बातें ज्योतिर्विद् देख सकताहै इसी कारणसेही तो इसका नाम कालविधान शास्त्र है. अतएव इस शास्त्रके पढनेवालोंको प्रथम कालज्ञान होना चाहिये. वह काल दोप्रकारसे है अमूर्तकाल १ और मूर्तकाल २ जिसमें अमूर्तकालकी मीमांसा नारदके मतसे लिखतेहैं. भली भाँति मनुष्य सोताहुवा नेत्र खोले उन्हीं नेत्रके खुलती समयके त्रिंशत् भागका नाम एक तत्पर है. और तत्परके शतांशका नाम एक त्रुटि है. एवं त्रुटिके सहस्रांशको एक लग्न कहाजाताहै. यह लग्न योगाभ्याससे योगीराजही जान सकताहै. बाकी और मनुष्य नहीं जान सकता. इति अमूर्तकालकी मीमांसा.

अथ मूर्तकालकी मीमांसा—यह मूर्त कालका वर्णन सूर्यसिद्धान्तसे लिखा जाताहै. स्वस्थ मनुष्यके ६ प्राणका नाम एक पल और ६० पलकी एक घडी. और साठ घडियोंका एकदिन और ३० दिन का एक मास, एवं बारा मासोंका एक वर्ष यह ३६० दिनोंका सावन वर्ष कहलाताहै. और इन सावनदिनके प्रमाण ३६५ दिन १५ घडी ३१ पल ३० विपल यह सौर-वर्ष कहलाताहै. सौर वर्ष क्या. १ उक्त दिनादिमें सूर्य धूमके वही ठिकाने आताहै कि, जहांसे चलाथा. और वही सावन दिनके प्रमाण ३५४ दिन, २२ घडी १ पल २३ विपल यह चांद्रवर्ष कहलाताहै चांद्रवर्ष क्या १ चैत्रशुदि १ से फिर चैत्रवादि ३० पर्यंत यह चांद्रवर्षका भोग है. और उक्त सावनदिनोंके प्रमाणही ३६१ दिन १ घडी ३६ पल ११ विपल यह बार्हस्पत्य वर्ष कहलाताहै. बार्हस्पत्य क्या १ घृहस्पतीका राशिभोग और प्रभवादिसंवत्सरभोग इतने दिना-

१ नारदः—स्वस्थेनेत्रमुष्मासीनेयावत्सर्पदतिलोन्नमम् ॥ तस्योत्रिंशत्तमोभागस्तत्परः १११कीर्तितः ॥ १ ॥
 तत्परस्यलक्षणा भागस्यद्वैरित्यभिधीयते ॥ त्रुटे.महस्रभागेषु लघ्वन्नाय स दृश्यते ॥ २ ॥
 द्योपितेन ज्ञानातिर्दिपुनःपाठोन्नम ॥ निमित्तमात्रेपज्ञतदज्ञापुष्पाशुभम् ॥ ३ ॥ इति निगद्यु-
 दापनटीकायां विवक्षितम् ।

दिकोंका है. अब इन सबका प्रयोजन यह है कि, नित्य व्यापार प्रतिदिनके व्याजमें वा अहर्गणादि तो सावनवर्षसे सिद्ध होता है और वैसंतादि ऋतुओंका ज्ञान सौर वर्षसे सिद्ध होता है. एवं श्रौतस्मार्त कर्म वा गर्भाधानादिगणना चांद्र-सेही सिद्ध होसकी है. और संवत्सरादि फलकांक्षा, संकल्पसिद्धि बाह्यस्पत्य वर्षसेही सिद्ध होती है. अतएव इन चार प्रकारके वर्षादिमानही यहां लिखा-गया. वर्षोंका मान तो औरभी है परंच ग्रंथविस्तृतिभयसे वे यहां नहीं लिखा. उनकी अपेक्षा किसीको हो तो वह सूर्यसिद्धांतमें देख लेवें इति मूर्तकालकी मीमांसा.

अथ कालांगवर्णनम्.—कालभगवान्का आत्मा सूर्य ॥ मन चंद्रमा ॥ सत्व मंगल ॥ वाणी बुध ॥ ज्ञान और सुख गुरु ॥ काम शुक्र ॥ दुःख शनी और इसी प्रकारसे कालभगवान्का मस्तक भेष ॥ मुख वृषभ ॥ शीवा मिथुन ॥ हृदय कर्क ॥ उदर सिंह ॥ कटि कन्या ॥ वस्ति तुला ॥ व्यंजन वृश्चिक ॥ ऊरु धन ॥ जानु मकर ॥ जंघा कुंभ ॥ पैर मीन ॥ अब यहाँ ध्यान देना चाहिये कि, सूर्यचंद्रमाके अंतरसे तिथि बनती है और केवल चंद्रमामे नक्षत्र बनता है. एवं सूर्य चंद्र इन दोनोंके मिलानसे योग बनता है. और तिथिका भोग आधा करनेसे करण बनता है अत एव सूर्य चंद्रमा कालभगवान्के अंग हैं जब तिथि वार नक्षत्र योग करण यह सब पाँचो तो कालांग होनाही चाहिये क्योंकि इनकी सिद्धिभी तो उक्त सूर्य चंद्रमासेही है. इसीसे इन पांचवस्तुओंके गणित का नाम पंचांग लिखा जाता है. ॥

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते कालमी-
मांसावर्णनं नाम द्वितीयविनोदः ॥ २ ॥

१ मास्यनक्षत्रांतिसे ऋतुकी प्रवृत्ति होता है जैसे मान भेषमे वसंत १ वृष मिथुनसे भीष्म २ कर्क
३ कुंभ वर्षा ४ तन्वातुलमे शरद ५ वृश्चिक धनसे हयत ६ मकर कुंभसे शिशिरऋतु ६ होता है ।

अथ भूगोलवर्णनम् ।

इस ब्रह्मांडकी पंचास कोटि योजनके विस्तारमें पुराण शास्त्रकारोंने लिखा है जिसमें भूर्भुवः स्वः महः जनः तपः सत्य यह सप्त लोक आर तल, तल, वितल, सुतल, तलातल, रसातल, पाताल यह सप्त पाताल मिलके अर्दशालोकों की स्थिति है और इसी ब्रह्मांडके बीच यह भूगोल (पृथ्वी) अंगीसदृश गोल है जिसका गोला ज्योतिषके मतसे ४९६७ योजनोंके लगभग है परंच शास्त्रकारोंने रेखाभापसे जो पृथ्वीका भाप लिखा है वही यहां लिखा जाता है. उक्त पृथ्वीके चारदिशमें चार पुर प्रथम वसे हैं. जिसमें पूर्व यमकोटि, १ दक्षिण लंका, २ पश्चिम रोमकपत्तन, ३ उत्तर सिद्धपुर, ४ इनमें दक्षिण लंकासे उत्तर सिद्धपुरपर्यंत जो दक्षिणोत्तर सूत्ररेखा है वह भूमध्यरेखा कहलाती है और पूर्व यमकोटीसे पश्चिम रोमकपत्तनके सूत्रकी पूर्वापर रेखा है जिसे विषुवति रेखा कहते हैं. जिसका वर्णन सविस्तर आगे होगा यहां तो भूमध्यरेखाका वर्णन हो रहा है. लंकासे उत्तर १२५ योजन कुमारी कन्या इससे उत्तर ८० योजन कांचीपुरी, एवं ३६ योजन किष्किंधा जिससे उत्तर ९ योजन परेल ग्राम, जिससे उत्तर १० योजन वासिंव गांम. जिस्से उत्तर ५० योजन उज्जैनपुरी, उज्जैनसे उत्तर १०८ योजन कुरुक्षेत्र जिस्से उत्तर ८२४ योजनपर सुमेरु है. अब यह दक्षिणोत्तर सारे १२४२ योजन

१ अंडमध्यगतःसूर्यो धावाभूम्योर्ध्वदंतरं॥सूर्योऽङ्गोलयोर्मध्ये कोटयःस्युः पंचविंशतिः॥इति भागवते. पृथ्वी सांडकटाहेन पंचाशत्कोटिविस्तरा इत्यमिपुराणे । योजनानां च पंचाशत्कोटिसंख्या प्रमाणतः । ब्रह्मांडस्यैव विस्तारो मुनिभिः परिकीर्तितः । इति महाशिवपुराणे ।

२ पृथ्वीका गोला २५ हजार मैलका सूर्यके गिरद घूमरहाई. ऐसे इंग्लिशभूगोलोंमें लिखाई. और शास्त्रकारोंने बीसहजार कोशके लगभग सारी पृथ्वी लिखी. जिसमें दोनोंका मत एक मिलताई. क्योंकि मीलके मापसे शास्त्रके कोशकुल बडेहैं. परंच पंचसिद्धांतिकाचार्य वराहमिहिर कहताई की पृथ्वी घूमे तो पक्षियोंके अपना ठिकाना कहसि मिले. क्योंकि ये तो हमेशा आकाशमेंही रहाकरतेहैं. इससे पृथ्वी अचला है।

३ पुरीराज्ञमीतत्वभूदेवकन्याततो नम्रकाचीतुखाष्टप्रमाणैः ॥ सितः पर्वतोर्मगरामैश्च संख्याततोयोजनैर्नन्दभिः पर्वलीत्यात् ॥ ततोयोजनैःखंडभिर्वत्सगुल्मखणैः सुदूरैरबंधितप्रमाणम् ॥ कुक्षेत्रमष्टोत्तरैर्योजनैःसज्जिनैर्नागपुक्तैः प्रमाणैः सुमेरुः इति सिद्धांतसारे. श्रौक्तो योजनसंख्ययावृपरिधिःसप्तानंदान्धवपः इति शिरोमणौ ।

लंकासे सुमेरुतक हुवा और सुमेरुसे उत्तर पारिवेट, मेलविल सौद, आलव-
त्सलांड, लाद, त्रेत्सलेव, अपावास्का, त्रितिस, आकेगान, वगलानदी, कारि-
एतेसकेप, ज्वालापहाड, कार्लिमाज्वलत गालपा गसवेदतक १२४२योजन
सिद्धपुर है और सिद्धपुरसे उत्तर सालाईगोमेथ, आल, अलेकसांदवेद,
और समुद्र विकटोरिया लांदसे. ८४०मैल आगे दक्षिण ध्रुवके ठीक अधस्थ
१२४२ योजन असुरस्थान है जिससे ऐदर्विलांड, साक्दानल्दसवेद, करग्वे-
लनलांड, आमस्तरदामवेद, सेत पालवेद, सेन्ट्रीवेद, और चागास वेदके
सूत्रतक घूमके १२४२ योजन फिर वही लंकातक एवं सर्व मिलके भूगोल-
योजन ४९६७ के विस्तारमें है और उक्त शहरोंका नाम लिखे वे ठीक मध्य
रेखाके समीप वसते हैं. और इन शहरों के सूत्र बीच जो शहर वा ग्राम है
उन्हींको भी मध्यरेखाके बीचही समझना चाहिये. जिनका योजनात्मक
परिमाण मुझको ठीकठीक नहीं मिला जिससे वे यहां नहीं लिखागया
अतएव ज्योतिर्विदोंको उचित है कि, जो मध्य रेखाके ग्राम पूर्वापर जो कि
अपने समीप है उसीकी मध्यरेखा ग्रहणकरै दूरकी न करै. जैसे कि, दोसी
गर्गराट, वैराट इत्यादि ग्रामोंकी इनके समीप वसनेवाले ग्रहण करते हैं अब
ध्यान देना चाहिये कि, यह पृथ्वीका भ्रमणहोना आर्यसिद्धांतमें लिखा है
और "आयंगौ" इत्यादि वेदमेंभी लिखाहै. वाकी और सिद्धांतोंमें पृथ्वीको
अचलही मानाहै. लेकिन चल वा अचल जो हो सो हो ज्योतिर्विदको चल वा
अचलसे कुछ प्रयोजन नहीं. ग्रहगणित तो दोनोंसेही समान आसकेगा. उक्त
पृथ्वी सूर्यके आकर्षणसत्तासे ब्रह्मांडके बीच ठहर रही है नीचे आधार
इस्के किसीकाभी नहीं. यदि आधार मानोगे तो फिरभी उसके नीचे किसी
काभी आधार मानना होगा. आखिर थकते थकते पीछे यही कहोगे कि पृथ्वी

१ आर्यभट्टः अनुलोमगतिर्नोरुध. पश्यत्यचलं विलोमं यद्दत् ॥ अणलानिभानितद्रत्ममपभ्रम-
गानि लङ्कायाम् ।

२ प्रमानान्मिनोदाधारपृथ्वीमुत्तमामित्रः पृथ्वीरतिनिषाभिषष्टे । २६ पमाणं क्रयेदसंहिताभि तांमे
अष्टक और चौथी अध्यायके षष्ठमपर्वमें है ।

स्वशक्त्याश्रित है जिससे पहिलेही स्वशक्त्याश्रित कहना श्रेष्ठ है. जैसे सूर्य चन्द्रादिकभी तो अपनी अपनी सत्तासे ठहर रहेहैं वैसे पृथ्वीभी ठहर रही है. और कितने शास्त्रकारोंने चारों दिग्गज चारों दिशावोंमें लिखेहैं वे यथार्थ हैं. परंच वह दिग्गज भूगर्भके अधोभागमेंही है बाह्य नहीं. और सप्त पातालरचनाभी उक्त पृथ्वीके उदरमेंही है. जो पृथ्वीके बाह्यके विवर (दरार) हैं वे उन पातालवासियोंके आनेजानेके मार्ग हैं. और शेष वा कूर्मभी उक्त पृथ्वीके उदरहीमें होंगे. वस्तुतः अनेक शास्त्रोंमें जो लिखाहै उसे सत्य नहीं कहना—यह एक अस्मदादिकोंकी भूल है क्योंकि शास्त्रोंकी एक संगति लानी बड़ी कठिन है. इन बातोंमें बड़े बड़े आदमी चक्कर खाजातेहैं. तो अस्मदादिलोक तो किस चागकी मूली है. अब आगे देखिये कि, इसी पृथ्वीके चौफेर पशु पक्षी मनुष्य समुद्र, नदी, वन, पर्वत इत्यादि बसरहेहैं. और उन पर्वतोंके बीच जो पृथ्वीहै उसीको खंड बोलते हैं. अब यह दक्षिण समुद्रसे उत्तर समुद्रपर्यंत और पश्चिमसमुद्रसे पूर्वसमुद्र पर्यंत पृथ्वीके अर्धभागकोही शास्त्रवेत्ता जंबुद्वीप कहते हैं. उक्त समुद्रके जल खारा होनेके कारण इसका नाम क्षारसमुद्र रक्खागया. उक्त जंबुद्वीपके नव खंड हैं. और जिसमें अस्मदादि वसते हैं. यह भारतवर्ष कहलाता है. और भरतखंडभी इसीको कहते हैं. जिसकी सीमा पूर्व पश्चिम दक्षिण यह तीन ओर तो समुद्रसे घिरा है. और उत्तरसीमा इसकी हिमालय पर्वत है. वह हिमालय और सब पर्वतोंसे ऊंचा है. ब्रह्मपुत्रनद इसकी पश्चिम सीमासे निकलके तिब्बतके देश हो आया है इन पहाड़ोंमें हिम अर्थात् वर्ष अधिक रहनेके कारणसेही इसका नाम हिमालय रक्खागया

१. वाल्मीकीयरामायणे—खन्यमानेततस्तस्मिन्दृष्ट्वा. पर्वतोपमम् ॥ दिशागजविरूपाक्षं धारयंतं महीतलम् ॥ ब्रह्माके एकदिनमें पृथ्वीके चौफेर एक योजन उंचेतक मृत्तिका चढतीहै. और ब्रह्माकी रात्रिमें वही मृत्तिकाकी हानि होतीहै इसका प्रमाण आर्यसिद्धाते ब्रह्मादिवसेनभूमरुषारिष्टाद्योजनभवंतिशृद्धिः ॥ दिनतुल्यपैवरात्र्यामृदुपचितायास्तदिदृष्ट्वा निः ॥

२. भुगताब्धिजलक्षारलवणार्णवसंज्ञकम् ॥ तद्वेलावल्यस्यानांसंताघत्रजुत्रचित् ॥ इतितत्वविवेकसिद्धाते। ततः सभंतात्परिभिः क्रमेणार्थं महार्णवः इत्यादिसिद्धांतवाक्योः से इसी समुद्रसे अनेक समुद्र भेद हुयेहैं ।

इस पर्वतपर पशुपक्षी भी नहीं जासके तो मनुष्य क्योंकर जायगा. आकाशके रहनेवाले बादलभी कटिमेखलासे अधोभागमेंही लटकते रहते हैं. किसी दिन आकाश निर्मलमें बर्फ बिनाके ऊँचेसे पहाडचढनेसे चित्तको बड़ा आनंद आता है. पूर्व पश्चिम दक्षिण यह तीन ओर तो पहाडही पहाड दृष्टिआते हैं कि, जहां अपनी दृष्टि टिके और कितने कितने हाथ लंबे और मोटे जंगली वृक्षोंको हरियाली के मानो उन पर्वतोंको हरित वस्त्र पहनाये हैं. और अच्छी अच्छी नदियोंका पानी इन वृक्षोंकी जड़ोंमें सूर्यके तेजसे ऐसा चमकता है मानो उन वस्त्रोंको किनारीगोटा लगाये हैं. और समुद्रके तरंगकी तरह ऊँचे नीचे दिखाई देरहेहैं. इन्हीं शिखरोंके उत्तरकी तरफ अर्धचंद्राकार अपनी दृष्टि टिके जहांतक बर्फहीके पहाड दीख पडतेहैं वे पर्वत इतने ऊँचे हैं मानो ईश्वरने आकाशके सहारेके लिये खंभे बनायेहैं. सूर्यके तेजसे ऐसे चमक रहेहैं कि, मानो पृथ्वी अपना हाथ निकालके हीराके जटित कंकण दिखलारहीहै. और अपने पैरोंकी तरफ देखो तो हरित वनस्पती और फूलोंके मानो गालिचे बिछ रहेहैं. इन पहाडोंमें सबसे ऊँचे शृंग धवलगिरीके हैं जिसमेंसे गंडकीनदी निकलीहै जमनोत्रीके पहाड इनसे कुछ उत्तर है. जिसको वहाँवाले पुरगिलनामसे बोलाकरते हैं. और सतलज या दौली यह दोनों नदियाँ बदरीनाथके पश्चिमपहाडोंसे निकलीहै. और इन पहाडोंकी श्रेणी सिंधुनदसे ब्रह्मपुत्र नदतक चलीगई है. उक्त पहाडोंपै साढेछ-हजार हाथ ऊँचेतक वृक्ष या खेतीवारियाँ उत्पन्न होतीहैं. इसके ऊपरबर्फही बर्फ है शीतऋतुमें तो छःहजारहाथ नीचे भी कुछ कुछ बर्फपडतीहै. परंच गर्मीके दिनोंमें नहीं पडती. यहांतक मनुष्य पशु पक्षी पहुँच-सकेहैं. यह अजब महिमा सर्वशक्तिमान् जगदीश्वरकी है कि, एकऋतुमें एकही जगह तीनों ऋतु दरशा रहेहैं पृथ्वीके समीप तो गर्म ऋतुके वृक्ष और जिससे ऊँचा वर्षाऋतुके वृक्ष और उससे ऊँचेपहाड चढेदेखो तो शरदऋतुके वृक्ष दिखलाई देरहेहैं और बर्फकी हड्डके समीप जानेपर भोजपत्रके सिवाय कोईभी वृक्ष दि

खलातानहीं. उक्त हिमाद्रि पर्वतोंसे छोटा विंध्याचल इसी भारतवर्ष के मध्यमें है. यह पर्वत खम्भातकी खाड़ीसे नर्मदानदीके उत्तर जीले भागलपुरमें गंगाके किनारे तक गयाहै. और सह्याद्री विंध्याचलके पश्चिम शिरेसे लेंके समुद्रके निकटही निकट कुमारी अंतरीपतक चला गयाहै इसी सह्याद्रीके दक्षिण भागका नाम मलयागिरीहै. और बंगालेकी खाड़ीके निकटही निकट कावेरी से विंध्यके पूर्वसिरेतक पहाड़ोंकी छोटी एक श्रेणी है जिससे पूर्वघांट बोलतेहैं. और पूर्वघांटके बीच दक्षिणकी तरफ और जो पहाड़ है उसीका नाम नीलगिरी है. और शेखावाटीमें मालकेतुकी श्रेणियाँ कितनीही दूरतक चलीगई हैं. और पुष्करतीर्थके चौफेर जो पहाड़है वे अर्बली वा अजयमेरु के नामसे बोले जातेहैं. और उक्त पर्वत अर्बुदाचलकी श्रेणियाँही जानपडतीहैं. आर छोटे छोटे पहाड़ तो शेखावाटीमें कितने स्थानोंपर हैं लेकिन ग्रंथविस्तृतिभयसे वे यहां नहीं लिखेगये उनके नाम उनके समीप बसनेवाले कहकर पुकारतेहैं. वही ठीक हैं. अब जहां इतने बड़े बड़े पहाड़ हैं वहां नदीभी जरूर होना चाहिये सो नदी इस भरतखंडमें इतनी मुख्य हैं. जिनका नाम गंगा, यमुना, सरयू, गंडकी, शोण, कोसी, तिठा, चम्बल, सिंधु, झेलम, चनाव, रावी, व्यासा, सतलज, ब्रह्मपुत्र, नर्मदा, तापी, महानदी, गोदावरी, कृष्णा और कावेरी इन्होंमें इस देशकी प्रधान नदी गंगा है यह गंगा गंगोत्रीके पहाड़से चलेके और अनेक नदियोंका पानी अपने साथ लेतीहुई पांचकोसके पाटसे कपिलमुनीके आश्रम होके समुद्रसे मिलीहै. जिमको गंगासागरसंगम कहते हैं. और ब्रह्मपुत्र-नद हिमालयके उत्तर अलंग मानससरोवरसे निकलके गंगासे मिलाहै. और यमुना जमनोत्रीके पहाड़से बहके प्रयागमें गंगासे मिलीहै. सरयू और गंडकी कौशिकी और त्रिस्रोता, वा तिठा यह चार नदियां हिमालयके बर्फी पहाड़ोंसे निकलके पहली छपरेके समीप दूजी पटनेके सामने तीसरी भागलपुरके नजदीक चौथी करतोयाने लेतीहुई नवावगंजके पासही गंगासे मिलीहै. और कर्मनासा एक छोटी नदी काशी और बिहारके जिलेके बीच बहकर

गंगासे मिली है. चर्मण्वती वा चंबल और शोण यह विंध्याचलसे चलके पहली इटावेके नजदीक जमुनामें खर्पी है. दूसरी सरयू और गंडकीके बीच जाके छपेरेके पास गंगासे मिली है. सिंधू नदी जिसको तापामें अटक कहते हैं यह नदी हिमालयके पार गारु शहरके पास कैलासपर्वतकी उत्तर अलंगसे निकलके हजार उन्मान कोश बहके पश्चिमसमुद्र में मिली है और झेलम चनाव व्यासा रावी सतलज यह पांचों नदियां हिमालयसे निकलके सब इक-ट्टीहो पंचनद के नामसे मिटनकोटके नीचे सिंधुमें मिली है. इन पांच नदियोंके देशका नाम पंजाब कहलाता है उक्त पांच नदियोंमें सतलज नदी हिमालयके उत्तर भागसे मानससरोवरके पास रावणहृदसे निकली है. और बाकी रही वे नदियां हिमालयकी दक्षिण अलंगसे आई हैं झेलम वितस्ता जंगसियालसे दशकोशनीचे चनावमें मिली है. और रावी जिसका नाम शुद्धऐरावती है वह मुलतानसे बीसकोस ऊपर चलके चनावहीमें मिली है. व्यासा वा विपासा अजयकुंडसे निकलके हरिपत्तनके समीप सतलजमें मिली है. और सतलज जिसका शुद्धनाम शतद्रु है यह नदी मिटनकोटके नीचेही सिंधु में मिली है. चनाव वा चंद्रभागा हिमालयसे निकलके मिटनकोटसे थोड़ी दूर जाके खर्पी है. और नर्मदा शोणके उद्गमस्थानके उत्तरसे निकलके भडोचके पासही खंभाहतकी खाड़ीमें मिली है. और तापीनी सतपुडा पहाडसे निकलके सूरतसे दसकोस पर पश्चिम समुद्रसे मिली है. महानदी नागपुरके इलाकेसे निकलके कटकके पास अनेकधारा होके समुद्रसे मिली है गोदावरी पश्चिमघाटमें त्र्यंबकसे निकलके बरदा और बाणगंगासे मिलके इनकी साथ लेके राजमहेंद्रीके नीचे समुद्रसे मिली है. रुष्णाभी सह्याद्रीके पहाडोंसे सितारेके नजीक मालपर्व गतपर्व भीमा वा भीमरथी तुंगभद्रा इन पश्चिम घाटसे निकली हुई नदियोंको साथ लेके मछलीबंदरके पास समुद्रमें मिली है और कावेरी नीलगिरीसे निकलके तिरुचीसे थोड़ी दूर आगे समुद्रमें मिली है. और क्षिप्रानदी उज्जैनके पश्चिम तरफ बहती हुई आगे चलके और नदियोंमें मिलके समुद्रमें मिली है ॥ इति नद्युत्पत्तिः ॥

अथ देशाव्यवस्था—अब भारत वर्षके मध्यके और आठोंदिशाओंके जो देश हैं वे क्रमसे यहां लिखे जाते हैं. पूर्व और पश्चिम समुद्रके हिमाचल और विंध्याचलके बीच जो देश बसता है वह आर्यावर्त कहलाता है. उक्त आर्यावर्तमें कुरुक्षेत्र पांचाल मत्स्यदेश और शूरसेन इन देशोंको ब्रह्मऋषि देशके नामसे बोलते हैं. और भद्र, अरिभेद, मांडव्य, शाल्वनीक उज्जिहान. संख्यात मांडवार वत्सघोष यामुन सारस्वत मत्स्य माध्यमिक माथुर शूरसेन. उपज्योतिष. धर्मारण्य, गौरमुख, उद्देहिक पांडुगुड अश्वत्थ पांचाल. साकेत कंक कुरु काल कोटि कुक्कुर पारियात्रपर्वत औदुंबर कापिष्ठल हस्तिनापुर यह देश जंबूद्वीपके मध्यमें है ॥ और अंजन वृषभध्वज पद्म माल्यवान. व्याघ्रमुखजन; सुह्रदेश, कर्घटासहर चांद्रपुर शूर्पकर्ण खंस मगध शंभेरगिरि मिथिले समतट उद्दु अश्ववदन दंतुर प्राग्ज्योतिष लौहित्यनद क्षीरोदने पुरुषभक्षक उदयाद्रि भद्र गौडपौंड्र उत्कल काशि भेकल आंबष्ठ एकपद तामलिमिक कोशल वर्धमान यह देश पूर्वके हैं ॥ और दक्षिणकोशल कौलिंग वंग अङ्ग उपवंग जठरांग शूलिक विदर्भ वत्स आन्ध्र चेदिके ऊर्ध्वकंठ वृषस्थान, नारिकेल, चर्मद्वीप विंध्यपर्वत त्रिपुरीलोक श्मश्रुधर हेमकूट व्यालग्रीव महाग्रीव किष्किन्धीदेश कंटकस्थल निपांद राष्ट्र पुरीद दशार्ण शबर पर्णशबर यह अग्निविदिशाके हैं ॥ और लंका कालाजिन सौरीकीर्णतालिकट गिरिनगर मलयाचल दर्दुर माहेंद्र मालिंघ भरु कच्छ कंकट टंकण वनवासी शिविक फणिकार कोंकण आभीर आकरस्थान. वेणानदी आवंतके दशपुरे गोनर्द केरल कर्णाटक महाटवी चित्रकूट नाशिक कोछगिरी.

१ कानपुरप्रदेश. २ जयपुरराज्य. ३ कोसी मधुवाकगेरे. ४ जोधपुर जेसलमेर राजधानी. ५ हरियाणा. ६ पूर्वयमुनावासी. ७ सरस्वतीके समीपवासी. ८ कुरुक्षेत्र. ९ कैथल. १० खसियालोक. ११ पटनेके दक्षिणवैराडतक. १२ बंगालेकी ईजानसीमातक. १३ आसाम. १४ ब्रह्मपुत्र. १५ अयोध्या. १६ अयोध्यासे दक्षिणराज्य. १७ बंगालो. १८ भागलपुरसे बंगालेतक. १९ नागपुरका जिला. २० तैलंग. २१ खेदरी. २२ ह्यैमुरप्रत. २३ कोलीराज्य. २४ विंध्याद्रिके दक्षिण देश. २५ मालदीपसे पूर्व. २६ मलबार. २७ मूरतमुंबई बीचमें. २८ उज्जैनवासी. २९ मालवसारीनदीसे उज्जैनतक. ३० तंजलीकी जन्मभूमी.

चौल कौंचद्वीप जटाधर कावेरीनदी ऋष्यमूक पर्वत मोतीखानं अत्रिक्रपीक
 आश्रम वारिचर धर्मपत्तन गणराज कृष्णवेङ्गर पिशीक शूर्पाद्रि कुमुमनगर तुं-
 ववन कार्मण्येक दक्षिण समुद्र तपस्याश्रम कांचीपुरी मरुचीपत्तन चेर्यायक
 सिंहल ऋषभ बलदेवपत्तन दंडकवन तिमिगिलासन. गद्रकच्छ कुंजरदरी
 ताम्रपर्णी नदी यह दक्षिणके देश हैं ॥ और पल्हव कांवेज सिंधु सौवीर वडवा-
 मुख अरवं अंबष्ठ कपिलनारीमुख आनर्त फेणागिरी यवन भाकर कर्णप्रावेय
 पारंशव शूद्रवर्वर किरातखंड ऋष्याश्रय आभीर चंचूक हेमगिरि सिंधुनद का-
 लक रेवताचल सौराष्ट्र बादर द्रविडमहार्णव. यह देश नैऋत्यदिशाके हैं ॥ और
 मणिमानपर्वत मेघवान वनौघ क्षुरार्पण अस्ताद्रि अपरांतक शांतिक हैहय
 प्रणस्ताद्रि बाकाण पंचनद रमठ पारत तारक्षितिजंग वैश्यकनक शक निर्म-
 र्याद म्लेच्छ यह पश्चिमके देश हैं ॥ और मांडव्य तुखार तालहल मद्र अश्मक
 कुलूत लहड श्रीराज्य नृसिंहवन, खंस्त, वेणुमतीनदी, लूंका, गुरुहा मरुक-
 च्छ चर्मरंग एकलोचन शूलिक दीर्घभीव दीर्घास्य. दीर्घकेश यह देश वाय-
 व्यके हैं ॥ और कैलासगिरि हिमाचल वसुमान धनुष्मान कौंचमेरु उत्तरकुरु
 क्षुद्रभीन कैकेय वसति उत्तरयामुन गोगप्रस्थ अर्जुनायन आभीध आदर्श अं-
 तर्द्वीप त्रिगत तुरगानन अश्वमुख, केशधर, चिपिटनासिक, दासेरक, वाटधान
 शरधान, तक्षशिल, पुष्कलावत, कैलावत, कंठधान, अंबर, मद्रक, पौरव, मालव,
 कच्छदंड, पिंगलक, माणहल, हूण, कोहत; शीतक, मांडव, भूतपुर, गांधार, य-
 शोवंती, हेमताल, राजन्यस्त्रचर, गव्य, यौधेय, दासेय, श्यामाकक्षेम, धूर्त, यह उत्त-
 रके देश हैं ॥ और मेरुक, नष्टराज्य, पशुपालकीर, काश्मीर, अभिसार, दरद, तंगण,
 कुलुध, सैरिध, वनराष्ट्र, ब्रह्मपुर, दार्व, डामर, वनराज्य, किरात, चीण, काण्डि
 भद्रापलोल जटामुर कुनट खस घोष कूचिक एकचरण अनुविश्व

१ शठकोपर्वी तपोभूमि. २ कौंचमेरुकी जन्मभूमि. ३ सिलोनपेट (लतासमोदातदिश)
 ४ सिंधुनदीके उत्तरदेश. ५ अर्वाकसुल (मद्रासदेश) ६ पार्ष्णिप्रा मुलक. ७ काडियाबाद.
 ८ अहमदाबादसे सोमनाथमहादेवतक. ९ खंडार. १० विमापर.

सुवर्णभू वसुधन दिविष्ठ पौरव चीरनिवसन त्रिनेत्र मुंजाद्रि गंधर्वलोक यह देश भारत वर्षके ईशानदिशाके हैं ॥ अब शास्त्रीय नामके देशोंका अपभ्रंशनाम हुवा सो लिखते हैं जिसमें दो लीटीके बीचका शुद्धनाम और खाली रहे सो अपभ्रंशनाम समझना चाहिये. (अश्वक्रांत.) युरोप (रथक्रांत सूर्यारिको) आफ्रिका (रमनक) आब्रैलेशिया, (स्वर्णप्रस्थद्वीप.) पालिनेशिया (आवर्तन) ब्रिटन (इंद्रद्वीप) इंदुद्वीप. इंग्लंड (पशुशील भावकच्छ) पोर्तुगाल, (सैनिक, कुकुट) हालैंडबेल्जियम (अश्वक, आश्विया) आस्ट्रिया (तामसदेश.) स्पेन (विष्णुक्रांत, आसेचनक) एशिया (कुमारद्वीप, माहेय, स्वरसाभूमि) अमेरिका (रोमपडचेर) रूम (रोमांतःपातिदेश) इटाली (क्रमथ कामला क्राँच) जर्मनी (मलिया) कुहक, फ्रान्स (मारक) डेन्मार्क (माठक) स्केनडीनेभिया (अणिकतुरस्क) युरोपियन टरकी, (शशिलीना) सिसिली (रथक्रांत) आफ्रिकाखंडके मुलक (मिश्र) मिसर, इजिप्त, (बर्बर) बार्बरी, (वारुण उपद्वीप राक्षसावास) वोरबना (विष्णुक्रांत) एसियाद्वीप (शक) मुशल (तुरुष्क) टरकी (ग्रामिकतुरुष्क) एसियाइरुंस (नैकपृष्ठयुगंधर) लार्पेलेन्ड (तुखार) बुखारा (तालतोपक, तीर्वत) तिब्बत (शैलराज्यपार्वत) तार्तार (खस) इरान (हौरव) साइविरिया (पारद, चीन) महाचीन चीन (कांबोज, आवर्त) आरब (पारस्य, पारसिक) पारस, फारस (शूद्रयवन) मक्का (अपवाह, अपरांत) मस्कत (केकय) हिरात (सुमित्राद्वीप) सुमात्राद्वीप (सिंहलद्वीप) गंधर्व (स्कलावास) लंका, सिलोन (चंद्रशक) सौम्य, तारकट, मारीचावास न्यूहालंड (ब्रह्मोत्तर, ब्रह्मदेश) बर्मा (कुमारिका, भारतवर्ष) हिंदुस्थान; इंडिया (नार्द्धिनाश, कारस्कार) मदीना (पल्हव) काबूल (गांधार) रुंधार (मणिद्वीप) जापान (पंचजव्यद्वीप) हेनानद्वीप (गभस्तिमान, मरीचिद्वीप) मिरचद्वीप (नाकद्वीप) नाकरद्वीप (उपमल्वका) मलाकाद्वीप (प्राविंजया) जंतिया (शुर्माशुद्धदेश) सिंगापुर (कुमारिकानाभिवर्ष) हिंदुस्थान (नेपाल.)

नैपाल. (मरु) मारवाड (स्थल) स्थली; विकनैरराज्य (दरद) जुटान (दरदलिंग) दार्जिलिंग (वैराटनाभिवर्ष, मत्स्यदेश) जयपूरराज्य (पंचनद) पंजाब (पांचाल) कान्हपुरप्रदेश (गौरिक, काश्मीर) काश्मीर (कोशल) कोशलदेश अयोध्या (उत्तरकोशल) फयजाबाद (शूरसेनमाथुर) मथुरा (काशी) काशी (वाराणसी) बनारस (कुरुजांगल) कुरुक्षेत्र, थानेश्वर (इन्द्रप्रस्थ) दिल्ली (गंगाद्वार) चद्रिकाश्रम (माया) हरिद्वार (अवंती; विशाला, पुष्करवर्तिनी, उज्जयिनी) उज्जैन (गुर्जर) गुजरात (कांची) कर्णाटक (माहिपिक) भैसूर (कोंकण) मुंबई (बर्बर किष्किन्धा) तुंगभद्राकिनारे (केरल) विंध्यसे पश्चिमदेश (मलय मोरिया) मलबार (उत्कल) उडीसा, श्रीक्षेत्र (औडू कटक) कलिंगमाहेंद्र उडीसाकेसमीप (सौराष्ट्र) अहमदाबाद, सोमनाथ (महाराष्ट्र) पूना (द्राविड) पूर्वघाट (सिंध) सिंधुदेश (महोदय, कान्यकुब्ज) लखनौसमीपवर्तिदेश (पाटलपुत्र, बौद्धराजधानी) पटना (अंग) राजमहल (कर्णराज) चंपा भागलपुर कर्णराजधानी आरा-प्रभृतीदेश (पौंड्र) मेदिनीपुर (उपबंग) मैमनसिंहप्रदेश (वर्द्धमान) वर्द्धमान (बंग) मालदह मुर्शिदाबाद, नदिया, कलकत्ता (गौड) दांका, पावना, चगुडा, राजशाही, फरीदपुर (सुह) चाटगांव (प्राग्ज्योतिष, कामरूप) आत्ताम चेदी टिपुरा. (कुमारद्वीप) अमेरिका (उत्तरकुमार) उत्तर अमेरिका (दक्षिणकुमार) दक्षिणअमेरिका ६० अ० ७८ (तलह) बार्जील (हिरण्यपुर) पेरु (मुनिदेश, तावसदेश, ताप्रद्वीप) ग्रीनलेन्ड ॥ अब जानना चाहिये कि "विषाशैरावतीतीरे" और "रेवापूर्वगंडकीपश्चिमे" और "अश्विन्यामुदितः केतुर्हन्त्यात्सलंकपालकम् ॥ भरण्यांचकिरातिशाम्" इत्यादि वचनोंके प्रयोजन सिद्ध होनेकेलिये नदी पर्वत और देशोंका नाम यहाँ लिखागया जिससे अमुक-देश अमुक ठिकाने है ऐसा ज्योतिर्विद सहजही जान लेंगे. शेष और देश नदी पर्वत समुद्र चंगरे न लिखा सो भूगोलका नक्सा देखके जान लेंगे इति देशज्यवस्था ॥

- अथ दिग्ब्यवस्था—उक्तदेश व्यवस्था तब मालुम होगी जब कि, प्रथम ज्योतिर्विद सूर्यके उदयास्त होनेका मार्ग जानता होगा क्योंकि पूर्व पश्चिम दक्षिण उत्तर यह दिशा और आग्नेय नैर्ऋत वायव्य ईशान विदिशावोंका ठीक-ठीक मालुम सूर्यउदयास्तसेही हो सकताहै अतएव सूर्यके उदयास्त मार्गोंका वृत्तांत यहां लिखा जाताहै. उक्त सूर्य जिस मार्गसे आकाशमें घूमताहै उसीको नाम क्रांतिवृत्त है यह क्रांतिवृत्त पृथ्वीकी पूर्वापरकी सूत्रकी विषुवती रेखासे चौबीस अंशतक दक्षिणोत्तर झुकरहा है और सायन मेष तुलाकी संक्रांतिमें तो विषुवती रेखाके सूत्रही सूर्य घूमता रहता है परंच मकर और कर्कमें चौबीस अंश उत्तर दक्षिण विषुवती रेखासे दूरपर जाता है अतएव जिधर रवि उदय हो वही पूर्वदिशा अस्त होवे वही पश्चिमदिशा और सूर्योदयके सन्मुख मुँहकिये दहना हाथ जिधर हो वह दक्षिणदिशा और वामभागकी तरफ उत्तर दिशा है. और इन दिशावोंके बिचले भागोंको विदिशा जानना. जैसे उत्तर पूर्वके बीचका नाम ईशान वैसेही पूर्व दक्षिणके बीचका नाम आग्नेय और दक्षिण पश्चिमके बीचका नाम नैर्ऋत, पश्चिम उत्तरके बीचका नाम वायव्य विदिशा है. ॥ जानना चाहिये कि, जैसे दिशावोंका ज्ञान सूर्यसे हो सकताहै वैसेही दिन रात्रिके घटबढका और सरदी गरमीका ज्ञान भी सूर्यसे ही हो-सकताहै क्योंकि विषुवती रेखासे चौबीस अंशके अंतरसे सूर्य घूमताहै यही उनका कारण है. और इन अंशोंका नामही क्रांति है. ॥ यहां विषुवती रेखाके पूर्वापरसूत्रका देश वगैरे कुछ लिखाजाताहै. (कोलंबो) लंकामाले मंगादो-स्को, वारिगाम, विक्टोरियागाम, धाकटालूत जिगम् (रोमकपत्तन.) सानलोमें बेट, मारानाचो, गोआस्म, नेग्रानदी, मादा, पिचित्राज्य, (सिद्ध-पुर) पानामायेव, पिचिंचाज्वलित, गालपागासबेट, नाकरबेट, बूक, जार्विस (यमकोटी) वैरन. इमंदबेट, मातेवर्दाबदीबेट, दामपीर, सामुद्रधुनी, जिलांले बेट, मेसकापास, तामिंग, वार्निवो, शिंगापुर, सुमोच और निवास टोंकसे चलके बस वही लंकामें जा मिली ॥ उक्त विषुवती रेखासे तिरछा होके रवि

यदि दक्षिण भागको जावेगा तो वह दक्षिणायन कहलावेगा. और उत्तर को जानेसे उत्तरायण कहलावेगा. अयननाम घरका है. यह सूर्यके घूमनेकी सड़क मेप और तुलामें तो विषुवती रेखासे मिली हुई है और उक्त राशियोंसे आगे चल कुछ कुछ तिरछी चलती चलती दक्षिणकी तर्फ मकरके ठिकाने २४ अंशके अंतरमें है और कर्कके ठिकाने २४ अंशतक उत्तरकी ओर तक दूर गई है. अब यहां ध्यान देना चाहिये कि, आकाशमें नलिकासे वा दुर्बिनसे देखो तो यह सारे ग्रह सायन दीख पड़ते हैं. और संसारमें ब्रतो-पवासादि वैदिक धर्म साधनेके लिये निरयन गणित लेना पड़ता है. क्योंकि सूर्यसिद्धांतादि जो सिद्धांत ग्रंथ हैं उन्हीं में निरयन गणितको ही सविस्तर लिखा और माना है. इन्हीं में अयनगति अलग दिखलाई गई है अतएव गणित दो प्रकारसे है. दृश्य १ अदृश्य २ जो दृश्य गणित है सो सायन कहलाता है. और अदृश्य है वह निरयन गणित कहलाता है जब किसी दिन ग्रहोंका उदयास्तादि अपने आँखोंसे देखनेकी इच्छा होवे तब सायन गणित करना पड़ता है. नहीं तो निरयन गणितके पंचांग बने हुये प्रचलित सब होही रहे हैं कितने भोले भाले मनुष्य कहाकरते हैं साहब सिद्धांतके गणितमें भी अंतर आने लग गया. क्योंकि पंचांगवालोंके शुक्रादि ग्रहोंके उदयास्त और ग्रहण अब ठीक ठीक नहीं मिलता परंच वह यह नहीं जानते कि, सिद्धांतका गणित तो जो पहिले था सोई अब है परंच ग्रहकी अयनगति ठीक होनी चाहिये क्योंकि अयनगति सदा एक नहीं रहसक्ती काले पाके अयनगतिमें कुछ अंतर आजाता है इसलिये यहां अयनगतिके प्रत्यक्ष लानेकी विधी लिखते हैं. अयनांश देखनेवाला मनुष्य सहरके बाहिर कहीं भी जहां किसी वस्तुकी ओट न हो तहाँ जलवत्समान भूमि शोधके प्राची साधन करे. फिर उक्त भूमिमें

१ अयनविषये भक्तर्षाभिमत ईश्वरेच्छया प्रथमतः नृत्तिचिद्रागैश्चलतिततः परावृत्त्य यथास्थितं भव-
तिसत्तोपितद्रागैः क्रमेण पूर्वतश्चलतिततोऽपि परावृत्त्य यथास्थितमित्येवो विरक्षणो भवेत्.

२ त्रिंशत्कृतोपुगेभानांचरुपावर्तिल्लवते. इति सूर्यसिद्धिंति ।

प्राकारसे वृत्त निकालके उसमें द्वादश राशिके समान चिह्न निकाले और एक एक राशिके बीच तीस तीस अंशोंके चिह्न करे फिर उस वृत्तके मध्यभागमें द्वादशांगुल शंकू जो कि, अधोभाग जिसका पुष्ट और ऊर्ध्वभागसे तीखा जब रात्रिदिन बराबर हो उस दिन रखे फिर उक्त शंकूकी छाया प्रतिदिन देखता रहै. छः मासके लगभग जिस दिन छाया चलती पीछी हटेगी वही अयनका स्थान शुद्ध है. और उसके देखनेकी दूसरी विधि यह है कि, नलिकायंत्रसे स्पष्ट किया हुआ ग्रह और सिद्धांतसे स्पष्ट किया जो ग्रह इन दोनोंका अंतरका जो गणित है वही शुद्ध अयनांश कहलाताहै. अयनांश चीज क्या है. १ ग्रहकी स्थिति बिंब और प्रकाश बिंबके अंतरका नामही अयनांश है॥ इति दिग्ब्यवस्था॥

अब जानना चाहिये कि, सूर्य उत्तर गोलपर जानेसे विषुवती रेखाके उत्तर के देशोंमें क्षितिजके समीपताके सबबसे जल्दीही उदय होता दीख पडताहै. और पश्चिममें अस्त होनेके समय क्षितिजके निकटताके कारण कितनी देरीतक दीखताचलाजाताहै. इसीसे सायन मेष संक्रांति प्रारंभसेही दिन बड़ा और रात्रि छोटी होने लगती है. जितना विषुवती रेखासे उत्तर देश दूर होगा उतनाही उत्तर गोलमें दिन जियादह बढ़ेगा जैसे लंका विषुवती रेखाके ऊपर होनेसे वहां तो दिनरात्रि समानही ३० घडीका सदैव होगा. फिर लंकासे उत्तर उज्जैनमें ३३ घडी और राजपूतानामें ३४ घडी और पंजाबमें ३५ घडी आगे फिर जहां जहां उत्तरके मूलक विषुवती रेखासे दूर पडता जायगा त्योंत्यों दिन बढ़ता चलाजायगा. और रात्रि घटती जायगी. कितने अंग्रेजी भूगोल जाननेवाले लोग कहतेहैं कि, रूसके राज्यके उत्तरभागमें कितनेदिनोंतक सूर्य आपाठ महीनेमें दिखलाई देता रहताहै. रात्रि नहीं होती. और जिसके आगे ध्रुवके वृत्तमें शीत अधिक होनेके कारणसे समुद्रका पानी जमारहता

१ सायनरविसे अयन और गोलभेद जानाजाताहै मकरके रविसे उत्तरायण. कर्क रविसे दक्षिणायन और मेषके रविसे उत्तरगोल तुलाके रविसे दक्षिणगोल कहलाताहै ।

२ उत्तरअक्षांश ८२ और दक्षिणअक्षांश ७८ के आगे शीतअधिकताके कारण मनुष्य नहीं जासक्ता बस यदांतक मुक्त पसताहै ।

है, वहां कितने महीनोंतक दिन होते चले जाते हैं: उस समुद्रको आर्तिक नामसे वे लोग पुकारतेहैं. और अस्मदादिकोंके शास्त्रोंमें उत्तर ध्रुवके नीचे सुमेरु लिखाहै वहां उत्तर सूर्य में छः महीनिका एकदिन होना. यह एक शास्त्र-सिद्ध बात तो हैही परंतु प्रत्यक्ष प्रमाणसे जी ठीक मिलताहै. और ऐसेही जब दक्षिणगोल (सायनगोल) का सूर्य होगा तब उक्त मुल्कोंमें दिन घटता जायगा और रात्रि बढती चली जायगी. जहां छः महीनों तक दिन दिखलाई देताहै वहां छः महीनोंतक रात्रि ही बनी रहेगी सूर्य न दीख सकेगा. सूर्य दक्षिणायनमें लंकासे दक्षिण ध्रुवके ठीक नजदीक छः महीनोंका एकदिन होना शास्त्रकारोंने लिखाहै सबब कि, उस स्थानको असुरस्थान मानाहै अबके इंग्लिश भूगोल जाननेवाले लोगजी कहा करते हैं कि, दक्षिणध्रुवसे ८४० मैल उछा विकटोरिया ल्यांडमें पूस महीनेमें सूर्य कितने दिनोंतक दिखलाई देतारहताहै. रात्रि नहीं होती परंतु सूर्य दूरपर जानेके सबब वहां का समुद्र ठंडसे जमा रहता है, वहां पासिफिक समुद्रकाही नाम भेदसे दक्षिण महासागर बोलाजाताहै. फिर जब सूर्य दक्षिण अयनको त्यागके उत्तर अयनको आवेगा तो वहां प्रतिदिन रात्रि बढती जायगी. दिन घटता घटता जब रवि उत्तर गोलपर पहुँचेगा तब तो दिनरात्रि समान ३० घडीके होजायेंगे. ऐसेही जिन मुल्कोंके समीप सूर्य आवेगा वहां गरमी अधिक पड़ेगी. और उन मुल्कोंसे सूर्य दूर पर जानेके सबबसे वहां शरदी विशेष पड़ेगी. और इसी कारणसे वहां पानी का बर्फ होजायगा. यह शरदी गरमीके न्यूनाधिक्यका और दिन रात्रि छोटा बडा होनेका मुख्य कारण एक केवल सूर्य है और उसी के प्रकाशसे सब विश्व प्रकाशित होरहा है।

१ मेघोंजनमात्रः प्रभाकरो दिग्बला परिक्षितः । नन्दनयनस्य मध्ये रत्नमयःसर्वतोः पृत्तः ॥ इति आर्यभट्टः ।

२ भूमिके पश्चार्धगोलमें जल शिवाद्द है. और न्यायायुक्ती पर्वतोंमें आग धनक रईहै वेमेंरूपरुमध्ये गरको बढनामुसलष जलमध्ये' इति आर्यभट्टः ।

है. वहां कितने महीनोंतक दिन होते चले जाते हैं. उस समुद्रको आर्तिव नामसे वे लोग पुकारतेहैं. और अस्मदादिकोंके शास्त्रोंमें उत्तर ध्रुवके नीचे सुमेरु लिखाहै वहां उत्तर सूर्य में छः महीनेका एकदिन होना. यह एक शास्त्र-सिद्ध बात तो हैही परंतु प्रत्यक्ष प्रमाणसे भी ठीक मिलताहै. और ऐसेही जब दक्षिणगोल (सायनतुल) का सूर्य होगा तब उक्त मुल्कोंमें दिन घटता जायगा और रात्रि बढ़ती चली जायगी. जहां छः महीनों तक दिन दिखलाई देताहै वहां छः महीनोंतक रात्रि ही बनी रहेगी सूर्य न दीख सकेगा. सूर्य दक्षिणायनमें लंकासे दक्षिण ध्रुवके ठीक नजदीक छः महीनोंका एकदिन होना शास्त्रकारोंने लिखाहै सबब कि, उस स्थानको असुरस्थान मानाहै अबके इंग्लिश भूगोल जाननेवाले लोगभी कहा करते हैं कि, दक्षिण ध्रुवसे ८४० मैल शोछा विक्टोरिया ल्यांडमें पूस महीनेमें सूर्य कितने दिनोंतक दिखलाई देतारहताहै. रात्रि नहीं होती परंतु सूर्य दूरपर जानेके सबब वहां का समुद्र ठंडसे जमा रहता है, वहां पासिफिक समुद्रकाही नाम भेदसे दक्षिण महासागर बोलाजाताहै. फिर जब सूर्य दक्षिण अयनको त्यागके उत्तर अयनको आवेगा तो वहां प्रतिदिन रात्रि बढ़ती जायगी. दिन घटता घटता जब रवि उत्तर गोलपर पहुँचेगा तब तो दिनरात्रि समान ३० घड़ीके होजायेंगे. ऐसेही जिन मुल्कोंके समीप सूर्य आवेगा वहां गरमी अधिक पड़ेगी. और उन मुल्कोंसे सूर्य दूर पर जानेके सबबसे वहां शरदी विशेष पड़ेगी. और इसी कारणसे वहां पानी का बर्फ होजायगा. यह शरदी गरमीके न्यूनाधिक्यका और दिन रात्रि छोटा बड़ा होनेका मुख्य कारण एक केवल सूर्य है और उसी के प्रकाशसे सब विश्व प्रकाशित होरहा है ।

१ मेहयोजनमात्र. प्रमाकरो हिमवता परिक्षिप्त. । नदनवनस्य मध्ये रत्नमय सर्वतो घृत इति आर्यभट्ट ।

२ भूमिके पश्चार्धगोलमें जल जियादह है. और ब्यालामुखी पर्वतोंमें आग धनक रहै है नदंरस्थलमध्ये नरको बहवामुस्रश्च बलमध्ये' इति आर्यभट्टः ।

आकाशमें भेष वृषादि राशियोंके नामसे बारह जातके मुल्क समझना चाहिये इन मुल्कोंमें जो प्रधान भेष वृषादि वा सिंह मिथुनादि देव मनुष्य पशु पक्षि-आदि बसतेहैं वे मुल्क उन्हींके नामसे बोले जाते हैं. जब सूर्य चन्द्रादिक ग्रहोंको अपनी कक्षापर सृष्टिकर्ताने उपस्थित किया तब सूर्य और चन्द्रमा इन दोनोंने राशियोंके मुल्क आधे २ लेलिये विपमराशियोंके छ मुल्क तो सूर्यने लेलिये और सम छः मुल्कोंका राश्यधिपति चन्द्रमा हुवा. फिर बुध शीघ्र-गतिसे दौडके चन्द्रमासे राज्य मांगा तो कन्याका राज्य तो बुधको चन्द्रमाने दिया और मिथुनका राज्य रवि देतेभये फिर इसीही तौरसे शुक्र राज्याभिलाषाकरके दोनोंको कहा जिससे चन्द्रमाने वृषभका राज्य दिया और रवि तुलाका राज्य दिया और तत्पश्चात् मंगलनेभी राज्याभिलाषासे याचना करी तब चन्द्रमाने वृश्चिक का राज्यदिया. और सूर्यने भेषका राज्यदिया. इससे मंदगतिसे चलके गुरुभी सूर्य और चन्द्रमासे जामिला और राज्यस्पर्धा जताई तब मीनका राज्य चन्द्रमाने और धनका राज्य रविने देदिया फिर अतिमंदगामी शनैश्वरजी दोनोंसे जा कहा कि, कुछ राज्य तो मुझको भी चाहिये इस बातपर ध्यान देके चन्द्रमाने मकरका राज्य और रविने कुंभका राज्य शनैश्वरको देदिया इसी कारण उक्त सूर्यके एक सिंहका राज्यही शेष रहा. और चंद्रमाके केवल कर्कका राज्य अवशेष रहा ॥ इसके आगे ग्रह जियादा कम क्यों चलते हैं वह हाल यहां लिखाजाताहै ॥ यह उक्त ग्रह अपने अपने लोकोंमें बसकर अपनी अपनी कक्षाओं (सडकों) पै घूम रहेहैं. और वे कक्षा सब बारह राशियोंके सूत्रभाग जो कि, आकाश कक्षासे पृथ्वीपर्यंत आये हैं. सो खर्वूजके फलकी रेखावत् विभागोंसे विभूषित हैं. अब ध्यान देना चाहिये कि, जैसे खर्वूज की लकीरें नाकेके समीप तो

१ जब चन्द्रमा पृथ्वीसे सूर्यास्तहूये पीछे दीखताहै तब सूर्यसे ऊंचा दीखताहै जिसे न्यासजीने चन्द्रमंडल सूर्यसे ऊंचा मानाहै परन्तु वास्तवमें सूर्यसे चन्द्रमण्डल नीचाहै ॥ उष्णोपरत्वपरिवर्त्य सङ्कोर्षेण ये दृश्य विधुः सदोर्ध्वः ॥ सर्वाध्वगेर्कस्वदधोऽस्त्यपदस्य न्यासैरितं चेत्यमपि प्रमाणम् ॥ इति तत्त्व विवेकसिद्धिः ।

मांशसे चलना शुरू हुवा. जिससे राशियोंकी प्रथम भेप आदिसे गणना चली. और प्रतिदिनकी रात्रि चंद्रमाके प्रकाशसे शुरूहुई जिससे शुक्लपक्षसे प्रथम गणना चली. और उक्त सूर्य चंद्रमाके सबवही प्रतिपदादि तिथि अश्विनी आदि नक्षत्र और विष्कुंभ योगादिकोंकी गणना चलीहै. जानना चाहिये कि, प्रवहवायु उत्तर ध्रुवके और दक्षिण ध्रुवके बीचमें पृष्ठिघट्यात्मक भ्रमणको पूर्वसे पश्चिमतरफ घुमारहा है और ग्रहोंके कक्षावृत्त अपनी गतिके कारण पूर्वको चल रहे हैं. परंच पश्चिमकी तरफही चलते दीख पडते हैं. जैसे कुम्हारके चक्रपे विलोम चलती हुई चाँटी चक्रके गतिके मुवाफिक चलती दीख पडती है वैसेही ग्रहोंके दीखनेका हाल है. अब प्रत्यक्ष प्रमाणोंसे क्या यह बात मिथ्या हो सकी है कि, ऐसे नहीं चलते हैं? देखिये कि, प्रथम अश्विनी नक्षत्रके तारोंका उदय होके पीछे भरणीके तारे दीख पडेंगे. तो कहो जी! ग्रह अश्विनी भोगके फिर भरणीको भोगेगा कि, नहीं? यदि अश्विनी भोगके फिर भरणीका भोग करेगा. तब तो पश्चिमसे पूर्वको ग्रहका चलना स्वयं सिद्धही है. और उक्त ग्रहोंके मंदोच्च शीघ्रोच्च पातादिकोंके वृत्त सब प्रवहरूपी राश्मिसे बँधे हुये हैं. वे अपनी मर्यादाके विशेष इधर उधर कभी नहीं होसके और यह भू वायु (पृथ्वीकी पवन) केवल पृथ्वीसे १२ योजन ऊँचेतक है. यहांतक गये हुये मनुष्य पशु पक्षीभी पीछा आ सकेगा परंतु इससे ऊँचे प्रवहवायुके भीतर जब कभी कोई जावेगा वह फिर पृथ्वीपै पीछा न आवेगा. जैसे महाभारतमें भीमसेनने हस्तियोंको फेंकाथा और वे पीछे नहीं आये. क्योंकि इन दोनों पवनोंके धर्म इसी ढंगकेहैं पृथ्वी की वायु तो सर्व वस्तुओंको पृथ्वीकी तरफही आकर्षण करता है और आकाशका पवन आकाशकी ओर ऊँचेकोही आकर्षण करता है. हाँ कोई अपने योगबलसे तो बेशक इन दोनों पवनोंको रोकटोकके पृथ्वीकी ओर आकाशकी वस्तुओंको एकमेक करसकेगा नहीं तो ऐसा होना मुश्किल है॥ और अब इसके आगे सूर्य चंद्रमा एक एक राशिके स्वामी हुए. और ग्रहोंको दोदो राश्यधिकार क्यों कर मिला उसका हाल यहां लिखाजाताहै. ॥ यह

आकाशमें भेष वृषादि राशियोंके नामसे बारह जातके मुल्क समझना चाहिये इन मुल्कोंमें जो प्रधान भेष वृषादि वा सिंह मिथुनादि देव मनुष्य पशु पक्षि आदि बसतेहैं वे मुल्क उन्हींके नामसे बोले जाते हैं. जब सूर्य चन्द्रादिक ग्रहोंको अपनी कक्षापर सृष्टिकर्ताने उपस्थित किया तब सूर्य और चन्द्रमां इन दोनोंने राशियोंके मुल्क आधे २ लेलिये विषमराशियोंके छ मुल्क तो सूर्यने लेलिये और सम छः मुल्कोंका राश्याधिपति चन्द्रमां हुवा. फिर बुध शीघ्र गतिसे दौडके चन्द्रमासे राज्य मांगा तो कन्याका राज्य तो बुधको चन्द्रमाने दिया और मिथुनका राज्य रवि देतेभये फिर इसीही तौरसे शुक्र राज्याभिलाषाकरके दोनोंको कहा जिससे चन्द्रमाने वृषभका राज्य दिया और रवि तुलाका राज्य दिया और तत्पश्चात् मंगलनेभी राज्याभिलाषासे याचना करी तब चन्द्रमाने वृश्चिक का राज्यदिया. और सूर्यने भेषका राज्यदिया. इससे मंदगतिसे चलके गुरुभी सूर्य और चन्द्रमासे जामिला और राज्यस्पर्धा जताई तब मीनका राज्य चन्द्रमाने और धनका राज्य रविने देदिया फिर अतिमंदगामी शनैश्वरजी दोनोंसे जा कहा कि, कुछ राज्य तो मुझको भी चाहिये इस बातपर ध्यान देके चन्द्रमाने मकरका राज्य और रविने कुंभका राज्य शनैश्वरको देदिया इसी कारण उक्त सूर्यके एक सिंहका राज्यही शेष रहा. और चंद्रमाके केवल कर्कका राज्य अवशेष रहा ॥ इसके आगे ग्रह जियादा कम क्यों चलते हैं वह हाल यहां लिखाजाताहै ॥ यह उक्त ग्रह अपने अपने लोकोंमें बसकर अपनी अपनी कक्षाओं (सडकों) पै घूम रहेहैं. और वे कक्षा सब बारह राशियोंके सूत्रभाग जो कि, आकाश कक्षासे पृथ्वीपर्यंत आये हैं. सो खर्वूजके फलकी रेखावत् विभागोंसे विभूषित हैं. अब ध्यान देना चाहिये कि, जैसे खर्वूज की लकीरें नाकेके समीप तो

१ जब चन्द्रमा पृथ्वीपे सूर्योस्तद्वये पीछे दीखताहै तब सूर्यसे ऊंचा दीखताहै जिसे न्यासजीने चन्द्रमंडल सूर्यसे ऊंचा मानाहै परन्तु वास्तवमें सूर्यसे चन्द्रमण्डल नीचाहै ॥ उर्ध्वाधरत्वंपरिवल्प्य शङ्कोर्धेन यो दृश्य विपुः सद्गोचर्यः ॥ सर्वोर्ध्वगोकैरुदयोऽस्त्यवश्यं न्यासेरितं चेत्यमपि प्रमाणम् ॥ इति तत्त्व विवेकसिद्धति ।

एक्य हो जावें और ऊँचे मध्य भागमें जियादा अंतर होना ऐसेही राशि-योंके विभागोंकी और ग्रहोंकी नीची ऊँची कक्षावाँकी व्यवस्था है प्रथम चन्द्रमाकी कक्षा पृथ्वीसे ५१५६६ योजन ऊँची जिससे चन्द्रमाकी राशि एकके भोगमें केवल सवादो दिन लगते हैं. इससे ऊँचा बुध शीघ्रमंडल है. जो कि, पृथ्वीसे १६६०३२ योजन है जिससे चन्द्रमासे बुधको राशि भोगमें दिन जियादा लगता है यही रीतिसे ऐसे ही ऊँचा ४२४०८८ योजन शुक्रमंडल है. फिर ऊँचा ६८९३७७ योजन सूर्यमंडल है और १२९६६१९ योजन ऊँचा भौममंडल है और ८१७६५३८ योजन ऊँचा गुरुमंडल है. और २०३१९०७१ योजन पृथ्वीसे सब ग्रहोंसे ऊँचे शनि कक्षा है. जिसको राशिभोगमें सब ग्रहोंसे दिन जियादा लगता है. जिस ग्रहका लोक पृथ्वीके निकट होगा उसीको राशिभोगमें दिन कमती लगेंगे और जिस ग्रह का ऊँचा लोक है जिसको राशिभोगमें दिन जियादा चलना पड़ेगा और पृथ्वीसे सबसे जियादा ४१३६२६२६५८ योजन ऊँची नक्षत्र कक्षा है. और इसके फिर आगे राशिलोक जिससे आगे जनलोक उसके आगे तपलोक उसके आगे सत्यलोक उसके आगे ब्रह्मांडकी कक्षा है कि, जहांतकही सूर्यका प्रकाश जा सका है.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते स्वगोलव्यवस्था-

कथनं नाम चतुर्थविनोदः समाप्तः ॥४॥

अथ सृष्ट्याद्यहर्गणं व्याख्यास्यामः ॥ जिस दिनसे सूर्यादिग्रह अपनी कक्षा वृत्तमें घूमनेको शुरू हुये हैं उसीदिनसे लेके और अपने अभीष्टदिनपर्यंत जितने दिनोंका समूह है वह सृष्ट्याद्यहर्गण कहलाता है विक्रम संवत् १९४९ शालिवाहन शके १८१४ चैत्रशुक्ला १ भौमवारके दिन इस ग्रंथका जन्म-हुवा उसीसे उक्त दिनका अहर्गण लिखाजाताहै अब उक्त दिनेसे पहले ब्रह्म-देवजी ५० वर्षके होचुके उक्त ब्रह्माके एकदिनमें १४ मनुराजा होते हैं.

जिन्होंका नाम स्वायंभुवमनु १ स्वरोचिप २ उत्तमौज ३ तामस ४ रैवत ५ चाक्षुष ६ वैवस्वत ७ सावर्णि ८ दक्षसावर्णि ९ ब्रह्मसावर्णि १० धर्मसावर्णि ११ रुद्रसावर्णि १२ देवसावर्णि १३ इंद्रसावर्णि १४ इन उक्तराजाओंमें एक राजा ७१ महायुगतक राज्य करता है वह सत्ययुग १७२८००० त्रेता १२९६००० द्वापर ८६४००० कलियुग ४३२००० इन चारोंयुगोंके इकट्ठे वर्षों ४३२०००० कानाम महायुग कहलाता है उक्त महायुगके वर्षोंको ७१ से गुणनेसे एक मनुके राज्यके वर्ष होते हैं और दो मनुके बीच की संधिके वर्ष सत्ययुगतुल्य हैं. इन १५ संधिके वर्षोंको और चौदह मन्वंतरोंके वर्षोंको इकट्ठा करनेसे एक ब्रह्माका दिन कहलावेगा और दिनतुल्यही रात्रि होती है. इसीही क्रमसे ब्रह्माके ५० वर्ष बीतके इकावनवें वर्षका पहिला दिन बीतरहा है. इसीदिनमें श्री ६ मनु राज्य कर चुके उन्हींके वर्ष १८४०३२०००० और संधिसात ७ के वर्ष १२०९६००० इतने गतहुये हैं. फिर महायुगों २७ के वर्ष ११६६४०००० इतने बीते और तीन युगोंके वर्ष ३८८८०००० इतने गतहुये हैं अब अष्टाविंशतितम कलियुगके गत वर्ष ४९९३ और वे सब वर्षोंको इकट्ठा करनेसे सृष्ट्यब्द १९५५८८४९९३ इतने हुये इन वर्षोंका अहर्गण ७१४४०४१२०३४९ यह हुआ जिससे रवि बुध शुक्र ११।१५। १३। ५० चंद्र ०।३। १७। २२ मंगल ७। १५। ३९। ४५ गुरु ११। १४। ३७। ३५ शनि ४। २४। ०। १० राहु १। ०। २५। ५९ यह मध्यमग्रह हुआ. ॥ और सूर्य ११। १७। १४। १७ चंद्रः ०। ३। २३। १९ मंगलः ८। १४। ४५। ३५। बुधः ०। ३। २१। ४१ गुरुः ११। १४। ०। १२ शुक्रः १। १। ५०। ५८ शनिः ५। ०। १। ० राहुः १। ०। २५। ५९ यह स्पष्ट ग्रह ४५। १८ के इष्टपे हैं. अब देखिये कि, उक्त अहर्गणादिकोंका मित्रमित्र उदाहरण कियेबिना सिद्धांतगणितकी समझ नहीं होसकी जिसके लिये पूर्वाचार्योंका कियाहुवा उदाहरण यहां मित्र मित्र लिखा जाता है. शके

१५०६ वैशाखशुक्ल ६-रविवारके दिन ७१ महायुगों से छैः मनुष्योंके वर्ष-
गुणें ४२६ हुये फिर एक महायुगके ४३२०००० वर्षोंसे उनको गुणनेसे मनुके
वर्ष १८४०३२०००० इतने हुये. संधि ७ के वर्षों १२०९६००० को
जोड़नेसे ससंधि छैमनुष्योंके वर्ष १८५२४१६००० इतने गये फिरसप्तम-
वैवस्वत मन्वंतरके सप्तविंशति महायुगोंके वर्ष ११६६४०००० उक्त वर्षोंमें
जोड़नेसे ससंधि षट् मन्वंतर सहित सप्तविंशति महायुगपर्यंत के १९६९०
५६००० गतवर्ष हुये अब (अष्टाविंशति) अष्टाईसके महायुगमें सत्ययुग
१ त्रेता २ द्वापर ३ तीन युगगत हुये जिसमें सत्य युगका वर्ष १७२८०००
पूर्वोक्त वर्षोंमें योगकरनेसे सृष्टिआदिसे सत्ययुगपर्यंत १९७०७८४०००
इतने वर्ष गत हुये. जब ब्रह्माके सृष्टि रचनेके दिव्य वर्षों ४७४०००को ३६०
से गुणा जब १७०६४००० मनुष्यवर्ष हुये. यह पूर्वोक्त वर्षोंमें हीन करनेसे
१९५३७२०००० इतना अवशेष रहा. इन्हों में त्रेता १२९६००० द्वापर
८६४००० कैलिंगतवर्षप्रमाण ४६८५ इन तीनोंके वर्ष २१६४६८५
जोड़नेसे सृष्ट्यादि वर्ष १९५५८८४६८५ इतने गतहुये ॥

अथ अहर्गणानयनम् ॥ उक्तसृष्टिवर्षों १९५५८८४६८५ को १२
से गुणा जब २३४७०६१६२२० इतने मास हुए इन्होंमें एक
मास जोड़ा जब २३४७०६१६२२१ यह मासगण हुवा. इसको
दो जगह रखके फिर एकको सृष्ट्याधिमासों १५९३३३६ से गुणनेसे ३७
३९६५७७६७७६७१०३२५६ इतने हुये. इन्होंके सूर्य मासों ५१८४
०००० के भागसे सृष्टिआदिसे अहर्गणपर्यंत अधिमास ७२१३८४६०१
इतने गत हुये इन्होंको दूसरी ठौरके अंकमें जोड़नेसे स्पष्टमासगण २४१९२०
००८२२ हुवे उक्तमासगणको ३० गुणनेसे ७२५७६००२४६६० यह

१ कलिंगतवर्ष लानेकी विधि. कलिंगे मारभसे ३०४४ युधिष्ठिरके शाके. पंडिते १३५
विक्रमका शाका रहा जिस वर्षमें अहर्गण लाने यह शालिवाहन गतशाकेके वर्षमें पूर्वोक्त वर्ष जोड़नेसे
कलियुगके गतान्द होतेहैं ।

दिन हुये इनमें गततिथि ५ जोड़ी जब ७२५७६००२४६६५ यह हुये. इन्होंको दो जगह रखके एकको सृष्टितिथिक्षयदिनों २५०८२२५२ से गुणे तो. १८२०३६९५८३०१७३७४५५८० यह हुये इन्होंके सृष्टिचांद्र दिनोंके १६०३००००८० भाग देनेसे सृष्टिरचनासे अहर्गणपर्यंत क्षय-तिथि ११३५६०१६७९४ इतनी आइ इन्होंको पूर्वोक्त दूसरी जगेके अंकमें हीनकरणसे अहर्गण सावन ७१४४०००७८७१ यह हुवा. उक्त अहर्गण सत्यासत्य परीक्षाकेलिये ७ भागसे अवरोपित अहर्गणसे १ रहा जिससे रवि-वार जिस दिन होनेसे यह अहर्गण सत्य ह.

अथ मासपतिवर्षपत्योरानयनम्.—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ इस के ३० भागसे लब्ध २३८१३४६६९२९ हुये इनका द्विगुना—४७६२६९३३८५८ यह हुवा और इसमें १ और जोड़ा जब-४७६२६९३३८५९ यह हुवा इन्होंको सप्तावशेषित किया जब १ रहा जिससे मासेश्वर सूर्य हुवा. जिसका गतदिन १ और भोग्यदिन २९ समझना चाहिये. अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को ३६० के भागसे लब्ध १९८४४५५५७७ यह आया इन्होंको ३ से गुणके ५९५३३६६७३१ और १ और जोड़ा जब ५९५३३६६७३२ यह हुवा. इन्होंके ७ भागसे शेष ५ बचनेसे गुरु वर्षेश्वर हुवा. जिसका भुक्तदिन १५१ और भोग्यदिन २०९ हुये.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते अहर्ग-
णानयननाम पंचमविनोदः ॥ ५ ॥

अथमध्यमग्रहानयनविधिं व्याख्यास्यामः॥अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को सूर्य भगणोंसे ४३२०००० गुणके ३०८६२५३१४००२-७२०००० फिर भूदिनोंके १५७७९१७८२८ भागसे लब्ध भगणः १९५५८८४६८५ भगणशेष २९०५५८२० को १२ से गुणा जब ३४८६६९८४० यह हुवा. इन्होंके पूर्वोक्त भूदिनोंका भाग दिया जब लब्ध राशि०

राशिशेष ३४८६६९८४० को ३० से गुणा जब १०४६००९५२००
 यह हुआ. इन्हों के पूर्वोक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश ६ अंशशेष ९९२५
 ८८२३२ को ६० गुणके ५९५५२९३९२० फिर उक्त भूदिनोंके भागसे
 लब्ध कला ३७ कलाशेष ११७२३३४२८४ को ६० गुणके ७०३४०
 ०५७०४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ४४ विकलाशेष: ९११६
 ७२६०८ एवं भगणादिमध्यमरवि: १९५५८८४६८५।०।६।३७
 १४४ अथ चंद्र: ॥ अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को चंद्रभगण ५७७
 ५३३३६ से गुणके ४१२५९२१४७०६३२०५०७६५६ फिर उक्त
 भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण: २६१४७८८५५०७ और भगणशेषको ३२
 २३८८६० फिर १२ से गुणके ३८६८६६६३२० उक्त भूदिनोंके
 भागसे लब्ध राशि २ राशि शेष ७१२८३०६६४ को ३० गुणके २१
 ३८४९१९९२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १३ अंशशेष ८७१९
 ८८१५६ को ६० गुणके ५२३१९२८९३६० उक्त भूदिनोंके भाग
 से कला ३३ कला शेष: २४८००१०३६ को ६० गुणके १४८८०६२
 १६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ९ विकला शेष: ६७८८०
 १७०८ एवं भगणादिमध्यमचंद्र: २६१४७८८५५०७।२।१३।३३।९

अथ चंद्रोच्चानयनम्—अहर्गण: ७१४४०४००७८७१ को चंद्रोच्च
 भगण ४८८२०३ से गुणके ३४८७७४१७९८५४६४५८१३ इन्होंके
 उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण २२१०३४४३७ भगण शेष ११०४०
 २९७७ को १२ गुणके १३२४८३५७२४ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध
 राशि: ८ राशिशेष ७०१४९३१०० को ३० गुणके २१०४४७९३०००
 उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १३ अंशशेष ५३१७६१२३६ को ६०
 से गुणके ३१९०५६७४१६० फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला:
 २० कलाशेष ३४७३१७६०० को ६० गुणके ३०८३९०५६०००
 फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला: १३ विकलाशेष: ३२६१२४

२३६ एवं भगणादि उच्च चंद्रः २२१०३४४३३७ । ८ । १३ । २० ।
 २३ अथ चंद्रपातः—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को चंद्रपात भगणों
 २३२२३८ से गुणके १६५९११५७९७९९४५२९८ फिर भूदिनोंके
 भागसे लब्ध भगण १७५१४६००६ भगणशेष ५६९५५०३३० को
 १२ गुणके ६८३४६०३९६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ४
 राशिशेष ५२२९३१६४८ को ३० गुणके १५६८७९७९४४० उक्त
 भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश ९ अंशशेष १४८६७१८९८८ को ६०
 गुणके ८९२०३१३९२८० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला ५६
 कलाशेष ८३९७४०९१२ को ६० गुणके ५०३८४४५४७२० उक्त
 भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ३१ एवं भगणादिचंद्रपातः (राहुः) १७५१
 ४६००६ । ४ । ९ । ५६ । ३१ उक्त राश्यादि इनसे १२शोधनेसे चंद्रपातः
 ७ । २० । ३ । २९ अथ भौमः—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को
 भौम भगण १०३९८९३१७८ से गुणके १६४०८६५९६६२०६३६
 ४६७२ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण १०३९८९३१७८ भगणशेष
 १४२४५८७२८८ को १२ गुणके १७०९५०४७४५६ फिर उक्त
 भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः १० राशिशेष १४१४८६९१७६ को ३०
 गुणके ३९४७६०७५२८० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंशः २५ अंश-
 शेष २८२२९५८० को ६० गुणके १६८७७७४८०० उक्त भूदिनोंके
 भागसे लब्ध कलाः १० कलाशेष १०९८५६७२ को ६० गुणके ६५९
 १४१८८३२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ४ विकला शेष २७
 ९७४७००८ एवं भगणादिभौमः १०३९८९३१७८ । १० । २५ ।
 १० । ४ अथ शीघ्रोच्चबुधः—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को बुध-
 भगणशीघ्रोच्च १७९३७०६० से गुणके १२८१४३०७५५३४२२५
 ९९२६०० फिर उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगणः ८१२१०२३३६७
 भगणशेष १०२८७१२३८४ को १२ गुणके १२३४४५४८६०८ उ-

कभूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ७ राशिशेष १२९९१२३८९ को ३०
 गुणके ३८९७३७१४३६० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २४ अं-
 शशेष ११३६८६४८८को ६० गुणके ६६२२११८९२८० उक्तभूदि-
 नोंके भागसे लब्धकला ४१ कलाशेष १५४६५५८५३२ को ६० गुणके
 ९२७९३५११९२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धविकला ५८ विकलाशे-
 पः १२७४२७७८८९६ एवं भगणादिशीघ्रोच्चबुधः ८१२१०२३३
 ६७ १७ १२४ ४१५८ अथ गुरुः-अहर्गण ७१४४०४००७८
 ७१ को गुरुभगण ३६४१२०से गुणके २६०२००२२७७४६
 ०७५६२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगणः १६४९००९९९
 भगणशेष १५६९६६५४४८ को १२ गुणके १८८३५९८५३७६
 उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ११ राशिशेष ४७८८८९२६८ को
 ३० गुणके ४४३६६६७८०४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २८
 अंशशेष १८४९७८८५६ को ६० गुणके ११०९८९८७३१३६०
 उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः-७ कलाशेष ५३३०५६६४ को ६०
 गुणके ३१९८३९३८४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला २ विकला-
 शेषः ४२५५८१८४ एवं भगणादिमध्यमगुरुः १६४९००९९९ १११
 २८ १७ १२ अथशीघ्रोच्चशुक्रः-अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को
 शीघ्रोच्चशुक्रभगण ७०२२३७६ से गुणके ५०१६६१३५५९१७७१२
 १४९६ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगणः ३१७९३८८३४९ भगण-
 शेष १२५१०४५३५२४ को १२ गुणके १३८५४४२६२८८ उक्त
 भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ८ राशिशेष १२३१०८३६६४ को ३०
 गुणके ३६९३२५०९९२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २३ अंशशेष
 ६४०३९९८७६ को ६० गुणके ३८४२३९९२५६० उक्त भूदिनोंके
 भागसे लब्धकलाः २८ कलाशेष ५५३९६४६८ को ६० गुणके ३३२
 ३७८८२२८ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकलाः २१ विकलाशेषः १०

१६०६८९२ एवं भगणादि शीघ्रोच्चशुक्रः ३१७९३८८३४९।८।२३।
 २३। २१ अथ शनिः—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को शनिभगण
 १४६५६८ से गुणके १०४७०८०६६३२५६३६७२८ उक्त भूदिनोंके
 भागसे लब्ध भगणः ६६३५८८२० भगणशेष १५०२५९३७६८ को
 १२ गुणके १८०३११२५२१६ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ११
 राशिशेष ६७४०२९१०८ को ३० गुणके २०२२०८७३२४० उक्त
 भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १२ अंशशेष १२८५८५९३०४ को ६०
 गुणके ७७१५१५८२४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः ४८ कलाशेष
 १४११४७९६ को ६० से गुणके ८४६८०२२९७६० उक्त भूदिनोंके
 भागसे लब्ध विकला ५३ विकला शेषः १०५८५८४८७६ एवं भगणा-
 दिमध्यमशनिः ६६३५८८२० । ११ । १२ । ४८ । ५३ ।

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते ग्रहमध्यमा-
 नयनं नाम षष्ठो विनोदः ॥ ६ ॥

अथ ग्रहाणां मंदोच्चानयनम्.—अहर्गण ७१४४०४००७८७१ को
 रविमंदोच्च भगण ३८७ से गुणके २७६४७५३५१०४६०७७५ उक्त
 भूदिनोंके भागसे लब्धभगण १७५ भगणशेष ३३८७३११४६०७७ को
 १२गुणके ४०६४७७३७३७५२२९२४ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धराशिः
 २ राशिशेष ९०९९३८०९६९२४ को ३० से गुणके २७२६८१४२
 ९०७७२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १७ अंशशेष ४४३५३९
 ८३२७२० को ६० गुणके २६६७१३८९९०३२०० उक्तभूदिनोंके
 भागसे लब्ध कलाः १६ कलाशेष १३६५७०४६५५२०० को ६०
 गुणके ८१९४२२७९३१२००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धविकलाः
 ५१ विकलाशेष १४६८४७००८४०० एवं भगणादि रविमंदोच्च १७५
 । २ । १७ । १६ । ५१ अथ भौमः—अहर्गणको भौममंदोच्च भगण२०४

से गुणके १४५२३८४१७६०५६८४ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण
 ९२ भगणशेष ५६९९७७४१९६८४ को १२ गुणके ६८३९७२९१५
 ६२०८ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ४ राशिशेषः ५१८७५
 ७८४४२०८ को ३० गुणके १५८४१७३५३२६२४० उक्त भूदिनों
 के भागसे लब्ध अंश १० अंशशेष ६२५५७०४६२४० को ६० गुणके
 ३७५३४२२७७४०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला २२ विकला.
 शेष ११४१०३४८८८००० एवं भगणादिमंदोच्चमौमः ९२। ४।
 १०। २। २२ अथ बुधः—अहर्गणको बुधमंदोच्चभगणोंसे ३६८
 गुणके २६२९००६७४८९६५२८ फिर उक्त भूदिनोंके भागसे
 लब्ध भगण १६६ भगणशेष ९३६३१५४४०५२८ को १२ से
 गुण करके ११५९५७८२७४२३३६ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध
 राशिः ७ राशिशेष ५५०३५७९४६३६ को ३० गुणके १६
 ५१००३८३९००८० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १० अंशशेष
 ७३१५६०११००८० को ६० से गुणके ८३८९३६०६६०
 ४८०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला २७ कलाशेष १२८९
 ८२५२४८८०० को ६० गुणके ७७३८९५१४९२८००० उक्त
 भूदिनोंके भागसे लब्ध विकलाः ४९ विकलाशेष ७१५४१३५६०००
 एवं भगणादिमंदोच्चबुधः १६६। ७। १०। २। ४। ९ अथ गुरुः—अहर्गणको
 गुरुमंदोच्चभगणों ९०० से गुणके ६४२४६३६०७०८३९०० उक्त कल्पभू-
 दिनोंके भागसे लब्ध भगण ४०७ भगणशेष ७५१०५१०८०९०० को
 १२ गुणके ९०१२६१३०५४८०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि ५
 राशिशेष ११२३९१४८०० को ३० गुणके ९०१२६१३०५४८००
 उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २१ अंशशेष ५५४४४३०५६०० को ६०
 गुणके ३३२६६५८३३६००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला २१
 कलाशेष १३०८९७२००० को ६० गुणके ७८१८५३८३२०००

उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ४ विकलाशेष १५०६८६७००८०
 ०० एवं भगणादि मंदोच्चशुक्रः ४०७।५।२१।२१।४ अथ शुक्रः—अहर्ग-
 णको शुक्र मंदोच्चभगण ५३५ से गुणके ३८२२०६१४४२१०९८५
 उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण २४२ भगणशेष ३५०००२९८३४
 ९८५ को १२ गुणके ४२००३५८०१९८२० उक्त भूदिनोंके भागसे
 लब्ध राशि २ राशिशेष १०४४५२२३८०० को ३० गुणके ३१३३
 ५६७०९५६००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्धकला ५१ कलाशेष ८४
 ०१७१७२८००० को ६० गुणके ५०४०७३०३६८००० उक्त भू-
 दिनोंके भागसे लब्ध विकला ३१ विकलाशेष १४९१८५१०२००० एवं
 भगणादिमंदोच्चशुक्रः २४२।२।१९।५१।३१ अथ शनिः—अहर्गणको शनि
 मंदोच्च भगण ३९ से गुणके २७८६२७५६३०६९६९ उक्त भूदिनोंके
 भागसे लब्ध भगण १७ भगणशेष १०३७१५३२३०९६९ को १२
 गुणके १२४४५८३८०७१६२८ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि
 ७ राशिशेष १४००४१३९७५६२८ को ३० गुणके ४२०१२४१९
 २६८८४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २६ अंशशेष ९८६५५५
 ७४०८४० को ६० से गुणके ५९१९३३४४४५०४०० उक्त भूदि-
 नोंके भागसे लब्ध कला ३७ कलाशेष ८१०३८४८१४४०० को ६०
 गुणके ४८६२३०८८८६४००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ३०
 विकलाशेष १२८५५४०२४००० एवं भगणादिशनिमंदोच्चं १७ । ७ ।
 २६ । ३७ । ३० ।

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते ग्रहमंदो

चानयनं नाम सप्तमो विनोदः ॥ ७ ॥

अथ भौमादीनां पातानयनम्—अहर्गणको भौमपात भगण २१४ से गुण
 के १५२८८२४५७६८४३९४ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण ६९

भगणशेष १४०२३४६१९६३९४को १२गुणके १६८२८१५४२०१८
 ४० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि १० राशिशेष १०४८९७६०७६
 ७२८ को ३० गुणके ३१४६९२८२३०१८४० उक्त भूदिनोंके भागसे
 लब्ध अंश १९ अंशशेष १४८८४३५६९८४० को ६० गुणके ८९३
 ३०६१४१९०४०० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः ५६ कलाशेष ९६
 ७२१५८२२४०० को ६० गुणके ५८०३२९४२३४४००० उक्त
 भूदिनोंके भागसे लब्ध विकलाः ३३ विकलाशेषः १२२७९०७५३६०००
 एवं भगणादिभौमपातः ९६ । १० । १९ । ५६ । ३३ राश्यादि १२ से
 शुद्ध १ । १० । ३ । २४ ॥ अथ बुधः ॥ अहर्गणको बुधपात भगण
 ४८८ से गुणके ३४८६२९१५५८४१००८ उक्त कल्पभूदिनोंके
 भागसे लब्ध भगण २२० भगणशेष १४८७२३३६८८१०४८
 को १२ गुणके १७८४६८०४१७२५६ उक्त भूदिनोंके भागसे
 लब्ध राशि ११ राशिशेष ४८९७०८०६४५७६ को ३० गुणके
 २४६९१२४११९३७२८० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः
 १८ कलाशेष ९९६३६८२१२८००० को ६० गुणके ५९७८२०९
 १७६८००० उक्तभूदिनोंके भागसे लब्ध विकलाः ३७ विकलाशेष १३९९
 १३३१३२००० एवं भगणादिजातः बधपातः २२० । ११ । ९ । १८ । ३७
 राश्यादि १२ से शुद्ध ० । २० । ४१ । २३ ॥ अथ गुरुः ॥ अहर्गणको गुरुपात-
 भगण १७४ से गुणके १२४३०६२९७३६९५५४ उक्तकल्पभूदिनोंके
 भागसे लब्ध भगण ७८ भगणशेष १२२८७०६०५५५४ को १२गुणके
 १४७२४४८१४२६६४८ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशिः ९ राशिशेष
 ५४३२२०९७४६४८ को ३० गुणके १६२९६६२९२३९४४० उक्त
 भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १० अंशशेष ५१७४५०९५९४४० को ६०
 गुणके ३१०४७०५७५६६४०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः ४०
 कलाशेषः १०६६६१८८३४४०० को ६० गुणके ६३९९७१३००

६४००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ४० विकलाशेष ८८०४१
 ६९४४००० एवं भगणादिगुरुपातः ७८ । ९ । १० । ४० । ४० राश्यादि
 १२ से शुद्धः २ । १९ । १९ । २० अथ शुक्रः—अहर्गणको शुक्रपात भगण
 ९३० से गुणके ४५०६८१९१०७५१३ उक्तकल्प भूदिनोंके भागसे
 लब्ध भगण २०४ भगणशेष १३१६३४५२८३५१३ को १२ गुणके
 १५७९६१४३४०२१५६ उक्तकल्प भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि १०
 राशिशेष १६९६५१२२२१५६ को ३० गुणके ५०८९५३६६४६८०
 उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश ० अंशशेष ५०८९५३६६४६८ को ६०
 गुणके ३०५३७२१९८८०८०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कलाः १६
 कलारोप ५५६७८११४८८०० को ६० गुणके ३३४०१८६८९२
 ८००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकलाः २१ विकलाशेषः २७०५९
 ४५४०००० एवं भगणादि शुक्रपातः २०४ । १० । ० । १९ । २१
 राश्यादि १२ से शुद्धः १ । २९ । ४० । ३९ अथ शनिः—अहर्गणको
 शनिपात भगण ६८२ से गुणके ४७२९३५४५३१०६०२ उक्त कल्प
 भूदिनोंके भागसे लब्ध भगण २९९ भगणशेष ११३८०२२६३८६०२
 को १२ गुणके १३६५६२७१६६३२१४ उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध-
 राशि ८ राशिशेष १०३२९२९०३९२३४ को ३० गुणके ३०९८७८
 ७१११७६७२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश १९ अंशशेष १००७
 ४३२४४४७२० को ६० गुणके ६०४४५९४६६८३२०० उक्त
 भूदिनोंके भागसे लब्ध कला ३८ कलारोप ४८५०६९२१९२०० को
 ६० गुणके २९१०४१५३१५२००० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध वि-
 कला १८ विकलाशेष ७०१६२२२४८००० एवं भगणादि शनिपातः २
 ९९ । ८ । १९ । ३८ । १८ राश्यादि १२ से शुद्धः ३ । १० । २१ ।
 ४२ इति भौमादीनां पातानयनम् । अथ संवत्सरानयनम्—गुरुके गत भगण
 १६४९००९९९ को १२ गुणके १९७८८११९८ फिर वर्तमानराशि

११को जोडके १९७८८११९९९फिर ६० के भागसे लब्ध ३२९८०
१९ इतने विजयादि संवत्सर गया. और शेषांक ५९ यह रहा और मध्य-
गुरुके अंशादि २८ । ७ । २ कौनै १२ गुणके ३३७ । २४ । २४ फिर
३० भागसे लब्ध गतमासादि ११ । ७ । २४ । २४ शेषांक ५९ में २६
जोडनेसे प्रभवादि भुक्त संवत्सर २५ । ११ । ७ । २४ । २४ यह हुवा.

अथ देशांतरानयनम्-भूव्यासयोजन १६०० के वर्ग २५६००००
को १० गुणके २५६००००० इसका मूल ५०५९ यह भूपरिधि हुई.
इस्को लंबज्या ३१०० से गुणके १५६८२९००० त्रिज्या ३४३८ के
भागसे लब्ध स्वदेश काशीकी स्पष्ट भूपरिधि ४५६२ रविगति ५९ । ८
को देशांतर योजन ६० से गुणके ३५४८फिर स्पष्ट परिधिके भागसे लब्ध
कलादि देशांतरफल ०।४७ सूर्यका हुवा. ऐसे चन्द्र १०।२४ भौम ०।२४
बुध ३ । १४ गुरु ० । ४ शुक्र शीघ्रोच्च १ । १६ शनि ० । २ चंद्रोच्च ०
। ५ चन्द्रपात ० । ३ उक्त देशांतर फलको मध्य रेखासे काशी पूर्व होनेके
सबव ग्रहोंमें हीन किया. जब देशांतरसंस्कृत मध्यम ग्रह हुवा. सूर्य ०।६।
३६ । ५८ चन्द्रः २ । १३ । २२ । ४१ चन्द्रउच्च ८ । ११ । ४६ ।
२६ पातः ७ । १८ । २९ । ५० मंगलः १० । २५ । ० । ४० बुधः
११ । २४ । ५९ । ३४ बृहस्पतिः ११ । २४ । ४२ । ३४ शुक्रः ८ ।
१८ । ४२ । ० शनिः ११ । १७ । २९ । ५७ ॥

इति श्रीमनुरचिते द्वैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते भौमादिपातसंवत्सर-
देशांतरानयनं नाम अष्टमविनोदः ॥ ८ ॥

अथ ग्रहाणां क्रमेण स्फुटीकरणम्-मध्यम रविः १० । ६ । ३४ ।
५८ को मंदोच्च २ । १७ । २६ । ५२ में हीन किया जब मंदकेन्द्र २।१०
। ४१ । ५४ हुवा यह विषम पद होनेसे यही मत भुज २ । १० । ४१ ।
५४ और गम्भुज ० । १९ । १८ । ६ हुवा. इसकी कोटी ० । १९ ।

१८ । ६ यही है. भुजलिता ४२२४१। ५४ के तत्त्वलोचन २२५ भागसे लब्ध १८ तन्मितखंडज्या ३१७७ यह गत संज्ञक है. और गम्य संज्ञक ३२५६ इन दोनोंका अंतर ७९ इस्से शेष १९१ । ५४ इस्से गुणके ५१ ६० । ६ तत्त्वलोचन २२५ के भागसे लब्ध ६७ । २२ को गतभुजज्या पिंडमें जोड़े स्पष्टज्या ३२४४ । २२ यह हुई अथ स्पष्टपरिधि लानेकी विधिः—युग्मांत रविमंदपरिध्यंश १४३७ ओजांतपरिध्यंश १३ । ४० ओजयुग्मांत २० से भुजज्यागुणके ६४८८७ । २० त्रिज्याके भागसे लब्ध कलादि १८ । ५२ ओजवृत्तयुग्म वृत्तसे अधिक होनेके कारण युग्मवृत्तमें ऋण किये स्पष्ट परिधिः १३।४१।८भुजज्यागुणके४४०१भगणांशके भागसे लब्ध भुजफल १२३ । २० यही धनु और यही कलादि मंदफल कहलाता है यहां मेपादि केंद्रवशसे मध्यमरविमें योगसे स्पष्ट रवि ० । ८ । ४०। १६ अथ गत्यानयनम्—रवि केंद्रगति ५९ । ८ दोर्जांतर ७९ से गुणके ४६७१३२ तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध २० । २४५ को स्वमंदपरिधिसे १३ । ४१०८ गुणके २८३५९ भगणांशके भागसे लब्ध कलादि गतिफल० । ४७ मकरादि केंद्रवशसे मध्यगतिमें ऋण करनेसे रवि स्पष्टगतिः ५८ । २१ अथ चन्द्रः—मध्यम चन्द्रः २ । १३ । २२ । ४५ मंदोच्च ८ । ११ । ४६ । २६ मंदकेंद्र ५ । २८ । २३ । ४१ भुज ० । १ । ३६ । १९ भुजज्या ९६ । १९ भुजज्यांतर २२५ स्पष्टमंदपरिधिः ३१ । ५९ । २६ मंदफल कलादि ३ । २५ मेपादि केंद्र होनेसे मध्यम चन्द्रमें धन किया जब स्पष्टचंद्रः २ । १३ । २६ । १० अथ गतिः चन्द्रमध्यमगतिः ७ । ० । ३५ में उच्चगति १६ । ४१ हीनकिया मंदकेन्द्रगतिः ७८३ । ५४ को स्पष्ट परिधि ३ । ५९ । २६ से गुणके २५० ८८ भगणांशके भागसे लब्ध कलादि १९ । ४२ कर्कादि केन्द्रवशसे मध्य गतिमें धनकिये चंद्रस्पष्टगतिः ८६० । १६ अथ भौमः—भौम मध्यमः १० । २५ । ० । ४० भुजज्या २२८१ । ४० शीघ्रोच्च० । ६ । ३४ ।

५८ शीघ्रकेन्द्रं १ । ११ । ३४ । १८ भुज १ । ११ । ३४ । १८
 कोटि १ । १८ । २४ । ४२ भुज्या ३२८१ । ४० दोर्ज्यांतर १६४
 कोटिज्या २२७१ । ४२ कोटिज्यांतर १५४ स्पष्टशीघ्रपरिधिः २३३ ।
 ० भुज्या कोटिपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध भुजफल १४७
 ६२१ एवं कोटिफल १६६५ । ३१ मकरादि केन्द्रसे त्रिज्याधन ५१०
 २ । ३१ हुवा इसका वर्ग २६०३५६७६ । २० भुजफलके वर्ग
 २ । ७९६०९ । १९ दोनों वर्गों के योग २८ । २१५२८५ । २९
 इसका मूल चलकर्ण ५३११ । ४८ यह हुवा त्रिज्यागुणित भुजफल
 ५०७५६९० । १८ के चलकर्णके भागसे लब्ध १५५ । ३३ इसका
 धनु, वही शीघ्र फल कलादि १६८ । ३६ इसका आधा ८४ । १८ मेपा-
 दिकेन्द्रसे मध्यम भौममें धन किये प्रथम कर्म संस्कृत भौम ११ । ३ ।
 ४ । ५८ अथ द्वितीय कर्म मांदसंज्ञकः प्रथम कर्मसंस्कृत भौमः ११ । ३ ।
 ४ । ५८ मंदोच्च ० । १० । २ । २२ मन्दकेन्द्र ५ । ६ । ५७ । २४
 भुज० । २३ । २ । ३६ भुज्या ९३४४ । ४१ भुज्यांतर २०५
 स्पष्टमंदपरिधि ७३ । ५० परिधिसे गुणके भुज्याको फिर भगणांशके
 भागसे लब्ध भुजफल २७५ । ४७ इसका आधा १३८ मेपादि केन्द्र वशसे
 प्रथम संस्कृत भौममें धनकिये द्वितीयक० सं० भौमः ११ । ५ । २१ ।
 ५८ अथ तृतीयकर्ममांदसंज्ञकः द्वितीय कर्मज भौमः ११ । ५ । २२ । १८
 मंदोच्च ४ । १० । २ । २९ मंदकेन्द्र ५ । ४ । ३९ । २४ भुज० । २५ ।
 २० । ३६ भुज्या १४७० । २६ भुज्यांतर २०५ स्पष्टमंदपरिधिः ७३ ।
 ४३ परिधिसे गुणके भुज्याको भगणांशके भागसे लब्ध भुजफल ३०१ ।
 ५ इसीकी धनु यही लिप्तादिमंदफल ३०१ । २३ को मेपादि केन्द्रवशसे
 मध्यम भौममें धन किये मंद स्पष्ट भौमः ११ । ० । २ । ३ अथचतुर्थ कर्म-
 शीघ्रसंज्ञकमंदस्पष्टभौमः ११ । ० । २ । ३ शीघ्रोच्च ० । ६ । ३४ ।
 ५८ शीघ्रकेन्द्र १ । ६ । ३२ । ५५ भुज १ । ६ । ३२ । ५५ कोटि

१ । २३ । २७ । ५ भुजज्या २४६ । ३४ दोर्ज्यांतर १८३ कोटिज्या
 २७६१ । ४१ कोटिज्यांतर १३१ स्पष्टशीघ्रपरिधि २३३ । ३ भुजफल
 १३२५४८ कोटिफल १७८८ । ४७ मकरादिकेंद्रवशसे त्रिज्यामें धन-
 किये ५२२६ । ४७ इसका वर्ग २७३१९२६४ । ३ भुजफलवर्ग १७
 ५७७४५ दोनोंके योग २९०७७००९ । ३८ इसका मूलचलकर्ण ५३
 ९२ । १८ इससे धन किया जब कलादिशीघ्रफल ८५४ । ४ मेषादिकेंद्र-
 वशसे तृतीयकर्मजभौममें धन किये स्पष्टभौमः ११ । १४ । ९६ । ७ अथ
 भौमगतिः-मध्यमगतिः ३१ । २६ शीघ्रोच्चगतिः ५९ । ८ में ऊनकिये प्रथम
 केन्द्रगतिः २७ । ४२ शीघ्रफलकोटिज्या ३३०१ । १० चलकर्ण ५३ ।
 ४८ इनके विवर २०१०३३ से गुणके ५५६९४५ फिर चलकर्णके
 भागसे लब्ध १० । २९ आधा ५ । १० यह शीघ्रफलके अर्द्धकर्णको-
 टिज्याके अधिकता वशसे मध्यगतिमें धनकिये प्रथम कर्मगतिः ३६ । ४१
 इसको मंदोच्चगति ०।० में हीनकिये मंदकेन्द्रगतिः ३६ । ४१ यहां द्वितीय-
 मंदफलावसरमें दोर्ज्यांतर २०५ से गुणके ७५२० । ५ फिर तत्त्वनेत्र ३२
 ५ के भागसे लब्ध ३३ । २५ को स्वमंदपरिधिः ७३ । ५० से गुणके
 २४६७ । १० भगणांशके भागसे लब्ध कला ६ । ५१ इसका आधा ३ ।
 २५ वहां कर्कादिकेन्द्र वशसे जोड़नेसे प्रथम द्वितीय कर्मगतिः ४० । ६
 इसको मंदोच्चगति ०।० में हीनकिये तृतीय मंदकेन्द्रगति ४० । ७ इसको
 दोर्ज्यांतर २०५ से गुणके २२०० । ३० तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध
 ३६ । ३२ इसको स्वमंदपरिधि ७३ । ४३ से गुणके ३२०४४७ भगणां-
 शके भागसे लब्ध कला ८५४ इसको कर्कादिकेन्द्रके कारण मध्यम गतिमें
 धनकिये मंदस्पष्टगतिः ४० । २० अथ चतुर्थकर्म इसको शीघ्रोच्चगतिः ५९ । ८ में
 हीनकिये १८ । ४८ हुये शीघ्रफल कोटिज्या ३३३१ । २४ कर्ण ५३
 ९२ । १८ इन्होंको विवर २०६० । ५४ से गुणके ३८७४५ चलकर्णके
 भागसे लब्ध ७ । ११ यहां शीघ्रफल कोटिज्याकर्णसे अधिक होनेके कारण

कर्म ११। २५। ५६। १३ अथ द्वितीय कर्मः—प्रथम कर्म ११।
 २५। ५६। १३ मंदोच्च ५। २१। २१। ४ मंदकेन्द्र ५। २५।
 २४। ५१ भुज ०। ४। ३५। ९ भुजज्या २७। ४। ५५ दो-
 ज्योतर २२४। स्पष्टमंदपरिधि ३२। ५५ स्पष्टमंदपरिधिसे गुणके भगणांशके
 भागसे लब्ध २५। ८ इसका धनु वही मंदफल २५। ८ इसका आधा १२। ३४
 मेपादिकेंद्रसे प्रथमकर्ममें धन किये द्वितीय कर्म ११। २६। ८। ४७
 अथ तृतीयकर्म द्वितीयकर्म ११। २६। ८। ४७ मंदोच्च ५। २१।
 २१। ४ मंदकेन्द्र ५। २५। १७। १७ भुज ०। ४। ४७। ४३ भुजज्या
 २८। २६ दोज्योतर करके जिसका चाप िगा वही मंदफल २६। १७ को
 स्पष्टमंद परिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध २६। १७ इसको मेपादि
 केंद्रसे मध्यम गुरुमें धनकिये तृतीय कर्म ११। २५। २५। ५१ अथ
 चतुर्थ कर्म तृतीयकर्म ११। २५। २५। ५१ शीघ्रोच्च ०। ६। ३४।
 ५८ शीघ्रकेन्द्र ०। ११। ९। ७ भुज ०। ११। ९। ७ कोटि २। १८
 ५०। ५३ भुजज्या ६६५। १२ कोटिज्या ३३७२। ५८ स्पष्टशीघ्र-
 परिधिः ७०। २३ भुजफल १३०। ४ कोटिफल ६५९। २७ मकरा-
 दिकेंद्रसे त्रिज्यामें धनकिये ४०९७। २७ इसका वर्ग १६७८९०९६
 भुजफलवर्ग १६९१७। २० दोनोंका योग १६८०६०१३। ५० इसका
 मूल चलकर्ण ४०९९। ३० त्रिज्याभ्यस्तभुजफलके चलकर्णको भागसे
 लब्ध २३३। २९ इसका धनु वही शीघ्रफल १३३। २९ मेपादिकेंद्रसे
 मंदस्पष्टगुरुमें धनकिये गुरुस्पष्टः ११। २७। ३९। २० अथ गतिः गुरुम
 ध्यमगतिः ४। ५९ शीघ्रोच्चगतिः १५। ८ शीघ्रकेन्द्रगतिः ५४। ९ शीघ्रफलको
 टिज्या ३४। ३५। २८ चलकर्ण ४०९८। ५१ दोनोंका विवरसे ६६४।
 २३ गुणके ३५९९७६। २१ चलकर्णके भागसे लब्ध ८। ४७ इसका आधा ४।
 २३ चलकर्णवशसे मध्यगतिमें धनकिये प्रथम कर्मगति ९। ११ अथ द्वितीय-
 कर्म प्रथमकर्मगतिको मंदोच्च ०। ० गतिमें हीनकिये मंदकेन्द्र ९। २१
 इसको दोज्योतरसे गुणके तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध ९। १९ को स्वमं-

दपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध० । ५१ इसका आधा ० । २५
कर्कादिकेन्द्रसे प्रथमकर्म गतिमें धनकिये द्वितीय कर्मगति ९ । ४७ अथ
तृतीय कर्ममंदकेन्द्रगति ९ । ४७ को दोर्ज्यांतरसे गुणके तत्त्वनेत्र २२५ के
भागसे लब्ध ९ । ४४ को स्पष्टमंदपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध
१ । १० कर्कादिकेन्द्रसे मध्यगतिमें धनकिये तृतीय कर्मगति ६ । ९ अथ
चतुर्थ कर्म मंदस्पष्टगति ६ । ९ शीघ्रोच्चगतिमें शाधस शाघ्रकेन्द्रगति ५३ । ०
शीघ्रफलकोटिज्या ३४३३ । ५० चलकर्ण ४०९९३०२ दोनोंका अंतर-
को ६६५ । ४० णके ३५२८० । २० चलकर्णके भागसे लब्ध ८ । ३५
कर्णवशसे मंदस्पष्टगतिमें धनकिये स्पष्टगरुकी गति १४ । ४४ अथ शुक्र
स्पष्टः शुक्रमध्यम ० । ६ । ३४ । ५८ शीघ्रोच्च ८ । १८ । ४२ । ०
शीघ्रकेन्द्र ८ । १२ । ७ । २ भुज २ । १२ । ७ । २ कोटि ० । १७ ।
५२ । ५८ भुजज्या ३२७१ । ० कोटिज्या १०५५ । १७ स्पष्ट शीघ्र-
परिधि २६ । ३ भुजफल ८५२६ । ५४ दोनोंका योग १२७४३८ । ३३ । २८
६० । ५३ इसका वर्ग ७२५८५६७४८ भजफलवर्ग ५८५२६५ । ४०
दोनोंका योग १२७४३८३३२८ इसका मलचलकण ३५६९ । ५१ त्रिज्या-
भ्यस्त भुजफलके चलकर्णके भागसे लब्ध २२७६ । ४ इसका धनु वही भुजफल
२४८७ । ३० इसका आधा १२४३ । ४५ तुलादि केन्द्रसे मध्यम शुक्रम कर्ण-
किये प्रथम कर्म ११ । १५ । ११ । १३ अथ द्वितीय कर्म मंदोच्च २ ।
१९ । ५१ । ३१ मंदकेन्द्र ३ । ४ । ० । १८ भुज २ । १५ । ५९ । ४२
भुजज्या ३४२९ । ३० दोर्ज्यांतर २१ स्पष्टमंदपरिधि ११ । ० स्पष्टमंद-
परिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध १०४ । ४७ इसका चापकिये
वही मंदफल १०४ । ४७ इसका आधा ५२ । २४ मेपादिकेन्द्रसे प्रथम
कर्ममें धनकिये द्वितीयकर्म ११ । १६ । ४३ । ३७ अथ तृतीयकर्म मंदोच्च
२ । १९ । ५१ । ३१ मंदकेन्द्र ३ । ३ । ७ । ५४ भुज २ । १२६ । ५२ ।
६ भुजज्या ३४ । ३२ । ९ दोर्ज्यांतर ७ स्पष्टमंदपरिधि ११ भुज-

मंद स्पष्टगतिमें धनकिये भौमकी स्पष्टगति: ४७ । ३१ अथ बुधस्पष्टक-
 र्नेकी विधि-बुधमध्यम ० । ६ । ३४ । ५८ शीघ्रोच्च ८ । ० । ५३ ।
 ३२ शीघ्रकेंद्र ७ । २४ । १८ । ३४ भुज १२४ । १८ । ३४ कोटि
 १ । ५ । ४१ । २६ भुजज्या २७९२ । १३ कोटिज्या २००४ । ४२
 स्पष्टशीघ्रपरिधि १३२ । १२ भुजफल १०२५ । ० कोटिफल ७३६ ।
 १० कर्कादिकेन्द्र होनेसे त्रिज्यामें ऋण किये २००१।५० इसका वर्ग ७२९
 ९९०३। २१ भुजफलवर्ग १०५०६२५ । ३ दोनोंका योग ८३५०५२
 ८२१ इसका मूल वही चलकर्ण २८८९ । ३४ त्रिज्याभ्यस्त भुज
 फल ३५२३९५० । ० के चलकर्णके भागसे लब्ध १२१९२८
 इसका धनु वही लिमादि शीघ्रफल १२४७।३८ इसका आधा ६२
 २।४९ तुलादिकेंद्रसे मध्यम बुधमें ऋणकिये प्रथम कर्म ११।२६।११।
 ९ अथ द्वितीयकर्म प्रथम कर्मज बुधः ११।२६।११।९ मंदोच्च ७।१० ।
 २७।४९ मंदकेंद्र ७।१४।१६।४० भुज ११।४।१६।४० भुजज्या १३
 ९९।२४ दोज्यांतर १६४ स्पष्टमंदपरिधि: २८।३५ भुजफल १९०।३०
 इसका धनु वही कलादि मंदफल १९।३० इसका आधा ९।४५ तुलादिकें-
 द्रसे प्रथम कर्ममें ऋणकिये द्वितीय कर्म ११।२४।३५।५४ अथ तृतीय
 कर्म द्वितीयकर्म ११।२४।३५।५४ मंदोच्च ७।१०।२७।४९ मंदकेन्द्र ७ ।
 १५।५१।५५ मंदपरिधि २८।३४ भुजफल १९।४७ इसका धनु वही मंद-
 फल १९५।१० तुलादिकेन्द्रसे मध्यमबुधमें ऋणकिये तृतीयकर्म ०।३।
 १९।४७ अथ चतुर्थ कर्म ०।३।१९।४७ शीघ्रोच्च ८।०। ५३।३२ शीघ्र-
 केन्द्र ७।२७।३३।४५ कोटि १।२।२६।१५ भुजज्या २९००।३९
 कोटिज्या १८४३।८ स्पष्टशीघ्रपरिधि: १।३२।१० भुजफल १०६४।
 ५४ कोटिफल ६७६।४० कर्कादिकेन्द्रसे त्रिज्याऋण २७६।१२० इसका
 वर्ग ७६२४९६१।४७ भुजफलवर्ग ११३४१०२ दोनोंका योग ८७५८
 ९७३।४७ इसका मूलचलकर्ण २९५५९।३३ त्रिज्याभ्यस्त भुजफल ३६

६११२३।१२ के चलकर्ण भागसे लब्ध १२३७।३ इसका धनुवही लिता-
 दिशीघ्रफल १२६६।२८ तुलादिकेन्द्रसे मंदस्पष्टमें ऋणकिये स्पष्टबुधः ११।
 १२।१३।९। अथ बुधगति लानेकी विधि—बुधमध्यमगतिः ५९।८ शीघ्रोच्चग-
 तिः २४५।३२ शीघ्रकेन्द्रगतिः १८६।२४ शीघ्रफल कोटिज्या ३२१२।
 ५६ चलकर्ण २८८९।४३ दोनोंके अंतरके चलकर्णके भागसे लब्ध २०
 ५ इसका आधा १०।२५ कर्ण वशसे मध्यगतिमें ऋणकिये प्रथम कर्म
 गति ४८।४३ अथ द्वितीय कर्म मंदोच्चगतिमें ० हीन प्रथम कर्मगतिको कि-
 ये मंदकेन्द्रगति ४८।४३ दोर्ज्यांतरसे गुणके तत्त्वनेत्र २२५ के भागसे लब्ध
 ३५।३० स्वमंदपरिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध २।४९ इसका
 आधा १।२४ केन्द्रवशसे प्रथम कर्ममें धन किये. द्वितीय कर्म गतिः ५०।
 ७ अथ तृतीय कर्म द्वितीय कर्म गति ५०।७ को मंदोच्च गतिमें हीनकिये
 ५०।७ इसको दोर्ज्यांतरसे गुणके तत्त्वनेत्रके भागसे लब्ध ३४।१७ को
 फिर स्वमंद परिधिसे गुणके भगणांशके भागसे तृतीय कर्मगति ६१।५१
 अथ चतुर्थ कर्म इसको शीघ्रोच्च गतिमें हीनकिये चतुर्थ शीघ्रकेन्द्रगति १८
 ३।४१ शीघ्रफलकोटिज्या ३२०६।१९ चलकर्ण १२९५९।३३ इसका
 विवर करके फिर उक्त शीघ्रकेन्द्रगतिको गुणके चल कर्णके भागसे लब्ध
 १५।१९ चलकर्णवशसे मंदस्पष्टगतिमें ऋणकिये बुधस्पष्टगतिः ४६।३२
 अथ गुरुः स्पष्टगुरुमध्यम ११५९।५९।३४ शीघ्रोच्च ०।६।३४।५८ शीघ्र-
 केन्द्र ०।११।३५।२४। भुज ०।११।३५२४ कोटि २।१८।२४।
 २६ भुजज्या ६९०।५६ कोटिज्या ३३६७।२२ स्पष्टशीघ्रपरिधि
 ७०२४ भुजफल १३५।७ कोटिफल ६५९।३० मकरादिकेन्द्रसे
 त्रिज्यादि धनकिये ४०९६।३० इसका वर्ग १६७८२३२२।१५ भुज-
 फलवर्ग १८२५६।३१ दोनोंका योग १६८००५६८।४६ के चल-
 कर्णके भागसे लब्ध ११३।१९ इसका चाप धनु शीघ्रफल ११३।१९
 इसका आधा ५६।५९ मेपादि केन्द्रसे मध्यम गुरुमें धन किये प्रथम

फल १०४ । ५१ इसका चाप वही मंदफल १०४५ । ५२ मेषादिकेंद्रसे मध्यम शुक्रमें धनकिये तृतीय मंदस्पष्टशुक्र कर्म ० । ८ । १९ । ५० अथ चतुर्थकर्ममंदस्पष्ट ० । ८ । १९ । ५० शीघ्रोच्च ८ । १८ । ४२ । ० शीघ्रकेंद्र ८ । १० । २२ । १० भुज २ । १० । २२ । १० कोटि ० । १९ । ३७ । ५० भुजज्या १२३७ । २७ कोटिज्या ११५४ । १८ स्पष्ट शीघ्रपरिधिः २६० । ७ भुजफल ३३३९ । १२ कोटिफल ८३४ । २ कर्कादि केन्द्रसे त्रिज्यामें ऋणकिये २६०४ इसका वर्ग ६७००८१६ भुज फलवर्ग ५४७१८५६ । ३८ दोनोंका योग ७१२६२६ ७२५४ इसका मूल चलकर्ण ३५०० । २२ त्रिज्याभ्यस्त भुजफल ७१८५८०४२१६९ । ३६ चलकर्णके २२९७।३१ भागसे लब्ध २२९७।३१ इसका चाप वही शीघ्रफल कलादि २५१६ । ५२ तुलादिकेंद्रसे मंदस्पष्टशुक्रमें ऋणकिये स्पष्टशुक्रः १० । २६ । ५२। ५८ अथ गतिः मध्यमगतिः ५९ । ८ शीघ्रगतिः ९६ । ८ शीघ्रकेंद्रगतिः ३७ । ० शीघ्रफल कोटिज्या २५७६ । ४० चलकर्ण ३५६९ । ५१ इन्होंने विवरसे शीघ्रकेंद्रगतिको गुणके २३०७ । ३४ चलकर्णके भागसे लब्ध ० । ३८ इसका आधा ० । १९ कर्णवशसे मध्यगति में धनकिये प्रथम कर्म गति ५९ । २७ अथ द्वितीयकर्म इसको मंदोच्चगति ० । ० में हीनकिये द्वितीयमंदकेंद्र गति ५९ । २७ दोज्यांतर २२ से गुणके १३०७ । ५४ तत्त्वेनेत्र २२५ के भागसे लब्ध ५ । ४८ को स्वमंदपरिधिसे गुणके ६३। ४८ भगणांशके भागसे लब्ध ० । ११ इसका आधा ० । ५ कर्कादि केंद्रसे प्रथमकर्म में धनकिये द्वितीयकर्म गति ५९ । ३९ अथ तृतीयकर्म मंदकेंद्रगति ५९ । ३२ को दोज्यांतरसे गुणके तत्त्वेनेत्र २२५ के भागसे लब्ध को लब्ध परिधिसे गुणके भगणांशके भागसे लब्ध ० । ३ मध्यगतिमें धनकिये तृतीय कर्मगति ५९ । ११ शीघ्रोच्च गति में शोधित किये चतुर्थ शीघ्रकेंद्रगति ३६ । ५७ शीघ्रफल कोटिज्या २५५६

। १५ चलकर्ण ३५००। २२ इन्होंका पूर्वोक्त कर्म करनेसे शुक्र स्पष्टगतिः
 ६९ । १५ अथ शनिःस्पष्टः— मध्यमशनिः११ । १७ । २९ । ५७
 शीघ्रोच्च ० । ६ । ३४ । ५८ शीघ्रकेंद्र ० । १९ । ५ । १ भुज ० । १९।
 ५ । १ कोटि २ । १० । ५४ । ५९ भुजज्या ११२३ । ४० कोटिज्या
 ३२ । ४८ । ५८ स्पष्टशीघ्रपरिधि ३९ । २० भुजफल १२२।४६ को-
 टिफल ३५४ । ५८ मकरादिकेंद्रसे त्रिज्यामें धनकिये ३७९२ । ५८
 इसका वर्ग १४३८६५९६ । ८ भुजफलवर्ग १५०७१। ३९ इन दोनोंका
 योग १४४०१६६७ । ४७ इसका मूल चलकर्ण ३६९४ । ५७ त्रिज्या-
 भ्यस्त भुजफलको चलकर्णके भागसे लब्ध ११४। १३ इसका धनु स एव
 शीघ्रफल ११४ । १३ इसका आधा ५७ । ६ मेपादिकेंद्रसे मध्यमशनिमें
 धनकिये प्रथम कर्म १,१ । १८ । ०।३ अथ दितीय कर्म, मंदोच्च ७ । २६।
 ३७ । ३० मंदकेंद्र ८ । ८।१०।२७ भुज २ । ८। १० । २७ भुज-
 ज्या ३१९१ । १२ दोर्ज्यांतर ७९ स्पष्टमंद परिधि ४८ । ५ उक्त प्रका-
 रसे भुजफल ४२६ । १४ इसका धनु वही मंदफल ४२७ । ८ इसका
 आधा २१३ । ३४ तुलादि केंद्रसे प्रथम कर्ममें ऋणकिये द्वितीय कर्म११।
 १४ । ५३।१९ अथ तृतीयकर्म मंदोच्च ७ । २६ । ३७ । ३० मंदकेन्द्र
 ८ । ११ । ४४।१ भुज २ । ११ । ४४ । १ भुजज्या ३२६४ । २३
 दोर्ज्यांतर ६५ स्पष्टमंदपरिधिः ४८ । ४ से गुणके भगणांशके भागसे लब्ध
 भुजफल ३४५ । ५१ का धनुएव मंदफल ४३६ । ४७ तुलादि केन्द्रसे
 मध्यमशनि में ऋणकिये तृतीय मंदकर्मज शनिस्पष्टः ११ । १०।१३ । ०
 अथ चतुर्थकर्म तृतीय कर्म ११।१० । ३ । १० शीघ्रोच्च ० । ६।३४।
 ५८ शीघ्रकेंद्र ० । २६ । २१ । ४८ भुज, ० । २६ । २१।४८ कोटि
 २ । ३।३८ । २ भुजज्या १५२६ । ० कोटिज्या ३०८० । ४७ स्पष्ट
 शीघ्रपरिधि ३९ । २६ भुजफल १६७।९ कोटिफल ३३७।२८ मकरा-
 दिकेंद्रसे त्रिज्यामें धनकिये पीछे इसका वर्ग १४२५४१४८। ३३ भुजफलवर्ग

२७९३९।७दोनोका योग १४२८२०८७।४० इसका मूलचलकर्ण ३७७
 ९।९ त्रिज्याभ्यस्त भुजफलके कर्णके भागसे लब्ध १५२।४ इसका चाप वही
 शीघ्र फल १५२।४ मेपादिकेंद्रसे मंदस्पष्टमें धनकिये शनि स्पष्ट ११।१२।
 ५५।१४ अथ गतिः शनिमध्यगतिः २।० शीघ्रोच्चगति ५९।८ शीघ्रकेंद्रगतिः
 ५७।८ शीघ्रफलकोटिज्या ३४३४।२६ चलकर्ण ३६९४।५७ इन्होंके अंतर
 २६।३१ से गुणके १४८७४।११ चलकर्णके भागसे लब्ध ४।० इसका आधा
 २।० कर्णके वशसे मध्यगतिमें धनकिये प्रथमकर्मगति ४।० अथद्वितीय
 कर्म मंदोच्चगति ०।० में हीनकिये द्वितीयमंदकेंद्रगति ४।० दोज्यांतर
 ७९ से गुणके २।६० तत्त्वेत्र २२५ के भागसे लब्ध १।२४ स्वमंदपरि-
 धिसे ४८।५० गुणके ६७।१९ भगणांशके भागसे लब्ध ०।११
 इसका आधा ०।५ कर्कादिकेंद्रसे प्रथम कर्ममें धनकिये द्वितीय कर्मगति
 ४।५ अथ तृतीयकर्म मंदोच्चगति ०।० में हीनकिये तृतीय मंदकेंद्रगति
 ४।५ दोज्यांतरसे ६५ गुणके २६५।२५ तत्त्वेत्र २२५ के भागसे
 लब्ध १।१० को स्वमंदपरिधि ४८।४ से गुणके ५६।५ भगणां-
 शके भागसे लब्ध ०।९ कर्कादिकेंद्रसे मध्यमगतिमें धनकिये तृतीय कर्म-
 गति मंदस्पष्ट २।९ अथ चतुर्थकर्म मंदस्पष्टगति २।९ से पूर्वोक्तगणित
 करके चलकर्ण ३७७९।९ इसके अंतरसे ३४४।२० गुणके १९६२
 ७।० चलकर्णके भागसे लब्ध ५।१० कर्णके वशसे मंदस्पष्ट गतिमें धन-
 किये शनि स्पष्टगति ७।१९ सब इकठा ग्रहस्पष्ट यहां लिखेहैं, सूर्य ०।
 ८।४०।१६ गति ५८।२१ चंद्र २।३०।२६।१० गति. ८६
 ०।१८ मंगल ११।१४।१६।७ गति. ४०।३१ बुध ११।
 १२।१२।१९ गति ४६।३२ गुरु ११।२७।३९।२० गति.
 १४।४४ शुक्र १०।२६।२२।५८ गति ६९।७ शनिः ११।
 १२।५५।१४ गतिः ७।१९ ॥

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे स्वभाषाविभूषिते ग्रहस्पष्टी-

करणं नाम नवमविनोदः ॥ ९ ॥

अथ भौमादिकोंके पातस्पष्टकरनेकी विधि—भौमः १।१०। ३। २४
चतुर्थशीघ्रफल १४। १४। ४में युक्तकिये स्पष्ट भौमपातः ०। २। १७
। १८ अथ बुधपातः ०। २०। ४१। २३ तृतीयमंदफल ३। १५।
१० युक्तकिये स्पष्टबुधपात १०। २३। ५६। ३३ और गुरुपात. २।
१९। ४०। २ को चतुर्थ शीघ्रफल २। १३। २९ में युक्तकिये
स्पष्टगुरुपात २। २१। ५३। ४९। और शुक्रपात १। २९। ४०।
३९ में तृतीयमंदफल ०। ४४। १२ में ऋणकिये स्पष्ट शुक्रपातः १।
२८। ५६। २७ और शनिपात ३। १०। २१। ४२ में चतुर्थ शीघ्र-
फल २। ३२। ४ युक्तकिये स्पष्टशनिपात ३। १२। ५६। ४६ ॥

अथ चंद्रादिकोंके विक्षेपानयनविधिः—स्पष्टचंद्रः २। १३। २६। १०
चंद्रपात ७। १८। २९। ५० चंद्रोनपातकेन्द्र ५। ४। ५३। ४०
भुज ०। २५। ६। २० भुज्या १४५७। २६ चंद्रमेपादिके वशसे
याम्य विक्षेप ११। २८ चंद्रकी स्पष्टलिता २७० से गुणके ३९३५०७।
० फिर त्रिज्याके भागसे लब्ध मेपादिकेंद्रवशसे याम्यचंद्र विक्षेप ११४।
२८ अथ भौमविक्षेपलानेकी विधिः—भौमस्पष्ट ११। १४। १६। ७ भौम-
पात १। २४। १७। २८ भौमोनपातकेन्द्र २। १०। १। २० इसकी
भुज्या. ३२३०१८ भौमविक्षेपलिता ९० से गुणके २९०७१२। ०
चलकर्ण ५३९२। १८ के भागसे लब्ध मेपादिकेंद्रसे याम्य भौमविक्षेपः ५३
। ५४ अथ बुधशीघ्रोच्च ०। ०। ५३। ३२ बुधपात १०। २३। ५६।
३३ शीघ्रोनपातकेन्द्र ४। २३। ३। १ भुज १। ६। ५६। २९ भुज-
ज्या २० ६६। ९ बुधविक्षेपलिता १२० से गुणके २४७९३८। ०
फिर चलकर्ण २९५९। २३ के भागसे लब्ध मेपादिकेंद्रसे याम्यबुध-
विक्षेप ८३। ४६ अथ गुरुः स्पष्टगुरुः ११। २७। ३९। २०
स्पष्टपात २। २१। ५३। ४९ गुरुनपातकेन्द्र २। ४। १४। २९
भुज्या ३४। १९। १३ गुरुविक्षेपलिता ६० से गुणके २०५१५३। ०
चलकर्णके ४०९९। ३० भागसे लब्ध मेपादिकेंद्रसे याम्यगुरुविक्षेप ५०। २

अथ शुक्रःशुक्रशीघ्रोच्च८।१८।४२।० स्पष्टपात १।२७।५५।४७शीघ्रोचपा-
तकेन्द्र५।९।१३।४७भुज२।२०।४६।१३भुजज्या१२१८०८को शुक्रवि-
क्षेपलिमा १२० से गुणके १४६१७६१७६।० चलकर्ण ३५००२२के भागसे
लब्ध मेपादिकेंद्रसे याम्यशुक्रविक्षेप ४७।४५ अथ शनिः शनिःस्पष्टः ११।
१३।४५।१४ स्पष्टशनिपात ३।१२।५२।४६ शन्यूनपातकेन्द्र
४।०।८।३२ भुज १।२९।५१।२८ भुजज्या २९७३।२९
शनिविक्षेपलिमा १२० से गुणके ३५६८१८।० फिर चलकर्ण ३७७९।
९ के भागसे लब्ध मेपादिकेन्द्रसे याम्यशनिविक्षेपः ९४।२५ ॥

अथ सूर्यादिकोंके क्रांतिसाधनविधिः—स्पष्टरविः ०।८।३८।
१८ सायन०।२४।५४।१८ भुजज्या १४४६।२८ परमापक्रम-
ज्या १३९७ से गुणके २०२०७१३।५६ फिर त्रिज्याके भागसे लब्ध
सूर्यक्रांतिज्या ५८७।४५ इसका धनुः वही सायन सूर्यके मेपादिसे
सूर्यकी उत्तर क्रांति लिमा ५९०।३७ अथ चन्द्रः—स्पष्टसायनचंद्रः २।
२९।५९।१० भुजज्या ३४३८।० क्रांतिज्या १३९७ इसका धनु
वही सायन मेपादिसे उत्तरचंद्र क्रांतिलिमा १४४० अथ भौमः—सायन-
भौम ०।०।३२।७ भुजज्या ३२।७ को परमापक्रमज्यासे गुणके
४४८६७।० त्रिज्यासे लब्ध १३।३ इसका चाप वही सायन मेपादि
भौमके उत्तरक्रांतिलिमा. अथ बुधः—सायनबुधः ११।२८।२९।१९
भुज०।१।३०।३१ भुजज्या ९०३१ परमक्रांतिज्या ३६।४७
फिर उक्त गणितसे चाप वही सायन बुधके तुलादिवशसे याम्य क्रांतिलिमा
३६।४७ अथ गुरुः सायनगुरुः ०।१३।५५।२० भुजज्या ८२४।
५५ क्रांतिज्या ३३५।११ उक्तगणितसे चाप वही सायन गुरुके मेपादि-
वशसे सौम्यक्रांतिलिमा ३३५।४२ अथ शुक्रः सायनशुक्रः ११।१२
३८।५८ भुज ०।१७।२१।२ भुजज्या १०२४।४४क्रांतिज्या
४१६।८ इसका चाप वही सायन शुक्रके तुलादिवशसे याम्य क्रांतिलिमा

४१७ । ० अथ शनिः सायनशनि ११ । २९ । १ । ४० भुज ० । ० ।
 ५८ । २० भुज्या ५८ । २० क्रांतिज्या २३ इसका चाप वही तुलादि
 शनिसायन दिवससे याम्य क्रांतिलिमा २३ । ५३ अथ इन्होंके स्पष्टक्रांति
 करनेकी विधि रविके शरको अभाव होनेसे क्रांति पूर्वाक्त है वही स्पष्ट है.
 अथ चंद्रः चंद्रयाम्यविक्षेप ११४ । २८ सौम्य क्रांतिलिमा १४४० क्रांति
 की और विक्षेपकी भिन्नदिशावशसे दोनोंका अंतरकिये स्पष्ट चंद्रक्रांतिः १३
 २५ । ३२ अथ भौमः भौमयाम्यविक्षेपः ५३ । ५४ सौम्य भौमकी क्रांति-
 लिमा १३ । २ उक्त दोनोंके दिग्भेदसे अंतरकिये स्पष्ट भौम क्रांति ४० ।
 ५२ अथ बुधः बुधयाम्यविक्षेप ८३ । ४६ बुधकी याम्य क्रांतिलिमा ३६ ।
 ४७ उक्त दोनोंके समानदिशावशसे योगकिये बुधकी क्रांतिलिमा १२० ।
 ३३ अथ गुरुः याम्यगुरुविक्षेप ५० । २ सौम्यगुरुक्रांति ३३५ । ४२
 उक्त दोनोंके दिग्भेदसे अंतरकिये स्पष्टगुरुक्रांतिः २८५ । ४० अथ शुक्रः
 याम्यशुक्रविक्षेप ४१ । ४५ याम्यशुक्रक्रांति ४१७ । ० उक्त दोनोंके
 एक दिशासे योगकिये स्पष्ट शुक्रक्रांतिः ४८५ । ४५ अथ शनिः याम्य-
 शनिविक्षेप ९४ । २५ शनियाम्य क्रांति ३३ । ५३ क्रांतिविक्षेपकी सम-
 जातिवशसे योगकिये स्पष्ट शनिक्रांति ११८ । १८ अथ सूर्यादिकोंके
 दिनमानके लानेकी विधिः सायन सूर्य ० । २४ । ५४ । ३८ सूर्यकी
 स्पष्टगतिः ५८ । २७ को ग्रहप्राणोंसे १३२५ गुणके ७७३१३ । ४५
 स्वखाष्टक १८०० के भागसे लब्ध ४२ । ५८ को चक्रासुमें २१६००
 युक्तकिये रविका स्वाहोरात्रसव २१६४२ । ५७ रविकी स्पष्टक्रांति
 ५९० । ३७ इसकी क्रमज्या ५८७ । ४५ उत्क्रमज्या ५२ । ७ इन्होंमें
 हीन त्रिज्याको किये दिन व्यास दल उत्तर ३३७९ । ३४ इन्होंके १२ भागसे
 लब्ध कुज्या २८१ । ३८ को त्रिज्यासे गुणके ९६८२५५ । २४ बुज्याके
 ३३८५५३ भागसे लब्ध चरज्या २८५ । ५८ इसका चाप वही उत्तर चरासव।
 । २८ । ६ । १४ यहां उत्तर चरासवके कारण स्वाहोरात्र चतुर्भागमें १४१० । ४४

रवि दिनार्द्धासव १६९६।५८ और उक्त चरासवको हीनकिये रात्र्यर्द्धासव ५१२४।३० दिनार्द्धासवको द्विगुणा किये दिनमानासव ११३९३।५६ और उक्त रात्र्यर्द्धासवको द्विगुणित किये रात्रिमानासव १०२४९।० दिनार्द्ध १५।४९।३० दिनमान ३१।३९ रात्र्यर्द्ध घटि १४।१४।५ रात्रिमान २८।२८।१० अहोरात्रिमान घटिका ६०।७।१० अथ चन्द्रः॥ सायनचंद्र २।२९।५२।१० स्पष्टगति ८।६०।१६ को ग्रहोदयप्राणों १८२० से गुणके १५६६५६८५।२० फिर खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध ८६९।४९ को चक्रासुमें २१६०० योगकिये चंद्रके स्वाहोरात्रासव २२४६९।४९ चंद्र उत्तरक्रांति स्पष्ट १३।२५।३३ इसकी क्रमज्या १२९२।९ उत्क्रमज्या २४२।६४ इनको त्रिज्यासे हीनकिये दिनव्यास दल उत्तर युज्यासंज्ञक ३१८५।३६ क्रांतिज्या १२९२।२ को विषुवद्भा ५।४५ से गणके १४२९।५२ फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या ६१९।१ को त्रिज्यासे गुणके २१२८६३७।४२ फिर युज्या ३१८५।३६ के भागसे लब्ध चरज्या ६६८।१२ इसका चापकिये चरासव सौम्य ६७२।९ यहाँ क्रांतिके कारण स्वाहोरात्रचतुर्भागमें ५६।७।२७ युक्त किये चंद्रका दिनार्द्धासव ६२८९।३६ और उत्तर चरासवकोही नकिये रात्र्यर्द्धासव ४९४५।१८ अथ भौमः सायन भौम ०।०।३२।७ स्पष्टगति ४७।३१ को ग्रहोदयप्राणों १३२५ से गुणके ६२९५९।३५ फिर खखाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध ३४।५८ को उक्त चक्रासुमें युक्तकिये भौमका स्वाहोरात्रासव २१६३४।५८ हुवा भौमकी स्पष्टक्रांति १४०।५२ इसकी क्रमज्या वही ४०।५२ उत्क्रमज्या १।११ इसीको हीन त्रिज्यामें किये युज्या ३४३६।४२ क्रांतिज्या ४०।५२ को विषुवद्भासे ५।४५ गुणके २३५।० फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या १९।३५ को त्रिज्यासे गुणके ६७३२७।३० यज्याके भागसे लब्ध चरज्या १९।३६ इसका चाप वही चरासव याम्य १९।३६ इनको स्वाहोरात्र चतुर्भाग

५४०८ । ४४ -में हीन किये भौम दिनार्द्धासव ५३८९ । ८ और
योगकिये रात्र्यर्द्धासव ५४२८ । २० अथ बुधः॥ सायनबुधः ११ । २८
२९ । १९ स्पष्टगति ४६ । ३२ को ग्रहोदय प्राण १३२५ से गणके ६१६ ।
१४० स्वस्वाष्टैक १८०० के भागसे लब्ध १५ । ३५ को उक्त चक्रासुमें
युक्तकिये बुधका स्वाहोरात्रासव २१६१५ । ३५ स्पष्टगुरुक्रांति २८
५ । ४० इसकी क्रमज्या २८ । ४० । २३ उत्क्रमज्या १२ । ५६ इसी-
को हीनत्रिज्यामें किये दिनव्यासदल उत्तर युज्यासंज्ञकः ३४२४ । ४ क्रांति-
ज्या २८ ५ । २३ को विपुवद्भासे ५ । ४५ गुणके १६४० । ५७ फिर
१२ भागसे लब्ध कुज्या १३६ । ४५ को त्रिज्यासे गुणके ४७०१४६ ।
३० युज्याके ३४२५ । ४ भागसे लब्ध चरज्या १३७ । १६ इसका
चाप वही चरासव उत्तर १३७ । १६ को क्रांतिउत्तर के वशसे स्वाहोरात्र
चतुर्भागमें ५४०२ । ४३ युक्तकिये गुरुका दिनार्द्धासव ५५३९ । ५९
और उक्त स्वाहोरात्रचतुर्भागमें हीनकिये गुरुका रात्र्यर्द्धासव ५२५६२७
अथ शुक्रः॥ सायनशुक्रः ११ । १२ । ३८ । ५८ स्पष्टगतिः ६९ । ७ को
ग्रहोदयप्राणों १३ । २५ से गुणके ९१५७९ । ३५ स्वस्वाष्टैक १८००
के भागसे लब्ध ५० । ५२ को चक्रासुमें युक्तकिये चक्रके स्वाहोरात्रासव
२३६५० । ५२ शुक्रकी दक्षिण स्पष्टक्रांति ४५८ । ४५ इसकी क्रम-
ज्या ४५७ । ३८ उत्क्रमज्या ३० । २६ इसीको त्रिज्यामें हीनकिये दिन
व्यासदल दक्षिण. युज्यासंज्ञक ३४०७ । ३४ क्रांतिज्या ४५७ । ३८
को विपुवद्भा ५ । ४५ से गुणके २६२१ । ३३ फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या
२१९ । १७ को त्रिज्यासे गुणके ७५३८९६ । ६ फिर युज्याके ३४०७ ।
३४ भागसे लब्ध चरज्या २२१ । १५ इसका चाप वही दक्षिणचरासव २२१ ।
१५ को शनिकी दक्षिण क्रांतिवशसे स्वाहोरात्रचतुर्भाग ५४१२ । ४३
में हीनकिये दिनार्द्धासव ५१९८ । २८ युक्तकिये रात्र्यर्द्धासव - ५६६३ ।
५८ अथ शनिः॥ सायनशनिः ११ । २९ । १ । ४० स्पष्टगति ७ । २० को

शहोदयप्रार्णोसे १३२५ गुणके ९७१६ । ४० स्वखाष्टिक १८०० भागसे लब्ध ५ । २४ को चक्रासुमें युक्तकिये शनिके स्वाहोरात्रासव २१६०५ । २४ शनिकी स्पष्ट दक्षिणक्रान्ति ११८ । १८ को विपुवद्रा ५ । ४५ से गुणके ६८० । १४ फिर १२ भागसे लब्ध कज्या ५६।४७ को त्रिज्यासे गुणके १९४८७१ । १८ गुज्याके ३४३४ । १९ भागसे लब्ध चरज्या ५६।४४ इसीका चाप वही याम्य चरासव ५६।४६ को क्रांतिके दक्षिणवर्षा स्वाहोरात्रचतुर्भागमें ५४०११०३ हीन किये दिनार्द्धासव ५३४४।३५ और युक्तकिये रात्र्यर्द्धासव ५४५८ । ७ इति दिनमानम् ॥

अथ अयनांश लानेकी विधि:- दिनगण ७१४४०४००७८७१ को युगायनांश भगणसे ६०० गुणके ४२८६४२४०४२२६०० कल्प भदिन १५७७९१७८२८के भागसे लब्ध भगण २७१६५० भगणशेष १०२६७४६४०० को १२ गुणके १२३२०९५६८०० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध राशि: ७ राशिशेष १२७५५३२००४ को ३० गुणके ३८२६५९६०१२० उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध अंश २४ अंशशेष ३९५९३२२४८ को ६० गुणके उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध कला १५ कलाशेष ८७१६७४६० को ६० गुणके उक्त भूदिनोंके भागसे लब्ध विकला ३ विकलाशेष ४९६२९४११६ एवं भगणादि अयनग्रह २७१६५० । ७ । २४ । १५ । ३ इसकी भुज १।२४।१५ । ३ को ३ गुणके फिर अंशकिये ५४ । १५ । ३ । इसको ३ गुणके १६२ । ४५।९ भाग १० से लब्ध अयनांशाः १६ । १६।३१ अथ लंबज्या और अक्षांश लानेकी विधि:- त्रिज्याको १२ गुणके ४१२५६ विपुवत्कर्ण १३ । १८ । १३ के भागसे लब्ध लंबज्या ३१०० इसका चापकिये वही दक्षिण लंबाशा ६४ । २४ । ५० फिर त्रिज्या ३४।३६ को विपुवत्प्रभा ५ । ४५ से गुणके १९७६८ । ३० विपुवत्कर्णके भागसे लब्ध अक्षज्या १४८५ । ३८ इसका चाप वही अक्षांशाः २५ । ३७ । १७ अथ विपुवत्प्रभा लानेकी विधि:- वैशाख कृष्ण ३० भौमदिन

मध्याह्नकी छाया ३ । ५१ इसीको भुज समझके इससे त्रिज्याको गुणके १३२३६ । १८ स्वकर्ण १२ । ३६ । ९ के भागसे लब्ध १०५७ । १८ को चापकिये याम्यनत लिता १०६७ । ४५ सायन तात्कालिक रवि ० । १९ । ३३ । २२ क्रांतिलिमा उत्तर ४९ । २१ याम्य नतलिमा और क्रांतिलिमाकी मित्रजातिसे योगकिये अक्षांश लिता १५३७३१७ इसकी ज्या १४८५ । २९ यही अक्षज्या कहलाती है. इसका वर्ग २२०६ ६० । ४५ को त्रिज्या वर्गमें हीनकिये शेष ९६७३१८३१५ इसका मूल लंबज्या ३१०० । ३० अक्षज्या १४८५ । ३८ को १२ गुणके १७८२७ । ३६ लंबज्याके भागसे लब्ध विपुवत्प्रभा ५ । ४५ ॥

अथ छायाकार्कसाधनविधिः— स्वदेश अक्षलिता १५३७ । १७ वैशाख वदि ३० भौमदिन मध्याह्ननतलिता १०६७ । ४५ नताक्षेप की, समजातिके कारण अंतर किये शेषापक्रम ४६९ । ३२ इसकी ज्या ४६९ । १६ को त्रिज्यासे गुणके १६०९९००४८ परमापक्रमज्या १९७ के भागसे लब्ध ११५२ । २४ को चाप किये मेपादिकारण से मध्याह्न स्पष्ट छायाकार्कः ११७५४७ अथ मध्यमार्क लानेकी विधिः— स्पष्टरविः ० । ३ । १८ । ५२ मंदोच्च २ । १७ । १६ । ५२ मंदकेंद्र २ । १३ । ५८ । ११ भुजज्या ३३०३ । २२ परिधि १३१४० । ४९ भुजफल १२५ । ३१ को चाप करके मेपादि केंद्रके कारण स्पष्ट रविमें ऋणकिये मध्यम रवि ० । ११३ । २० फिर मंदोच्च २ । १७ । १६ । ५२ मंदकेंद्र २ । १६ । २३ । ३२ भुजज्या ३३३५ । १४ परिधि १३ । ४० । २६ भुजफल १२६ । ० चापरूप इसी को मेपादि केंद्रके कारण स्पष्ट रविमें ऋणकिये मध्यम रवि स्थिर ० । १ । १२ । ६ ॥

अथ मध्याह्न छाया और कर्णके लानेकी विधिः— वैशाख वदि ३० भौमदिन काशीकी याम्य अक्षलिता १५३७ । १७ रविकी. उत्तर क्रांति ४६९ । २१ इन दोनोंके दिग्भेदसे अंतर किये नत लिता दिनार्द्ध याम्य

१०६७। ५६ यही भुजलिमाको चक्रलिमा ५४०० से हीनकिये कोटि-
लिमा ४३३२। ४१. भुजज्या १०५०। २८ कोटिज्या ३२७। २९
भुजज्याको १२ गुणके १२६०५। ३६ कोटिज्याके भागसे लब्ध इष्ट
छाया ३। ५१ त्रिज्याको १२ गुणके ४१२५६ कोटिज्याके भागसे
लब्ध इष्ट दिनमध्यकर्ण १२। ३६। २४ नत लिमाके दक्षिण कारणसे
उत्तरा मध्यच्छाया समझलेनी।

अथ इष्टदिनेमें अर्काग्र लानेकी विधि:—मध्याह्न क्रांतिज्या ६६८।
५ को विपुवत्कर्ण १३। १८। २३ से गुणके ६२२८। ३१ कोटिज्या
३२७२। २९ के भागसे लब्ध मध्याह्नकी अर्काग्रांगुल ५४ अथ उसी
दिनकी इष्टाग्र लानेकी विधि इष्टछाया ९ को इष्टकर्ण १५ से गुणके मध्या-
ग्रा २८। ३० के मध्यकर्ण १२। ३६। २४ के भागसे लब्ध इष्टाग्रां-
गुल २। १५ उत्तर गोलके कारण यही विपुवच्छायामें हीनकिये शेष
उत्तर भुज ३। ३० इष्ट कालकी मध्याह्न छाया वही मध्याह्न भुज ३।
५१ अथ सममंडल कर्ण लानेकी विधि:—लंबज्या ३१००। २८ को
विपुवच्छाया ५। ४५ से गुणके क्रांतिज्या ४६८। ५ के भागसे लब्ध
सम मंडल कर्ण ३८। ५ अथ प्रकारांतरसे सममंडल कर्णके लानेकी
विधि:—जब उत्तर क्रांति स्वदेशाक्षलिमासे स्वल्प रहै तब सम मंडल कर्ण
का संभव समझना चाहिये वैशाख कृष्ण ३० भौमदिन मध्याह्न कर्ण १२
। ३६। २४ को विपुवच्छायासे गुणके ७२। २९। १८ मध्याग्रा १।
५४ के भागसे लब्ध इष्टदिनका सम मंडल कर्ण ३८। ८ अथ फिर
अर्काग्रलानेकी विधि:—क्रांतिज्या ६३८। ५ को त्रिज्यासे गुणके १६०
९२७०। २० लंबज्याके भागसे लब्ध मध्याह्नाग्रा १। ५४ को इष्ट
मध्य कर्ण १२। ३६। २४ से गुणके ६५४३। १७ त्रिज्याके भागसे
लब्ध मध्याह्नाग्रा १। ५४ अथ अग्रज्यासे कोण शंकु छाया कर्ण
साधनविधि:—त्रिज्यावर्गाद्ध ५९०९९२२ को अग्रज्या वर्ग २६९३।

९५। ३६ में हीनकिये ५६४०५२६। २४ इसको १२ गुणके ६७६८
 ६३१६। ४८ फिर १२ गुणे ८२२३३५८०१। ३६ वर्गार्द्ध ७। २।
 ० को विपुवद्वर्ग ३। ३। ३ में मुक्त किये १०। ५। ३ इसके भागसे
 लब्ध करणी ७७३१८९७। १२ विपुवच्छायाको १२ गुणके ६९। ०
 फिर अग्रज्या ५१९। २ से गुणके ३८८१३। १८ पूर्वानीत शंकुवर्गार्द्ध
 संयुत ३२ विपुवद्वर्ग १०५। ३ के भागसे लब्ध फल ३४०। ५५ इस-
 का वर्ग ११६२२४। १० में करणी युक्तकिये ७८४८१२१२२ फिर
 इसका मूल २८०१। २७ उक्त फल ३४०। ५५ में उत्तरगोलके कारण
 युक्त किये आग्नेय कोणगत रवि शंकु ३१४२। २२ इसका वर्ग ९८७४
 ४६८। १६ त्रिज्यावर्ग ११८१९८४४ इन दोनों वर्गोंका अंतर १९४
 ५३७। १२ के स्वशंकुके भागसे लब्ध वैशाख वदि ३० दिन अर्कागुल
 शंकु छाया ५। २० त्रिज्याको १२ गुणके ४१७५६ स्वशंकुके ३१४
 २। २२ भागसे लब्ध उसी दिनका कर्ण १३। ८ अथ इष्टघटीकी छाया
 और कर्ण साधनकी विधिः—वैशाखवदि ३० दिन गत घटी १० सूर्य ०।
 ३। १३। २० सायन ०। १९। २९। ५१ भुजज्या ११४६। ५१
 क्रांतिज्या ४६६। ० उत्तर क्रांतिकला ४६७१३ क्रांति क्रमज्या ४६६
 १० उत्क्रमज्या ३१। ५० इसीसे हीन त्रिज्याको किये दिनव्यासदल
 उत्तर युज्या संज्ञक ३४०६। १० क्रांति ४६६। ० को विपुवद्भासे
 गुणके ३६७५। ३० फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या २२३। १८ त्रि-
 ज्यासे गुणके ७६७७०५। २४ युज्या ३४०६। १० के भागसे लब्ध
 चरज्या २२५। २३ उत्तरमें त्रिज्यायुक्त किये अंत्याख्य ३६६३। २३
 अथ तात्कालिक नत लानेकी विधि—रविको स्वाहोरात्रासव २१६४३।
 ८ इनका चतुर्थांश ५४१०। ४२ में चरासु २२५। २३ युक्त किये
 दिनार्द्धासव ५६३। १० इसीको इष्टघटिकासुमें ३६०० हीनकिये प्राक्-
 तासव २०। ३६। १० इसकी उक्त क्रमज्या ५८५। ३० इसीसे हीन

किये ३०७७ । ५३ फिर युज्या ३४०६ । १०-से गुणके १०४८३
 त्रिज्याके भागसे लब्ध छेद ३०४९ । २३ को लम्बज्या ३१०० । २८
 से गुणके ९५५४९११ । २३ त्रिज्याके भागसे लब्धशंकु ७०५० । ०
 इसका वर्ग ७५६२५० । ० इसको त्रिज्या वर्गमें ११८१९८४४ हीन-
 किये शेष ४२५७३४४ इसका पद वही युज्या २०६३ । २० को १५
 गुणके २४७६० । ० स्वशंकुके २७५० । ० भागसे लब्ध छाया ९००
 । १३ त्रिज्याको १२ गुणके ४३२ शंकुके भागसे लब्ध करण १५।८ ।

अथ इष्ट छायासे वटी लानेकी विधि:-छायांगुल ९ । ० इससे
 त्रिज्याको गुणके ३०९४२०० इष्ट कर्णके १५ भागसे लब्ध दृग्ज्या
 २०६२ । ४८ इसका वर्ग ४२५५१४३ । ५० इसको त्रिज्या वर्गसे
 १८१९८४४ हीन करके इसका मूल लेना वही शंकु २७५० । २४ कह-
 लाता है इसको त्रिज्यासे गुणके ९४५५६०० । २३ लम्बज्याके ३१०० ।
 २८ भागसे लब्ध छेद ३०४९ । ४४ को त्रिज्यासे गुणके १०४८३६
 ७९८३ । ५६ युज्याके ३४०६ । १० भागसे लब्ध उन्नतज्या ३०७७
 । ३९ इसीको अंत्या ३६३३ । २३ में हीनकिये शेष १८५ । १६
 ३० इससे उत्क्रमज्याके खंडोंस धनु साधितकिये ज्वननासव २०३६ । १०
 नलघटी ५ । ३९ । २ । १० दिनार्द्धमें हीनकिये दिनगत घटी १० । ०॥

अथेष्टाग्रसे छायायार्कसाधनविधि:-इष्टाग्रा २ । १५ इससे लम्बज्या-
 को गुणके ६०७६ । ३ इष्ट कर्णांगुल १५ के भागसे लब्ध क्रांतिज्या ४६
 ५। ४ कोटिज्यासे गुणके १५९८८९९१२ परमापक्रमज्या १३९७ के
 भागसे लब्ध ११४४ । ३१ इसका चाप ११६७ । २० इसका राश्यादि
 ० । १९ । २७ । २० यही स्पष्ट रवि है।

अथ प्रत्येक राशि तिनके स्वाहोरात्रार्द्ध लानेकी विधि:-एकराशि
 क्रांतिज्या ६९५३० इसका वर्ग ४८७९०२ । १५ को त्रिज्यावर्गमें ११
 १९८४४ हीन किये शेष ११३३१९४१ । ४५ इसका मूल वही एकरा-

शिका स्वाहोरात्रार्द्ध ३३ । १८ हुवा राशिद्वयक्रांतिज्या १२१० । ५२
 इसका वर्ग १४६४३.०१ । ४० इसको त्रिज्यावर्ग से शोधके शेष १०३
 ५४२५५ । २० का मूललिया वही राशिद्वयका स्वाहोरात्रार्द्ध ३२१८ ।
 ० राशित्रय क्रांतिज्या १३९७ इसका वर्ग १९५१६०९ इसको त्रिज्या-
 वर्गमें हीनकिये ९८६८३५ इसका मूल वही राशि तृतीयको स्वाहोरात्रार्द्ध
 ३३६६ के भागसे लब्ध १६४ इसका चाप १६७० एकराशि द्विराशि-
 ज्या २९७८ त्रिभयुक्तर्णाद्ध ३१४१ से गुणके ९३५७९८ स्वाहोरात्रार्द्ध-
 के भागसे लब्ध २९०६ । ४४ इसका चाप राशिद्वयात्मक ३४६५१५
 त्रिज्या ३४३८ को त्रिभयुक्त वर्णाद्ध ३१४१ से गुणके १७९६०५८
 स्वाहोरात्रार्द्ध के ३१४१ भागसे लब्ध ३४३८ इसका चाप ५४००
 राशित्रयात्मक हुवा. एक राशिचाप लंकामेपासव १६७० एकराशिचाप
 ३४६५ हीनकिये वृषासव १७९५ एवं द्विराशिचाप ५४०० से हीनकिये
 शेष लंकामिथनासव १९३५ इनको विलोम कर्कादि तीनके जान
 लेना चाहिये. और एवं आगे तुलादि राशियोंके विलोम क्रमसे
 यही असु जान लेना अथ स्वदेशी लग्न करनेकी विधि:—इसके
 पहले चरखंडके लानेकी विधि. एकराशि क्रांति कला ७०४ इयकी क्रमज्या
 ६९० । ३० उत्क्रमज्या ७२। ३४ इमको हीन त्रिज्यामें किये दिनव्यासदल
 ३६६५ । २६ क्रांतिज्या ६९० । ३० को विपुवद्भासे गुणके ३९७०। २२
 फिर १२ भागसे लब्ध कुज्या ३३०५२ इसको त्रिज्यासे गुणके १३३७
 ५१९ । ३६ युज्याके भागसे लब्ध चरज्या ३३८ इसका धनु ३३८। ३०
 द्विराशि क्रांतिकला १२३७ । ३७ क्रांतिक्रमज्या १२१०५ उत्क्रमज्या
 २२१ । ३१ इसको हीन त्रिज्यामें किये दिनव्यासदल ३२१६ । २९
 कुज्या ५७ । ५० चरज्या ६१९ । ४५ इसका धनु ४२३ । २ द्विराशि
 चर यह हुवा तृतीय राशिकी क्रांतिकला: १४४० इसका क्रमज्या १३९७
 उत्क्रमज्या २९८११२ दिनव्यास दल ३१३९४८ कुज्या ६६९ । २४

चरज्या ७३२ । ५८ इसका चाप वही त्रिराशिचर ७३८४० हुवा एक-
 राशिचाप प्रथम खंड ३३८ । ३० को द्विराशिचापमें हीनकिये द्वितीय खंड
 ८४ । ३३ फिर द्विराशिचापको त्रिराशिचापमें हीनकिये शेष तृतीय खंड
 ११५ । ३७ लंका मेपासव १६७० में प्रथमखंड ३३८ । ३० हीनकिये
 स्वदेशी मेपासव १३३१ । ३० लंकावृपासु १७९५ में द्वितीय चरखंड
 २८४ । ३३ हीनकिये स्वदेशी वृपासव १५१० । २३ और लंकामिथु-
 नासव १९३५ में तृतीयखंड ११५ । ३७ हीनकिये स्वदेशमिथुनासव १८
 १९ । २३ एवं लंकार्कटासव १९३५ में तृतीय खंड यक्त किये स्वदेशी
 कर्कटासव २०५० । ३७ लंका सिंहासव १७९५ में द्वितीय चरखंडमें
 युक्तकिये स्वदेशी सिंहासव २०७९ । ३७ लंका कन्यासवमें १६७० प्रथम
 खंड युक्तकिये स्वदेशी कन्यासव २००८ । ३० इसको विलोम क्रमसे
 तुलादि छः राशियोंके स्वदेशी आसव जान लेना अथ इष्टकालसे लग्नसाधन
 विधिः-इष्टघटी १० तत्कालरविः ० । ३ । १३ । २० सायन ० । २९ ।
 २९ । ५१ मेष भोग्यांशा १० । ३० । ९ को स्वदेश मेपासुसे १३३१
 गुणके १३९७९ फिर ३० भागसे लब्ध मेष भोग्यासव ४६६ को इष्टघटी
 कासव ३६०० में हीनकिये शेष ३१३४ को वृपासुमें हीनकिये शेष १६
 २४ को ३० गुणके ४८७२ अशुद्धमिथुनासु १८१९ के भागसे लब्ध
 अंशादि २६ । ४७ । २ इसके मिथुन अशुद्धयुक्त २ । २६ । ४७ । २
 करके फिर अयनांश हीन किये लग्न २ । १० । ३० । ३१ ।

अथ मध्यलग्न लानेकी विधिः-पूर्वत घटी ५ । ३९ । १ तत्काल सायन
 रवि ० । १९ । २९ । ५१ रवि मेषके भुक्तांशा १९ । २९ । ५१ को
 लंका मेपासु १६७० से गुणके ३२५६१ फिर ३० के भागसे लब्ध १०
 ८५ मेष भुक्तासव को नतासवमें २०३४ हीनकिये शेष ९४९ को ३० गुणके
 २८४७० फिर विलोम अशुद्धलंकार्मीनासुके १६७० भागसे लब्ध अंशादि
 १७ । २ । ५२ अशुद्धलंका मीनास भागादि सायन रविमें हीनकिये मध्य

लग्न सायन १ । १२ । ५७ । ८ इसमें अयनांश १६ । १६ । ३१ हीन-
किये मध्यलग्न ० । २६ । ४० । ३७ हुआ.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते त्रिषष्ठक-
थनं नाम दशमविनोदः समाप्तः ॥ १० ॥

अथ चंद्रग्रहण लानेकी विधि:-संवत् १६४१ शक १५०६ कार्तिक
शुदि १५ शनिदिन सृष्ट्यब्द १९५५८८४६८५ युगाद्यहर्गण ७११४६०
मध्यमरविः ७ । ९ । ३० । २२ मध्यमचंद्र १ । ९ । २८ । ६ चंद्रोच्च
९ । ५ । ४९ । ३६ पात ७ । ७ । ३ । ३९ स्पष्टरवि ७ । ८ । ९ ।
२६ गति ६० । ५४ चंद्रस्पष्ट ५ । १२ । ४७ । ० गति ८२७ । २०
मिश्रप्रमाण ४३ । २४ इष्टघटी ५७ । १४ व्यास अथ चंद्रविंब लानेकी विधि:-
चंद्रमंडल मध्य व्यास ४८० को स्पष्टगति ८२७ । २० से गुणके ३९७
१२ मध्यगति ७९० । ३५ के भागसे लब्ध स्पष्टचंद्रमंडलव्यास ५०२ ।
१९ के १५ भागसे चंद्रमानलिप्ता ३३ । २९ अथ तमोमान लानेकी
विधि:- भूव्यास १६०० को स्पष्टचंद्र गति ८२७ । २० से गुणके
१३२२७३३ । २० मध्यगति ७९० । ३५ के भागसे लब्ध सूची १६
७४ । २२ रवि मध्यव्यास ६५०० को स्पष्टगति ६० । ५४ से गुणके
३८५८५० मध्यगति ५९ । ८ के भागसे लब्ध रविमंडल स्पष्ट व्यास
६६९४ । ११ महाव्यास १६०० इन दोनोंका अंतर ५०९४ । ११ को
मध्येदुव्याससे ४८० गुणके २४४५२०८ मध्यार्क व्यास ६५०० के
भागसे लब्ध ३७ । १ को पूर्वोक्त सूची १६७४ । २२ में हीनकिये शेष
१२९८ । ११ के १५ भागसे लब्ध तमोमान लिप्ता ८६ । ३३ मान योगाद्
६१ । १ अथ समालिप्ति करनेकी विधि:- रविफल १४ । २ धन चंद्र
फल धन ३ । १० । ४५ पातफल ऋण ० । ४४ पर्वतरविः ७ । ८ ।
२३ । २८ पर्वतचंद्र १ । ८ । २३ । २८ पर्वत पात ७ । ७ । २ । ५५

अथ पर्वीत विक्षेप (शर) और घ्रास लानेकी विधि:-पर्वीत चन्द्र १।८।२३।
 २८ पर्वीतपात ७।७।२।५५ चंद्रोनपात केंद्र ५।२८।३९।
 २७ भुज ०।१।२०।२३ भुजज्या ८०।३३ को चंद्रविक्षेप
 मध्यम २७० से गुणके २१४८३३० त्रिज्याके भागसे लब्ध स्पष्ट विक्षेप
 ६।१९ चंद्रोनपात केंद्रके मेपादिशसे उत्तर (शर) विक्षेप यह समझ
 ना चाहिये. इसको मानयोगार्द्ध ६०।१ में हीनकिये शेषघ्रास २०।१३
 अथ स्थित्यर्द्ध लानेकी विधि:- मानयोगार्द्ध ६०।१ का वर्ग ३६०।
 २ में शरवर्ग ३९।५४ हीन किये शेष ३५६।६ मूल ५९।४२ को
 ६० गुणके ३५८१ व्यर्द्धगतिके ७६६।२६ भागसे लब्ध स्थित्यर्द्ध
 ४।४० अथ मर्दाद्ध लानेकी विधि:-मानांतरार्द्ध २६।३२ का वर्ग
 ७०४।१ में विक्षेपवर्ग ३९।५४ हीन किये शेष ६६४।७ का मूल २
 ५।४६ को ६० गुणके १५४६ रवीन्दु भुक्त्यंतरके ७६६।२६ भागसे
 लब्ध मर्दाद्ध २।१ अथ स्थित्यर्द्ध स्थिरकरनेकी विधि:- अर्ध रात्रिके
 ऊपर इष्टघटी १३।५० में स्थित्यर्द्ध ४।४० हीनकिये ९।१० तत्काल
 चंद्र १।७।१९।७ पात ७।७।३।१० चंद्रोनपातकेंद्र ५।२९
 ।४४।३ भुज ०।१५।५७ भुजज्या १५।५७ को चंद्रविक्षेप २७०
 से गुणके ४३०६।३० त्रिज्याके भागसे लब्ध स्पष्ट विक्षेप दक्षिण १।१५
 इसका वर्ग १।३४ को मानयोगार्द्ध वर्गमें हीन किये ३६००२६ पीछे इसका
 ६०।को मूल।६० गुणके ३६०० भुक्त्यंतरके ७६६।२६ भागसे
 लब्धस्थितिदल ४।४२ पर्वीत १३।५० में स्थित्यर्द्ध ४।४२ हीनकिये
 ९।८ तत्काल चंद्र १।७।१८।४० पात ७।७।३।१० चंद्रो
 नपातकेंद्र ५।२९।४४।३ भुज ०।०।१५।३० भुजज्या १५।
 ३० विक्षेप १।१३ वर्ग १।२९ को मानयोगार्द्ध वर्गमें ३६०२ हीन
 किये शेष ३६००।३१ मूल ६० को ६० गुणके ३६० भुक्त्यंतर के
 भागसे लब्ध स्थितिदल यह ४।४२ स्थिरहुवा अथ मोक्षस्थित्यर्द्ध स्थिर

करनेकी विधि:—अर्द्धरात्रिसे ऊपर इष्टघटी १३ । ५० को स्थितिदल ४।
 ४० में युक्तकिये १८ । ३० तत्काल चंद्रः १।९ । २७ । ४९ पात ७ ।
 ७ । २। ४० चंद्रोनपातकेंद्र ५ । २७ । ३४ । ५१ भुज ० । २५।९
 भुज्या १४५।९ को चंद्रमध्य विक्षेप २७० से गुणके १९० । ३०
 त्रिज्याके भागसे लब्ध ११ । २४ स्पष्ट विक्षेप इसका वर्ग १२९ । ५७
 को मानयोगार्द्ध ३६०२ में हीन किये शेष ३४७२ । ३ का मूल ५८ ।
 ५५ को ६० गुणके ३५३५ रवीन्दुस्पष्ट भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध स्थिति
 दल ४।३७ फिर स्थितिदलको स्थिर करते हैं पर्वत १३।५० स्थित्यर्द्ध ४ ।
 ३७ में युक्तकिये १८ । २७ तत्कालचंद्र १।९।२७। ८पात ७।७।२।४९
 केंद्र ५ । २७ । ३३ । ३२ भुज ० । २ । २४ । २८ भुज्या १४४ ।
 २८ ऐसे उक्त पूर्ववत् याम्यविक्षेप ११ । २० इसका वर्ग १२८ । २७
 को मानयोगार्द्ध वर्गमें ३६० । २ हीनकिये शेष ३४७२ । ३३ का मूल
 ५८ । ५६ को ६० गुणके ३५३६ भुक्त्यंतरके भागसे लब्ध
 मोक्षस्थित्यर्द्ध स्थिर ४ । ३७ हुवा ॥

अथ स्फार्शिकमर्द्दार्द्ध स्थिर करनेकी विधि:—पर्वत १३।५० में विम-
 र्द्दार्द्ध २ । १ हीन किये शेष ११ । ४९ तत्काल चन्द्र १ । ७ । ५५ ।
 ४० पात ७ । ७ । २ । २९ चन्द्रोनपातकेंद्र ५ । २९ । ७ । २१ भुज
 ० । ०।५२ । ३९ भुज्या ५२ । ३९ पूर्वकी तुल्य याम्य विक्षेप ४ ।
 ८ इसका वर्ग १७ । ५ मानपातार्द्धवर्ग ७०४ । १ इन दोनोंका अंतर
 ६८६ । ५६ का मूल २६ । १३ को ६० गुणके १५७३ भुक्त्यंतरके
 भागसे लब्ध मर्द्दार्द्ध २ । ३ स्थिर हुवा. अथ मोक्षिकस्थित्यर्द्धमर्द्दार्द्ध
 स्थिर लानेकी विधि:—पर्वत १३ । ५० को मर्द्दार्द्ध २ । १ में युक्त किये
 १५ । ५१ तत्काल चन्द्र १ । ८ । ५१ । १६ पात ७ । ७ । २ । ४९
 केंद्र ५ । २८ । ११ । ३३ भुज ० । १ । ४८ । २७ भुज्या १०८
 । २७ पूर्वतुल्य स्पष्ट दक्षिण विक्षेप ८ । ३१ इसका वर्ग ७२ । ३२

मानांतरार्द्धवर्गमें ७१ । १ हीन किये शेष ६३१ । २९ इसका मूल २५ ।
 ८ को ६० गुणके १५०८ भुक्तयंतरके भागसे लब्ध स्पष्ट मर्दार्द्ध १।५८
 यह स्थिर हुआ. सूर्योदयसे इष्टघटी ५७ । १४ मध्यकालमें स्पर्शस्थित्यर्द्ध
 ४ । ४२ हीन किये स्पर्शकालः ५२ । ३२ और मोक्ष स्थित्यर्द्ध ४।३७
 युक्त किये मोक्षकाल ६१ । ५१ अथेष्टस्पर्शग्रास लानेकी विधिः—स्पर्शेष्ट
 नाडी २ को स्पर्शस्थित्यर्द्धमें हीन किये शेष २ । ४२ को रवीन्दुभुक्तयं-
 तरमे गुणके २०६९ । २२ फिर ६० के भागसे कोटि लिप्ता ३४ । २९
 तत्कालचन्द्रः १।७ । ४६ । १५ पात ७।७ । ३।४ केंद्र ५।
 २९ । १६ । ४९ भुज० । ० । ४३ । ११ भुजज्या ४३११ स्पष्ट
 याम्य विक्षेप ३ । २३ इसीको भुज समझके इसका वर्ग ११ । २७ कोटि
 लिप्ता वर्ग ११९९ । ६ इन दोनोंका योग १२०० । ३३ इसका मूल कर्ण
 ३४ । ३९ इसको मानयोगार्द्ध ६० । १ में हीनकिये शेष स्पर्श इष्टग्रास
 २५ । २२ अथ मोक्षेष्टग्रास लानेकी विधिः—मोक्षेष्ट नाडीको मोक्ष
 स्थित्यर्द्धमें हीन किये शेष २ । ३७ को भुक्तयंतरसे गुणके २००५ ।
 ३० फिर ६० भागसे लब्ध कोटिलिप्ता ३३ । २५ तत्काल चन्द्र १।
 ८ । ५१ । ३ पात ७।७ । २ । ४८ केंद्र ५। २८ । ११ । ४५
 भुज० । १ । ४८ । १५ भुजज्या १०८ । १५ पूर्वतुल्य याम्य विक्षेप
 ८ । ३० इसका वर्ग ७२ । १५ कोटि वर्ग १११६ । ४० इन दोनोंका
 योग ११८८ । ५५ इसका मूलकर्ण ३४ । २९ इसको मानयोगार्द्धमें
 हीन किये शेष मोक्ष ग्रासः २५ । २२ अथ इष्ट ग्राससे इष्ट घटीके ला-
 नेकी विधिः—स्पर्श इष्टग्रास २५ । २२ इसको मानयोगार्द्धमें हीन किये शेष
 ३४ । ३९ का वर्ग १२०० । २३ में तत्काल विक्षेप वर्ग ११ । २७
 हीन किये शेष ११८९ । ६ इसका मूल वही कोटिलिप्ता ३४ । २९ को
 ६० गुणके २०६९ । २२ भुक्तयंतरके भागसे लब्ध २ । ४२ को स्थि-
 त्यर्द्धमें हीन किये स्पर्शिक इष्टकाल २ । ० अथ मोक्षग्राससे मोक्ष इष्ट

कालसाधन विधिः—मोक्ष इष्टग्रास २५ । ३२ को मानयोगार्द्धसे हीन-
 किये शेष ३४ । २९ इसका वर्ग ११८८ । २९ तत्कालीनशरवर्ग ७२ ।
 १५ दोनोंका अंतर १११६ । ४० इसका मूल ३३ । २५ को ६०
 गुणके २००५ । ३० भुक्तयंतरके भागसे लब्ध मोक्ष इष्टनाडी २ । ३७
 अथ स्पर्शकालीन वलन लानेकी विधिः—स्पर्शकाल २५ । ४४ पश्चिम
 नत ९ । ८ नतासव ३२८८ इसकी ज्या २८०८ । २० को अक्षज्या
 १४८६ से गुणके ४१७३१८३ । ६ त्रिज्याके भागसे लब्ध १२१३ ।
 ५० इसका धनु यहां नतके उत्तर कपाली होनेके कारण याम्यनत लिता
 १२ । ४१ । ३६ स्पर्शिक चन्द्र १ । ७ । १८ । ४० सत्रिभसायन
 ४ । २३ । ३५ । ११ भुज १६ । २४ । ४९ भुजज्या २०४० । ०
 क्रांतिज्या ८२८ । ५६ इसका धनु यहां सायन सत्रिभके भुजमेपादि होने-
 के कारण उत्तरक्रांतिलिता ८३७ । १६ नतलिता और क्रांति लिताके
 भिन्न जातिके कारण अंतर किये शेष याम्य ४०४ । २० इसकी ज्या वही
 वलनज्या ४०३ । ३३ इसके ७० के भागसे लब्ध स्पर्शिक याम्यव-
 लनांगुल ५ । ४६ अथ मध्य वलन लानेकी विधिः—मध्यकाल
 ३० । २६ अपरनत १३।५० नतासव ४९८० इसकी ज्या ३४११।५६
 को अक्षज्यासे गुणके ५०७०१३२ । ५६ त्रिज्याके भागसे लब्ध १४७
 ४२ । ४४ का धनु यहां नत अपर कपाली होनेके कारण याम्यनतलिता
 १५२५ । १९ मध्यकालिक चंद्र १ । ८।२३ । २८ सत्रिभ सायन ४ ।
 २४ । ३९ । ५९ भुज १ । ५ । २० । १ भुजज्याका धनु किये उत्तर
 क्रांतिलिता ७९३ । ३८ यहां नतलिता और क्रांतिलिताके भिन्न जातिके
 कारण अंतर किये शेष याम्य १३५५ । २० इसकी ज्या किये वही
 याम्य वलनज्या १३९९ । ५१ को ७० के भागसे लब्ध मोक्षवलनांगुल
 दक्षिण १९ । ५८ हुवा. अथ विक्षेपादिमान लिताओंके अंगुल करनेकी
 विधि—मध्यकाल परनत १३ । ५० को रात्र्यर्द्ध १६।३६ में हीन किये

शेष उन्नत २ । ४६ को और रात्र्यर्द्धमान १६ । ३६ को रात्रिमान ३३ ।
 १२ में युक्त किये ५२ । ३४ इसके रात्र्यर्द्ध १६ । ३६ के भागसे लब्ध
 छेद ३ । १० स्पर्शविक्षेप. लिताके ११३ छेदके भागसे लब्ध स्पर्श याम्य
 विक्षेप अंगुल ० । २३ मध्य काल विक्षेप लिताके छेदके भागसे लब्ध
 मध्ययाम्य. विक्षेप अंगुल २ । ० मोक्षविक्षेप लिताके ११ । २० छेदके
 भागसे लब्ध मोक्षयाम्यविक्षेप अंगुल ३ । ४५ चंद्रबिंदुलिता ३३ । २९
 के छेदके भागसे लब्ध चंद्रबिंदांगुल १० । ३४ तमोमानलिता ८६ । ३३
 के छेदके भागसे तमोमानांगुल २७ । १९ मानार्द्धलिता ६० । १ के छेदके
 भागसे मानयोगार्द्ध अंगुल १८ । ५७ ग्रास लिताके ५३ । ४२ छेदके
 भागसे लब्ध ग्रासांगुल १६ । ५७ स्वग्रास लिताके २० । १३ छेदके भागसे
 लब्ध स्वग्रासांगुल ६ । २३ स्पर्शेष्ट ग्रासलिताके २५ । २५ छेदके भागसे
 लब्ध स्पर्शेष्टग्रासांगुल ८ । ० मोक्षेष्टग्रास लिताके २५ । ३२ छेदके
 भागसे लब्ध मोक्षेष्टग्रासांगुल ८ । ३ हुवा

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते चंद्रग्रहणसाधन-

विधिनाम एकादशविनोदः ॥ ११ ॥

अथ सूर्यग्रहणके साधनकी विधिः—संवत्. १९३९ शके १८०४
 आपाद्वदि ३० बुधदिन इष्ट १३ । १९ सृष्टचन्द्र १९५५५८४६८३
 कलिगताब्द ४६८३ सृष्ट्याचहर्गण ७१४४०४००७२१६ कलियुगण
 १७१०५८९ प्रातः स्पष्टरविः २ । २० । ९ । ३२ प्रातः स्पष्टचंद्रः २ ।
 १७ । २२ । १६ रविगति ५६ । ५० चंद्रगति ८१० । २६ अमांत १३
 । १९ तात्कालिक रविः २ । २० । २२ । ९ तत्कालचंद्रः २ । २० । २२ ।
 ९ पात ८ । २३ । १४ । ० अथ रविमंडल लानेकी विधिः—रवि-
 मंडल परममध्यव्यास ६५०० को स्पष्टगति ५६ । ५० से गुणके ३६९
 ४१६ । ४० मध्यगति ५९ । ८ के भागसे लब्ध स्पष्ट रविव्यास ६२४

७। ११ को रविभगण ४३२०००० से गुणके २६९९७८३२०००
चंद्रभगण ५७७५३३३६ के भागसे लब्ध चंद्रकक्षापि रविमंडल मध्यव्यास
४६७। २८ स्पष्ट इसके १५ भागसे लब्ध रवि मानलिप्ता ३१। ९ ॥

अथ चंद्रमंडलसाधनविधिः—चंद्रमंडलमध्यव्यास ४८० को स्पष्ट
गति ८१०। २६ से गुणके ३८९००८। ० मध्यगति ७९०। ३५
के भागसे लब्ध स्पष्टचंद्रव्यास ४९२। ३ फिर १५ भागसे लब्ध चंद्रमान
लिप्ता ३२। ४८ मानयोगार्द्ध ३१। ५८ ॥

अथ पर्वतलंबन लानेकी विधिः—पर्वतकाल १३। ९ तत्कालरविः २।
२०। २२। ९ सायन ३। ६। ३६। ४० कर्कके भोग्यपल २६६ को
इष्टघटी पलोंमें हीन किये शेष ५३३ में फिर सिंहमान हीन किये शेष १८८
को ३० गुणके अशुद्ध कन्यामानके भागसे लब्ध अंशादि १६। ५०। ९
भुक्तराशियुक्त किये पर्वतलग्न ५। १६। ५०। ९ इसकी ज्या ७८२।
४७ को क्रांतिज्या १३९७ से गुणके १०९४८। १९ लंबज्या ३१००
के भागसे लब्ध उदयज्या ३५२। ४५ अथ मध्यलग्न लानेकी विधिः—
प्रादत ३। ३९ तत्काल सायन रवि ३। ६। २६। ४० कर्ककी
भुक्तपल ७१ भोग्यपलों २१९ में हीनकिये शेष १४८ को
३० गुणके ४४४० अशुद्ध लंका मिथुनमानके भागसे लब्ध अंशादि
१३। ४४। ४५ तीन राशिमें हीन किये शेष मध्य लग्न २। १६। १५।
१५ मध्यलग्नोत्तर क्रांति १३९५। २५ स्वदेशाक्षलिप्ता याम्य १५३७।
१७ क्रांत्यक्षकी भिन्नजातिके कारण अंतरकिये शेषयाम्य नतलिप्ता १४१
५२ इसकी ज्या वही मध्ययाम्यज्या ४१। ५२ इसकी उदयज्यामान ३५
२। ४५ से गुणके ५००४३। २८ त्रिज्याके भागसे लब्ध १४। १३
इसका वर्ग २०२ मध्यज्या वर्ग २००२६। ९ इन दोनोंका अंतर १९९
२४। ३ इसका मूल दृक्क्षेप १४१। ७ इसका वर्ग १९९२४। ३ त्रिज्या
वर्ग ११८१९८४४ इन दोनोंका अंतर १७९९१९। ५७ इसका मूल

दृग्गतिः ३४३५ । ५ एकराशिज्या १७७९ इसका वर्ग २९५४९६१
 इसके दृग्गतिके ३४३३ । ३५ भागसे लब्धछेद ८६० । ३६ मध्य लग्न
 २ । १६ । १५ । १४ सूर्यः ३ । ६ । ३६ । ४० इन दोनोंका अंतर
 ० । २० । २१ । २५ ज्या ११९५ के छेदके ८६० । ३६ भागसे
 लब्ध प्रथमपर्वतलंबन १ । २३ मध्य लग्नसे सूर्य अधिक होनेके कारण
 पर्वत १३ । १९ में हीन किये शेष ११ । ५६ इससे फिर लंबन लानेकी
 विधि तत्काल रविः २ । २० । २० । ५० सायन ३ । ६ । ३५ । २१
 सायन लग्न ५ । ९ । १८ । ४८ इसकी ज्या १२१३ । २७ को परमाप-
 क्रमज्या १३९७ से गुणके १६९५१८९ । ३९ लंबज्या ३१०० के
 भागसे लब्ध उदयज्या ५४६ । ५० तत्काल प्राङ्गत ५ । २ सायन सूर्य
 ३ । ६ । ३५ । २१ सायन मध्यलग्न २ । ८ । ३२ । ४२ उत्तरक्रांति
 १३३३ । ४८ स्वदेशाक्षलिप्ता १४३७ । १७ इन दोनोंकी भिन्न जातिके
 कारण अंतरकिये याम्य नतलिप्ता २०३ । २९ इसकी ज्या किये याम्य
 मध्यज्या २०३ । २९ इसको उदयज्या ५४६ । ५० से गुणके १११२
 ७१ । २८ त्रिज्याके भागसे लब्ध ३२ । २२ इसका वर्ग १०४७ । ३६
 मध्यज्या वर्ग ४१४०५ । २८ दोनोंका अंतर ४० ३५७ । ५२ इसका मूल विक्षेप
 २००५३ इसका वर्ग ४० ३५७ । ५२ त्रिज्या वर्ग ११८१९४४ इन दोनोंका
 अन्तर ११७७९४८६ । ८ इसका मूल दृग्गति ३४३२ । ७ एकराशिज्या वर्ग
 २९५४९६१ इसके दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६० । ५८ मध्य लग्न और
 रविका अंतर ० । २८ । २ । ३९ इसकी ज्या १६१५ । १० के छेदके
 भागसे लब्ध लंबन १ । ५२ को पर्वत १३ । १९ में हीन किये शेष ११ ।
 २७ तत्काल रविः २ । २० । २० । १३ तत्काल सायन लग्न ५ । ६ ।
 ४२ । ५९ ज्या १३५७ । ५० को परमापक्रमज्यासे १८९८३ । १०
 गुणके लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ६११५४ प्राङ्गत ५ । ३१ सायन
 सूर्य ३ । ६ । ३४ । ५४ सायन मध्य लग्न २ । ५ । ५१ । ५ मध्यलग्नो-

त्तरक्रांति १३० । ६ । २४ याम्याक्षलिता १५३७ । १७ दोनोंके दिग्भे-
दके कारण अंतर किये शेष याम्य नतलिमाको ज्याकिये दक्षिणमध्यज्या
२३० । ५१ उदयज्या ६११ । ५४ से गुणके १४१२५७ । ७ त्रिज्या
के भागसे लब्ध ४ । १५ इसका वर्ग १६८७ । ५० मध्यज्या वर्ग ५३
२९१ । ४३ दोनोंका अंतर ५१६०३ । ५३ त्रिज्या वर्ग ११८१९८
४४ दोनोंका अंतर ११७६४२४० । ० इसका मूल हगति ३४३० ।
२९ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के हगतिके भागसे लब्ध छेद ८६
१ । २३ मध्यलघ्नार्क अंतर १ । १ । ५६ । ३ इसकी ज्या १८ । ७ ।
३१ छेदके भागसे लब्ध लंबन २ । ६ पर्वत १३ । १९ में हीनकिये
शेष ११ । १३ तत्कालरवि २ । २० । २० । १० सायन ३ । ६ । ३४ ।
४१ सायन उदयलग्न ५ । ५ । २७ । ४५ इसकी ज्या १४२६ । २३को
अंत्यापक्रमज्यासे गुणके १९९२६९५७ । ३१ लंबज्याके भागसे लब्ध
उदयज्या ६४२ । ४७ प्राबत ५ । ४५ सायन मध्य लग्न २ । ४ । ३३ । ४ मध्य
लग्नोत्तरक्रांति १२९२ । २२ याम्याक्षलिता १५३७ । १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न
जातिसे अंतरकिये याम्यनलिता २४४ । ५५ इसकी ज्या वही मध्यज्या
दक्षिणा २४४ । ४९ को उदयज्यासे गुणके १५७३६४ । ४ त्रिज्याके
भागसे लब्ध ४५ । ४७ इसका वर्ग २०९७ मध्यज्यावर्ग ५९९३५११२
इन दोनोंका अंतर ५७८३९ । ५ इसका मूल स्थिररूपष्ट दृक्क्षेप २४० ।
३० इसका वर्ग ५७८३९ । ५ इसको त्रिज्या वर्गसे हीन किये शेष ११
७६२००४ । ५ इसका मूलहगति ३४२९ । ३४ एक राशिज्यावर्ग
२९५४९६१ हगतिके भागसे लब्ध छेद ८६१ । ३७ मध्य लग्नार्कांतर
१ । २ । १ । ३७ इसकी ज्या १८२२ । १४ छेदके भागसे लब्ध लंबन-
स्थिर २ । ६ हुवा ॥

अथ अवनति लानेकी विधिः—पर्वतस्थिर दृक्क्षेप २४० । ३० मध्य-

शुक्रत्यंतर ७६१ । २७ से गुणके २७५९१३ । १४ फिर १५ गुणके
त्रिज्याके ५१५७० भागसे लब्ध याम्य अवनति ३ । २५ ॥

अथ चन्द्रविक्षेप लानेकी विधिः—स्थिर लंबन संस्कृतपर्वति १११३
तत्कालचन्द्रः २ । १९ । ५३ । ४७ पात ८ । २३ । १४ । ७ चन्द्रो-
पात केंद्र ६ । ३ । २० । २० भुज ० । ३ । २० । २० भुज्या २००
। २० को चंद्रविक्षेप २१० से गुणके ५४०९० त्रिज्याके भागसे लब्ध
चंद्रविक्षेप सौम्य १५ । ४४ याम्यावनति ३ । २५ शर और अवनतिके
दिग्भेदसे अंतर किये स्पष्ट अवनति लिता १२ । १९ इसको मानयोगार्द्ध
३१।५८ म हीन किये शेष यासलिमा १९। ३९ ॥

अथ स्थित्यर्द्ध लानेकी विधिः—मानयोगार्द्ध ३१ । ५८ इसका वर्ग
१०२१ । ५२ में विक्षेप वर्ग १५१ । ४२ हीन किये ८७० । १० इसका
मूल २९।३० को ६० गुणके १७७० रवींद्रशुक्रत्यंतरके ७५३।३६ भागसे
लब्ध स्थित्यर्द्ध २ । २१ ॥ अथ स्पर्शिक लंबन लानेकी विधिः—गणिता-
गततिथ्यन्त ३६ । १९ में स्थित्यर्द्ध २ । २१ हीन किये शेष १० । ५८
रवि २ । २० । १९ । ५५ सायन ३ । ६ । २६ । ३४ सायन उदय लग्नकी
भुज्या १४९९ । ४८ को क्रांतिज्या १३९७ से गुणके २०९५२२०
३६ लंबज्याके भागसे लब्ध उदय भुज्या १४९९ । ४८ को क्रांतिज्या
१३९७ से गुणके २०९५२२० ३६ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयभुज्या
१४९९ । ४८ को क्रांतिज्या १३९७ से गुणके २०९ ५२२० ३६
लंबज्या के भागसे लब्ध उदयज्या ६७५७ प्राङ्गत ६ । ० सायन सूर्य
३ । ६ । ३४ । २६ मध्य लग्न २ । ३ । ९ । २९ इसकी ज्या
३०६७ । १६ को परमापक्रमज्यासे गुणके ४२८४९७२३२ त्रिज्याके
भागसे लब्ध क्रांतिज्या २२३६ । ३१ याम्याक्षलिमा १५३७। १७
क्रांत्यक्षकी मित्र दिशाके कारण अन्तरकिये शेष याम्यनन लिता को पूर्वांश
क्रमसे वर्ग २६२६३४ मध्यज्यावर्ग ६१९७७ दोनोंका अंतर ६५३२०
३३ इसका मूल दक्षिण २५ । ३२ वर्ग ६५३२० ३३ त्रिज्यावर्ग २१८१

९८४४ वर्गांतर ११७५४५२३३७ इसका मूल दृग्गति ३४२८२९
 एकराशिज्यावर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६१ ।
 ५३ मध्य लग्नाकार्तर १ । ३ । २४ । ५७ इसकी ज्या १८२९ । ५८
 छेदके भागसे लब्ध घटिकादिस्फारिंक प्रथम लंबन २ । १२ मध्य लग्नसे
 भानु अधिक होनेके कारण स्थित्यून तिथ्यंत १० । ५८ में हीनकिये शेष
 ८ । ४६ तत्काल रविः २ । २० । २७ । ५० सायन ३ । ६ । ३२ ।
 २१ सायन उदय लग्न ४ । २२ । १८ । ० इसकी ज्या २०९१५६
 को परमापक्रमज्यासे गुणे २९२२४३० इसकी ज्या वही मध्यज्या याम्य
 २६०४० को उदयज्या से ८७५ । ५० गुणके १७६१०५ । ५५
 त्रिज्याके भागसे लब्ध क्रांतिज्या ८१२ ॥

अथ मध्य लग्न लानेकी विधिः—प्राप्त ८ । १२ सायनरवि ३ । ६ ।
 ३२ । २१ सायनमध्यज्या ४४७ । ६ को उदयज्यासे गुणके ४२१४८
 ८ । ३७ त्रिज्याके भागसे लब्ध १२२ । ३६ इसका वर्ग १५०३०१४६
 मध्यज्या वर्ग १९९८९ । २५ दोनोंका अंतर १८६६७०३९ इसका मूल
 ४२९१९५८ इसका वर्ग १८४८६७ । २१ इसका मूल दृग्गति
 ३४१११ । ० एक राशिज्या वर्ग २९५४९६१ दृग्गतिके भागसे लब्ध
 छेद ८६६१८ मध्यलग्न १२० । ३१ रवि ४ । ६ । ३२ । २१ दोनोंका
 अंतर १ । १६ । २८ । २० । इसकी ज्या २४९१ । २७ के छेदके
 भागसे लब्ध स्फारिंक द्वितीय लंबन २ । ५२ को स्थित्यून पर्वतमें
 हीन किये शेष ८ । ६ तत्काल रविः २ । २० । १७ । १३ सायन
 ३ । ६ । ३१ । ४४ सायन उदय लग्न ४ । १९ । २ । ३६ इसकी ज्या
 २२५२३ को परमापक्रमज्यासे गुणके ३२४७९७६ । ३२ लंबज्या-
 के भागसे लब्ध उदयज्या १०१५२७ प्राप्त ६ । ५२ सायन सूर्य ३ ।
 ६ । ३१ । ४४ सायनमध्य लग्न १ । १६ । २३ मध्यलग्नोत्तर क्रांति
 १०२०४८ याम्य नतलिमा १५३७ । १७ मान्यक्षकी भिन्न दिशाके

कारण अंतर किये शेषयाम्यनत लिता ५१६ । २९ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५१४ । ३८ को उदयज्यासे गुणके ५२२५८४ । २५ त्रिज्याके भागसे लब्ध १५२ । ० इसका वर्ग २३१०४ मध्यज्या वर्ग २६४७ । २८ इन दोनोंका अंतर २४१७४३११८ इसका दृक्क्षेप ४९१४ इसका वर्ग २३२४४ मध्यज्या वर्ग ३६४८४७ । २८ इन दोनोंका अंतर २४१७१३११८ इसका दृक्क्षेप ४९१ । ४० इसका वर्ग २४२७४३ । २८ को त्रिज्यावर्गमें हीन किये शेष ११५७८१००३२ इसका मूल दृग्गति ३४०२४०३१४४ इन दोनोंका अंतर १३१२८३१ इसकी ज्या २६५०४७ छेदके भागसे लब्ध घटिकादिक स्फारिक तृतीय लंबन ३ । ३ को स्थित्यून पर्वत में हीनकिये शेष ७ । ५७ तत्काल रविः २ । २० । २७ । १ सायन ३ । ६ । ३१ । ३३ सायन उदय लग्न ४ । १८ । ५ । १३ इसकी ज्या २२९५५९ को परमापक्रमज्यासे गुणके ३२०७४८८ । ४३ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या १०३४ । ४० प्राङ्गत ९ । ५६ मध्यलग्नोत्तर क्रांति १००१२६ याम्याक्षलिता १५३७ । १७ यहां क्रांत्यक्षकी भिन्न दिशाके कारण अंतर किये शेष नतयाम्य लिता ५३५५१ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५३३ । ४० को उदयज्यासे गुणके ५५२२०२ । ३६ त्रिज्याके भागसे लब्ध १६०३७ इसका वर्ग २५७९७ । ४३ मध्यज्या वर्ग २८४८३५ । ४१ दोनोंका अंतर २५९०३७ । ५८ इसका मूल दृक्क्षेप ५०८ । ५० इसका वर्ग २५९०३७ । ५८ त्रिज्यावर्गमें हीन किये शेष ११५६०८०६ । २ इसका मूल दृग्गति ३४००७ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागमें लब्ध छेद ८६९५ मध्यलग्न और रविका अंतर २१३४३३ इसकी ज्या २६९२४५ छेदके भागसे लब्ध घटिकादि स्फारिक चतुर्थ लंबन ३ । ६ को स्थित्यूनपर्वतमें हीन किये शेष ७ । ५२ तत्काल रवि २ । २० । १७ । ० सायन ३ । ६ । ३१ । ० सायन उदय लग्न ४ । १७ । ४९ । ३४

इसकी ज्या २३०७ । २४ को परमापक्रमज्यासे गुणके ३२२३४३७४८
लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या १०३९ । ४९ प्राङ्गत ९ । ६ साय-
न रविः ३ । ६ । ३१ । ३१ कर्क भुक्त पल ७० सायन मध्यलग्न १ ।
१४ । ३८ । ५६ मध्य लग्नोत्तर क्रांति ९९५ । ४९ याम्यलिता १५३
७ । १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न जातिके वशसे अंतर किये शेष याम्य नतलिता
५४१ । २८ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५३९ । १५ को उदयज्यासे
गुणके ५६०७२१ । ८ त्रिज्याके भागसे लब्ध १६३ । ६ इसका वर्ग
२६६०१३७ मध्यज्यावर्ग २९०७९०३४ दोनोंका अंतर २६४१८८
। ५७ इसका मूल दृक्क्षेप १३५९ इसके वर्ग २६४१८८। ५७ को त्रि-
ज्यावर्ग में हीन किये शेष ११५५६५३ इसका मूल दृग्गति ३३९९ । २
२ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६९।
१६ मध्यलग्न १ । १४ । ३६ । ५६ रवि ३ । ६ । ३१ । ३१ दोनों-
का अंतर १ । २१ । ५१ । ३५ इसकी ज्या २७०४ । १३ छेदके
भागसे लब्ध घटिकादि स्पर्शिक पंचमस्थिर लंबन ३ । ६ अथ मोक्ष-
लंबन लानेकी विधिः—गणितागत तिथ्यंत १३ । १९ स्थित्यर्द्ध २ । २१
युक्त किये १५ । ४० तत्काल रविः २ । २० । २४ । २३ सायन ३ ।
६ । ३८ । ५४ कर्क भोग्य पल २६६ इष्टघटिपलों ९४० से हीन
किये शेष ६७४ इसमें सिंहमान ३४५ शोधन किये शेष ३२९ को
३० गुणके अशुद्ध कन्या मानके भागसे लब्ध अंशादि २९ ।
२७ । ४५ भुक्तराशि युक्त कि सायन उदयलग्न ५ । २९ । २७ । ४५
इसकी भुजज्या ३२ । १५ को परमापक्रमज्या १३९७ से गुणके ४५०
५३ । १५ लंबज्याके ३१०० भागसे लब्ध उदयज्या १४ । ३२ मध्य-
लग्न २ । २९ । २१ । ० इसकी भुजज्या ३४३६ । ४७ को क्रांतिज्या
१३९७ से गुणके ४८०११८६ । १२९ त्रिज्याके भागसे लब्ध १३९६।
३० इसका चाप मध्य लग्नोत्तर क्रांति १४३४ । २७ स्वदेशाक्षलिता

कारण अंतर किये शेषयाम्यनत लिता ५१६ । २९ इसकी ज्या वही
मध्यज्या ५१४ । ३८ को उदयज्यासे गुणके ५२२५८४ । २५ त्रि-
ज्याके भागसे लब्ध १५२ । ० इसका वर्ग २३१०४ मध्यज्या वर्ग २६
४७ । २८ इन दोनोंका अंतर २४१७४३११८ इसका दृक्क्षेप ४९१४
इसका वर्ग २३२४४ मध्यज्या वर्ग ३६४८४७ । २८ इन दोनोंका
अंतर २४१७१३११८ इसका दृक्क्षेप ४९१ । ४० इसका वर्ग २४२७
४३ । २८ को त्रिज्यावर्गमें हीन किये शेष ११५७८१००३२ इसका
मूल दृग्गति ३४०२४०३१४४ इन दोनोंका अंतर १३१२८३१ इस
की ज्या २६५०४७ छेदके भागसे लब्ध घटिकादिक स्पर्शिक तृतीय लं-
बन ३ । ३ को स्थित्यून पर्वत में हीनकिये शेष ७ । ५७ तत्काल रविः
२ । २० । २७ । १ सायन ३ । ६ । ३१ । ३३ सायन उदय लग्न ४ ।
१८ । ५ । १३ इसकी ज्या २२९५५९ को परमापक्रमज्यासे गुणके
३२०७४८८ । ४३ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या १०३४ । ४०
प्राङ्गत ९ । ५६ मध्यलग्नोत्तर क्रांति १००१२६ याम्याक्षलिता १५३
७ । १७ यहां क्रांत्यक्षकी भिन्न दिशाके कारण अंतर किये शेष नतयाम्य
लिता ५३५५१ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५३३ । ४२ को उदयज्यासे
गुणके ५५२२०२ । ३६ त्रिज्याके भागसे लब्ध १६०३७ इसका वर्ग
२५७९७ । ४३ मध्यज्या वर्ग २८४८३५ । ४१ दोनोंका अंतर २५
९०३७ । ५८ इसका मूल दृक्क्षेप ५०८ । ५० इसका वर्ग २५९०३७
५८ त्रिज्यावर्गमें हीन किये शेष ११५६०८०६ । २ इसका मूल दृग्ग-
ति ३४००७ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागमें लब्ध
छेद ८६९५ मध्यलग्न और रविका अंतर ०१३४३३ इसकी ज्या २६
९२४५ छेदके भागसे लब्ध घटिकादि स्पर्शिक चतुर्थ लंबन ३ । ६ को
स्थित्यूनपर्वतमें हीन किये शेष ७ । ५२ तत्काल रवि २ । २० । १७ ।
० सायन ३ । ६ । ३१ । ० सायन उदय लग्न ४ । १७ । ४९ । ३४

इसकी ज्या २३०७ । २४ को परमापक्रमज्यासे गुणके ३२२३४३७४८
 लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या १०३९ । ४९ प्राङ्गत ९ । ६ साय-
 न रविः ३ । ६ । ३१ । ३१ कर्क भुक्त पल ७० सायन मध्यलग्न १ ।
 १४ । ३८ । ५६ मध्य लग्नोत्तर क्रांति ९९५ । ४९ याम्यलिता १५३
 ७ । १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न जातिके वशसे अंतर किये शेष याम्य नतलिता
 ५४१ । २८ इसकी ज्या वही मध्यज्या ५३९ । १५ को उदयज्यासे
 गुणके ५६०७२१ । ८ त्रिज्याके भागसे लब्ध १६३ । ६ इसका वर्ग
 २६६०१३७ मध्यज्यावर्ग २९०७९०३४ दोनोंका अंतर २६४१८८
 । ५७ इसका मूल दृक्क्षेप १३५९ इसके वर्ग २६४१८८ । ५७ को त्रि-
 ज्यावर्ग में हीन किये शेष ११५५६५३ इसका मूल दृग्गति ३३९९ । २
 २ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८६९ ।
 १६ मध्यलग्न १ । १४ । ३६ । ५६ रवि ३ । ६ । ३१ । ३१ दोनों-
 का अंतर १ । २१ । ५१ । ३५ इसकी ज्या २७०४ । १३ छेदके
 भागसे लब्ध घटिकादि स्पार्शिक पंचमस्थिर लंबन ३ । ६ अथ मोक्ष-
 लंबन लानेकी विधिः—गणितागत तिथ्यंत १३ । १९ स्थित्यर्द्ध २ । २१
 युक्त किये १५ । ४० तत्काल रविः २ । २० । २४ । २३ सायन ३ ।
 ६ । ३८ । ५४ कर्क भोग्य पल २६६ इष्टघटिपलों ९४० से हीन

३७।१ ३क्रांत्यक्षकी भिन्नदिशाके कारण अंतरकिये शेषयाम्यनत लिता ९७।
 ५० इसकी ज्या वही मध्यज्या दक्षिण ९७ । ५० को उदयज्या १४।३२
 से गुणके १४ । २१ । ५१ त्रिज्याके भागसे लब्ध ० । २४ इसका वर्ग
 ९५७।२ त्रिज्या वर्ग ११८१९८४४ इन दोनों वर्गोंका अंतर ११८१०२
 ७२४८ इसका मूलदृक्क्षेप ९२५० इसकी ज्या ३४ ३६।३६ एकराशिज्या
 वर्ग २९५४९६१ के दृगगतिके भागसे लब्ध छेद ८५९।५१ मध्यलम्ब २।
 ९।२१ । ० रविः ३ । ६ । ३८ । ५४ दोनोंका अंतर ० । ७।२७।
 ५४ इसकी ज्या ४ ३६ । ५७ के छेदके भागसे लब्ध घटिकादि प्रथम
 लंबन मौक्षिक ० । ३० मध्यलम्बसे भानु अधिकके कारण गणितागतमें
 १५ । ४० हीनकिये १५ । १० तत्कालरविः २ । २० । २३ । ५७
 सायन ३ । ६ । ३८ । २८ सायन उदय लग्न ५ । २६ । ४३ । ३४
 इसकी दोर्ज्या १९३ । २६ को परमापक्रमज्यासे गुणके २७०२६।२२
 लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ८७ । १० प्राङ्गत १ । ४८ सायनरविः
 ३ । ६ । ३८ । २८ कर्कशुक्लपल ७१ सायन मध्यलम्ब २ । २६ । ३३।
 ४९ मध्यलम्बोत्तरक्रांति १४ ३७ । ७याम्याक्षलिता १५ ३७ । १५क्रांत्य-
 क्षकी भिन्नदिशाके कारण अंतर किये शेष याम्यनतलिता १००।१० इस-
 की ज्या वही मध्यज्या १०० । १० को उदयज्यासे गुणके ८७ ३२ । १२
 त्रिज्याके भागसे लब्ध २ । ३२ इसका वर्ग ६ । २५ मध्यज्या वर्ग १००।
 ३३ । २२ दोनोंका अंतर १०० । २६ । ५७ त्रिज्या वर्गसे हीनकिये शेष
 ११८०९८१७ । ७ इसका मूल दृगगति ३४ ३६ । ३२ एकराशिज्या वर्ग
 २९५४९६१ के दृगगतिके भागसे लब्ध छेद ८५८५० मध्यलम्बार्कांतर
 ० । १० । ४ । ३८ इसकी ज्या ६०१ । ३४ छेदके भागसे लब्ध मौक्षिक
 द्वितीय लंबन ० । ४२ को स्थित्यर्द्धमें युक्तकिये गणितागत १ । ४० में
 हीनकिये शेषतम हाग १५५ शेष ७ विः २ । २० । २३ । ४३ सायन
 सायन ३ । ६ । ३१ । ० सायन लग्न ५ । २५ । ४२ । ५ इसकी

भुज्या २४७ । ४६ का परमपक्रमज्यासे गुणके ३६०१०० । २
लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ११६ । १० सायन मध्यलग्न २ । २५
। २६ । ५७ मध्यलग्नोत्तरक्रांति १४३४ । ६ याम्याक्षलिता १५३७ । १७
क्रांत्यक्षकी भिन्नदिशाके कारण अंतरकिये शेष याम्यनतलिता १०२ । ३१
इसकी ज्या वही मध्यज्या १०२ । ३७ को उदयज्यासे गुणके ११९०९
त्रिज्याके भागसे लब्ध ३ । २८ इसके वर्ग १०४९१ । ३९ को त्रिज्या
वर्गमें हीनकिये शेष ११८०९३४६ । २१ इसका मूल दृग्गति ३४३६ । २८
एकराशिज्यावर्ग २९५४९६१ के दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८५९ । ५३
मध्यलग्न और रविका अंतर ० । १ । १ । १७ इसकी ज्या ६६०२०
छेदके भागसे लब्ध घटिकादि मौक्षिक तृतीयलंबन ० । ४६ स्थित्यर्द्धयुत
गणितागत १५ । ४० म हीनकिये शेष १४ । ५४ तत्कालरविः २ । २० ।
२३ । ३९ सायन ३ । ६ । ३८ । १० सायन उदयलग्न ५ । २५ । २० ।
३६ इसकी ज्या २७ । ९ । ९ को परमापक्रांतिज्यासे गुणके ३८३८ । १०
सायन मध्यलग्न २ । २५ । ४ । ३९ मध्यलग्नोत्तरक्रांति ४४३३ । ४९
याम्याक्षलिता १५३७ । १७ क्रांत्यक्षकी भिन्न दिशाके कारण अंतर किये
शेष याम्यनत लिता १०३२० इसकी ज्या वही मध्यज्या १० को उदयज्या
से गुणके २३०१६ । ६ त्रिज्याके भागसे लब्ध ३ । ४७ इसका वर्ग
१४ । १९ मध्यज्यावर्ग १०७७४ । २६ दोनोंका अंतर १०७६० । ७
इसका मूल दृक्क्षेप १०३ । ४७ इसके वर्ग १०७६० । ७को त्रिज्या वर्गमें
हीनकिये शेष ११८०९०८३ । ५३ का मूल वही दृग्गति ३४३६ । २६
एकराशिज्यावर्ग २९५४९६१ दृग्गतिके भागसे लब्ध छेद ८५९ । ५३
मध्यलग्नार्क अंतर १२३३ । ३१ इसकी ज्या ६८९ । १ छेदके भागसे
लब्ध घटिकादि मौक्षिक चतुर्थ लंबन ० । ४८ स्थित्यर्द्धयुतगणितागत
१५ । ४० में हीनकिये शेष १४ । ५२ तत्काल रवि १ । २० । २३ ।
३७ सायन ३ । ६ । ३८ सायन उदयलग्न ५ । २५ । १ ।

५१ इसकी ज्या १३० । ३७ प्राङ्गत-२ । ६ सायन रविः ३ । ६ ।
 ३८ सायनमध्यलग्न २ । २४ । ३ । ३० मध्यलग्नोत्तरक्रांति २४ । ३३
 । १९ याम्याक्षलिता १५३७ । १७ क्रांत्यक्षकी भिन्नजातिके कारण
 अंतर किये शेष याम्यनतलिता १०३ । ५८ को उदयज्यासे गुणके १३
 ५७९ । ४६ त्रिज्याके भागसे लब्ध ३ । ५२ इसका वर्ग १०७९३
 मध्यज्यावर्ग १०३ । ५८ को उदयज्यासे गुणके १३५७९ । ४६ त्रिज्या-
 के भागसे लब्ध १०८९ । ४ दोनोंका अंतर १०७९३ । २८ इसका
 मूल हगति ३४३६ । २५ एकराशिज्या वर्ग २९५४९६१ के हगतिके
 भागसे लब्ध छेद ८५९ । ५३ मध्यलग्न और सूर्यका अंतर १२४४ ।
 ३८ इसकी ज्या ६९९५० छेदके भागसे लब्ध घटिकादिस्थिर मौक्षिक
 पंचम लंबन ० । ४८ ॥ अथ स्थित्यर्द्धके लंबनांतर संस्कार देनेकी
 विधिः—स्पर्शकाल लंबन ३ । ६ मध्यकाललंबन २ । ६ मोक्षकाल लंबन
 ० । ४८ स्पर्शमध्य लंबनका अंतर १ । १८ दृक्पाली मध्यलंबनसे
 स्पर्शिक लंबनके अधिक होनेके कारण मध्य स्पर्श लंबनका अंतरकिये
 १ । ० स्थित्यर्द्ध २ । २१ में युक्तकिये ३ । ३९ गणितागत तिथ्यंत १३
 । १९ मध्यलग्नसे सूर्य अधिक होनेके कारण स्थिर मध्य लंबन २ । ६ को
 हीनकिये पर्व मध्यकाल ११ । १३ स्पर्शिक स्थित्यर्द्धहीनकिये स्पर्शकाल
 ७ । ५२ मध्यकाल ११ । १३ में मोक्षस्थित्यर्द्ध ३ । ३९ युक्तकिये मोक्ष-
 काल १४।५२ अथ इष्टग्रास लानेकी विधिः—स्पर्श इष्ट घटी२ को स्पर्श-
 स्थित्यर्द्ध ३ । २१ में हीनकिये शेष १ । २१ । इसको रवीन्दुमुन्नयंतर
 ७५३ । ३६ से गुणके १०१७ । २२ षष्टि ६० भागसे लब्ध कोटिलिता
 १६ । ५७ मध्यस्थित्यर्द्ध ३ । २१ से गुणके ३९ । ५० स्पष्ट स्थित्यर्द्ध
 ३।२१ के भागसे लब्ध कोटिलिता ११५३ अथ इष्टकालीन विक्षेप लानेकी
 विधिः—इष्टकालीन रविः २।१८।५३ सायन ३।६।३३।१६ सायन उदय लग्न
 ४।२८।१५।४० इसकी गुज्या १८०७।० को परमापक्रमज्यासे गुणके २५

२५१७० । ३८ लंबज्याके भागसे लब्ध उदयज्या ८२५।३४ प्राङ्गतघटी
 ७ । ६ सायनरविः ३।६ । ३३ । २६ सायन मध्यलग्न १ । २६ । ४७
 मध्यलग्नोत्तर क्रांति ११९३ । १४ स्वदेशाक्षलिता १५३७ । १७ याम्य-
 नतलिता ३४४ । ३ इसकी मध्यज्या ३४३ । ३१ याम्य परमापक्रमज्या
 से गुणके २७९८१७ । १४ त्रिज्याके भागसे लब्ध ८१ । २३ इसका
 वर्ग ६६२३ । ५ मध्यज्यावर्ग ११८००३ । ४ इवर्गांतर ११३८० । २७
 इसका मूल स्पर्शेष्ट क्षेप ३३३ । ४४ मध्यभुक्तयंतरसे गुणके २४४१०९
 । १५ तिथिघ्न त्रिज्याके भागसे लब्ध याम्य अवनति ४ । ४४ इष्टकालीन
 चंद्र २ । १९ । ३५ । ३३ तत्कालपात ८ । ३ । १४ । ११ चंद्रोनपात
 केंद्र ६ । ३।३८ । ३८ भुजज्या २ । ८ । ३८ चंद्रमध्यविक्षेप २७० से
 गुणके ५९०३१ त्रिज्याके भागसे सौम्य विक्षेप १२ । २६ विक्षेपवर्ग
 १५४ । ३५ स्पष्टकोटिलितावर्ग १४१ । १४ दोनोंका योग २९५ । ४८
 इसका मूलकर्ण १७ । ४३ मानयोगार्द्ध ३१ । ५८ में हीनकिये शेष स्पर्श
 ग्रासलिता १७ । ४५ ॥

अथ मोक्षेष्टग्रासलानेकी विधिः—मोक्षेष्ट घटी १ । ३९ मोक्षस्थित्यर्द्ध
 ३ । ३९ में हीनकिये शेष २।० इसको रवींदुभुक्तयंतर ७५२ । ३६ से
 गुणके १५०७ । ५२ पष्टि ६० के भागसे लब्ध कोटिलिता २५ । ७ को
 मध्यस्थित्यर्द्ध २।२१ से गुणके ५९ । १ स्पष्ट मोक्षस्थित्यर्द्ध ३ । ३४
 के भागसे लब्ध स्पष्ट कोटिलिता २६ । १० अथ इष्टकालीन विक्षेप ला-
 नेकी विधिः—तत्काल रविः २ । २० । २१ । ४४ सायन ३ । ६ ।
 ३६ । १५ सायनउदयलग्न ५।१४।१९ । ५२ इसकी भुजज्या ९२८।
 ३० को परमापक्रमज्यासे गुणके १२९७११४ । ३० लंबज्यासे लब्ध
 उदयज्या ४१८२५ प्राङ्गत ४ । ६ याम्यनतलिता १५९ । १० सायनोर्कः
 ३ । ६ । ३६।१५ सायन मध्य लग्न २ । १३ । ४४।४७ मध्यलग्नोत्तर
 क्रांति १३०८ । ७ याम्यनतलिता १५९ । १० मध्यज्यायाम्या १५९ ।

ज्या १४८६ से गुणके ४१६२८०६ । ६ त्रिज्याके भागसे लब्ध १२१० ।
 ४९ इसका धनु वही सौम्यनतलिप्ता १२३८ । २२ स्पर्शकालीनरविः २ ।
 २० । १७ । ० राशित्रययुत ५ । २० । १७ । ० अयनांश १६१४३३१
 युत ६ । ६ । ३१ । ३१ याम्यभुजज्या ३९० । ४६ क्रांतिकलाः
 १५८ । ४ सौम्यनतलिप्ता १२३८ । २२ नत और क्रांतिकी भिन्न
 दिशाके कारण अंतर किये १०७९ । ३५ इसकी ज्या वही सौम्य
 वलनज्याके १०६१३८ सतंतर ७७ के भागसे लब्ध स्पर्शिक सौम्यवलनां-
 गुल १५ । ९ अथ मध्यकालीन वलन लानेकी विधिः—मध्यकाल ११ ।
 १३ प्राङ्गत घटी ५ । ४५ नतासव २०७० नतज्या सौम्यसंज्ञकके चाप
 करनेस सौम्य मध्यनतलिप्ता ८५० । २ तात्कालीन रविः २ । २० । २० ।
 ९ साधन और राशित्रययुत ६ । ६ । ३४ । ३१ इसकी भुजज्या ३९३ ।
 ५५ सौम्यक्रांति कला १६० । ४ सौम्यनतलिप्ता ८५० । २ नत और क्रांतिके
 दिग्भेदके कारण दोनोंका अंतरकिये ६८८ । ५ इसकी ज्या वही वलनज्या
 ६८४ । ३४ इसके ७० भागसे लब्ध मध्य सौम्यवलनांगुल ९ । ४७ ॥

अथ मोक्षकालीन वलन लानेकी विधिः—मोक्षकाल १४ । १५ प्राङ्गत-
 घटी २ । ६ नतासव ७५६ नतज्या ७५९ । ५० को अक्षज्यासे गुणके
 १११४२५२ । २० त्रिज्याके भागसे लब्ध ३२४ । ६ इसका चापकिये
 सौम्यमोक्ष नतलिप्ता ३२४ । ३२ तत्कालरविः २ । २० । २३ । ३७
 सायन और राशित्रययुत ६ । ६ । ३८ । ८ इसकी भुजज्या ३९७ । २२
 याम्यक्रांति कला १६१ । २८ सौम्यनतलिप्ता ३२४ । ३२ नत और क्रांतिके
 दिग्भेदके कारण अंतरकिये १६३ । ४ इसकी ज्या वही सौम्यमोक्षवलनज्या
 १६३ । ४ के ७० भागसे लब्ध सौम्य मोक्षवलनांगुल २ । २० अथ
 स्पर्शिक शर लानेकी विधिः—स्पर्शिकस्थिर दृक्क्षेप ५१३ । ५९ को मध्य-
 भुत्तयंतरसे गुणके ३७५९५३ । ६ फिर १५ गुणके त्रिज्याके भागसे
 लब्ध याम्य अवनति ७ । १२ तत्काल चन्द्र २ । १९ । ८ । ३९ पात

८।२३।१४।१७ केंद्र ६।४५ भुज्या २४५। ४० चन्द्र-
विक्षेपसे गुणके ६६३३०।० त्रिज्याके भागसे लब्ध सौम्यविक्षेप १२।०॥

अथ मोक्षविक्षेप (शर) लानेकी विधि:—मोक्षस्थिर दृक्क्षेप १०३।३
को मध्य भुक्त्यन्तरसे गुणके ५५९८५।२८ तिथि १५ त्रिज्याके
भागसे लब्ध याम्य अवनति १।२७ तत्काल चंद्र २।२०।४३।५
पात ८।२३।१३।५५ केंद्र ६।२।३०।५० भुज्या १५०।
३० को विक्षेपसे गुणके ४०७२५।० त्रिज्याके भागसे लब्ध सौम्य
विक्षेप ११।५० याम्य अवनति १।२७—विक्षेप और अवनतिके दिग्मे-
दके कारण अंतरकिये मौक्षिक स्पष्ट सौम्य विक्षेप १०।२२॥

अथ विक्षेपादिकोंके अंगुलीमान करनेकी विधि:—मध्यकालोन्नत
११।१३ को दिनमान और—दिनार्द्ध १६।५८ सहितकिये ६२।७
फिर दिनार्द्ध १६।५८ के भागसे लब्ध छेद ३।४० स्पर्श विक्षेप लिमा
१२।० छेदके भागसे स्पर्शिक सौम्य विक्षेपांगुल ३।१६ मध्य विक्षेप
लिमा १२।१९ छेदके भागसे लब्ध मध्यविक्षेपांगुल ३।३१ मोक्ष विक्षेप
लिमा १०।२२ छेदके भागसे लब्ध सौम्य मोक्ष विक्षेपांगुल २।४९
रविमान लिमा ३१।९ छेदके भागसे लब्ध रविर्बिंबांगुल ८।४३ और
इसीप्रकारसे छेदके भागसे चंद्रबिंबांगुल ८।५६ मानयोगार्द्धांगुल ८।४३
ग्रासलिमा १९।३९ छेदके भागसे लब्ध ग्रासांगुल १२।० स्पर्शेष्टग्रास-
लिमा १४।४५ छेदके भागसे लब्ध स्पर्शग्रासांगुल ४।१ मोक्षेष्टग्रास
लिमा १२।० छेदके भागसे लब्ध मोक्षेष्टग्रासांगुल ३।१६।

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविष्णुपिते सूर्यग्रहण-

गणितकथनं नाम द्वादशविनोदः ॥१२॥

अथ ग्रहयुद्धोदाहरणं व्याख्यास्यामः—ग्रहोंका युद्ध चार प्रकारका
है. वह युद्ध १ भेद २ उल्लेख ३ अंशमर्द ४ और असव्य इन चारप्रकारसे
पराशरआदि मुनियोंने कहाहै जब दोनों ग्रह एक दीर्घपट्टे अर्थात् रूप

वाले ग्रहोंको नीचेका ग्रह ढक लेवे उसका युद्ध नाम भेद है. १ एक ग्रह दूसरे ग्रह बिंबकी परिधि मात्रको स्पर्श करे ढके नहीं वह उल्लेख नामका युद्ध है २ दोनों ग्रहोंका स्पर्श तो न होय परन्तु इतने समीप दोनों होजायँकी एक बिंबसदृश दीखे वह उल्लेख युद्ध कहलाता है. एक ग्रह दूसरे ग्रहके दक्षिण में बरोबर रहै और दूसरा उत्तरमें रहै इसका नाम असव्य युद्ध है ४ संवत् १६४१ शाके १५०६ ज्येष्ठ शुदि ११ रविदिन सृष्ट्यब्दाः १९ ५५८८४६८५ सिद्धांत अर्हगण ७१४४०४००७९०६ कलिगताब्द ४६८५ कलि अर्हगण १७११२७९ रविमध्यम १।१।१६।४३ गुरुमध्यम ११।२७।५४।३ शुक्रशीघ्रोच्च १०।१४।४६।२९ स्पष्ट सूर्य १।१२।२४।२९ गति ५७।१८ स्पष्टगुरुः ०।५।२८।७ गति १३।१५ स्पष्टशुक्र ०।७।२९।२१ गति ७१।१५

अथ गुरु और शुक्रके समलित्तिका करनेकी विधिः—स्पष्टगुरुः ०।५।२८।७ स्पष्टशुक्र ०।७।२९।२१ दोनोंके अंतरकी कला २२१।१४ के भुक्तयंतरके भागसे लब्ध दिनादि २।५।२४ ग्रहांतर २२१।१४ को शुक्रस्पष्ट गतिसे गुणके ८६३७।५३ भुक्तयंतरके ५९।० भागसे लब्ध संयोगी गत होनेके कारण भृगुफल-क्रणात्मक १४८।५५ इसको स्पष्ट शुक्रमें हीन किये समकलकाली भृगुः ०।५।०।२६ एवं ग्रहांतर १२१।१४ को स्पष्टगुरु भुक्तिसे गुणके दोनों भुक्तयंतरके भागसे लब्धलिनादि गुरुफल संयोगी गत होनेके कारण क्रणात्मक २७।४१ फलको स्पष्ट गुरुमें हीन किये समकलकाली गुरुः ०।५।०।२६ एवं दिनादि फल २।५।४३ इष्टवारादि ०।४६।५० में हीन किये शेष वारादि ६।४१।२६ ज्येष्ठ शुदि ९ शुक्र दिन ४१।२६ के इष्ट ऊपर गुरुस्पष्ट ०।५।०।२६ तत्काल रविस्पष्ट १।१०।२४।४४ अथ रवि और गुरु शुक्रके दिनमान लानेकी विधिः—सायन रविः १।२६।४१।१५ गति ५७।१८ सायन व्रषा-

सुप्ते गुणे ८७०१० । ४२ रविकी उत्तर क्रांति कला ११९१ । ४९ इस
 की क्रमज्या ५५९ । २१ को त्रिज्यासे गुणके १९२३०४५१८ युज्या-
 के भागसे लब्ध चरज्या ५९४ । ५४ इसका धनु वही चरासव सौम्य ५
 ९७ । ५२ स्वाहोरात्र चतुर्भाग ३५४ । ५ में युक्तकिये सूर्यका दिनार्द्ध-
 सव ६००९ । ५७ ऊनित किये राज्यर्द्धसव ४८१४ । १३ दिनार्द्ध-
 घट्यादि १६ । ४१ राज्यर्द्ध १३ । २३ मिश्रप्रमाण ४६ । ४४ अथ
 गुरुदिनमान लानेकी विधि:—सायनगुरु:० । २१ । १६ । ५७ गति१३
 । १५ सायन मेपासुप्ते गुणके ११५५६ । १५ खखाष्टेन्दु १८००के भाग-
 से लब्ध ९ । ४५ स्वाहोरात्रासव २१६९ । ४५ गुरु सौम्य क्रांतिकला
 ५०८ । २५ स्पष्ट गुरु पात २ । २६ । १७ । ५४ तत्कालगुरु ० । ५ ।
 ० । २६ केंद्र २ । २१ । १७ । २८ भुजज्या ३३९७ । ४ याम्यगुरु
 विक्षेप ५१ । २१ क्रांति और विक्षेपके दिग्भेदके कारण अंतर किये स्पष्ट
 सौम्य गुरु क्रांति ४५७ । ४ इसकी क्रमज्या ४५५ । ५८ कुज्या २१८ ।
 २९ चरज्या २२० । २४ इनका स्वाहोरात्र चतुर्भागमें ५४०२ । २६
 युक्त किये गुरुदिनार्द्धसव ५६२२ । ५० ऊन किये राज्यर्द्धसव ५१
 ८२ । २ गुरु दिनार्द्ध घटी १५ । ३० राज्यर्द्ध घटी १४ । २४ शुक्रका
 स्वाहोरात्रासव २१६५२ । १७ शुक्रकी सौम्य क्रांतिकला ५०८ ।
 २६ शुक्रका स्पष्ट पात १२८ । १२ । ५५ भृगु ० । ५ । ० । २६ भृगु-
 पात केंद्र १ । २३ । १२ । २९ भुजज्या २७५२ । ४४ याम्यविक्षेप
 ७६ । ३१ विक्षेप और क्रांतिके दिग्भेदके कारण अंतर किये स्पष्ट सौम्य
 भृगु क्रांति ४३१ । ५५ क्रमज्या ४३० । ५९ उत्क्रमज्या २७ । १२
 गुज्या ३४१० । ४८ कुज्या २०६ । ३० चरज्या २०८ । ८ इसका
 चाप वही चरासव सौम्य २० । ८ । ८ स्वाहोरात्र चतुर्भागमें ५४१३ ।
 ७ राज्यर्द्धघटिका युक्त किये भृगु वा दिनार्द्धसव १६२१ । १५ ऊनित
 किये राज्यर्द्धसव ५२०४ । ५९ शुक्रदिनार्द्ध घटी १५ । ३१ रात्रिमें

समकालीन होनेके कारण सपट्क ७ । २६ । ४१ । १५ गुरुः ४ । २१ । १६ । ५७ रविसे अधिक होनेके कारण वृश्चिककी भुक्तपल ३०७ गुरुके ऊन होनेके कारण तुलाकी भोग्य पल ९७ इन दोनोंका योग ४०४ ग्रह-सूर्यांतराल घटी ६ । ४४ सूर्यास्त पीछेकी इष्ट घटी ५८ । ५ इन दोनोंका योग १४ । ४८ यह ग्रहास्त पीछेकी इष्ट घटीकोही गुरुरात्रिमानसे २८ । ४८ हीन किये गुरुशेष रात्रिघटी १४ । ० इसमें गुरु दिनार्द्ध युक्त किये गुरु प्राङ्गत घटी २९ । ३७ स्वाग्नि ३० से हीन किये उन्नत घटी ० । २ ३ सायन रविः सपट्क ७ । २६ । ४१ । १५ सायन सपट्क शुक्र ६ । २१ । २६ । ५७ भुक्तपल ३०७ भोग्यपल ९७ दोनोंका योग ४०४ शुक्र सूर्यांतराल घटिका ६ । ४४ सूर्यास्त पीछेकी इष्टघटी । १३ दोनोंका योग १४ । ३८ शुक्रास्त पीछे-का इष्टकाल १४ । ४८ शुक्रकी रात्रिमानसे २८ । ५४ हीन किये शेष रात्रिघटी १६ इसको शुक्रदिनार्द्धमें युक्तकिये शुक्रकी प्राङ्गतघटी २९ । ४३ स्वाग्नि ३० से हीनकिये उन्नत घटी ० । १७ अथ गुरुकी दृक्कर्म-साधनकी विधिः-गुरुयाम्यविक्षेप ५१ । १२ को विपुवच्छाया ५।४१ से गुणके २९५ । १६ द्वादश १२ के भागसे लब्ध २४ । ३६ को गुरुनत घटी २९ । ३२ से गुणके ७२८ । ३४ गुरुदिनार्द्ध १५ । ३७ के भागसे लब्धलिप्तादि ६ । ३९ दृक्कपाली याम्यविक्षेप होनेके कारण धनकिये आक्षज संस्कृत गुरुः ० । ५ । ४७ । ५ सायन सत्रिभगुरुः ३ । ११ । ५७ सौम्यक्रांत्यंश २२ । ५ । २३ को याम्य विक्षेप कलासे ५१२१ गुणके ११५३ पष्टि ६० भागसे लब्ध आयन फल १९ । २३ क्रांति और विक्षे-पकी दिग्भेद कारण आक्षजगुरुमें उक्त फल युक्त किये दृक्कर्मजगुरुः ० । ६ । ६ । ८ अथ दृक्कर्मशुक्रके साधनविधिः-शुक्रके याम्य विक्षेप ७६ । ३१ को विपुवच्छायासे गुणके ४३९ । ४८ द्वादश १२ भागसे लब्ध ३६।४० को शुक्रकी नत घटिकासे ३९ । ४३ गुणके ६१०८९ । ३७ शुक्रके दिनार्द्ध १५ । ३० के भागसे लब्ध ६९ । ४६ शुक्रका याम्यविक्षेप २९

लितादिके कारण शुक्रमें युक्तकिये आक्षज संस्कृत गुरुः ० । ६ । १० । १०
 १२ सायन सत्रिभगुरुः ६ । २१ । १६ । ५७ सौम्यक्रात्यंश २१ । १५
 २३ को विक्षेपलिता ७६ । ३१ से गुणके १७०३ पट्टि ६० भागसे लब्ध
 कलादि २८ । २३ क्रांति और विक्षेपके दिग्भेद होनेका कारण अक्षज
 संस्कृत भृगुमें युक्तकिये दृक्कर्मसंस्कृत भृगुः ० । ६ । ३८ । ३५ दृक्कर्मगुरुः
 ० । ६ । १६ । ८ दोनोंके अंतरकी कला ३२ । २७ के भुत्तयंतर के
 भागसे लब्ध दिनादि ० । ३३ । ३४ इष्टकाल ४१ । २६ से हीनकिये शेष
 ७ । ५२ एवं ज्येष्ठशुदि ९ शुक्रके दिन सूर्योदयसे इष्टघटी ७ । ५५ समय
 गुरु और शुक्रका युद्धहुवा, ग्रहांतरकी कला ३२ । २७ को गुरुगति १३ ।
 १५ से गुणके ४९ । ५७ भुत्तयंतरके भागसे लब्ध ७ । २४ को दृक्कर्म
 दत्त शुक्रमें हीनकिये गुरु ० । ५ । ५८ । ४४ एवं ग्रहांतरको शुक्र गतिसे
 गुणके भुत्तयंतरके भागसे लब्ध ३९ । ५२ दृक्कर्मज भृगुमें हीनकिये भृगु ० ।
 ५ । ५८ । ४४ अथ तात्कालीन गुरुविक्षेप लानेकी विधिः गुरुः ० । ५ ।
 ५८ । ४४ पातर २ । २६ । १७ । ५४ केंद्र २ । २० । १९ । १० भुजज्या
 ३३८७ । २९ को विक्षेपसे गुणके २०३२४९ चलकर्णके भागसे लब्ध
 याम्यविक्षेप ११ । १३ अथ शुक्रविक्षेप लानेकी विधिः शुक्र ० । ५ । ५८ ।
 ४८ पात १ । २२ । १४ । ११ भुजज्या २७१७ । २६ को विक्षेप ३२
 ६१५२ से गुणके चलकर्णके भागसे लब्ध शुक्रयाम्यविक्षेप ७५ । ३४ विक्षे-
 पोंके दिशा साम्यताके कारण अंतरकी शेष २४ । २१ अथ गुरु और
 शुक्रके स्पष्टविष्कंभ लानेकी विधिः—गुरुमध्यविष्कंभ ५२ । ३० द्वि २
 गुणके १०५ फिर त्रिज्यासे गुणके ३६०९९० त्रिज्यांत कर्णके योगके
 ७७५४ । ५१ भागसे लब्ध चंद्र कक्षापे स्पष्ट शुक्र विष्कंभ ५३ । १२
 तिथि १५ के भागसे लब्ध शुक्रमानलिता ३ । ३२ गुरुविष्कंभ ४८ । ४४
 के तिथि १५ के भागसे लब्ध गुरुमानलिता ३ । १५ मानयोगार्द्धलिता ३ । २४

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषा विभूषिते ग्रहयुद्ध

गणित विधिवर्णननाम त्रयोदश विनोदः ॥ १३ ॥

अथ ग्रह और नक्षत्रके योग होनेकी गणितविधि:—यहां रोहिणी और शुक्रके योग होनेका उदाहरण लिखा जाताहै संवत् १६४१ शक १५०६ द्वितीय आपाढवदि १ रविदिन सृष्ट्यब्द १९५५८८४६८५सिद्धांत सृष्ट्या-यहर्गण ७१४४०४४००७९४१कलियुगाब्दाः ४६८५ कलिअहर्गण १७ ११३२८ अर्द्धरात्रिके इष्टपेदेशांतर संस्कृत मध्यमरविः २ । १५। ३६। २९ शुक्रशीघ्रोच्च ०।१०।५०।५६ स्पष्टरविः २।१५।४०।२४ गति ५६।५० शुक्रस्पष्ट १।१९।१३।४३ गति ७२।६ शुक्रके चतुर्थ चलकर्ण ५०।१४।५३ स्पष्टभृगुपात १।१९।५।३५ अथ शुक्र और रोहिणीके सम लिप्ता करनेकी विधि:—रोहिणी ध्रुव १।१९। ३०।० स्पष्ट शुक्र १।१९। २३ दोनोंके अंतर लिप्ता ६।१७ शुक्रकी स्पष्ट गतिके भागसे लब्ध दिनादि० । ५। १३ यहां रोहिणीसे शुक्र स्पष्ट न्यून होनेके कारण इष्ट घटीमें युक्त किये ५१। २२ समलिप्ता रोहिणी १।१९। ३० शुक्र १।१९।३० तत्कालरविः २।१५। ४५। ३० अथ रवि और शुक्र रोहिणीके दि-नमान लानेकी विधि:—रविका स्वाहोरात्रासव २१६५७। २८ रविकी सौम्यक्रांति १४३८। १९ क्रांतिज्या १३९। २८ उत्क्रमज्या २९७। ३० युज्या ३१४०। ३० कुज्या ६६८। ३९ चरज्या ७३१। ५९ चरासव ७३७। ३७ दिनार्द्धासव ६१५१। ५९ रात्र्यर्द्धासव ४६७ ६। ४५ दिनार्द्धघटी १७। ५ रात्र्यर्द्धघटी १२। ५९ अहोरात्रघटी ६०। ८ अथ शुक्रके दिनमान लानेकी विधि:—स्वाहोरात्रासव २१ ६७२। ५४ भृगुयाम्यविक्षेप ६१। १६ सौम्यक्रांति १३०५। ३० विक्षेपसंस्कृत स्पष्ट क्रांति १२४४। १४ क्रांतिज्या १२३६। १७ क्रमज्या २३३। ५१ युज्या ३२२४। ९ क्षितिज्या ५८२। ४८ चरासव ६२६। ४४ दिनार्द्धासव ६०४४। ५८ रात्र्यर्द्धासव ४७९१। ३० दिनार्द्धघटी १६। ४७ रात्र्यर्द्धघटी १३। १८ अथ रोहिणीके दिनमान लानेकी विधि:—रोहिणीका स्वाहोरात्रागव २१६०० रोहिणी याम्य विक्षेप ३०० क्रांति १३०५। ३० रोहिणी स्वाहोरात्र सौम्य वि-

क्षेपसंस्कृत स्पष्ट क्रांति १००५ । ३० क्रांतिज्या ९९० । ४९ उत्क्रम-
 ज्या १४७ । २८ युज्या ३२९० । ३२ क्षितिज्या ४७५ । ३५ चरज्या
 ४९६ । ५४ चरासव ४९७ । ५४ दिनार्द्धासव ५८९७ । ५४ रात्र्यर्द्धा-
 सव ४९०२ । ६ दिनार्द्धघटी १६ । २३ रात्र्यर्द्धघटी १३ । ३७ अथ
 नतोन्नतसाधनविधिः—सायन रवि ३ । २ । १ । ५१ सायन रोहिणी
 और शुक्र २ । ५ । ४६ । ३१ रात्रिके इष्टके कारण सपङ्ग रविः ९ ।
 २ । १ । ५१ शुक्र ८ । ५ । ४६ । ३१ अंतरघटी ४ । २८ रात्रिगत
 घटीमें १८ । १२ युक्त किये २२ । ४० सूर्य रात्र्यर्द्ध घटीमें हीन करनेसे
 उन्नत घटी २० । २४ रोहिणी नतघटी २० । १९० अथ दृक्कर्मसाधन-
 की विधिः—शुक्र याम्य विक्षेप ६१ । १६ को विपुवद्रासे गुणके ३५२ ।
 १७ द्वादश १२ भागसे लब्ध २९ । २१ को नतघटी २० । २४ से गुण-
 के ५९८ । ४४ स्वदिनार्द्धके १६ । ४७ भागसे लब्ध ३५ । ४० शुक्र
 में युक्तकिये आक्षज संस्कृत भृगुः १ । २० । २४ सायनत्रिभ भृगुः ५ ।
 ५ । ४६ । ३१ भुजज्या १४०९ । १७ क्रांतिज्या ५७२ । ३९ क्रांति-
 सौम्य ५७५ । २८ भागादि ९ । ३५ । १८ को विक्षेपलिप्तासे ६१ ।
 १६ गुणके ५८७ पष्टि ६० भागसे लब्ध कलादि ९ । ४७ आक्षज भृगुओं
 में युक्तकिये दृक्कर्मज भृगुः १ । २० । १५ । २७ रोहिणी याम्यविक्षेप
 ३०० को विपुवद्रासे गुणके १७२५ । ० द्वादश १२ भागसे लब्ध १४३ ।
 ४५ नतघटी २० । १९ से गुणके २९२० । ३० दिनार्द्ध १६ । २३ के
 भागसे लब्ध १७८ । १६ कलादि ब्राह्म्य ध्रुवमें युक्त किये आक्षज ब्राह्म्य
 ध्रुवकः १ । २२ । २८ । १६ सत्रिभ सायनध्रुवः ५ । ५ । ४६ । ३१
 क्रांति सौम्य अंशादि ९ । ३५ । १८ विक्षेप लिप्ता ३०० से गुणके वि-
 कला २८७७ कलादि ४७५७ अक्षज ध्रुवमें युक्त किये दृक्कर्मसंस्कृत
 ब्राह्म्य ध्रुवकः १ । २६ । ३६ । १३ दोनोंकी अंतर कला १८०४६
 लब्ध दिनादि ३० । २५ पूर्वानीत समकल कालमें युक्त किये १ । ५१ ।
 २२ ब्राह्म्य भृगुका युक्तकाल ४ । २२ । ४७ द्वितीयापाठ वदि ४ बुधे
 सूर्योदयसे घटी २२ । ४७ शुक्र और रोहिणीका योग हुवा अथ तत्कालं

विक्षेप लानेकी विधिः—तत्काल मध्यम रविः २ । १८ । ९ । ५२ शुक्र
शीघ्रोच्च ० । १५ । ० । १७ चतुर्थ चलकर्णकः ५०५७ । ८ स्पष्ट पात
१ । २९ । १० । ५९ याम्यविक्षेप ५६ । ५० रोहिणी याम्य विक्षेप
३०० दोनेके दिक्तुल्यके कारण अंतर किये ब्राह्म्य भृगुकी अंतर कला
२४३ । १७ तीन ३ के भागसे लब्ध अंगुलात्मक अंतर ८१ । ३ चौबी-
स २४ के भागमें लब्ध हस्तात्मक अंतर ३ । ९ । ३ ॥

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभापाविभूषिते ग्रहनक्षत्र-
युतिकथनं नाम चतुर्दशविनोदः ॥ १४ ॥

अथ ग्रहोदयास्तविधिं व्याख्यास्यामः—संवत् १६४१ भाद्रपद वदि
५ रविदिन सिद्धांत अहर्गणः ७१४४०४०० कलि अहर्गणः १७११३
९१ उस दिन देशांतर संस्कृत रवि मध्यमः ४ । १६ । ५१ । ४२ शुक्र
शीघ्रोच्च ३ । २० । ३४ । ५५ रविस्पष्ट ४ । १५ । ४ । ४० स्पष्टगति
५७ । ५७ मंदफल ऋण १ । २२ । ३४ स्पष्टशुक्र ४ । ५ । ६ । ३
गति ७३ । ५२ चलकर्ण ५७९४ । १० स्पष्टभृगुपात ० । १ । ३ सौम्य
विक्षेप ५४ । ९ शुक्र की सौम्य क्रांति ८२१ । १ अशर संस्कृतस्पष्टक्रांति ९३५ ।
२२ भृगुओंका स्वाहोरात्रासव २१६८४५६ क्रांतिज्या ९३६ । ४७ क्रांतिरा
उत्क्रमज्या १२३ । १३ युज्या ३१० । ४७ क्षितिज्या ४४२ । ३९ चरज्या ४५
९ । ३८ चरासव ४६० । ४६ दिनार्द्धासव ५८८२ । ० रात्र्यर्द्धासव
४९६० । २० दिनार्द्धघटी १६ । २० रात्र्यर्द्धघटी १३ । ४७ सायन
रवि ५ । १ । २१ । ११ इसकी ज्या ६६९ । १९ उत्क्रमज्यायुज्या
३३७२ । २७ क्षितिज्या ४४२ । ३९ चरज्या ३२६ । ५८ चरासव
३२७ । २५ दिनार्द्धासव ५७८३ । ५४ रात्र्यर्द्धासव ५०९९ । ४ दिना-
र्द्धघटी १५ । ५७ रात्र्यर्द्धघटी १४ । ८ सायन रवि ५ । १ । २१ । ११
सायन भृगु ४ । २१ । २२ । ३० अथ शुक्रके दृक्कर्मसाधनविधिः—
शुक्रकी प्राज्ञ १४ । २५ विक्षेप ५४ । ९ का निपुनद्रासे गुणके ३११ ।
२२ द्वादश १२ के भागसे लब्ध २५ । ५७ नतमे गुणके ३७४ । ७

दिनाब्दके भागसे लब्ध २२ । ५५ कलादि शुक्रमें ऋणकिये आक्षज भृगुः
४ । ४ । ४३ । ८ याम्य क्रांत्यंश १८ । ३० । २५ को विक्षेपसे गुणके
१००२ पट्टि ६० भागसे लब्ध कलादि १६ । ४२ आक्षज शुक्रके क्रांतिवि-
क्षेपकी मित्तदिशाके कारण योगकिये दृक्कर्मभृगु ४ । ४ । ५९ । ४०

अथ रवि और शुक्रके अंतर प्राणसाधनकी विधिः—सायनाक्षज रविः ५।
१ । २१ । ११ सायन दृक्कर्मभृगुः ४ । २१ । १६ । २१ दोनोंका अंतर
प्राण ६९० के पट्टि ६० भागसे लब्ध कालांश ११ । ३० शुक्रका दृश्यांश
१० इन दोनोंका अंतर कला ९० मध्यकालांशको हीनकिये आगतका-
लांश अधिक होनेके कारण इष्टावधिसे आगे शुक्रका अस्त होना संभव है।

अथ रवि और शुक्रकी कालगति लानेकी विधिः—रविगति ५७ । ५७
की सिंहासु २०७० से गुणके ११९९५६ । ३० अष्टादशशत १८००
के भागसे लब्ध रविकालगति ६६ । ३८ शुक्रकी स्पष्टगति १३ । ५२
की सिंहासु २०७० से गुणके १५२९०४ । ० स्वखाष्टिक १८०० के
भागसे लब्ध शुक्रकालगति ८४ । ५६ कालगति दोनोंका अंतर १८ ।
१८ स्पष्टमध्य कालका अंतर ९० के कालगत्यंतरके भागसे लब्ध दिना-
दिफल ४ । ५५ धन हुआ जिससे भाद्रपदवादि ९ गुरुके दिन ५५ घटीरूप
पूर्वमें शुक्रास्त हुआ. अथ नक्षत्रोदयास्तसाधनविधिः—द्वितीयापाठवादि
११ बुधदिन चांद्रनक्षत्रोदयसाधनविधि लिखतेहैं, सिद्धांत अहर्गण ७१४४
०४००७९५१ कलिअहर्गण १७११३२४ रविमध्यमोदय कालिक
२ । २४ । ४१ । ४९ रविस्पष्ट २ । २४ । २४ । ३२ गति ५६ । ५१
मृगशुक्क ३७८० राश्यादि २ । ३ । ० । ० सायन २ । १९ । १६ ।
३१ इसकी ज्या ३३७७ । १० क्रांतिज्या १३७२ । १६ क्रांतिसौम्य
१४१२ । ५१ मृगयाम्यविक्षेप लिता ६०० शरसंस्कृत स्पष्ट क्रांतिसौम्य
८१२ । ५१ क्रांतिज्या ८०५ । १० क्रांतिउत्क्रमज्या ९७ । १४ घुज्या
३३४० । ४६ क्षितिज्या ३८५ । ४८ चरज्या ३९७ । २
चरासव सौम्य ३९७ । ४८ दिनाब्दासव ५७९७ । ४ रात्र्यर्द्धासव

५००२ । १२-दिनार्द्धघटी १६ । ६ राज्यर्द्धघटी १३ । ५४
 सायन सूर्य ३ । १० । ४१ । ८ इसकी ज्या ३३७७ । ३४ क्रांतिज्या
 १३७२ । ३६ क्रांतिसौम्या १२ स्वाहोरात्रासव २१६४ । ४८ क्रांतिज्या
 १३७२ । २६ क्रांति उत्क्रमज्या २८७ । ३ युज्या ३१५० । ५७
 क्षितिज्या ६५७ । ४२ चरज्या ७१७ । ३७ चरासव ४६९३ । १७
 दिनार्द्धघटी १७ । ३ राज्यर्द्धघटी १३ । २ अथ इन दोनोंके अंतरप्राण-
 साधनकी विधिः—सायनरविः ३ । १० । ४१ । ८ सायन मृग ध्रुवक २ ।
 १९ । १६ । ३१ दोनोंकी अंतरघटी ३ । ५१ अथ दृक्कर्मसाधनविधिः-
 मृगकी प्राङ्गत १२ । १५ याम्यविक्षेप लिप्ता ६०० को विपुवद्भासे गुणके
 ३४५० । ० द्वादश १२ भागसे लब्ध २८७ । ३० को नतघटीसे गुणके
 ३५२१ । ५२ दिनार्द्ध १६ । ६ के भागसे लब्ध कलादि २१८ । ४५
 अंशादि ३ । ३८ । ४५ याम्यविक्षेप और प्राङ्गतके कारण धनात्मक आक्ष-
 जफल हुवा सत्रिभ सायन मृग ध्रुवक ५ । १९ । १६ । १९ इसकी ज्या
 ६३९ । ५४ क्रांतिज्या २६० । ० क्रांति२६० । ९ अंशादि ४ । २० ।
 ९ विक्षेप लिप्तासे गुणके विकला २६०१ कलादि ४३ । २१ क्रांति और
 विक्षेपकी भिन्नदिशाके कारण धनात्मक आयन फलहुवा अयन और अक्ष-
 जकी समजातिके कारण योगकिये ४ । २२ । ६ मृगध्रुवमें युक्तकिये
 दृक्कर्मज मृग ध्रुवक २७ । २२ । ६ सायन दृक्कर्मज ध्रुवक २ । २३ । ३८ ।
 ३७ सायनरवि ३ । १० । ४१ । ८ रविभुक्तप्राण ७३२ ध्रुवकका भोग्य-
 प्राण ३८४ दोनोंका योग १११६ पष्टि ६० के भागसे लब्ध कालांशा
 १८ । ३६ दृश्यांशसे हीन होनेके कारण गम्य उदय होगा. स्पष्टमध्य कालां-
 शाकी अंतरकला १४४ रवि कालगति ६४ । ४८ के भागसे लब्ध दिनादि
 २।१३ जिससे द्वितीयापाढवदि १३ शुक्रके दिन घटी १३ के समयमें मृग-
 शीर्ष नक्षत्रका उदयहुवा अथ चंद्रगोत्रतिसाधनविधिः—संत्र १९४१ प्रथम
 आपाढ शुदि १ शनिदिन सृष्टिगताब्द १९५५८८४६८५ सृष्टि अहर्गण
 ७१४४०४००७९२६ कलिगताब्द ४६८५ कलि अहर्गण १७११२

९९ अस्तकालीन रविमध्य २ । ० । ३६ । ३३ अस्तकालीन चंद्रमध्यम
 २ । १५ । ११ । ५८ उच्च ८ । १७ । ५२ । ३२ पात ७ । १५ ।
 ३५ । ३३ रविस्पष्ट २ । १ । १४ । ३८ गतिः ५८ । ५७ चंद्रस्पष्ट २ ।
 १४ । ५७ । ४२ गति ८६० । ११ चंद्रकी याम्य विक्षेपलिप्ता १३२ ।
 २२ सायन चंद्र ३ । १ । १४ । ३३ इसकी ज्या ३४ । ३५ । ३७
 क्रांतिज्या १३९६ । ३ सौम्यक्रांति १४३८ । ५७ शर संस्कृत स्पष्ट-
 क्रांति १३०६ । ३५ ॥

अथ चंद्रदिनमान लानेकी विधिः—स्वाहोरात्रासव २२५८० । ३६
 क्रांतिज्या १७२७४ । २८ क्रांतिउत्क्रमज्या २४५ । ४५ दिन व्यासदल
 ३१९२ । १५ क्षितिज्या ६१० । ४१ चरज्या ६५७ । ४२ चरासव
 ६६१ । ३१ दिनार्द्धासव ६३०६ । ४० रात्र्यर्द्धासव ४९८३ । ३८ दिना-
 र्द्धघटी १६ । ११ रात्र्यर्द्धघटी १३ । १५ अथ चंद्रदृक्कर्मसाधनविधिः—
 चंद्रकी पश्चिमगत १५ । ११ विक्षेप १३३ । २२ को विपुवद्भासे ७६१ ।
 ६ गुणके द्वादश १२ के भागसे लब्ध ६३ । २५ को नतवटीसे गुणके
 ९६२ । ५२ स्वदिनार्द्ध १७ । ३१ के भागसे लब्धकलादिफल ५४।४८
 याम्यविक्षेप और पश्चिमनतके कारण आक्षज फल ऋण हुवा सायन सत्रिभ
 चंद्र ६ । १ । १४ । १३ इसकी ज्या ७४ । १३ क्रांतिज्या ३० । १९
 क्रांति ३० । ९ भागादि ० । ३० । ९ को विक्षेपलिप्तासे गुणके विकला
 ६७ कलादि १ । ७ क्रांतिविक्षेपकी एक दिशाके कारण ऋणात्मक अयन
 फल हुवा. आक्षज और आयन फलकी समान दिशाके कारण योगकिये
 ५६ । ५ दृक्कर्म फल ऋणको चंद्रमें हीनकिये दृक्कर्मज चंद्र २ । १४ । १।
 ३७ अथ स्पष्टकालांशसाधनविधिः—सायन रवि सपङ्क ८ । १७।३१ ।
 ९ सायन सपङ्क दृक्कर्म चंद्र ९।०।१८।८दोनोंका अंतर प्राण ८७०को पष्टि ६०
 भागसे लब्ध कालांशा १४।३० मध्य कालांशके अधिक होनेके कारण गतोदय
 हुवा. चंद्रकी कालगति ८७१।३९ सूर्य कालगति ६४।५५ स्पष्ट मध्य कालांश
 की अंतर कला १५०के गत्यंतर ८६०।४४के भागसे लब्ध दिनादि ०।५।२९

जिससे सूर्योदय घटी ५।२९ चंद्रोदयभुक्ति ४०० कलादि ६।४ ३रविफलको
 अंतर घटीसे गुणके चंद्रभुक्ति ५२९९ चंद्रफल अंशादि १।२८।१९
 फलयुक्तरवि ९।४।४१।५८ फलयुक्तचंद्र १०।२१।२६।३४
 अंतरघटी ७।१७ स्थिरसायनरविः ३।४।३५।५ सौम्यक्रांति
 १४३४।३४ चंद्रकी स्पष्ट क्रांति याम्य ५४७।४७ क्रांतिके दिग्भेदसे
 योग १९८०।२१ इसकी ज्या १८७३।४७ याम्य अथ मध्याह्न चंद्र
 की प्रभा और कर्ण लानेकी विधिः—चंद्रभुक्ति ७४८।३ को नत घटी
 २२।२७से गुणके अंशादि ४।३९।५४ सायनकालीनदृक्कर्मज चंद्रमें
 युक्त किये मध्याह्न समय स्पष्टचंद्र १०।८।१९।२१ सायन १०।
 २४।३५।५२ याम्य क्रांति ८१७।८ मध्याह्न पात ७।१४।३७।
 ६ सौम्यविक्षेप २६८।१९ याम्य स्पष्ट क्रांति ५४८।४१ एकदिशि
 कारण योग २०८५।५८ इसकी ज्या १९४९।३५ कोटिज्या २८२
 ३।३० भुजज्या को १२ गुणके २३३९५।० कोटिज्या के भागसे
 लब्ध छाया ८।१७ त्रिज्याको १२ गुण ४१२५६ के कोटिज्याके
 भागसे लब्ध कर्ण १४।३६ पूर्वानीतज्या १८७३।४७ को कर्णसे गुणके
 २७३५७।१४ फिर १२ गुणके अक्षज्या १७८३२ दोनोंका योग
 ४५१८९।१४ लंबज्याके भागसे लब्ध याम्य बाहु १४।३४ इसका
 वर्ग २१२।११ कोटि १२ इसका वर्ग १४४ दोनोंका योग ३५६।१
 १ इसका मूल कर्ण १८।५२ सपद्धरविः ८।१८।१८।३४ दृक्कर्म चंद्र
 १०।३।३९।२७ में सूर्य हीनकिये १।१५।२०।५३ इसकी कला
 २७२०।५३ नवशत ९०० के भागसे लब्ध शुक्ल ३।१ चंद्रबिंब १०।
 ६ से शुक्लको गुणके ३०।२८ द्वादश १२ के भागसे लब्ध स्पष्ट शुक्ल २।
 ३२ अथ शृंगोन्नतिव्याख्यानं—जिस दिनको चंद्रशृंगोन्नति देखै उस दिन
 सायंकालीन रवि और चंद्रस्पष्ट करके फिर दृक्कर्म संस्कार चंद्रमाके देना उस
 की स्पष्ट क्रांति करनी यदि क्रांतिकी दिक्साम्यता हो तो अंतर करना.
 भिन्न दिशा हो तो योग करना. फिर जो गणित हो जिसकी ज्या कर लेनी

चाहिये सूर्यसे चंद्रमा जिस दिशामें हो उसी दिशा की ज्या होती है. फिर चंद्रकी नतघटीसे चंद्रभुजकी गुणके फिर पष्टि ६० भागसे लब्धकलात्मक फल प्राप्ति हो वह प्राक्पाली चंद्रदृक्कर्म चंद्रमें युक्त करदेना. यदि प्रत्यङ्कपाली चंद्र हो तो हीन करनेसे चंद्र मध्याह्न समयमें स्पष्ट चंद्र होताहै. फिर नतघटिकासे पात चंद्रको माध्याह्निक करके फिर उसकी क्रांति कर लेनी फिर त्रिप्रश्नाधिकारमें जिस विधिसे छाया और कर्णसाधन किया उस विधिसे कर्ण साधके ज्याको गुण लेनी चाहिये. वह ज्या यदि उत्तर हो तो द्वादश १२ से अक्षज्याको गुणके फिर उक्तज्या इसमें हीन किये याम्य शेष होताहै. लंबज्याके भागसे याम्य भुज होताहै. यदि द्वादश गुणित अक्षज्यामें कर्णगुणित उत्तरज्या हीन होय तो विलोमविधिसे शोधन किये शेष सौम्य होताहै. द्वादशांगुल शंकुका वर्ग करके फिर भुजवर्ग करलेना दोनों वर्गोंका योग करके उसका मूल लेना वस उसीका नाम कर्ण है. सूर्य हीन करके फिर उसी चंद्रमाकी कला करलेनी फिर उसके नवशत ९०० के भागसे मध्यम शुक्ल होता है फिर मध्यशुक्लमानको चंद्रबिंबांगुलसे गुणके द्वादश १२ भागसे लब्ध स्पष्ट शुक्ल होताहै. फिर जलवत् समान भूमिपे दिक्साधन करके सूर्यसंज्ञक विंदुचिह्नकरके सौम्य भुज हो तो सौम्य देना याम्यभुज हो तो याम्य देना चाहिये. फिर भुजसे पश्चिमाभिमुख द्वादशांगुलात्मक कोटि देनी चाहिये सूर्यसंज्ञक विंदुके और कोटिके अग्रभागके मध्यमें कर्ण देना. कोटि और कर्णके योगमें चंद्रबिंबार्द्धांगुल मंडल लिखना उसी जगे मंडलमें कर्ण सूत्र करके दिक्सिद्धि कल्पना करनी कर्ण और बिंबके योगमें मंडल मध्य कर्ण सूत्रमार्ग करके शुक्ल देदेना चाहिये. शुक्लाग्रसे याम्योत्तर रेखा करनी चाहिये. फिर रेखाके अग्रभाग जहां लगे तहां विंदुका चिन्ह देना. फिर बिन्दुके सम्मुख दक्षिणोत्तर रेखामें विंदुका चिन्ह करना यही दक्षिणोत्तर विंदुसे मत्स्यसाधना चाहिये मत्स्यके मध्यमें सूत्र प्रसारना चाहिये. सूत्र और विंदुका जहां योग तहां विंदु विधान करना कोटिकर्णादि साधनविधिमेही भुजांत उन्नत शृंग चंद्रमाकी जाननी कोटिको ऊंची

उठाके चंद्रमाकी आकृति नलिकामें देखलेनी चाहिये अथ चतुर्थ केंद्रके
 चक्रारंभभागाः—मंगलके १६४ बुधके १४४ गुरुके १३० शुक्रके ८३
 शनिके ११५ अथ चतुर्थ केंद्रके मार्गारंभभागाः—मंगलके १९६ बुध-
 के २१६ गुरुके २३० शुक्रके २२७ शनिके २४५ एक युगमें ६००
 भगण अयन ग्रहके हैं. अथ ग्रहों के आर्यसिद्धांतके मतसे विवव्यासाः—
 सूर्यके ६५०० चंद्रके ४८० हैं और मंगल १३ बुध २१ गुरु ३१ शुक्र
 ६३ शनि १५ अथ नक्षत्र कलादिध्रुवाः—अश्विनी ४८ भरणी ४० कृ-
 त्तिका ६५ रोहिणी ५७ मृगशीर्ष ५८ आर्द्रा ४ पुनर्वसु ७८ पुष्य ७६
 आश्लेषा १४ मघा १४ पूर्वाफाल्गुनी ६४ उत्तराफाल्गुनी ५० हस्त ६०
 चित्रा ४० स्वाती ७४ विशाखा ७८ अनुराधा ६४ ज्येष्ठा १४ मूल ६
 पूर्वाषाढा ४ उत्तराषाढा ० अभिजित् ० श्रवण ० धनिष्ठा ० शततारा ८०
 पूर्वाभाद्रपदा ३६ उत्तराभाद्रपदा ३२ रेवती ७९ अथ नक्षत्रोंके ग्रह
 विक्षेप (शर) भागा.—अश्विनी उ. १० भरणी उ. १२ कृत्तिका उ. ५
 रोहिणी दक्षि ०५ मृगशीर्ष १० आर्द्रा ९ पुनर्वसु ६ पुष्य ० आश्लेषा द. ७
 मघा ३० पू. फा. १२ उ. फा. १३ हस्त द. ११ चित्रा २ स्वाती उत्तरा ३७
 विशाखा दक्षिण १ ॥ अनुराधा द. ३ ज्येष्ठा द. ४ मूल द. ९ पू. पा द. ५ ॥
 उ. पा द. ५ अभिजित् उ. ६० श्रवण उ. ३० धनिष्ठा उ. ३६ शततारा
 द. ॥ पूर्वाभाद्रपदा उ. २० उ. भा. उ. २६ रेवती ० अगस्तिभाग द. ८०
 कर्कादि भागमें है. ध्रुव ३ राशिलब्धक ध्रुव २ राशि २० अंश दक्षिण ४
 भागपर है. और वृषराशिके २२ के अंश ऊपर अग्नि और ब्रह्म हृदयको
 ध्रुव है. अग्नि ८ ब्रह्म हृदय ३० का विक्षेप उत्तरकी तरफ है. अथ रोहि-
 णीके वेध जाननेकी विधिः—वृषराशिके ७ अंश ऊपर ग्रह प्राप्ति होवे और
 उस ग्रहको दक्षिण शर २ अंशतक होवै तो निश्चय ग्रह रोहिणी को भेदन
 करता है. नहीं तो नहीं करता है. अथ ग्रहनक्षत्रके बरोबर आजावे सो
 जाननेकी विधिः—पू. फा. उ. फा. पू. भा. उ. भा. पू. पा. उ. पा. विशा-
 खा अश्विनी मृगशीर्ष इनका योग तारा उत्तरके हैं. हस्तका पश्चिमोत्तर

द्वितीय तारा है. धनिष्ठाके पश्चिम तारा ज्येष्ठा श्रवण अनुराधा. पुष्यके मध्यम तारा (बीचके) है. भरणी, कृत्तिका, मघा, रेवती इनके दक्षिण योग-तारा है. रोहिणी, मृगशीर्ष, मूल और आश्लेषा इनके पूर्वके योग तारा है उक्त योग तारा पुष्ट और तेजयुक्त है. अथ ग्रह और नक्षत्रोंके कालांश जाननेकी विधि:—चंद्रका १ २मंगलका १ ७बुधका पूर्वमें १ २ पश्चिममें १ ४ गुरु १ १शुक्रका पूर्वमें ८पश्चिममें १ ०शनि १ ५स्वाति अगस्त्य मृगव्याध चित्रा ज्येष्ठा पुनर्वसु अभिजित् ब्रह्महृदय इन्हेंको १ ३हस्त श्रवण फाल्गुनी दोनों धनिष्ठा रोहिणी मघाके १ ४विशाखा अश्विनीके १ ४कृत्तिका अनुराधा मूल आश्लेषा-आर्द्रा . पू. पा. उ. पा. के १ ५ भरणी पुष्य मृगशीर्षके २ १शततारा. पूर्वोत्तराभाद्रपदा रेवती अग्नि ब्रह्मा अपांवात्स इन्हेंके १ ७ अंश सूर्यके अंतरसे उदयास्त होताहै और अभिजित् ब्रह्महृदय स्वाति श्रवण धनिष्ठा उत्तराभाद्रपद यह नक्षत्र उत्तर दिशामें जियादा होनेसे और उनका उत्तरशरजियादा होनेसे सूर्यसे अस्त नहीं होतेहैं.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते उदयास्तादि-

कथनं नाम पंचदशविनोदः ॥ १५ ॥

अथ कालज्ञानम्—यह कालज्ञान शास्त्रकारोंने अनेक रीतियोंसे लिखाहै और जिसके लिये अनेक यंत्र लिखे और बनायेहैं परंच वह यंत्र सूर्यसे ही कालसूचना कर सक्तेहैं. सूर्यास्त होने पीछे यंत्रोंकी कुछ उपाय चलसक्ता नहीं और रात्रिमें कालका ज्ञान चंद्रमासे वा तारागणोंसे भी लिखाहै. परंच जब बहल होजावें तब दिन वा रात्रि इन दोनोंहीमें कौन यंत्र वा शंकु काम देवेगा. अतएव ऐसी दशाके बीच इष्टज्ञान होना बड़ा मुष्किल है. जिसके लिये जलकी घटीयंत्र एक एक गांवमें पंचायतसे वा राज्यस्थानसे जहर होना चाहिये अथवा (स्वयंभ्रमण) इयेजी घटी होनी चाहिये जिससे इष्टज्ञान की भूल न रहै क्योंकि कालज्ञानके विना संसारका कोई भी काम ठीक ठीक नहीं बनसक्ता । इति कालज्ञानम्. अथ चंद्रदर्शनम्—यह चंद्रमा अमावस

के दिन हमेशा सूर्यके तुल्य राशिअंश कला विकला समान होके सूर्यके साथ ही उदयहोके और सूर्यके साथही अस्तहोताहै, जिससे पृथ्वीकी प्रजाको नहीं दीखसकता और दूसरे दिन १२ अंशोंका अंतर पाके फिर उदय होगा तो फिर भी सूर्यके समीपही रहनेसे नहीं दीख सकेगा, और जब द्वितीयाके दिन २४ अंशोंके अंतरसे चंद्रमा सूर्यके प्रकाशसे सायंकालमें किंचित् दीखपरेगा फिर तृतीयाको कुछ विशेष चतुर्थीको उससे कुछ विशेष ऐसे प्रतिदिन विशेष दीखता २ पूर्णमासीके दिन सूर्य अस्त होगा जब उसीसमय चंद्रमाका उदय होगा. जिससे सूर्यका प्रकाश चंद्रमाके परिपूर्णबिंदुमें समसूत्रके आजानेके कारणही चंद्रबिंदु प्रजाको पूर्णिमाकी रात्रिभर परिपूर्ण दिखलाई देतारहेगा और फिर सूर्यके सम सूत्रकी न्यूनता होती जायगी त्योंत्यों हीन कलाभी चंद्रमाकी होती चलीजायगी. उक्त चंद्रमाका प्रकाश सूर्यसेही केवल आरसी-बत् है, स्वतः प्रकाशी नहीं है किंतु यह चंद्र परप्रकाशी है, इति चंद्रदर्शनम् ॥

अथ त्रैराशिकगणितकी व्याख्या:—यह त्रैराशिक गणित सबगणितोंमें व्याप्त होरहाहै. व्यक्त और अव्यक्त गणित जितने प्रकारके हैं वे सब त्रैराशिककेही आश्रित हैं जिसकारण ज्योतिर्विदको चाहिये कि, त्रैराशिक गणितका प्रथम अभ्यास वारंवार करै उक्त गणितका अनुभव जिसको स्पष्ट होजायगा तो वह पुरुष कभी कोई गणितमें न ठगावेगा उक्त त्रैराशिक गणित लोम विलोम दोप्रकारसे है १ फल १ इच्छा २ सजातिमान् ३ इन तीन भेदोंसे विभूषित है. अमुकको इतना मिलै तो इतनेको कितना मिलै ऐसे अमुक तो सजातिमान्-इतना फल २ और इतनेको कितना मिलै यह इच्छा कहलाताहै ३ जब कोई भी गणितविषयमें इच्छासे फलको गुणके और सजातिमान्के भागसे लब्ध लेवे इसीका नाम तो लोम त्रैराशिक है और सजातिमान्से इच्छाको गुणके फलके भागसे लब्ध अंक लेना इसीका नाम विलोम-त्रैराशिक है अब इन दोनोंका थोडा उदाहरण लिखतेहैं. एक रुपयेकी ५ शेर

१ एक रुपयेकी ५ शेर वस्तु मिले तो ५ रुपयेकी पचास शेर मिले. और तीन वर्षके बेलका १०० रुपया तो १० वर्षके बेलका ३० रुपया क्योंकि वह शूटाहुवाहै ।

वस्तु मिले तो पाँच रूपयेकी कितनी मिले ? यह त्रैराशिक लोम कहलाता है और ३ वर्षके बैलका १०० रुपया तो १० वर्षके बैलका क्या ? यह विलोम त्रैराशिक कहलाता है विशेष लिखना तो व्यर्थ है परंतु जैसे विष्णु सर्व चराचरके व्यापक हैं ऐसे त्रैराशिक गणितभी सब गणितोंमें व्यापक हो रहा है

अथ परिकर्माष्टक समझनेकी विधि:—उक्त गणितके आठ भेद हैं. वे क्रमसे १ वियुक्त २ युक्त ३ गुण ४ भाग ५ वर्ग ६ वर्गमूल ७ घन और ८ घनमूल. जिनमें एक अंकमें दूसरे अंकको निकाल देनेका नाम वियुक्त गणित है १ एकमें दूसरे अंकको जोड़ देनेका नाम युक्तगणित है २ इसके बराबर इतनातक कितना होय यह गुणाकार कहलाता है ३ और अमुक गणित का इतना भाग कर देना वही भागाकार कहलाता है ४ और दोनों अंक समानका गुणक वर्ग कहलाता है ५ यह कितना अंक परस्परमें गुणा हुआ है जिसको जान लेनेका नाम मूल कहलाता है ६ एक अंकको गुणके फिर उस अंकसे गुणा हुआ अंकको फिर गुणना वह अंक घन कहलाता है ७ और उक्त घन कितने अंकसे गुणा हुआ है ऐसे जान लेना वस यही घनमूल कहलाता है.

अथ भगणादिमानम्—एक महायुगमें सूर्य बुध शुक्रके ४३२०००० (राशि) भगण हैं. मंगल शनि और गुरु शीघ्रोच्चके भी ४३२०००० पूर्वोक्त भगण हैं. चन्द्रके ५७७५३३३६ मंगलके २५९६८३२ बुध शीघ्रके १७९३७०६० गुरुके ३६४२२० शुक्र शीघ्रके ७०२२३७६ शनिके १४६५६८ चन्द्रोच्चके ४८८२०३ राहुके २३२२३८ सप्त ऋषियोंके १६०० नक्षत्रोंके १५८२२३७८२८ भगण हैं और ऐसे ही एक महायुग में १५७७९१७८२८ सावनदिन (सूर्य उदय) होते हैं और उक्त महायुगमें चांद्रदिन १६०३००००८० होते हैं. अधिमास १५९३३३६ होते हैं. क्षयतिथि दिन २५०८२२५२ और रविमास ५१८४०००० होते हैं. अथ मंदोच्चभगणाः—एक कल्पमें सूर्यके ३८७ मंगलके २०४ बुधके ३६८ गुरुके ९०० शुक्रके ५३५ और शनिके ३९ मंदोच्च भगण

होते हैं. अथ पातभगणाः—मंगल पातके २१४ बुधके ४८८ गुरुके १७४ शुक्रके ९०३ और शनि पातके ६६२ भगण एक कल्पमें होते हैं. अथ ज्यार्द्धखंडाः—प्रथम ६१११४४९२२५ द्वितीय १३१५११०५८९० तृतीय १७१८१५२० चतुर्थ २०८३१८१० पंचम २४३१३२६७ षष्ठ २७२८२५८५ सप्तम २९७८२८५८ अष्टम ३१७८३०८४ नवम ३४०८३३७२ दशम ३४३८३४३१ अथ उत्क्रमज्यार्द्धखंडाः—प्रथम ७६६२८७ द्वितीय ३२४२६११८२ तृतीय ८२३७१०२७९ ४६० चतुर्थ १११११००७ पंचम १५२८१३४५ षष्ठ १९१८१८ १९ सप्तम २३३३२१२३ अष्टम २७६७२२४८ नवम ३२१३२९ ८९ दशम ३४३८ अथ परमापक्रमज्या १३८७—अथ ग्रहोंके परिध्यंशाः—रविके मंदपरिध्यंशाः १४ चन्द्रके ३२ यह युग्मांत मंद परिध्यंश कहलाता है. और सूर्यके १३।४० चन्द्रके ३१।४० यह ओजांत परिध्यंश कहलाता है. युग्मांत मंदपरिध्यंश भौमके ७५ बुधके ३० गुरुके ३३ शुक्रके १२ शनिके ४९ ओजांत मंदपरिध्यंश भौमके ७२ बुधके २८ गुरुके ३२ शुक्रके ११ शनिके ४८ युग्मांत. शीघ्र परिध्यंश भौमके २३५ बुधके १३३ गुरुके ७० शुक्रके २६२ शनिके ३९ ओजांत शीघ्र परिध्यंश मंगलके २३२ बुधके १३२ गुरुके ८२ शुक्रके २६० शनिके ४० ओजांत शीघ्र परिध्यंश समझना चाहिये. अथ न्यूनाधिकमासकी व्याख्या. सौरवर्ष ३६५ दिनोंके लगभगसे अपनी अपनी ऋतुवोंका धर्म सृष्टिमें वर्ता रहा है. और चांद्रवर्ष ३५४ दिनोंके लगभग दर्श पूर्णिमायाग जो कि, वैदिक धर्मको सृष्टि में वर्ता रहा है जब सौर वर्ष और चांद्र वर्ष इन दोनोंके मिलनेसे वसंतादि ऋतुवोंमें वैदिक धर्मोंकी सदैव प्रवृत्ति होती है. जिसमें चांद्रवर्षकी परिपूर्णता हुये पश्चात् दिन ११ सौर वर्ष अधिक होनेके कारणसे तीसरे वर्ष अधिक मासका अवश्य संभव है. और उक्त सौर चांद्रकी गडबडसे ही क्षयमासका संभव है उक्त क्षयमास होनेके पश्चात् १४१ वर्षसे फिर वही क्षयमासका संभव है फिर १९ वर्षसे संभव होके उक्त वर्षोंमें ही फिर संभव होता है.

अथ भूकंपलक्षणम्—इस पृथ्वीमें गंधक हरताल आदि धातु वगैरे और ज्वालामुखी पर्वतोंसे युक्त जहां गर्भभूमि है. तहां भूमिगत जल गर्म होके उसकी वाफरूप वायु बाहिर निकसती है इस वायु के कहीं पर्वतादिकोंके रोक टोकसे निकासकी मार्ग नहीं मिलनेके कारण भूकंप होता है. और उस वाफके जोरसे पर्वतादि जमीन फाटनेके कारण शब्द होता है. जहां पर्वत नहीं है उस जगे भूकंपही केवल होता है शब्द नहीं होता. पर्वतोंकी जमीनमें शब्द सहित भूकंप होता है. अथ महामारीलक्षणम्. उक्त वाफरूप वायु कहीं विष आदि दुष्टवस्तुओंसे स्पर्श करतीहुई पृथ्वीकी प्रजाको अनेक प्रकार के रोगोंसे परिपीडित करके प्राणवाधा देती है जिसको महामारी कहते हैं और वही वाफरूप वायुके साथ जल का सूक्ष्म बिंदु आकाशमें चढके फिर भूवायुकी अधिक शीतलताके कारण दृढ वर्ष रूप होके सूर्यके प्रकाशसे चंद्रवत् प्रकाशित अनेक भेदोंसे प्रजाको दीख पडते हैं उसको ऊंचेसे लंबा होनेके कारण तो शिखायुक्त केतु कहते हैं और नीचेसे लंबाईके कारण पुच्छयुक्त केतु कहते हैं. फिर औरभी इस वाफरूप वायुसे गंधर्वनगर इंद्रधनुष और सूर्य चंद्रादिकोंका मंडल परिवेष आदि बहुतसे विकार बनते हैं और सूर्य चंद्रादिकोंके ग्रहणोंमें कोई समय अंतर आजाता है वे सब इसी भाफरूप वायुके कारणसेही है. और कितने भोले भाले मनुष्य बीज संस्कार देते हैं वे सब कपोलकल्पितही समझना चाहिये. और बादल वर्षाभी इसी भाफरूप वायु सूर्य के तेजकाही बनजाता है. और जिस बद्दलोंमें प्राप्त हुवा जल स्वतः नहीं वर्ष सक्ता किंतु वह जल वर्षना भूवायुके आश्रित है. कहीं भी बद्दलके मुहेंसे वायु बद्दलके अभ्यंतर प्रवेश करके फिर भंग छाननेवाला पुरुष

१ तत्त्वविषये. ये केतनोरिष्टफलप्रदाः खिम्बुदाश्च भूकंप इहास्ति लोके ॥ मारिाम्हास्या करकप्रपा-
ताद्यं सर्वमित्ये क्लिष्ट वाप्यतोऽग्र ॥ २ अनेकवर्षी विद्यतींद्रचापं महाः समतात्परिवेषउक्तः ॥ तस्यैव भातौ
पतनं च विद्यतथैव गंधर्वपुरं विनिव्रम् ॥ ३ ऊर्ध्वं पुणेलादय एव चाग्निभूवागुरस्वप्न संश्लेष शीतम् ॥
महत्कृतोऽपि योजनैःसद्गाण्णानुदायं जनयन्त्यभूर्धम् ॥ ३ ॥

४ प्रमाण. यजुर्वेदमें आपस्तम्बशास्त्राकी संहिताके दृसरे अष्टमने श्रीमे अध्यापके ग्यारहवें
अनुपानमें हैं. अग्निर्वापुतो वृष्टिमुदीरयति महतः सृष्टां नपति यदा सलु पा असावादिद्योन्मट्ट
रदिमभिःपर्यापतंतऽप यंति ।

जैसे वनाम हाथ डालके हिलावे वैसे वह वायु बदलको हिलानेसे अतिशय वर्षा वर्षतीहै और कभी कोई जलयुक्त बदलमें वायुको उसके अभ्यंतर जाने का मार्ग नहीं मिलनेके कारण वह बदलका जल जमके बर्फ होजाताहै फिर कोई दिन वायुके अतिशय जोरसे उस बदलके मार्ग होके उक्त वायुसे उस बर्फके खंड खंड होके पृथ्वीपर आनके वर्षतेहैं वे माडवारमें ओले कहलातेहैं भाफरूप वायु और भूवायु यह दोनों परस्परमें भिडके और उसके अंदर सूर्यकी किरणोंसे बिजली बनतीहै और जितने विकार हैं वे सब भाफ और वायुके कारणसेही हैं और इसमें दूसरा कारण कोईभी नहीं.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभापाविभूपिते (मिश्रप्रकरणकथन) विविधवर्णनं नाम षोडशविनोदः समाप्तः ॥ १६ ॥ श्रीरस्तु.

अथ पंचांग बनानेकी विधि प्रारंभः-तिथि वार नक्षत्र योग और करण इन पांचोंका गणित है वह पंचांग कहलाताहै उक्त पंचांगका गणित सिद्धांतसे लाना बड़ा कठिन है प्रथम तो सिद्धांतविद्या आज कलके लोग पढतेही नहीं और कोई पढाभी है तो गणित करनेके आलस्यसे कुछ नहीं करसकता. यदि आलस्य छोडके उक्त सिद्धांतगणितसे तिथ्यादि पंचांग बनावेगा तो वह महाशय कितने दिनोंतक गणित करता करता थक जावेगा और आखिर एक वर्ष भरका बनाभी लेगा तो दूसरे वर्षमें उसको छोडनाही होगा. क्योंकि इतना बड़ा गणितका काम प्रतिवर्षका करना बड़ा मुष्किल है इसके लिये यहां गणेशदैवज्ञकृत पंचांग बनानेकी विधि इस ग्रंथमें लिखते हैं. उक्त पंचांग बनाने के ग्रंथ तो और भी अनेक हैं. परंच उनका गणित आज कलके समयमें ठीक ठीक नहीं मिलता. क्यों कि, संवत् १९४७ के बैक्रमीय वर्षमें सूर्यग्रहणका गणित सूर्यसिद्धांतवालोंका और ग्रहलाघव वालोंका ही यथार्थ मिला और चंद्रशृंगोन्नत्यादि वा चंद्रमाका उदयास्त इसी से ही यथार्थ इष्टपै मिलता है और कोंकण, मालव, मेवाड, द्राविड, और महाराष्ट्र आदि मुंबई देशोंमें ग्रहलाघवीय पंचांगहीकी मान्यता है और बटेघड़े

श्रीमानोंके जन्मपत्रमें भी ग्रहलाघवसेही ग्रह स्पष्ट उत्तम ज्योतिर्विदोंका कराहुवा देखनेमें आयाहै. और हमारे बड़ेबूढ़े महात्मा पुरुषाओंके मुखसेभी हमने सुनाहै कि, ग्रहलाघव का गणित सब और गणितोंसे फिर भी अच्छा है. ऐसी ऐसी बातोंपर विश्वास धरके ग्रहलाघवका गणित यहां लिखते हैं क्योंकि, इसमें ब्रह्म १ सौर २ आर्य २ तीनों पक्षके ग्रह जो जिस पक्षमें दृग्गणितसे ठीक मिला वही रक्खा है. जिसमें मयदानवको सूर्यांश पुरुषमें वर्णन किया ऐसे सूर्यसिद्धांतगणितके अनुकूल गणितहै वह तो सौरपक्षका कहलाता है. और ब्रह्मा नारद के संवादका शाकल्यसंहितोक्त ब्रह्मसिद्धांतका भी गणित सूर्यसिद्धांतके (सदृश) तुल्यही आता है परंच ब्रह्मगुप्तनाम आचार्यका बनायाहुवा एक ब्रह्मसिद्धांत है जिसका गणित इससे निराला है वह गणित ब्रह्मपक्षका कहलाताहै. और आर्यभट्टकृत कुसुमपुरमें जो कि आर्य सिद्धांत बनाया उसका गणित आर्यपक्षका समझना चाहिये अब यहां सूर्य स्पष्ट सौर पक्षसे चंद्रोच्च श्रीसौरपक्षसे और नवकला ऊन चंद्र सौर पक्षसे गुरु आर्यपक्षसे और मंगल राहू भी आर्यपक्षसे सिद्धदृक् अल्प किया है बुधकेंद्र ब्रह्मसिद्धांतसे दृक्तुल्य लिया और शनि स्पष्ट आर्यसिद्धांतसे करके फिर पांच अंश इस में और युक्त करके दृक्तुल्य माना है शुक्रकेंद्रका गणित आर्यसिद्धांतसे और ब्रह्मसिद्धांतसे स्पष्ट करके इन दोनोंका योग करके फिर उसका अर्द्धभाग लेके दृक्तुल्य मानाहै इसी प्रकार जिस समयमें उक्त ग्रंथकी रचना हुईथी उस समयमें तो सारे ग्रह दृक्तुल्यही थे परंच कोई महाशय कहतेहैं कि कुछ अंतर आने लगगया परंच और ,करणके ग्रंथोंसे तो फिरभी ठीक गणित आताहै. अब पंचांग रचना करनेवालोंको प्रथम उस वर्षका उपकरणसाधन करना चाहिये जिसकी विधि गणेशदैवज्ञकृत लघु-तिथिचिंतामणिसे लिखतेहैं जिस वर्षका पंचांग बनावे उस शाकेमें १४४७हीन कराहुवा शेषांकको १००७ से गुणके समौघसमझके फिर ८०० के भागसे लब्ध तीन स्थानमें अंक लेवे फिर समौघके ४३ भागसे लब्ध अंकसे पूर्वा-नीत अधस्थ पलांसे जोडके फिर ४ । ४५ । २७ और युक्त कर्णसे

अब्दप होताहै. इसके देशांतर संस्कार देना चाहिये वह मध्यरेखा लंका, देवकन्या कांची शीतपर्वत पर्यली, वत्सगुल्म, उज्जैन, गर्गराट, वैराट, ढोसी, कुरुक्षेत्र, और सुमेरुके सूत्रतक गई हुई है. उक्त रेखाके ग्रामोंसे देशांतरयोजन में चतुर्थांश हीन करके पूर्व बसनेवाला अब्दपकी पलोंमें युक्त करै और पश्चिमका बसनेवाला अब्दपकी पलोंमें उक्त देशांतर पलोंको हीनकिये स्पष्ट अब्दप होताहै अथ तिथिशुद्धि लानेकी विधि:— समौघको ११ गुणके दो जगे रखके एक जगेसे ६००० के भागसे लब्ध अंशादिकसे तीन अंक लेके दूसरी जगहोंके अंकमें हीन करके फिर समौघके १५के भागसे अंशादि तीन अंक लब्ध लेके उसमें युक्त करे और ५। ५४। २४ फिर युक्त करके ऊपरि अंक ३० के भागसे शेष करनेसे शुद्धि होती है. अथ ध्रुव लानेकी विधि:—शुद्धिके केवल घटीपलोंको पष्टि शोधित किये तिथि ध्रुव होता है. और शुद्धिको दोजगे रखकर एक जगे दशके भागसे लब्ध लेके दूसरी जगेके अंकमें हीन करके फिर उक्त घटी पलोंको पष्टि शोधित करके ऊपरवाले अंकमें एक और युक्त किये नक्षत्र और योगका एकही ध्रुव होताहै. अथ तिथिमध्य केंद्र लानेकी विधि:—समौघके चारके भागसे शेष अंकको ७ से गुण फिर समौघके ६ के भागसे लब्ध तीन अंक लेके उसमें युक्त करे और समौघके ३२१ भागसे लब्ध में तीन अंक इसीमें हीन करके फिर ४। ३४। १५ जोड़के उपरि अंकके २८ भागसे शेष किये तिथिमध्यकेंद्र होताहै अथ नक्षत्र और योग मध्य केंद्र लानेकी और स्फुटकरनेकी वि०—तिथिमध्य केंद्रको दोजगे रखके एक जगेसे ३६ के भागसे लब्ध तीन अंकलेके दूसरी जगेके अंकमें हीन किये नक्षत्र मध्यकेंद्र होताहै. और उक्त तिथिमध्य केंद्रकोही दोजगे रखके एक जगे २२ भागसे लब्ध तीन अंक लेके दूसरी जगेके अंकमें युक्तकिये योगमध्य केंद्र होताहै. और तिथि नक्षत्र और योग मध्य केंद्र की घटी पलोंमें अपनी अपनी ध्रुव घटी पल युक्त किये तिथि, नक्षत्र और योगके स्पष्ट केंद्र होते हैं. अथ भोगसाधनविधि:—तिथि ध्रुवके उपरि

अंकको त्यागके फिर उसकी घटी पल दोजगे रखके एक जगेके ६४ के भागसे दो अंक लेके दूसरी जगेके अंकमें हीन करके फिर अब्दपमें युक्त किये तिथि भोग होताहै. नक्षत्र ध्रुवकी उक्त घटी पल दोजगे रखके एक जगे ८४ के भागसे लब्ध दो अंक लेके दूसरे अंकमें युक्त करके फिर अब्दपमें युक्त किये नक्षत्रभोग होता है. ऐसेही योग ध्रुवकी उक्त घटीपल दो-जगे रखके एक जगे १७ के भागसे लब्ध दोअंक लेके दूसरे अंकमें हीन करके फिर अब्दपमें युक्तकिये योग भोग होताहै. अथ भभोगसाधन-विधि:—नक्षत्र स्पष्टकेंद्रके उपरि अंकको दोजगे रखके एक जगे ८४ के भागसे लब्ध तीन अंक लेके दूसरे अंकमें युक्त करके फिर उपरि चारादि अंकके ७ के भागसे शेष करके नक्षत्र भोगमें हीन किये भभोग शुद्ध होता है। इति उपकरण बनानेकी विधि: ॥ अथ कोष्ठक बनानेकी विधि:—चैत्र शुदि प्रतिपदासे गत तिथियोंमें तिथि ध्रुवके उपरि अंकको हीन किये कोष्ठक होताहै. उक्त तिथि कोष्ठकको दोजगे रखके ३६ भागसे लब्ध एकअंक ले-के दूसरेमें हीनकिये नक्षत्रकोष्ठक होताहै. और उक्त तिथिकोष्ठकको दोजगे रखके २२ के भागसे लब्ध एक अंक लेके दूसरे अंकमें युक्त किये योग कोष्ठक होताहै. अथ पराख्यसाधनविधि:—अपने अपने तिथि नक्षत्र और योगस्पष्टकेंद्रके उपरि अंकको अपने अपने उक्त कोष्ठकोंमें युक्त करनेसे पराख्य कोष्ठक होताहै. अथ तिथिसाधनविधि:—तिथिकोष्ठकसारिणी-में तिथिभोग युक्त करके फिर तिथिपराख्य कोष्ठकमें पराख्य घटी पल ऋण धन जैसी हो तैसीकर देनी चाहिये. फिर उक्त तिथिस्पष्टकेंद्र घटीपलके पराख्य कोष्ठक के नीचे हार घटीके भागसे लब्ध दो अंक लेके उक्त तिथि-की पराख्य संस्कारित घटी पलोंमें ऋण धन जैसा हार हो वैसा संस्कार देनेसे तिथिकी वार घटी और पल स्पष्ट होतेहैं ॥ अथ नक्षत्रसाधनविधि:—नक्षत्रपराख्यकोष्ठकसारिणीमें भभोग युक्त करके फिर नक्षत्र स्पष्ट केंद्रकी घटी पलोंके पराख्य कोष्ठकके नीचेकी हार घटीके भागसे लब्ध घटी पल दोअंक लेके जैसा ऋण धन हार है वैसा संस्कार देनेसे नक्षत्रका वार घटी

और पल स्पष्ट होतेहैं. इसके पराख्यसंस्कार नहीं देना चाहिये अथ योगसाधनविधिः—योगकोष्ठकसारिणीमें योग भोग युक्त करके फिर उक्त तिथि सदृश पराख्य और हार संस्कार देनेसे योगकी घटी पल होते हैं. अथ तिथिवृद्धि और क्षय जाननेकी विधिः—जब तिथि स्पष्ट होते होते अनुक्रमका वार छोड़के अधिक वार गणितमें आजावे तो वह तिथि पूर्वदिन ६० घटी भोगके फिर दूसरे दिनभी उक्त घटी पलोंतक भोगेगी. इसको तिथिवृद्धि समझना चाहिये. और क्रमसे प्रतिदिन वार तिथि स्पष्टके जो आताहै वह वार दूसरे दिन भी आजावे जब तो उसको क्षयतिथि समझना चाहिये. उक्त क्षय तिथिकी घटी पलोंमें पूर्व तिथिकी घटीपल हीन करके फिर पंचांगमें रक्खी जातीहै. ॥

अथ नक्षत्र और योगके स्पष्ट गणनाविधिः—नक्षत्र और योग ध्रुवको निज निज कोष्ठकमें युक्त करके फिर २७ के भागसे शेष रहै उसको वर्तमान उस दिनका नक्षत्र और योग समझना चाहिये इनकी क्षय वृद्धि उक्त तिथि सदृशही होतीहै. ऐसे प्रतिदिन एक एक कोष्ठक बढानेसे तिथि वार नक्षत्र योग स्पष्ट होताहै. और उक्त तिथिके भोगको आधा करनेसे कर्ण स्पष्ट भोग होताहै.

अथ अधिक मास और क्षयमास स्पष्ट जाननेकी विधिः—चैत्र शुदि प्रतिपदासे एक एक माससे अमावस्यापर्यंत जब उक्त मेष आदि संक्रांति नहीं आवे तो चैत्र आदि उसको अधिक मास और उक्त एक मासमें दो संक्रांति हों जिसको क्षयमास समझना चाहिये. और पंचांगका प्रारंभ गणित मेषसंक्रांतिसे दो दिन पीछे होता है. जिसके पहले का गणित पूर्व वर्षके उपकरणोंसे ही कर लेना चाहिये. जब पंचांग करते करते पराख्य वा हार कोष्ठक की समाप्ति होजावे तो सारिणीके प्रारंभ कोष्ठकसेही ज्योतिर्विद पराख्य और हारकोष्ठक लेलेवेंगे.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते पंचांग-
स्पष्टविधिवर्णनं नाम सप्तदशविनोदः ॥ १७ ॥

प्रतिवर्ष उपकरणसारिणी ध्रुवा ।

अ- ब्दप	ति. शु	ति. ध्रु	न. ध्रु.	यो. ध्रु.	ति. म.	न. म.	यो. म.	ति. स्प	न. स्प	यो. स्प.	ति. भो.	न. भो.	यो. भो.	म. भो.
१	११	१०	१०	१०	७	६	७	७	७	७	१	१	१	१
१५	३	५६	२	२	९	५७	२९	६	०	३१	११	१८	१७	१३
३१	४८	१२	३५	३५	४९	५२	२१	१	२३	५६	४८	९	५७	९

ब्रह्मपक्षे उपकरणसाधनार्थं धनऋणचालकक्षेपकाः ।

अब्द	शुद्धि	ति.पु.	न.ध्रु.	यो.ध्रु.	ता.के.	ति.के.	न.के.	यो.के.	ति.भा.	न.भा.	यो.भा.
क्र.	क्र.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	ध.	क्र.	क्र.	क्र.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
३	१	१	१	१	३	५	५	५	१	२	२
१०	३६	३६	३६	३६	५४	२५	२१	१४	५६	३	९

आर्यपक्षे उपकरणसाधनार्थं धनऋणचालकक्षेपकाः ।

अब्दप	शुद्धि	ति.ध्रु	न.ध्रु	यो.ध्रु	ता.के.	ति.के.	न.के.	यो.के.	ति.भा.	न.भा.	यो.भा.
क्र.	क्र.	क्र.	ध.	ध.	क्र.	क्र.	क्र.	क्र.	ध.	ध.	ध.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
६	८	८	७	७	१०	१०	१०	११	१	१	०
२९	३१	३१	४०	४०	१३	०	३७	८	५४	१६	४४

सौरपक्षे उपकरणसाधनार्थम् ऋणचालकक्षेपकाः साध्यन्ते.

अब्दप	शुद्धि	ति.ध्रु	न.ध्रु	यो.ध्रु	ता.के.	ति.के.	न.के.	यो.के.	ति.भा.	न.भा.	यो.भा.
क्र.	क्र.	क्र.	क्र.	क्र.	क्र.	क्र.	क्र.	क्र.	क्र.	क्र.	क्र.
०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
०	०	०	०	०	१७	१७	१७	१७	०	०	०
२४	५	५	५	५	४९	५३	५४	५४	२९	२९	२८

अधिक और क्षयमास सारिणी।

अधिकमासाः								क्षयमासाः
ज्ये १६०१	वे १६०४	आ १६०६	मा १६०९	जे १६१२	भा १६१४	आ १६१७	आ १६०३	मार्ग १६०३
१६२०	ज १६२२	१६२४	१६२८	१६२९	१६३३	१६३६		
१६३९	१६४१	१६४४	१६४७	१६५०	१६५२	१६५५		
१६५८	१६६०	१६६३	१६६५	वे १६६८	१६७१	१६७४		
१६७७	१६७९	१६८२	ज्ये १६८५	१६८८	आ १६९०	१६९३		
वे १६९६	आ १६९८	१७०१	१७०४	१७०७	१७०९	१७१२		
१७२५	१७२७	१७२९	१७३३	१७३६	१७३८	१७३९		
१७३४	१७३६	१७३९	१७४२	१७४५	१७४७	१७५०	आ १७४४	मार्ग १७४४
१७५३	१७५५	आ १७५८	१७६१	१७६३	१७६६	ज्ये १७६९		पौ १७६३
१७७२	१७७४	१७७७	१७८०	१७८३	१७८५	१७८८		
१७९१	१७९३	१७९६	१७९९	१८०१	१८०४	१८०७		
वे १८१०	१८१२	१८१५	१८१८	१८२०	१८२३	१८२६		
१८२९	आ १८३१	१८३४	वे १८३७	आ १८३९	१८४२	१८४५		
१८४८	१८५०	१८५३	१८५६	१८५८	१८६१	१८६४		
१८६७	१८६९	१८७२	१८७५	१८७७	१८८०	१८८२		
१८८६	१८८८	१८९२	१८९४	१८९६	आ १९०१	१९०२	अ १९०५	मार्ग १९०५
अ १९०४	१९०७	ज्ये १९१०	१९१३	१९१५	१९१८	१९२३	मा १९०४	पौ १९०४
१९२३	१९२६	१९२९	१९३३	१९३४	१९३७	१९४०		
१९४२	१९४५	१९४८	वे १९५१	१९५३	१९५६	१९५९	का १९५०	मा १९५०
१९६१	मा १९६४	१९६७	फा १९६९	आ १९७२	१९७६	वे १९७८	का १९६९	मा १९६९
आ १९८०	१९८३	१९८६	१९८८	१९९१	१९९४	१९९७		
१९९९	२००२	२००५	२००७	२०१०	२०१२	२०१६	का २००७	मा २००७
२०१८	२०२१	२०२४	अ २०२६	२०२९	२०३२	२०३५	का २०२६	मा २०२६
२०३७	२०४०	वे २०४३	मा २०४५	२०४८	ज्ये २०५१	२०५४	फा २०४५	पौ २०४५
२०५६	२०५९	ज्ये २०६२	२०६४	२०६७	२०७०	२०७३		



तिथ्यादिकों की सारिणी ॥ भररविः ॥

अश्विंशर्कः ॥

अश्विंशर्कः	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
तिथि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
वारादि.	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
पराश्व्य	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३
घटी.	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३
कार.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
नक्षत्र	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
वारादि.	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
वार.	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
योग	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
वारादि	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
पराश्व्य	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
घटी.	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
कार.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०

पुष्पकः

कक सं.

जर्धीक	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४
निधि.	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वारादि	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१
पराबल्य	०	५	११	१७	२०	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८
हार.	१०	१०	१२	१५	२३	४०	५०	५०	५०	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६०
नक्षत्र.	२	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
वारादि.	१३	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४
हार.	१४	१८	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०
योग.	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
वारादि.	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३	३३
पराबल्य.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
हार.	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७

कन्यासंक्रान्ति.

उत्तरार्कः

ऊर्ध्वार्क	१७७	१७८	१७९	१८०	१८१	१८२	१८३	१८४	१८५	१८६	१८७	१८८	१८९	१९०	१९१	१९२	१९३	१९४	१९५	१९६	१९७
तिथि.	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
पराश्व्य.	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
हार.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
नक्षत्र.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
वारादि.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
हार.	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
योग	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वारादि	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
पराश्व्य.	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
हार.	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३

अनुसार्कः
वृत्ति सं०

जुलैक	२१०	२११	२१२	२१३	२१४	२१५	२१६	२१७	२१८	२१९	२२०	२२१	२२२	२२३	२२४	२२५	२२६	२२७	२२८	२२९	२३०
तिथि	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
वारदि.	३३	३३	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३
पराब्ज.	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२
हार.	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
नक्षत्र.	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
वारदि.	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७
हार.	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
योग.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
वारदि.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०
पराब्ज.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
हार.	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८

श्रवणिकः

मकरसं०

उत्तराषा०

जर्जकिक.	२७३	२७४	२७५	२७६	२७७	२७८	२७९	२८०	२८१	२८२	२८३	२८४	२८५	२८६	२८७	२८८	२८९	२९०	२९१	२९२	२९३
तिथि.	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
वारादि.	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३
पराख्य	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
हार.	६००	२७	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२
नक्षत्र.	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
वारादि.	१७	२४	३१	३८	४५	५२	५९	६६	७३	८०	८७	९४	१०१	१०८	११५	१२२	१२९	१३६	१४३	१५०	१५७
हार.	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
योग.	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वारादि.	०	५	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४५	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००
पराख्य.	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८
हार.	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८	६४	७०	७६	८२	८८	९४	१००	१०६	११२	११८	१२४	१३०	१३६	१४२

शतकः

कुंभ.सं.

धनिष्वाकः

ज्येष्ठीक	२९४	२९५	२९६	२९७	२९८	२९९	३००	३०१	३०२	३०३	३०४	३०५	३०६	३०७	३०८	३०९	३१०	३११	३१२	३१३	३१४
तिथि.	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२
वारदि.	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
पराख्य.	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
हार.	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
नक्षत्र.	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
वारदि.	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
हार.	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
योग.	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
वारदि.	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
पराख्य.	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
हार.	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३

मीनसंक्रांति

उत्तराभाद्रपदः

शुक्लतिथिः

अर्धरात्रिः	३३६	३३७	३३८	३३९	३४०	३४१	३४२	३४३	३४४	३४५	३४६	३४७	३४८	३४९	३५०	३५१	३५२	३५३	३५४	३५५	३५६	३५७	३५८	३५९	३६०		
निधिसंक्रांतिः	१ ५४ ३	२ ५२ ११	३ ५१ २०	४ ५१ २८	५ ५१ ३६	६ ५१ ४५	७ ५१ ५२	८ ५१ ५८	९ ५१ ०	१० ५१ ७	११ ५१ १५	१२ ५१ २३	१३ ५१ ३०	१४ ५१ ३७	१५ ५१ ४४	१६ ५१ ५०	१७ ५१ ५६	१८ ५१ ०	१९ ५१ ७	२० ५१ १५	२१ ५१ २३	२२ ५१ ३०	२३ ५१ ३७	२४ ५१ ४४	२५ ५१ ५०	२६ ५१ ५६	
पराश्वयुज्यः	१५ २०	१६ २९	१७ ३८	१८ ४७	१९ ५६	२० ६५	२१ ७४	२२ ८३	२३ ९२	२४ १०१	२५ ११०	२६ ११९	२७ १२८	२८ १३७	२९ १४६	३० १५५	३१ १६४	३२ १७३	३३ १८२	३४ १९१	३५ २००	३६ २०९	३७ २१८	३८ २२७	३९ २३६	४० २४५	
द्वारः	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	
नक्षत्रसंक्रांतिः	४ १८ ०	५ १५ ०	६ १२ ०	७ ९ ०	८ ६ ०	९ ३ ०	१० ० ०	११ ३६ ७	१२ ३३ ७	१३ ३० ७	१४ २७ ७	१५ २४ ७	१६ २१ ७	१७ १८ ७	१८ १५ ७	१९ १२ ७	२० ९ ७	२१ ६ ७	२२ ३ ७	२३ ० ७	२४ ३६ ७	२५ ३३ ७	२६ ३० ७	२७ २७ ७	२८ २४ ७	२९ २१ ७	३० १८ ७
द्वारः	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	
योगसंक्रांतिः	१ ११ ५६	२ १० २०	३ ९ ४७	४ ९ १४	५ ९ ४१	६ ९ ८	७ ९ ३५	८ ९ २	९ ९ २९	१० ९ ५६	११ ९ २३	१२ ९ ५०	१३ ९ १७	१४ ९ ४४	१५ ९ ११	१६ ९ ३८	१७ ९ ५	१८ ९ ३२	१९ ९ ५९	२० ९ २६	२१ ९ ५३	२२ ९ २०	२३ ९ ४७	२४ ९ १४	२५ ९ ४१	२६ ९ ८	
पराश्वयुज्यः	२ ११ ५६	३ १० २०	४ ९ ४७	५ ९ १४	६ ९ ४१	७ ९ ८	८ ९ ३५	९ ९ २	१० ९ २९	११ ९ ५६	१२ ९ २३	१३ ९ ५०	१४ ९ १७	१५ ९ ४४	१६ ९ ११	१७ ९ ३८	१८ ९ ५	१९ ९ ३२	२० ९ ५९	२१ ९ २६	२२ ९ ५३	२३ ९ २०	२४ ९ ४७	२५ ९ १४	२६ ९ ४१	२७ ९ ८	
द्वारः	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	

ज्योतिषिक	३१७	३१८	३१९	३२०	३२१	३२२	३२३	३२४	३२५	३२६	३२७	३२८	३२९	३३०	३३१	३३२	३३३	३३४	३३५	३३६	३३७
निधि.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
वारानि.	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५
पाराल्य	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
झार.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०
नाक्षत्र.	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४
वारानि	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०
झार.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
ज्योग.	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
वारानि.	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
पाराल्य	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०
झार.	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४

अर्धकै.	३७८	३७९	३८०	३८१	३८२	३८३	३८४	३८५	३८६	३८७	३८८	३८९	३९०	३९१	३९२	३९३	३९४	३९५	३९६	३९७	३९८
तिथि.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
वारादि.	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	३०	२९	२८	२७	२६	२५
पाराव्य.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
हार.	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
नक्षत्र.	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वारादि.	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
हार.	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४
योग.	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५
वारादि.	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३
पाराव्य.	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
हार.	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४

अथ अहर्गण करने की विधि.

वर्तमान शालिवाहन शाके में १४४२ हीन करके ११ माग से लब्ध जो अंक आवे वह चक्र कहलाता है. फिर शेषांक को १२ से गुण के चैत्र शुद्धि १ से गतमास युक्त करके उसको दोजगो रखे पश्चात् चक्र को द्वि-गुण करके उसमें १० और युक्त करके फिर एकजगो के अंक में युक्त करके ३३ माग से लब्ध अधिकमास आवे सो दूसरीजगो के अंक में युक्त करना यदि उसवर्ष में अधिकमास होवे तो अधिकमास के पहले के दिनों का अहर्गण करना होतो उक्त अधिकमास का गणित आवे जिसमें एक न्यून करके फिर युक्त करना चाहिये और अधिकमास से आगेके महीनों में अहर्गण करनेवाला जैसा गणितागत है उसीको ही युक्त करने से मासगण होता है. इसको ३० से गुण के गततिथि उसमें युक्त करे पश्चात् चक्र का निरग्र षष्ठांश युक्त करके उसको दोजगो रखे फिर एकजगो ६४ के भाग से लब्ध अवमदिन आवे सो दूसरीजगो के अंक में हीन किये अहर्गण होता है. अथ वार लाने की विधि: चक्र को ५ से गुण के अहर्गण में युक्त किये पश्चात् ७ के भाग से शेष १ आदि बचे भीमवार से गणना चाहिये. यदि जिसदिन के वार तुल्य अहर्गणागत वार नहीं मिले तो अहर्गण में एक न्यूनाधिक करने से बुद्ध अहर्गण होता है. यह वार की न्यूनाधिक्यता सो सिद्धान्त गणितागत अहर्गण में ही आती है. जब शकादि अहर्गण में हीना तो संभव ही है. अथ सारिणी में मध्यमग्रह करने की विधि. अहर्गण को ६० के भाग से लब्धांक आवे सो मध्यमग्रह सारिणी में लब्धकोष्ठक और उक्त भाग से शेष बचे सो सारिणी में शेषांककोष्ठक कहलाता है इन दोनों को युक्त करके फिर चक्रांक के कोष्ठक के अंक को योग किये मातमध्यमग्रह होते हैं. अथ तात्कालिक मध्यमग्रह करने की विधि. स्पष्ट घटी बुल्यघटी और पलबुल्यपल निजनिज सारिणी में देव के मध्यमग्रह में युक्त किये तात्कालिक मध्यमग्रह होते हैं और उक्त घटी पलों का राहु में हीन किये स्पष्ट राहु होता है. अथ सूर्य स्पष्ट करने की विधि. सूर्यमंदोच्च २।१०।०।० में तात्कालिक मध्यमसूर्य को हीन करने से वह मंद-

केंद्र कहलाता है. इस केंद्र की भुज करनी चाहिये वह तीनसे न्यून (कम) राशि भुज कहलाती है और तीनराशि से अधिक को ६ से शोधन करना चाहिये. यदि ६ से अधिक ९ तक हो तो ६ अंक उसमें हीन करना चाहिये और ९ से अधिक को १२ से शोध करना चाहिये वस वही प्रकार से भुज बनाके उसका अंश अर्थात् वह भुजांश कहलाता है. सूर्यस्पष्ट सारिणी में उक्त भुजांश के तुल्य कोष्ठक में सूर्यमंदफल को लेके और उसके नीचे गुणक के अंक से भुजांश के अधस्थ घटी पलों को गुणके फिर पलों को ६० से ऊंची चडा के ऊपरिघटि के भाजक के भाग से लब्धफल लेके उक्त मंदफल में जोड़ के फिर मेघादि केन्द्र के कारण मध्यमसूर्य में वह मंदफल धन और तुलादि केंद्र वस से ऋण किये मंदस्पष्ट सूर्य होता है.

अथ चरसंस्कार देने की विधि.

सायनसूर्य की राशि अंश के कोष्ठक सारिणी में देख के तुलादिरवि में युक्त और मेघादि रवि में हीन किये स्पष्टसूर्य होता है. अथ सूर्य की गति लाने की विधि. भुजांशकोष्ठक मंदफल अधस्थ सारिणी में गति फल सूर्य की मध्यम गति ५९।० में कर्कादि केंद्र के कारण युक्त और मकरादि केंद्र के कारण हीन किये सूर्य की गति स्पष्ट होती है. अथ स्थूल अयनांशा पलभा, चरखंडा, और चरपल करने की विधि. शाकेमें ॥४५॥ हीन करके पदचातू श्रापांक कीं ६० से माग देने से लब्ध अयनांशा और शेष १ सायंकाल में चरपल के विलोम संस्कार देने का कारण यह है कि लंका में सूर्य का उदय और रविवेदे में सूर्य का उदय इन दोनों के अन्तर का नाम चरपल है सो लंका के क्षितिज की तो उर्नडल संज्ञा और देशांतर के क्षितिज की क्षितिज संज्ञा है अतएव मेघादिराशियों का रवि प्रथम क्षितिज में उदय होके फिर पीछे उर्नडल में उदय होता है और प्रथम ही उर्नडल में अस्त होके फिर पीछे क्षितिज में अस्त होता है जिससे दिन के दृष्ट में चरपल को रवि में ऋण और सायंकाल में धन करनी चाहिये एवं तुलादि दक्षिण गोल में उर्नडल में प्रथम सूर्य दीरवके फिर पीछे से क्षितिज में दीरवता है और प्रथम ही क्षितिज में अस्त होके फिर पीछे उर्नडल में अस्त होता है जिससे दिन के दृष्ट में चरपल धन करनी और सायंकाल में ऋण करनी चाहिये.

बचे सो घटी और चैत्रादि प्रतिमास की ५ पल भी इसके नीचे ले लेनी चाहिये और मेष के सायनसूर्य के दिन द्वादशांगुल शंकु के मध्यान्ह की छाया पलभा कहलाती है. फिर उक्त पलभा को तीन जगगे रख के पहले १० दूसरे ८ और तीसरे अंक को १० से गुणके उक्त यह तीनों चरखंड कहलाता है. परंच तीसरे चरखंड को ३ के भाग से लब्ध कर लेना चाहिये फिर सायनसूर्य के भुज की राशि तुल्यगत् चरखंड लेके फिर भोग्य चरखंड से अधस्थ अंशादिकों की गुणके फिर ३० के भाग से लब्धगत चरखंड में युक्त किये चरपल होती है. उक्त चरपल देश देश की पृथक्पृथक् होती है जिसमें रामगढ की चरपल १३१ से अधिक नहीं है.

अथ चन्द्रमाके त्रिफलसंस्कार देने की विधि.

भूमध्यरेखा के योजनान्तर के ६ भाग से लब्ध घटी पल लेके रेखासे पवित्रम बसने वाला ताल्कालिक मध्यम चन्द्रमा में युक्त और पूर्व वासी हीन किये एक फल संस्कृत चन्द्र होता है. चरपल को द्विगुणित करके ९ के भाग से लब्ध घटी पल लेके सूर्य में हीनयुक्त चरपल की उस विधि से ही रेखा संस्कृत चन्द्र में हीनयुक्त किये द्विफल संस्कृत चन्द्र होता है और सूर्यमन्दफल के २७ भाग से लब्ध अंशादिसूर्य सहस्र विधिसे ही द्विफल संस्कृत चन्द्र में हीनयुक्त किये त्रिफल संस्कृत चन्द्रमा होता है.

अथ चन्द्र स्पष्ट करने की विधि.

त्रिफल संस्कृत चन्द्रमा को ताल्कालिक चन्द्रोच्च में हीन किये चन्द्रमंदकेंद्र कहलाना है. उसकी भुज फिर उसका अंश करके चन्द्रस्पष्ट सारिणी में उक्त भुजांश कोष्टक में चन्द्रमा का मन्दफल लेके फिर भुजांश के अधस्थ की घटी पलों की गुणक से गुणके हर के भाग से लब्धफल लेके मन्दफल में युक्त किये पत्रचात् मन्दकेन्द्र मेष जुलादिवस से त्रिफल संस्कृत चन्द्रमा में धन क्रण किये स्पष्ट चन्द्रमा होता है.

अथ चन्द्रमा की गति लाने की विधि.

भुजांश कोष्टक में मन्दफल अधस्थ चन्द्रगति फल लेके उसके नीचे

गुणक से मुजांश के अधस्थ घटी पलों को गुण के फिर षष्टिभाग से लब्ध पलों को गतिफल में हीन करके चन्द्र मध्यम गति ७९०।३५ में कर्क मकरादि केंद्र वस से धन ऋण किये चन्द्र की गति स्पष्ट होती है.

अथ उक्त दोनों से सूक्ष्म पंचांग बनाने की विधि

चन्द्र में सूर्य हीन करके फिर शेष राशि का अंश कर लेना फिर १२ के भाग से लब्ध गत विधि होती है. शेषांक को १२ से शोधित किये तिथि का भोग होता है उस अंश को ६० से गुण के उसमें घटी युक्त करके फिर ६० से गुण के उसमें पल युक्त करके फिर ६० से गुण के चन्द्र सूर्य की गत्यंतर के भाग से लब्ध वर्तमान तिथि की घटी पल होती है. ऐसे ही स्पष्ट चन्द्रमा की घटी करके ८०० के भाग से लब्ध गत नक्षत्र होता है. शेषांक को ८०० से शोधित अंक को ६० से गुण के अधस्थ पल युक्त करके फिर ६० से गुण के ८०० के भाग से लब्ध भोग्य नक्षत्र की घटी और पल होती है. एवं सूर्य और चन्द्रमा का योग करके उसकी घटी बना के फिर ८०० के भाग से लब्ध गत योग होता है. शेषांक को ८०० से शोधित करके फिर घटी ६० से गुण के अधस्थ फल युक्त करके फिर ६० से गुण के चंद्र सूर्य की गति योग के भाग से लब्ध वर्तमान योग की घटी पल होती है. यहां कर्ण की घटी पल पूर्ववत् समझनी चाहिये.

अथ भौमादि पांचों के स्पष्ट करने की विधि.

तात्कालिक भौम गुरु और शनि को तात्कालिक मध्यम रावी में हीन किये अपना अपना शीघ्र केंद्र होता है और बुध और शुक्र इन दोनों का शीघ्र केंद्र तात्कालिक मध्यम ही को पूर्वोक्त समझना चाहिये उक्त शीघ्र केंद्र ६ राशि से अधिक होती १२ से शोध के फिर उसका अंश बना के शीघ्र फल सारिणी के अंश तुल्य सूत्र को फल में शीघ्र फल लेके फिर शीघ्र केंद्र की कला के कोष्क में कला और विकला के कोष्क में विकला लेके उक्त सारिणी में ऋण धन देव के शीघ्र फल में ऋण धन करके उस फल को आधा करके तात्कालिक मध्यम ग्रह में भौमादि शीघ्र केंद्र के कारण तो धन और बुलादि केंद्र के वस में ऋण किये शीघ्रांत्र फल संस्कृत-

ग्रह होता है.

अथ मन्दस्पष्ट ग्रह करने की विधि.

शीघ्राह्न फल संस्कृत ग्रह को निज निज संगल ४ बुध ७ रहस्पति ६ शुक्र ३ शनि ८ के मन्दोच्चांक राशी में हीन किये मन्दकेन्द्र होता है. इस मन्दकेन्द्र का उक्तविधि से भुजांश बना के मन्दफल सारिणी में भुजांश कोष्ठक के सूत्र में ग्रहका मन्दफल लेके फिर मन्दकेन्द्र की कला के तुल्यकला और विकला के कोष्ठक में विकला सारिणी से लेके मन्दफल में युक्त करके फिर भेष तुलादि मन्दकेन्द्र के कारण उक्तविधि से तात्कालिक मध्यम ग्रह में क्रम से धन ऋण किये मन्दस्पष्ट ग्रह होता है.

अथ स्पष्ट ग्रह करने की विधि.

उक्त मन्दफल को ग्रह में धन किया होता ऋण और ऋण किया होता धन शीघ्रकेन्द्र में किये निज निज ग्रह का द्वितीय शीघ्रकेन्द्र होता है. इस को ६ राशि से अधिक हुए १२ में शोधके उक्तविधि से अंश करके शीघ्रफल सारिणी के सूत्र कोष्ठक में शीघ्रफल लेके उक्त द्वितीय शीघ्रकेन्द्र की कला तुल्यकला और विकला तुल्य विकला ऋण धन सारिणी से लेके शीघ्रफल के उक्तविधि से संस्कार देके फिर भेष तुलादि द्वितीय शीघ्रकेन्द्र के कारण क्रम से धन ऋण मन्दस्पष्टग्रह में करने से ग्रहस्पष्ट होता है.

अथ भौमादिकों की गति स्पष्ट करने की विधि.

मन्दस्पष्टफल सारिणी में जिस ग्रह का गतिफल हो वह कर्कादि केन्द्र के कारण तो धन और मकरादि केन्द्र के कारण ऋण संशुभ कहलाता है और शीघ्रफल सारिणी में गतिफल ऋण धन जैसा है वैसा उसी जगो लिखा हुआ है. अब यहां दोनों ठौर धन धन हो तो धनकरता

और एक गतिफल तो घन हो और दूसरा ऋण हो तो दोनों के अन्तर किये ग्रह की स्पष्ट गति होती है,

अथ इन पाँचों के उदयास्त वक्र-
मार्ग जानने की विधि.

उक्त भौमादिग्रह द्वितीय शीघ्र केन्द्रांश के वस से उदयास्त वक्र-
मार्ग होते हैं. जिसमें मंगल २० बुध २०५ गुरु १४ शुक्र १०३
शनि १७ यह शीघ्रांशों पर पूर्व में उदय होते हैं. और मंगल ३३२
बुध १४५ बृहस्पति ३४६ शुक्र १७७ शनि ३४३ इन शीघ्रांशों पर
पश्चिम में अस्त होते हैं. मंगल १६३ बुध १४५ गुरु १२५ शुक्र
१६७ शनि ११३ इन अंशों पर वक्र होते हैं. और मंगल १९७ बुध
२२५ बृहस्पति २३५ शुक्र १९३ शनि २४७ इन अंशों पर मार्ग होते हैं
बुध ५० अंशों पर पश्चिम में उदय होके फिर ३१० शीघ्रांशों पर पूर्व में
अस्त होता है. और शुक्र २४ अंशों पर पश्चिम में उदय होके फिर
३३६ शीघ्रांश पर पूर्व में अस्त होता है. बाकी और ग्रह सदैव
पूर्व में उदय और पश्चिम में अस्त होते हैं.

अथ उदयास्त वक्र मार्ग के दिन
और इष्ट लाने
की विधि.

निम्न दिन इष्ट घटी पर यह का द्वितीय शीघ्रांश उक्त वक्र मार्ग उदया
स्त अंशों से न्यूनाधिक्य हो जिसका अन्तर करके भौम के अंशों को दु-
ना बुध के अंशों को ३ के भाग से लब्ध लेवे. गुरु के अंश दो जगेरस
के एक जगे ९ के भाग से लब्ध लेके दूसरी जगे के अंक में युक्त कर देना
चाहिये. शुक्र के अंशों को १० से गुण के ६ के भाग से लब्ध लेवे और

१ दूरस्थितः स्वशीघ्रोच्चग्रहः त्रिधिल रश्मिभिः । सव्येतराले च तनुर्भवेद्भ्रम ग-
तिस्तदा ॥ इति सूर्यसिद्धांते. अर्थात् अपने शीघ्रोच्च से अत्र दूर पर जाने के
कारण त्रिधिल रश्मि होके कुछ पीछा रहता है वह चक्री कहलाता है. स्वशी-
घ्रोच्च के नजीक आनेसे फिर आगे चलता है जिससे मार्गी ग्रह कहलाता है.

त्रानि का शीघ्रभागांतर जैसा हे वैसा उक्त शीघ्रभागों से अधिक होतो ऋण और कम होतो धन इष्ट वारादि में करने से ग्रह का उदयास्त वक्र मार्ग दिनादि होते हैं ॥ इति श्री मन्त्र रचिते दैवज्ञ विनोदे सुभाषा विभूषिते सारिणीतो ग्रहस्पष्टीकरण विधि कथनं नाम अष्टादश विनोदः ॥१८॥

मुख्य नगरों के अक्षांश पलभा रेखांतर पलानि.

शहर	रेखा	अक्षः	पलभा	शहर	रेखा	अक्षः	पलभा	शहर	रेखा	अक्षः	पलभा
काश्मीर	पू	३४।६	७।५४	न्वालियर	पू	२६।२२	५।५४	पूना	प	१८।२९	४।०
लाहोर	पू	३१।३३	७।२२	उदयपुर	पू	२४।३७	५।३०	वीकानेर	प	२०।१	६।३३
दिल्ली	पू	२८।३७	६।३३	उज्जैन	०	२३।१	५।७	असतसर	पू	११।३७	७।२३
नेपाल	पू	२७।४३	६।१८	कलकत्ता	पू	२२।३६	४।४९	जंबू	पू	२२।४४	७।४३
जयपुर	पू	२६।५६	६।६	मुंबई	पू	१८।५७	४।७	झारका	पू	२३।१५	४।५५
जोधपुर	पू	२६।२०	५।५६	मदरास	पू	१३।४	२।४७	नागपुर	पू	२१।८	४।३९
सीकर	पू	२७।४	६।१०	रामेश्वर	पू	९।१५	१।५७	सिंहपुर	पू	१२।०	०।१७
रामगढ़	पू	२७।१०	६।१२	लंडन	पू	५१।३१	१।१६	कांची	०	९।५६	२।६
काशी	पू	२५।२०	५।४५	काबुल	पू	३४।२७	८।३	जबलपुर	पू	२१।९	५।७
सिंधवे	पू	२५।२४	५।४१	जगन्नाथ	पू	१९।४६	४।२९	भडोच	पू	२१।४१	४।४६
हैदराबाद नि.	पू	१७।११	३।४४	पारिस	पू	४८।५०	१३।४३	ठाका	पू	२३।५५	१।१७

प्रसिद्ध देश वा नगरों के लग्नमान.

लग्न	लंका	जयपुर	जोधपुर	सीकर	श्रीनगर	लाहौर	दिल्ली	नेपाल
मी. मे.	२७०	२९७	२९९	२९७	२०३	२०५	२१३	२१५
कुं. द.	२९९	२५१	२५२	२५०	२३६	२४०	२४७	२४९
म. मि.	३२३	३०३	३०४	३०३	२८७	३०१	३०२	३०२
घ. क.	३२३	३४३	३४२	३४३	३४९	३४५	३४४	३४४
द. सिं.	२९९	३४७	३४६	३४८	३६२	३५८	३५१	३४९
घ. कं.	२७०	३३९	३३७	३३९	३५४	३५१	३५३	३४९

लग्न	काशी	सिंधहे.	हैदराबाद	गालियर	उदयपुर	उज्जैन	कलकत्ता	मुंबई
मी. मे.	२२१	२२२	२४१	२९९	२२३	२२७	२३०	२३७
कुं. द.	२५३	२५४	२७०	२५२	२५५	२५९	२६१	३६७
म. मि.	३०४	३०५	२०३	३०४	३०५	३०६	३०७	३१०
घ. क.	३४२	३४१	३३५	३४२	३४१	३४०	३३९	३३६
द. सिं.	३४५	३४४	३२८	३४६	३४३	३३९	३३७	३३१
घ. कं.	३३५	३३४	३१५	३३७	३३३	३२९	३२६	३१९

लग्न	मदराग	गंगोद्वग	लंडन	काबुल	नगलाघ	पारीस	पूना	वीरगौर
मी. मे.	२५१	२५९	१२७	१९८	२३५	१४१	२३८	२१५
कुं. द.	२७७	२८४	१७९	२३५	२६५	१९०	२६७	२५८
म. मि.	३१४	३१७	२७३	२९७	३०९	२७८	३१०	३०२
घ. क.	३३२	३२९	३७३	३४९	३३७	३६८	३३६	३४४
द. सिं.	३०१	३१४	४१९	३६३	३३३	४०८	३३१	३५०
घ. कं.	३०५	२९७	४२९	३५८	३०१	४१५	३१८	३४१

देशांतर लग्नमान सारिणी.

भूमनसर	जंबू	द्वारका	नागपुर	सिंहपुर	कांची	जबलपुर	भद्राच	दाका	रुगगढ	लग्नमान
२०५	२०१	२२९	२३२	२७६	२५७	२२७	२३१	२२६	२१६	मे. मी.
२५०	२३८	२६०	२६२	२९७	२८३	२५८	२६१	२५७	२५०	ह. कुं.
२९९	२९८	३०७	३०८	३३३	३१६	३०६	३०८	३०६	३०३	मि. म.
३४७	३४८	३३९	३३८	३२३	३३०	३४०	३३८	३४०	३४३	क. ध.
३५८	३६०	३३८	३३६	३०१	३२५	३४०	३३७	३४१	३४८	सिं. ह.
३५१	३५५	३२७	३२४	२८०	२९९	३२९	३२५	३३०	३३६	कं. यु.

प्रसिद्ध नगरों के चरखंडा.

श्रीनगर	७९१६३।२६	काशी	५७।६६।१०	मद्रास	२७।२२।९	अमृतसर	७३।५०।२४
लाहौर	७३।५१।२२	सिधहैं	५६।७५।१०	रामेश्वर	१९।१५।६	जंबू	७७।६१।२५
गोधपुर	५९।७७।१९	द. द्वेदशवा	३७।२९।१२	लडन	१५।१०।५०	द्वारका	५९।३९।१९
जयपुर	६१।४०।२०	ग्यालियर	५९।७७।१९	काबुल	००।६७।२६	नागपुर	४६।३७।१५
रामगढ	६२।४९।२०	उदयपुर	५५।७४।१८	जगन्नाथ	४३।३४।२४	वांची	२२।१६।७
सीकर	६१।५९।२०	जर्जेन	५१।४०।१७	पारीन	१७।७।९।४५	जबलपुर	५१।४९।१७
दिल्ली	६५।५२।२१	कलकता	४८।३८।१६	बूना	४०।३२।१३	भद्राच	४७।३८।१६
नेपाल	६३।५०।२१	मुंबई	४१।३२।१३	वीकानेर	६३।५१।२९	सिंहपुर	२।२।०

सूक्ष्म गति चक्रम्.

सूर्य.	चन्द्र.	जुष.	राहु.	भीम.	बुध.	शुक्र.	शुक्र.	शनि.
०	०	०	०	०	०	०	०	०
५९	१३	०	०	०	३	०	०	०
५९	१०	६	३	३१	६	४	३६	२
५	३४	४०	१०	२६	२४	५९	५९	०
१०	५३	५१	४८	३९	८	८	४०	३३
२७	५६	२६	२५	३	७	३४	५	४
९	०	०	०	०	०	०	०	०
५९	७९०	६	३	३९	१०६	५	२७	२
८	३५	४१	११	२६	२४.	०	०	०

द्वि. पंचाशद्वधौराम दुर्गे चरपलं अय० २३।०

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
४७	६१	७२	८३	९४	१०५	११६	१२७	१३८	१४९	१६०	१७१	१८२	१९३	२०४	२१५	२२६
२८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४
८४	७२	६३	५४	४५	३६	२७	१८	९	०	१	२	३	४	५	६	७
३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१
११८	१२४	१२९	१३४	१३९	१४६	१५३	१६०	१६७	१७४	१८१	१८८	१९५	२०२	२०९	२१६	२२३

त्रयोदश दिनात्मक चालन. १३

चतुर्दश दिनात्मक चालन १४

र.	चं.	ज.	रा.	मं.	कु.	गु.	शु.	श.	सू.	चं.	ज.	रा.	मं.	कु.	गु.	शु.	श.
०	५	०	११	०	१	०	०	०	०	६	०	१२	०	१	०	०	०
१२	२२	१	२९	६	१०	१	८	०	१३	४	१	१९	७	१२	१	८	०
४८	१७	२६	१८	४८	२३	४	०	२६	४७	१८	३३	१५	२०	२९	९	३७	२८
४६	३३	५१	३९	४५	१४	४९	५६	५	५५	८	३२	२९	१९	२८	४८	५५	६

पंचदश दिनात्मक चालन. १५

षोडशदिनात्मक चालन. १६

र.	चं.	ज.	रा.	मं.	कु.	गु.	शु.	श.	र.	चं.	ज.	रा.	मं.	कु.	गु.	शु.	श.
०	६	०	११	०	१	०	०	०	०	०	०	११	०	१	०	०	०
१४	१७	१	२६	७	२६	१	९	०	१५	०	१	२९	८	१९	१	१	०
४७	३८	४०	२२	५१	३६	२४	२४	२०	४६	४९	४६	९	२३	४२	१९	५१	३२
२	४३	२३	१८	३८	२	४०	५५	६	११	१८	५४	७	५	२६	४६	५५	६

सप्तदिनात्मक चालन.

वक्रमार्गदियास्वभागाः

सू.	मं.	कु.	र.	शु.	श.	रा.	चं.	चंज.	मं.	कु.	र.	शु.	श.	ग्रहाः
०	०	०	०	०	०	०	३	०	२८	२५	२५	२५	२५	उदय
६	१	२१	०	४	०	०	२	०	३१२	१११	१११	१११	१११	स्त
१३	४०	४४	३४	१८	१४	२२	१४	४६	१६३	१४५	१२५	११७	११३	पक्र.
५७	६	४९	५४	५८	३	१६	४	४६	११७	२२५	२३५	१९३	२४७	मार्ग.
									१७	१९	११	९	१५	काली.

सूर्यलब्धिकोष्क.

कोष्क	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
सूर्यलब्धि	०	१	२	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९
	०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३
	०	०	१६	२४	३२	४०	४९	५७	५	१३	१९	२९	३८	४६	५४	६२	७०	७८
	०	२०	२०	२०	४१	५३	२	१२	२२	३२	४२	५३	३	१३	२५	३४	४४	५४
कोष्क	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
सूर्यलब्धि	११	१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	९	११	१	३	५	७	८
	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	१	०	१९
	२७	३५	४३	५१	५९	६	१६	२४	३२	४०	४८	५६	५	१३	२१	२९	३७	४६
	५	१५	२६	३७	४६	५५	६	१७	२७	३७	४८	५८	८	१८	२९	३९	५०	०
कोष्क	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
सूर्यलब्धि	१०	०	२	४	६	८	१०	०	२	४	६	८	१०	०	२	४	६	८
	२८	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२
	५४	२	१०	१८	२६	३५	४३	५१	५९	६	१५	२४	३२	४०	४८	५६	६	१३
	१०	२०	३१	४१	५१	६१	७१	८१	९१	१०१	१११	१२१	१३१	१४१	१५१	१६१	१७१	१८१
को.	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
सूर्यलब्धि	१०	०	२	४	६	८	१०	०	२	४	६	८	१०	०	२	४	६	८
	१३	१२	११	१०	९	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	१	२	३
	२१	२९	३७	४५	५३	६१	७०	७९	८८	९७	१०६	११५	१२४	१३३	१४२	१५१	१६०	१६९
	१४	२४	३४	४४	५४	६४	७४	८४	९४	१०४	११४	१२४	१३४	१४४	१५४	१६४	१७४	१८४

सूर्यशेषांककोष्क.

कोष्क	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
सूर्यशेषांक	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
	०	०	१६	२५	३३	४१	५०	५०	५	१४	२२	३०	३८	४६	५४
कोष्क	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
सूर्यशेषांक	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४
	३	१२	१९	२०	२५	३३	४२	५२	५२	८	१६	२५	३०	४१	४९
	५७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४

सूर्य शेषांक कोष्ठक.

कोष्ठ.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
सूर्य- शेषांक	० २९ ३४ ५	१ ० ३३ १४	१ १ ३२ २३	१ २ ३१ २०	१ ३ ३० २०	१ ४ २९ १६	१ ५ २८ ५४	१ ६ २७ ०	१ ७ २६ ११	१ ८ २५ १९	१ ९ २४ २७	१ १० २३ ३५	१ ११ २२ ४३	१ १२ २१ ५३	१ १३ २० ५९
कोष्ठक	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
सूर्य- शेषांक	१ १४ २१ ८	१ १५ २० १६	१ १६ १९ २४	१ १७ २० २२	१ १८ २१ २३	१ १९ २२ २५	१ २० २३ २६	१ २१ २४ २७	१ २२ २५ २८	१ २३ २६ २९	१ २४ २७ ३०	१ २५ २८ ३१	१ २६ २९ ३२	१ २७ ३० ३३	१ २८ ३१ ३४

चन्द्रलघ्वि कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	
रा. अं. क. वि.	० ० ० ०	० १० ३४ ५३	४ २१ ० ४३	७ १ ४४ ३६	९ १२ १९ २८	११ २२ ५४ ३०	२ ३ २९ ४	४ १४ ४ ४५	६ २४ ३८ ५४	९ १५ ४३ ५७	११ २६ ५० ३१	१२ ३१ ५८ ३३	१३ ३६ ५९ ३४	१४ ४० ५९ ३५	१५ ४३ ५९ ३६	१६ ४६ ५९ ३७	१७ ४९ ५९ ३८	१८ ५२ ५९ ३९	
को.	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	
रा. अं. क. वि.	६ १० २७ ३५	७ २१ २ २७	७ १ १७ १९	९ १२ ४७ ११	३ २३ ४७ ३	६ २३ ५७ ४६	८ २४ ५७ ३८	१० २५ ५७ ३८	१२ २६ ५७ ३८	१४ ३१ ५७ ३९	१६ ३६ ५७ ४०	१८ ४१ ५७ ४१	१९ ४६ ५७ ४२	२० ५१ ५७ ४३	२१ ५६ ५७ ४४	२२ ५९ ५७ ४५	२३ ६४ ५७ ४६	२४ ६९ ५७ ४७	
कोष्ठक	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	
रा. अं. क. वि.	० २० ५५ १०	३ १ ३० २	५ १२ ४ ५३	७ २३ १० ५५	१० ३ १८ २९	० १३ ५९ २९	३ २४ ५९ ३३	५ २५ ५९ ३४	७ २६ ५९ ३५	९ २७ ५९ ३६	१० २८ ५९ ३७	११ २९ ५९ ३८	१२ ३० ५९ ३९	१३ ३१ ५९ ४०	१४ ३२ ५९ ४१	१५ ३३ ५९ ४२	१६ ३४ ५९ ४३	१७ ३५ ५९ ४४	
कोष्ठक	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	
रा. अं. क. वि.	७ १ २१ ४४	९ ११ ५७ ३९	११ २३ १३ २८	२ ३ ४२ ४	४ १३ ५७ ४	६ १४ ५९ ४८	९ १५ ५९ ४९	११ १६ ५९ ५०	१३ २१ ५९ ५१	१५ २६ ५९ ५२	१७ ३१ ५९ ५३	१९ ३६ ५९ ५४	२१ ४१ ५९ ५५	२३ ४६ ५९ ५६	२५ ५१ ५९ ५७	२७ ५६ ५९ ५८	२९ ६१ ५९ ५९	३१ ६६ ५९ ६०	३३ ७१ ५९ ६१

चन्द्र शेष कोष्ठक.

कोष्ठ	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
अं.	०	१३	२६	९	२२	५	१९	२	१५	२८	११	२४	८	२१	५
क.	०	१०	२३	३६	४९	५२	३	१६	२९	४२	५५	६८	८१	९४	१०७
वि.	०	३५	१०	४४	१९	५५	२९	४	३९	१४	४९	२४	२८	३३	८
कोष्ठ	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	०	०
अं.	१७	०	१३	२७	१०	२३	६	२९	३	१६	२९	१२	१५	८	२२
क.	३८	४९	५९	१०	२१	३१	४२	५२	३	१३	२४	३५	४५	५६	६
वि.	४३	१८	५३	२८	२०	३७	६३	४७	२३	५७	३२	७	४१	१६	५१
कोष्ठ	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा.	१	१	२	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	६	७
अं.	५	१८	१	१४	२७	११	२४	७	२०	३	१७	०	१३	२६	९
क.	१७	२८	३८	४९	५९	१०	२०	३१	४२	५३	३	१३	२४	३५	४५
वि.	२६	१	३६	११	४५	२०	५५	३०	५	४०	१५	४९	२४	५९	३४
कोष्ठ	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा.	७	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	०	०	१	१	१
अं.	२३	६	१९	३	१५	२८	११	२५	८	२१	४	१७	१	१४	२७
क.	५६	६	१७	२७	३८	४९	५९	२०	२०	३१	४१	५२	३	१३	२४
वि.	९	४४	१९	५४	२९	३	३८	१३	४८	२३	५८	३३	७	४५	१७

उच्चलवि कोष्ठक.

कोष्ठ	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	३
अं.	०	६	१३	२०	२६	३	१०	१६	२३	०	६	१३	२०	२६	३	१०	१६	२३
क.	०	४०	२२	२	४३	२४	५	४६	२६	७	४८	२९	१०	५१	३२	१३	५३	३४
वि.	०	५०	४३	३४	२६	१७	९	०	११	४३	३४	२६	१७	९	०	५१	४३	३४
कोष्ठ	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	०	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	७
अं.	०	६	१३	२०	२६	३	१०	१७	२३	०	७	१३	२०	२७	३	१०	१७	२३
क.	१५	५६	३०	१८	५८	३९	२०	१	४२	२३	४	४४	२५	६	४७	२८	९	५०
वि.	२५	१७	९	०	५१	४२	१६	२६	१७	९	०	५१	४२	१४	२६	१७	८	०

उच्च लब्धि कौष्ठक.

कौष्ठ.	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	८	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११
अं.	०	७	१३	२०	२७	३	१०	१७	२३	०	७	१४	२०	२७	३	१०	१७	२४
क.	३०	११	५२	३३	३४	५५	३६	१६	५७	३८	१९	०	४१	२२	२	४३	२४	५
वि.	५९	४३	३४	२५	१७	९	०	५१	४२	३४	२६	१७	८	०	५१	४३	३४	२६
कौष्ठ.	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	३	३	३
अं.	०	७	१४	२०	२७	४	१०	१७	२४	०	७	१४	२०	२७	४	१०	१७	२४
क.	४६	२७	८	४८	२९	१०	११	३२	१३	५४	३४	१५	५६	३७	१८	५९	४०	२०
वि.	१७	८	०	५९	४३	३५	२६	१७	८	०	५२	४४	३६	२८	१०	१२	४	४६

उच्च शेष कौष्ठक

कौष्ठ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
क.	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३
वि.	०	४१	२२	३	४३	२४	५	४६	२७	८	४८	२९	१०	५१	३२
कौष्ठ.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३
क.	४०	४६	५३	०	६	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५३	०	७	१३
वि.	१३	५४	३४	१५	५६	३७	१८	५९	३९	२१	१	४२	२३	४	४५
कौष्ठ.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
क.	२०	२७	३३	४०	४७	५३	०	७	१३	२०	२७	३३	४०	४७	५३
वि.	२२	७	४७	२८	९	५०	३१	१२	५३	३३	१४	५५	३६	१७	५८
कौष्ठ.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६
क.	०	७	१४	२०	२७	३४	४३	४७	५४	०	७	१४	२०	२७	३४
वि.	३९	१९	०	४१	२१	३	४४	२५	५	४६	२७	८	४९	३०	१३

राहु लब्धि कोष्ठक.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
अं.	०	२६	२३	२०	१७	१४	१०	७	४	१	२०	२५	२९	१०	१५	१२	९	५
क.	०	४९	३८	३७	३६	५	५५	४४	३५	२३	११	१	५०	३९	२८	१७	७	५६
वि.	०	१२	२४	३५	४६	५८	१०	२१	३५	४६	५६	८	१९	३१	४३	५४	६	१७
को.	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	१०	९	९	९	९	९	९	९	९	९	८	८	८	८	८	८	८	८
अं.	२	२९	२६	२३	२०	१६	१३	१०	७	४	०	२७	२४	२१	१८	१५	१२	८
क.	४५	३४	२३	१३	२	५१	४०	२९	१९	८	५७	४६	३५	२४	१४	३	५२	४१
वि.	२९	४०	५२	६	१६	२६	३८	४९	१	१३	२५	३६	४७	५९	१०	२१	३५	४६
को.	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	८	८	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	६	६	६	६	६	६
अं.	५	३	२९	२५	२१	१९	१६	१३	१०	६	३	०	२७	२४	२०	१७	१४	११
क.	३०	२०	९	५८	४७	३६	२५	१५	४	५३	४२	३१	२१	१०	५१	४०	३०	२७
वि.	५७	८	२०	३२	४३	५५	६	१८	२९	४१	५३	६	१६	२८	३९	५१	९	१४
कोष्ठ	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	६	६	६	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४
अं.	८	५	१	२८	२५	२२	१९	१६	१२	९	६	३	०	२६	२३	२०	१७	१४
क.	१६	५	५४	४६	३३	२२	११	०	४९	३८	२८	१७	६	५५	४५	३४	२३	१२
वि.	३६	३७	४८	०	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२२	३४	४६	५८	१०	२२	३४	४६

राहु शेष कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
अं.	०	२६	२३	२०	१७	१४	१०	७	४	१	२०	२५	२९	१०	१५
क.	०	४९	३८	३७	३६	५	५५	४४	३५	२३	११	१	५०	३९	२८
वि.	०	१२	२४	३५	४६	५८	१०	२१	३५	४६	५६	८	१९	३१	४३
कोष्ठक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
अं.	२९	२९	२९	२९	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८
क.	१२	९	५	२	५९	५६	५३	५०	४६	४३	४०	३७	३४	३०	२७
वि.	१८	७	५६	४५	३५	२३	१३	२	५१	४१	३०	१९	८	५७	४७

राहु शेष कोष्ठक.

कोष्ठक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा. अं.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
क.	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८	२८
वि.	३६	२५	१४	३	५३	४२	३१	२०	९	५८	४७	३६	२५	१५	४
कोष्ठक	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा. अं.	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११	११
क.	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७	२७
वि.	३६	३३	३०	२७	२४	२०	१७	१४	११	८	५	१	५८	५५	५२

भौम लक्ष्मि कोष्ठक.

कोष्ठ	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
वि.	०	३१	२	३३	४	३५	६	३७	८	३९	१०	४२	१२	४४	१४	४६	१७	४८
कोष्ठ	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा. अं.	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३
क.	२५	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३
वि.	१९	५०	२१	५२	२३	५४	२५	५६	२७	५७	२८	५८	२९	५९	३०	६०	३१	६१
कोष्ठ	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा. अं.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
क.	२१	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
वि.	५४	२१	४७	१४	४०	७	३३	०	२६	५३	२०	४६	१३	३९	६	३२	४	३०
कोष्ठ	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा. अं.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
क.	१७	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
वि.	५७	२८	५९	३०	६१	३२	६३	३४	६४	३५	६५	३६	६६	३७	६७	३८	६८	३९

भौम शेष कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७
क.	०	३१	२	३५	५	३०	८	४०	११	४२	१४	४५	१७	४८	२०
वि.	०	२७	५३	२०	४६	१३	३९	६	३२	५९	२५	५२	१८	४५	१९
कोष्ठक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	७	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५
क.	५१	२३	५४	२५	५७	२८	०	३१	३	३४	६	३७	८	४०	११
वि.	३८	४	३०	५७	२४	५०	१७	४३	१०	३६	३	२९	५५	२२	४९
कोष्ठक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२
क.	४३	१४	४६	१७	४९	२०	५१	२३	५४	२६	५७	२९	०	३२	३
वि.	२६	४२	९	३५	२	२८	५४	२१	४८	१४	४१	७	३४	०	२७
कोष्ठक	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	०	०
क.	३४	६	३७	९	४०	१२	४३	१४	४६	१७	४९	२०	५२	२५	५५
वि.	५३	२०	४६	१३	३९	६	३२	५८	२५	५२	१८	४५	१२	३८	५

बुध लब्धि कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	६	०	६	०	७	१	७	१	७	२	८	२	८	१	३	१	१
अं.	०	६	१२	१९	२५	२	८	१४	२१	२७	४	१०	१६	२३	२९	६	१२	१८
क.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३७	१	२५	४९	१३	३७	२	२६	५०
वि.	०	८	१६	२४	३२	४१	४८	५६	४	१३	२१	२९	३७	४५	५४	९	१०	१८
कोष्ठक	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	३	१०	४	१०	४	१०	५	११	५	११	५	०	६	०	६	१	७	१
अं.	२५	१	८	१४	२०	२७	३	१०	१६	२२	२९	५	१२	१८	२४	१	७	१४
क.	१४	३८	२	२६	५०	१५	३९	२	२७	५१	१५	३९	४	२८	५२	१६	४०	४
वि.	२६	३४	४२	५०	५८	७	१४	२३	३१	३९	४७	५५	४	११	२०	२८	३६	४४

बुधलक्षिकोष्क.

कोष्क.	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	७	१	८	२	८	२	८	२	०	३	९	४	१०	४	२०	४	११	५
अं.	२०	२६	३	९	१६	२२	२८	५	१९	१८	२४	०	७	२३	२०	२६	२	९
क.	१८	२३	१७	४१	५	२९	५३	१७	४१	६	२०	५४	१८	५२	६	३०	५५	१९
वि.	५२	०	८	१६	२४	३२	४१	४९	५७	५०	१३	२१	२९	३७	४६	५४	०	१०
को.	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	१२	५	११	६	०	६	०	७	१	७	१	७	२	८	२	८	२	९
अं.	१५	२१	२८	४	११	१७	२४	०	६	११	१९	२६	२	८	१५	२१	२८	४
क.	४३	७	३१	३५	१९	४३	८	३२	५६	२०	४४	८	३२	५७	२१	४५	९	३३
वि.	१८	२७	२४	४२	५१	५९	७	१५	३३	२२	४०	४८	५६	४	१२	२०	२८	३६

बुधशेषकोष्क.

कोष्क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१
अं.	०	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२७	२	४	७	१०	१३
क.	०	६	१२	१९	२५	३१	३८	४४	५१	५७	४	१०	१६	२१	२६
वि.	०	२४	४८	२	३६	१	२५	४९	१३	३७	१	२५	५०	१४	३८
कोष्क.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३
अं.	१६	१९	२२	२५	२९	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२६	०
क.	१६	४२	४८	५५	१	८	१४	२०	२७	३३	४०	४६	५३	५९	५
वि.	२	२६	५०	१४	३९	३	२७	५१	१५	३९	३	२८	५२	२६	४०
कोष्क.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा.	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४
अं.	३	६	९	१२	१५	१८	२१	२४	२८	१	४	७	१०	१३	१६
क.	१०	१८	२७	३६	४५	५०	५६	६३	६९	३	९	१६	२३	३०	३७
वि.	४	२८	५२	२६	४२	५	२९	५३	१७	४१	५	३०	५४	१८	४२
कोष्क.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा.	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६
अं.	१०	२२	२६	२९	२	५	८	११	१४	१७	२०	२३	२७	०	३
क.	४८	५४	०	७	१३	२०	२६	३२	३९	४५	५२	५८	४	११	१७
वि.	६	२०	५४	१८	४३	७	३१	५५	१९	४३	७	३१	५६	१९	४४

गुरु लब्धि कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	०	०	०	०	०	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
अं.	०	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४
क.	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४	४३
वि.	०	९	१७	२६	३५	४३	५१	०	९	१८	२७	३६	४५	५४	०	९	१७	२६
कोष्ठक	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
अं.	२९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४
क.	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७
वि.	३४	४३	५२	०	९	१७	२६	३५	४३	५२	०	९	१७	२६	३५	४३	५२	०
कोष्ठक	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७	७
अं.	२९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४
क.	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२
वि.	९	१७	२६	३५	४३	५२	०	९	१७	२६	३५	४३	५२	०	९	१७	२६	३५
कोष्ठक	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
अं.	२९	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४
क.	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	५	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६
वि.	४३	५२	६१	७०	७९	८८	९७	०	९	१७	२६	३५	४३	५२	०	९	१७	२६

गुरु शेष कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क.	०	४	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	६४	६९
वि.	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६
कोष्ठक	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
क.	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	६४	६९	७४	७९	८४
वि.	४७	४६	४५	४४	४३	४२	४१	४०	३९	३८	३७	३६	३५	३४	३३

शनिलब्धि कोष्ठक.

कोष्ठक	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३
अं.	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६
क.	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	२०	२०
वि.	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५६	२०	४३	६	२८	५१	१३	३६	५	२३

कोष्ठक	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
अं.	१८	२०	२२	२४	२६	२८	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२
क.	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२५	२६	२६	२६	२६	२७
वि.	४६	९	३२	५५	१८	४१	६	२७	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८

शनि शेष कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क.	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८
वि.	०	०	१	१	२	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५

कोष्ठक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
क.	३०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
वि.	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११

कोष्ठक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
क.	०	१	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८
वि.	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१७	१७	१७

कोष्ठक	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
क.	१०	३२	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८
वि.	१७	१८	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२२

गुरु शेष कोष्ठक.

कोष्ठक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३
क.	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	६	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९
वि.	३५	३३	३२	३२	३१	३०	२९	२९	२७	२७	२६	२५	२५	२३	२२
कोष्ठक	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
क.	४४	४९	५४	५९	६	९	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४
वि.	२१	२१	२०	१८	१८	१७	१६	१५	१५	१४	१३	१२	११	१०	९

शुक्र लब्धि कोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
राशि	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
अं.	०	६	१३	२०	२७	३४	४१	४८	५५	६२	६९	७६	८३	९०	९७	१०४	१११	११८
क.	५९	५९	५९	५९	५८	५८	५८	५७	५७	५६	५६	५६	५५	५५	५५	५४	५४	५४
वि.	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४०	२०	०	४१	२०	०	४१	२०	०	४१	२१
कोष्ठक	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	१०	११	०	१	३	४	५	६	८	९	१०	११	०	२	३	४	५	७
अं.	५	१२	२२	२६	३	१०	१७	२४	३	८	१५	२२	२९	६	१३	२०	२७	३
क.	५४	५३	५३	५३	५२	५२	५२	५१	५१	५१	५०	५०	५०	४९	४९	४९	४८	४८
वि.	१	४१	२२	२	४९	२२	३	४३	२३	३	४३	२३	३	४३	२३	४	४४	२४
कोष्ठक	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
रा.	८	९	१०	०	१	२	३	५	६	७	८	९	१०	०	१	२	४	५
अं.	२१	१८	२५	२	९	१६	२३	०	७	१४	२१	२८	५	१२	१९	२६	३	१०
क.	४८	४७	४७	४७	४६	४६	४६	४५	४५	४५	४४	४४	४४	४३	४३	४३	४२	४२
वि.	४	४४	२५	४	४४	२४	५	४५	२५	५	४५	२५	५	४५	२५	६	४६	२६
कोष्ठक	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१
रा.	६	७	९	१०	११	०	१	३	४	५	६	८	९	१०	११	१	२	३
अं.	१७	२४	१	८	१५	२२	२९	६	१३	२०	२७	३४	४	११	१८	२५	३	१०
क.	४२	४१	४१	४१	४०	४०	४०	३९	३९	३९	३८	३८	३८	३७	३७	३७	३६	३६
वि.	६	४६	२६	६	४६	२६	७	४७	२७	७	४७	२७	७	४७	२७	७	४७	२७

शुक्र शेषकोष्ठक.

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
अं.	०	०	१	१	२	३	३	४	४	५	६	६	७	८	८	
क.	०	३६	३३	५०	२७	४	४०	२८	५५	३२	९	४६	२३	०	३७	
वि.	०	५९	५९	५९	५८	५८	५८	५८	५७	५७	५७	५६	५६	५६	५५	
कोष्ठक	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
अं.	१	१	२०	१९	१९	१२	१२	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१७	१७	
क.	१४	५३	२८	५	४७	२७	५६	३३	२०	४८	२४	१	३८	१५	५२	
वि.	५५	५५	५४	५४	५३	५३	५३	५३	५२	५२	५२	५१	५१	५१	५०	
कोष्ठक	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
अं.	२८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२७	
क.	२९	६	४३	२०	५७	३४	११	४८	५०	२	३९	२६	५३	३०	७	
वि.	५०	५०	४९	४९	४९	४८	४८	४८	४७	४७	४६	४६	४६	४६	४५	
कोष्ठक	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	
रा.	०	०	०	०	१	१	२	२	२	२	२	१	१	१	१	
अं.	२७	२८	२८	२९	०	०	१	२	२	२	३	४	५	५	६	
क.	४४	२३	५८	३५	१३	४९	२६	३	४०	१७	५४	३१	८	४५	२२	
वि.	४५	४५	४४	४४	४४	४३	४३	४३	४२	४२	४२	४१	४१	४१	४०	

शनि लब्धि कोष्ठक

कोष्ठक	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
रा.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
अं.	०	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४
क.	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	४	५	५	६	६
वि.	०	२३	४६	६	१२	५५	१८	४१	५	२७	५७	१४	३६	५९	२३	४६	९	३२
कोष्ठक	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५
रा.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२
अं.	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०	२२	२४	२६	२८	३०	३२	३४	३६	३८	४०
क.	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१३	१३
वि.	१५	२८	४१	४	२८	५१	१४	३७	०	२३	४६	९	३२	५५	१८	४२	५	२८

द्विपंचाशदवधिस्योमध्यमोरविः

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३
११	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	३
२०	४	११	१८	२५	३	९	१६	२३	२९	६	१३	२०
५१	४५	४०	३४	२८	२२	१६	१०	४	५	५	४	४
२०	५८	०	१५	२२	३०	४०	३६	३६	३४	३१	२६	१०
२४	१५	१६	१७	१८	२९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६
२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५
२०	४	११	१८	२५	३	८	१५	२२	२९	६	१३	२०
३४	२७	२३	१५	९	३	५७	५०	४४	३८	३२	२६	२०
३	५५	४८	३५	२२	१४	४	५४	४३	३४	२३	१४	५
२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८
२७	४	११	१७	२४	१	८	१५	२२	२९	६	१३	१९
५३	७	१	५४	४७	४२	३६	३०	२३	१७	११	५	५
५१	४०	२५	१०	५६	३९	२१	५	५१	३४	१७	५	५
४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२
८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११
२६	३	१०	१७	२४	१	८	१५	२२	२८	५	१२	१९
५३	४६	४०	३४	२८	२३	१७	११	५	५	५	४	४
०	४४	४२	४६	५३	०	५	४१	३६	५३	१०	२७	४५

मन्दफलं सूर्यस्यद्विपंचाशदवधौ.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७
२	२	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	१
५०	५	५९	५३	४३	३३	२२	१	५०	४१	३५	२०	६	२१	३६	५१	५
५०	२२	४६	३६	४०	२५	३	२८	३४	०	४५	३५	१५	५०	५३	४८	५५
१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४
१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	१	१	१	१	१
१०	३०	५१	५०	५८	४	८	१०	१०	९	५	०	५३	४४	३४	२३	१०
५५	५८	२१	२८	११	०	७	१८	३८	५	३७	२०	२३	४३	३४	७	२९
३५	३६	३७	३६	३८	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१
०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	०	२	२
५६	४२	३७	११	५५	२०	३५	५०	४	१७	२९	४०	५९	५७	३	७	१०
१३	२०	१०	२९	३४	३७	५३	४०	३८	४८	५५	२९	४७	३४	३२	४८	४१

चन्द्रचक्रनिघं ध्रुवीनक्षेपकाः

चक्र.	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
क्षेपक	१० २६ २८ ५४	१० २२ ४२ ४३	१० २८ ५६ ३२	१० २५ १० २१	१० २१ ३७ २०	१० ७ ३७ ५२	१० ३ ५२ ४०	१० ० ५ ३७	१० २६ १९ २६	१० २२ ३३ १५	१० १८ ४७ ४	१० १५ ० ५३	१० १२ १४ ४२	१० ७ २८ ३२	१० ३ ४२ २०	१० २९ ५६ ९
चक्र	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
क्षेपक	८ २६ ९ ५८	८ २२ २३ ४७	८ १८ ३७ ३६	८ २८ ५१ २५	८ ११ ५ १४	८ ७ १९ ३	८ ८ ३३ ५२	८ ७ २९ ४२	८ ७ २६ ३०	८ ७ २२ १९	८ ७ १८ ८	८ ७ १४ ५७	८ ७ १० ४६	८ ७ ७ ३५	८ ७ ३ ३४	८ ६ २३ ३४
चक्र	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
क्षेपक	६ १५ ५१ १	६ २२ ४ ५३	६ १८ १८ ४०	६ १४ २३ २९	६ १० ५६ १८	६ ७ ० ७	६ ३ १३ ५६	५ २९ १७ ४५	५ २५ ४३ ३४	५ २२ ५५ २३	५ १८ १ १२	५ १४ २९ १	५ १० ३९ ५०	५ ६ ५० ३९	५ ३ ४ २८	५ २९ १८ १८
चक्र	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
क्षेपक	४ २५ ३२ ७	४ २१ ४४ ५७	४ १७ ५८ ४६	४ १४ १२ ३५	४ १० २६ २४	४ ६ ४० १४	४ ३ ५४ ३	३ २९ ७ ५२	३ २५ ३५ ४१	३ २१ ४९ ३०	३ १७ ४९ १९	३ १४ ३ ५७	३ १० १६ ४६	३ ६ ३० ४६	३ ३ ४४ ३५	३ २८ ५८ २४

उच्चचक्रनिघं ध्रुवीनक्षेपकाः

चक्र	०	१	७	०	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०
क्षेपक	० ० ० ०	११ १ ३ ०	१ २८ १८ ०	४ २५ ३३ ०	७ २२ ४८ ०	१० २० ३ ०	१७ १८ १८ ०	१४ १९ ३३ ०	७ १९ ४८ ०	१० ९ ३ ०	६ ६ ३३ ०	७ ३ ४८ ०	७ ० ४८ ०	९ २८ ३ ०	० २५ १८ ८	३ २२ ३३ ०
चक्र	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६
क्षेपक	६ १९ ४८ ०	९ १७ ३ ९	० १६ १८ ०	३ ११ ३३ ०	६ ८ ४८ ०	९ ६ ३ ०	० ३ १८ ०	३ ० ३३ ०	५ २७ ४८ ०	८ २५ ३ ०	११ २२ १८ ०	२ १९ ३३ ०	५ १६ ४८ ०	८ १४ ३ ०	११ ११ १८ ०	२ ८ ३३ ०

भौमचक्रनिघ्नं ध्रुवीनक्षेपकः

चक्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	
क्षेपक	११ ३ ५६ ०	९ ० २४ ०	७ १२ १२ ०	५ १७ २० ०	३ २१ ४० ०	१ २६ १६ ०	० ० ४४ ०	१० ५ १२ ०	८ ९ ४० ०	६ १४ ८ ०	४ १० ३६ ०	२ २३ ४ ०	० ५७ ३२ ०	११ ५ ३२ ०	९ ६ ० ०	७ १० २८ ०	७ १० ५६ ०
चक्र	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	
क्षेपक	५ १५ २४ ०	३ १९ ५२ ०	९ २४ २० ०	११ ३० १६ ०	१० ३ १६ ०	८ ७ ४४ ०	६ १२ ४४ ०	५ १६ ४० ०	२ २१ ८ ०	० २५ ३६ ०	११ ० ४ ०	९ ७ ३२ ०	७ ९ ० ०	५ १३ २० ०	३ १७ ५६ ०	१ २३ २४ ०	
चक्र	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	
क्षेपक	११ २६ ५२ ०	१० १ २० ०	८ ५ २० ०	६ १० १६ ०	५ १४ ४४ ०	२ १९ १२ ०	० २३ ४० ०	१० २ ८ ०	९ ७ ३६ ०	७ ७ ४४ ०	५ ११ ३२ ०	३ १६ ० ०	१ २० २० ०	११ २४ ५६ ०	९ २६ २४ ०	८ ३ ५२ ०	
चक्र	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	
क्षेपक	६ ८ २० ०	४ १२ ४० ०	२ १७ १६ ०	० २१ ४४ ०	१० २६ १२ ०	९ ० ४० ०	७ ५ ८ ०	५ १४ ३६ ०	३ १८ ४ ०	१ २३ ० ०	११ २० २० ०	९ २७ ५६ ०	८ ३ २४ ०	६ १० ५६ ०	४ १० ५२ ०	३ १५ २० ०	

बुधचक्रनिघ्नं ध्रुवीनक्षेपकः

चक्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
क्षेपक	८ ८ ११ ०	४ ५ १४ ०	० १ ५७ ०	७ २० ३० ०	३ २५ ३ ०	११ २१ ३६ ०	७ १० ९ ०	३ २४ ४२ ०	११ ११ १५ ०	७ ७ ४० ०	३ ११ २१ ०	११ ० ५४ ०	६ २७ २७ ०	२ २४ ० ०	१० १० ३३ ०	६ १७ ६ ०
चक्र	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
क्षेपक	२ १३ २९ ०	१० १० १९ ०	६ ६ ४५ ०	३ ३ १८ ०	९ २६ ५१ ०	६ २६ २४ ०	१ २२ ५७ ०	९ १९ ३७ ०	५ ११ ३ ०	१ १२ ९ ०	९ ५ १२ ०	५ २ ४२ ०	१ २ १५ ०	८ २० ४० ०	४ २५ २१ ०	० २१ ५४ ०

(१४८)

दैवज्ञ विनोद-

बुधचक्र निम्नं ध्रुवीनक्षेपकः

चक्र	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	
क्षेपक	८ १८ २७ ०	४ १५ ० ०	० ११ ३३ ०	८ ४ ६ ०	४ १ ३९ ०	० १ १२ ०	७ २७ ४५ ०	३ २४ १८ ०	१९ २० ५१ ०	७ १७ २४ ०	३ १३ ५७ ०	९ १० ३ ०	७ ७ ३ ०	३ ३ ३६ ०	३ ३ ३६ ०	१९ ० ९ ०	६ २६ ४२ ०
चक्र	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	
क्षेपक	२ २३ १५ ०	१० १९ ४८ ०	६ १६ ३९ ०	२ १२ ५४ ०	१० ९ १७ ०	६ ६ ० ०	२ २ ३३ ०	९ २९ ६ ०	५ २५ ३९ ०	१ २२ १२ ०	९ १८ ५५ ०	३ १५ १८ ०	१ १९ ३९ ०	९ ८ २४ ०	५ ४ ५७ ०	१ १ ३० ०	

गुरुचक्र निम्नं ध्रुवीनक्षेपकः

चक्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	
क्षेपक	१ २४ २८ ०	० २८ १० ०	० १ ५३ ०	१९ ५ १६ ०	१० ९ ५८ ०	९ १७ ४४ ०	८ २७ ४४ ०	७ २० २२ ०	६ २५ ३४ ०	५ १९ १६ ०	४ २३ १६ ०	३ १ ४८ ०	३ ५ २० ०	२ ८ १० ०	२ १२ ३४ ०	१ १६ २६ ०	० २९ ४८ ०
चक्र	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	
क्षेपक	१० २३ ४० ०	१० २७ २२ ०	१० १ ४ ०	९ ४ ४६ ०	८ ८ २८ ०	७ २२ १० ०	६ १५ ५३ ०	५ १९ ३४ ०	४ २३ १६ ०	३ २६ ५८ ०	३ ० ४० ०	२ ४ २२ ०	२ ८ ४ ०	१ ८ ४६ ०	० १९ २८ ०	१९ २५ २० ०	
चक्र	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	
क्षेपक	९ २२ ५२ ०	८ २६ ३४ ०	८ ० १६ ०	७ ३ ५८ ०	६ ७ ४० ०	५ १९ १२ ०	४ १५ ४ ०	३ १८ ४६ ०	२ २२ २८ ०	१ २६ १० ०	० २९ ५२ ०	० ३ ३४ ०	० ७ १६ ०	० १० २६ ०	९ १४ ५८ ०	८ १४ ४० ०	
चक्र	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	
क्षेपक	७ २ ४ ०	६ २५ ४६ ०	६ २९ २८ ०	५ ३ १० ०	४ ६ ५२ ०	३ १० ३४ ०	२ १४ १६ ०	१ १७ ५८ ०	० २२ ४० ०	१ २५ २२ ०	१ २९ ४ ०	१ ३ ४६ ०	८ ६ २८ ०	८ १० १० ०	७ १३ ५२ ०	६ १७ ३४ ०	

शुक्र चक्र निघ्नं ध्रुवो नक्षत्रकः

चक्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
क्षेपक	१० २५ ५७ ०	९ ११ ४५ ०	७ २७ ५३ ०	६ १३ ५१ ०	४ २९ ५९ ०	३ २५ ५७ ०	२ २१ ५५ ०	० १७ ५३ ०	११ ३ ५१ ०	९ २९ ३९ ०	८ ५ १७ ०	६ २१ ३५ ०	५ १७ ३३ ०	३ २३ ३९ ०	२ १९ ३९ ०	० २५ २७ ०
चक्र	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
क्षेपक	११ ११ २५ ०	९ २७ २३ ०	८ २३ २९ ०	६ २९ १९ ०	५ २५ १७ ०	४ २१ १५ ०	२ १७ १३ ०	१ १३ ११ ०	११ ९ ७ ०	१० ५ ७ ०	८ २९ ५ ०	७ २५ ३ ०	५ २१ ५९ ०	४ १७ ५७ ०	२ २३ ५७ ०	१ १९ ५५ ०
चक्र	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
क्षेपक	११ २६ ५३ ०	१० १२ ५३ ०	८ २८ ४९ ०	७ २४ ४८ ०	६ २० ४५ ०	५ १६ ४३ ०	३ १२ ४१ ०	२ १८ ३९ ०	० १४ ३७ ०	१० ९ ३५ ०	९ ६ ३३ ०	७ २३ ३१ ०	६ १९ २९ ०	५ १७ २७ ०	३ २३ २५ ०	१ १९ २३ ०
चक्र	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
क्षेपक	० २२ २९ ०	१० २८ १९ ०	९ २४ १७ ०	८ २० १५ ०	६ १६ १३ ०	५ १२ ११ ०	३ १८ ० ०	२ १४ ७ ०	० १० ५ ०	११ २६ ३ ०	९ २२ १ ०	८ १८ ५९ ०	६ २४ ५७ ०	५ २० ५५ ०	३ २६ ५३ ०	२ २२ ५१ ०

शनि चक्र निघ्नं ध्रुवो नक्षत्रकः

चक्र	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१
क्षेपक	० ११ ९ ०	४ २५ २७ ०	९ ९ ४५ ०	१ २४ ३ ०	६ २० २९ ०	२ २२ ३९ ०	३ १८ ५७ ०	७ २१ १५ ०	० १७ ३३ ०	४ १० ५१ ०	९ ४ ९ ०	१ १८ ७ ०	६ १५ ५५ ०	२ १७ ३ ०	१ २९ ३ ०	७ २५ ३९ ०
चक्र	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
क्षेपक	११ २९ ५७ ०	४ १४ १५ ०	८ १५ ३३ ०	१ १२ ५१ ०	५ १७ ९ ०	१० १९ २७ ०	७ १५ ४५ ०	७ १० ३० ०	११ २६ २९ ०	४ १८ ३९ ०	८ १४ ५७ ०	१ १८ १५ ०	५ १५ ३३ ०	१० १९ ५१ ०	२ २० ९ ०	४ २७ ३७ ०

शनि चक्रनिघ्नघुवोनक्षेपकः

चक्र.	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३
क्षेपक.	११	४	८	१	५	१०	२	६	११	३	८	०	५	९	२	६
	१८	३	१७	१	१५	०	१४	२८	१३	२७	१२	२६	१०	२४	९	२३
	४५	३	२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२०	४५	३	२१	३९	५७	१५
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
चक्र.	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
क्षेपक.	११	३	८	०	५	९	२	६	११	१	८	०	५	९	१	६
	७	२२	६	२०	४	१९	३	१७	१	१६	०	१४	२९	१३	२७	१२
	१३	५१	९	२७	४५	३	२१	३९	५७	१५	३३	५१	९	२७	४५	३
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

सूर्य तत्काल मध्यम घटी पल सारिणी.

कोष्.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी.	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४५
पल.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
कोष्.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
घटी.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
	४७	४६	४६	४५	४३	४२	४१	४०	४०	३९	३९	३७	३६	३५	३४	३३
पल.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
चक्र.	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
घटी.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६
	३३	३२	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९
पल.	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
कोष्.	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०
घटी.	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	०	०	०
	१८	१७	१६	१५	१४	१३	१२	११	१०	९	८	७	६	०	०	०
पल.	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०

॥ इष्ट घटीपल के तुल्य सारिणीके घटी पल जोड़ने से गाल्कालिक मध्यम ग्रह होते हैं ॥

तत्कालचन्द्रमध्यमकरणघटीपल.

कोष्ठ.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
अंशादि	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	२	२	२	३	३
	०	१३	२६	३९	५२	५	१९	२	४५	५८	११	२४	३८	५१	४	१७
	०	१०	२१	३२	४२	५२	३	१४	२४	३४	४५	५५	६	१६	२७	३५
वस्थादि	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३
	०	१३	२६	३९	५२	५	१९	२२	४५	५८	१५	२४	३८	५१	४४	१७
को.		१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घटी.		३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६	६
		३०	४४	५७	१०	२३	३६	४९	३	१६	२९	४२	५५	८	२१	३७
		४८	५८	९	२२	३१	४१	५२	२	४२	१३	२४	३५	५५	६	१७
पल		३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६	६
		३०	४३	५७	१०	२३	३६	४९	३	१६	२९	४२	५५	८	२२	३५
कोष्ठ.		३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
घटी.		६	७	७	७	७	७	८	८	८	९	९	९	९	९	९
		४८	१	१४	२७	४१	५४	७	२०	३३	४७	०	१३	२६	३९	५२
		२७	३८	४८	५९	९	२०	३२	४१	५२	३	१३	२४	३४	४५	५५
पल.		६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९
		४८	२	१४	२७	४१	५४	७	२०	३३	४७	०	२४	३६	४९	५२
कोष्ठ.		४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी.		१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३
		६	१९	३२	४५	५८	११	२५	३८	५१	४	१७	३१	४४	५७	१०
		६	१६	२७	३८	४९	५९	१०	२२	३२	४७	५९	९	१२	२३	३५
पल.		१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३
		६	१९	३२	४५	५८	११	२५	३८	५१	४	१७	३१	४४	५७	१०

तत्कालउच्चकरणमेंघटीपलयुक्तकरना.

कोष्ठक	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१
	६	१३	२०	२६	३३	४०	४६	५३	०	७	१३	२०	२६	३३	४०

तत्कालराहु घटी पल हीन करना.

कोष्क.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३
	२६	२९	३३	३६	३९	४२	४५	४८	५२	५५	५८	१	४	७	११
पल	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३

तत्कालभौम घटी पल युक्त करना.

कोष्क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी.	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७	७
	३१	२	३४	३५	३६	८	३९	४१	४०	४५	४५	४७	४८	४९	५१
पल.	०	१	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	६	६	७

कोष्क.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
घटी.	८	८	९	९	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५
	२२	५४	२५	५६	२८	०	३१	२	२०	५	३६	८	२९	२०	४३
पल.	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५

कोष्क	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५
घटी	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२२	२२	२३	२३
	४०	४५	१७	४८	१९	५३	२२	५३	२५	५७	२९	०	३१	२	३४
पल.	१५	१६	१९	१७	१७	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२

कोष्क	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०
घटी.	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	३०	३०	३१
	५	३६	८	३९	११	४३	२४	४५	१७	४८	१९	५३	२२	५५	२६
पल.	२४	२४	२५	२५	२६	२६	२७	२७	२८	२८	२९	२९	३०	३०	३१

तत्कालबुध घटी पल युक्त करना.

कोष्क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घटी.	३	६	९	२५	१५	१८	२१	२४	२७	३१	३४	३७	४०	४३	४६
	६	१२	१९	२५	३१	३८	४४	५०	५७	८	१०	१७	२५	३३	३६
पल.	३	६	९	१९	१५	१८	२१	२४	२७	३०	३३	३६	३९	४२	४५

स्यष्ट सूर्य सारिणी.

कोष्क	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	
अं.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	
घ.	३०	४०	४२	४५	४७	४९	५१	५३	५५	५७	५९	१	३	५	७	९	११	१३	१५	
प.	३५	४५	५५	३	११	१८	२४	२८	३२	३५	३७	३७	३७	३७	३५	३२	२८	२३	१६	८
गुण.	१३	१३	३२	३२	२१	२१	३१	३१	४२	२	२	२	५९	३९	२९	१९	१९	२८	११	
हर.	६	६	१५	१५	२०	२०	२५	२५	२०	१	१	१	३०	२०	१५	१०	२०	१५	६	
सा.सू.च.	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	
चरपल.	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५१	५२	५४	५६	५८	६०	६२	६३	६५	६६	
गु.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	१६	१६	१६	१६	१६	
ह.	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	१५	१५	१५	१५	१५	
भु.भा.	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	
म.फ.	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
ध.क्र.	४	३	२	१	०	५९	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४८	४७	४६	४५	
म.ग.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	
	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	
कोष्क	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	
अं.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
घ.	१६	१८	२०	२२	२४	२५	२७	२९	३०	३२	३४	३५	३७	३८	४०	४१	४२	४४	४५	
प.	५८	४७	३५	२२	७	५२	३२	१२	५१	२८	३	३७	९	३९	८	३४	५९	२२	४५	
गुणक.	१२	९	९	७	७	५	५	३३	८	१९	४७	२३	३	३	७	७	७	७	१३	
हरक.	६	५	५	४	४	३	३	२०	५	१२	३०	१५	२	२	५	५	५	५	१०	
सा.सू.च.	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	
चरपल.	६८	७०	७३	७४	७६	७७	७९	८१	८२	८४	८६	८७	८९	९१	९२	९४	९६	९७	९९	
गुणक.	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	
हरक.	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१५	
भु.भा.	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	
ग.फ.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
ध.क्र.	४३	४२	४१	३८	३८	३७	३५	३४	३२	३१	२९	२८	२६	२५	२३	२२	२०	१८	१६	
म.ग.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	
	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	

(१५८)

देवज्ञविनोद -
स्यष्टसूर्यसारिणी.

कोष्ठीक	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	
अं.	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
घ.	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६
प.	२	२२	३६	४९	१	१३	१८	२४	३६	३९	२७	२४	१९	११	१	४९	३५	१९	०	
गुणक.	४	५	५	५	७	७	११	११	१	१	११	११	२	५	४	३	३	२	२	
हरक.	३	४	४	६	६	६	१०	१०	२	१	१२	१२	१०	६	५	४	४	३	३	
सा.सू.न.	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	
चरपल.	१०१	१०२	१०३	१०४	१०६	१०७	१०९	१११	११०	११४	११५	११६	११७	११८	११९	१२०	१२१	१२२	१२३	
गुणक.	१६	१६	१६	१६	१६	१६	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	
हरक.	१५	१५	१५	१५	१५	१५	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	
सु.भा.	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	
ग.फ.	१	१	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
घ.रू.	१५	१३	११	९	७	६	४	२	०	५८	५६	५४	५२	५०	४८	४६	४४	४२	४०	
म.ग.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	
कोष्ठीक	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३
अं.	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२
घ.	५	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०	१०
प.	४०	३६	५०	२३	५३	२०	४५	८	२८	४६	१	१५	२५	३४	४०	४३	४५	३	८	८
गुणक.	३	७	८	१	१	५	५	१	३	१	१	१	१	१	१	१	०	४	१०	९
हरक.	५	१२	१५	२	९	१२	१२	३	१०	४	५	६	६	१०	१०	३०	१	५	११	११
सा.सू.न.	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३
सा.ब.	१६	१६	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६	१६
गुणक.	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
हरक.	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९	९
सु.भा.	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	९२	९३
ग.फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.रू.	३८	३५	३३	३१	३०	२९	२८	२७	२६	२५	२४	२३	२२	२१	२०	१९	१८	१७	१६	१५
म.ग.	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९	५९

चन्द्रविफल संस्कार सारिणी में सायनसूर्यके दिनों के तुल्य राशि सूत्र के कोष्ठीक में, विफल ग्रह्यादि लेके सारिणी में धन कृपा लिखाहो जैसेही मध्यमचन्द्रमा में धन कृपा कर देना चाहिये ॥

(१६२)

देवज्ञ विनोद-

भौमशीघ्रफल सारिणी.

घ.	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५
१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२
६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२
२१	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
१२	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८
४५	९	३२	५५	१८	४१	६	१८	५२	१४	३७	९	२४	४७	१०	३३	५७
५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०						
१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	०	०	०	०	०	०
२०	४३	६	२९	५३	१६	३९	२	२५	४९	१२	०	०	०	०	०	०
अं.को	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.प.
फ	५	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	४३
	४८	११	३५	५८	२२	४६	९	३३	५६	२०	४४	७	३१	५४	१८	१४
	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ.	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५
	०	२३	४७	११	३४	५८	२१	४५	८	३२	५६	१८	४३	७	३०	५४
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
	६	६	७	७	८	८	९	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२
	१७	४१	६	२८	५३	१५	३९	३	२६	५०	१३	३७	९	२४	४८	१९
	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१८
	२५	५९	१२	४६	९	३२	५७	१०	४४	७	२२	५५	१८	४२	५	२९
	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	०	०	०
	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२३	०	०	०
	४३	६६	४०	३	२७	५०	१४	३८	९	२५	४९	१२	३६	०	०	०

घ. घ.
२३
३६

अष्टादश विनोदः १८
 भौम शीघ्रफल सारिणी.



अ.को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.घ.
क.	२२ ४२ ०	२३ ४ ४८	२४ २७ २६	२५ ५० २४	२६ २३ १२	२७ ३६ ०	२८ ५८ ४८	२९ २१ ३६	३० ४४ २४	३१ ७ १२	३२ ३० ०	३३ ५२ ४८	३४ १५ ३६	३५ ३८ ३४	३६ १ १२	४७ ५० ५०
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५
घ.	० ०	० २३	० ४६	१ ८	१ २२	१ ५४	२ १७	२ ४०	३ २	३ २५	३ ४८	४ २०	४ ३४	५ ५६	५ १९	५ ४२
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१
	६ ५	६ २८	६ ५०	७ १३	७ ३६	७ ५९	८ २२	८ ४४	९ ७	९ ३०	९ ५३	१० २६	१० ३८	११ १	११ २४	११ ४७
	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७
	१२ १०	१३ ३२	१४ ५५	१५ १८	१६ ४१	१७ ४	१८ २६	१९ ४९	२० १२	२१ ३५	२२ ५८	२३ २०	२४ ४३	२५ ६	२६ २९	२७ ५२
	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	०
	१८ १४	१८ ३६	१९ ०	१९ २३	१९ ४६	२० १८	२० ३१	२० ५४	२१ १७	२१ ४०	२२ २	२२ ५	२२ ४८	०	०	०
अं.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.घ.
क.	२७ २४ ०	२८ ४५ ३६	२९ ७ १२	३० २८ ४८	३१ ५० २४	३२ १२ ०	३३ ३३ ३६	३४ ५५ १२	३५ २६ ४८	३६ २९ २४	३७ ० ०	३८ २९ ३६	३९ ४३ २२	४० ६ ४८	४१ २६ ४८	४२ १४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० २२	० ४५	१ ६	१ २९	१ ५२	२ १०	२ ३३	२ ५६	३ १७	३ ४०	३ २	४ २९	४ ५२	५ १०	५ ३३	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	५ ४६	६ ७	६ २९	६ ५०	७ १२	७ ३५	७ ५८	८ १७	८ ३८	९ ०	९ २३	९ ४६	१० ५	१० २९	१० ४८	
	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	१२ १०	१३ ३२	१४ ५३	१५ १४	१६ ३६	१७ ५८	१८ १२	१९ ३५	२० ५८	२१ २	२२ २५	२३ ४८	२४ ७	२५ २२	२६ ५०	२७ १२
	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०			
	१६ २८	१६ ५५	१७ १७	१७ ३६	१८ ०	१८ २३	१८ ४६	१९ १७	१९ ४०	१९ २	२० ५	२० २९	२० ४८	२१ १४	२१ ३६	

गु.घ.
२२
४८

गु.घ.
२२
३६

चन्द्रस्यष्ट सारिणी.

मु.भा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१
गुणक.	१६	१६	१६	१६	२१	२१	२१	२१	२२	२६	२६	३१	३१	५१	५१	५	५	५	५
हरक.	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	६	६	१०	१०	१	१	१	१
ग. फ.	६०	६०	६७	६७	६७	६६	६६	६५	६५	६५	६५	६४	६४	६४	६३	६३	६३	६२	६२
गुणक.	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२६	२७	२८
मु.भा.	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७
फ.	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३
ग.	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९
हरक.	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०	२०
ग. फ.	६१	६१	६०	६०	५९	५९	५८	५८	५७	५७	५६	५६	५५	५५	५४	५४	५३	५३	५२
गुणक.	२८	२७	२९	२९	२९	२९	२९	२९	३४	३४	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५	३५
मु.भा.	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६
फ.	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४
ग.	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९	४९
हरक.	१०	१	१	१२	६	५	५	१	२	२	२	२	३	५	५	६	३०	१	१२
ग. फ.	५०	५०	५९	५८	५८	५७	५६	५५	५४	५३	५२	५१	५०	४९	४८	४७	४६	४५	४४
गुणक.	४१	४२	४२	४३	४४	४५	४६	४६	४७	४८	४९	४९	५०	५१	५२	५२	५३	५३	५३

चन्द्रस्पष्टसारिणी.

सु.भा.	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५
फ.	४ १२ ३५	४ १५ २५	४ १८ १९	४ २० ५२	४ २३ २४	४ २६ ०	४ २८ २७	४ ३० १३	४ ३३ ६	४ ३५ १८	४ ३७ २५	४ ३९ २७	४ ४१ २४	४ ४३ १६	४ ४५ ३०	४ ४६ ४३	४ ४८ २०	४ ४९ ५०	४ ५१ ५५
गुणक	१७	११	८	११	५	५	७	९	११	१३	२	२	११	७	५	८	३	७	४
हरक.	६	४	३	५	२	२	३	४	५	६	१	१	६	४	१	५	२	५	३
ग.फ.	३५ ५८	३५ ४	३४ १३	३३ १५	३१ २९	३१ २०	३० २२	२९ २४	२८ २४	२७ २५	२६ २४	२५ २३	२४ २३	२३ २०	२२ १७	२१ ११	२० ६	१९ १	१७ १५
गुणक.	५४	५५	५५	५६	५७	५९	५९	६०	६०	६१	६२	६३	६३	६३	६६	६६	६६	६७	६७
सु.भा.	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	९१	०	०	०
फ.	४ ५२ ३६	४ ५३ ५०	४ ५४ ९	४ ५६ २	४ ५७ १	४ ५८ ४९	४ ५८ ४२	५	५	५	५	५	५	५	५	५	०	०	०
गुणक.	५	७	१	१	६	४	७	३	१	५	१	१	२	२१	०	०	०	०	०
हरक.	४	६	१	१	१०	५	१०	५	२	१२	३	४	१५	१	०	०	०	०	०
ग.फ.	१६ ४४	१५ ४	१४ ३२	१३ २५	१२ १५	९ ५२	८ ४	७	६	५	३	२	१	१	०	०	०	०	०
गुणक	६७	६८	६९	७०	७०	७०	७२	७३	७३	७४	७५	७६	७६	७७	७७	०	०	०	०

भौम शीघ्रफल सारिणी.

अं.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.फ.
फ.	०	०	०	१	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	४३
	०	२३	४६	९	३२	५६	९९	४२	५	२८	५२	१५	३८	१	२४	२
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	
क.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५

(१६४)

द्वैवज्ञ विनोद-

भौमशीघ्रफलसारिणी.

स.घ.
२०
२४

अं.को	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.घ.
फ.	२२ ४८ ०	२३ ८ २४	२३ २० ४८	२३ ४९ १२	२४ ९ ३६	२४ ३० ०	२४ ५० २४	२५ १० ४८	२५ ३२ १२	२५ ५१ २६	२६ १२ ०	२६ ३२ २४	२६ ५२ ४८	२७ १३ २२	२७ ३३ ३६	४१ ३८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० २०	० ४१	१ १	१ २२	१ ४२	२ २	२ २३	२ ४३	३ ४	३ २४	३ ४४	४ ५	४ २५	४ ४६	५ ६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	५ २६	५ ४७	६ ७	६ २४	६ ४८	७ ८	७ २९	७ ४६	८ १०	८ ३०	८ ५०	९ ११	९ ३१	९ ५२	१० १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१० ३२	१० ५३	११ १३	११ ३४	११ ५४	१२ १४	१२ ३५	१२ ५५	१३ १६	१३ ३६	१३ ५६	१४ १७	१४ ३७	१४ ५८	१५ १८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१५ ३६	१५ ५९	१६ १०	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४१	१८ १	१८ २०	१८ ४२	१९ २	१९ २३	१९ ४३	२० ४	२० २४	
अं.को	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.घ.
फ.	२७ ५४ ०	२८ १२ २४	२८ ३० ४८	२८ ५९ १२	२९ ७ ३६	२९ २६ ०	२९ ४४ २४	३० २ ४८	३० २१ ३६	३० ३९ ०	३० ५८ २४	३१ १६ ४८	३१ ३४ ४८	३१ ५३ १२	३२ ११ २६	४१ ३८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० १८	० ३७	० ५५	१ १४	१ ३२	१ ५०	२ ९	२ २७	२ ४६	३ ४	३ २२	३ ४३	४ ५९	४ १८	४ ३६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	४ ५४	५ १३	५ ३१	५ ५०	६ ८	६ २६	६ ४५	७ २	७ २२	७ ४०	७ ५८	८ १७	८ ३५	८ ५४	९ १३	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	९ २०	९ ४६	१० ७	१० २६	१० ४४	११ २	११ २१	११ ३१	१२ ५८	१२ १६	१२ ३५	१२ ५३	१३ ११	१३ २०	१३ ४८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१५ ७	१५ २५	१५ ४३	१५ २	१५ २०	१५ ३९	१५ ५७	१६ १५	१६ ३४	१६ ५२	१६ ११	१७ २९	१७ ४७	१८ ६	१८ २४	

स.घ.
१८
२४

भौमशीघ्रफल सारिणी.

अ.को	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	ग.घ	
फ.	३२ ३० ०	३२ ४५ ०	३३ २ ०	३३ १८ ०	३३ ३४ ०	३३ ५० ०	३४ ६ ०	३४ २२ ०	३४ ३८ ०	३४ ५४ ०	३५ १० ०	३५ २६ ०	३५ ४२ ०	३५ ५८ ०	३६ १४ ०	३६ २६	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
घ.	० १६	० ३२	० ४८	१ ४	१ २०	१ ३६	१ ५२	२ ८	२ २४	२ ४०	२ ५६	३ १२	३ २८	३ ४४	४ ०		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८		
	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	१२		
	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६		
	१६	३२	४८	४	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०		
अ.को	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९		
फ.	३६ ३० ०	३६ ४१ १२	३६ ५२ २४	३७ ३ ३६	३७ १४ ४८	३७ २६ ०	३७ ३७ १२	३७ ४८ २४	३८ ५९ ३६	३८ ७० ४८	३८ ८२ ०	३८ ९३ १२	३८ १०४ २४	३८ ११५ ३६	३९ १२६ ४८	३७ २	गु. ११ १२
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
घ.	० ११	० २२	० ३४	० ४५	० ५६	१ ७	१ १८	१ ३०	१ ४१	१ ५२	२ ६३	२ ७४	२ ८५	२ ९६	२ १०७		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	२	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५			
	५९	१०	२१	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	६२	७३	८४	९६		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८			
	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	६१	७२	८३		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११		
	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०	६१	७२		

(१६६)

देवज्ञ विनीद -

भीम त्रीघ्नफल सारिणी.

गु.घ. २ ४८

अं.की	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	ग.घ.
फ.	३९ १८ ०	३९ २० ४८	३९ २३ ३६	३९ २६ २४	३९ २९ १२	३९ ३२ ०	३९ ३४ ४८	३९ ३७ ३६	३९ ४० २४	३९ ४३ १२	३९ ४६ ०	३९ ४८ ४८	३९ ५१ ३६	३९ ५४ २४	३९ ५७ १२	३९ ५०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
घ.	३	६	८	११	१४	१७	२०	२२	२५	२८	३१	३४	३६	३९	४२	
क.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
घ.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
घ.	४५	४८	५०	५३	५६	५९	६	७	१०	१३	१६	१८	२३	२४		
क.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
घ.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	
क.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
घ.	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
क.	९	१२	१४	१७	२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४३	४६	४८	
अं.की	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	ग.घ.
फ.	४० ० ०	३९ ४७ १२	३९ ३५ २४	३९ ३१ ३६	३९ ८ ४८	३९ ५६ ०	३९ ६३ १२	३९ ७० २४	३९ ७७ ३६	३९ ८४ ४८	३९ ९१ ०	३९ ९८ १२	३९ १०५ २४	३९ ११२ ३६	३९ ११९ ४८	३९ १२६ ६०
क.	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	
घ.	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	
क.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
घ.	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	६	
क.	३५	३८	४०	४३	४६	४९	५४	५७	६०	६३	६६	६८	७१	७४	७५	
घ.	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	९	९	९	
क.	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९	८०	
घ.	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	
क.	४९	५२	५४	५७	६०	६३	६६	६८	७१	७४	७७	८०	८३	८६	८८	

गु.घ.

भौमशीघ्रफल सारिणी.

जं.को	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	गघ
फ.	३६ ४८ ०	३६ ० २४	३५ १२ ४८	३४ २५ १२	३३ ३३ ३६	३२ ५० ०	३२ २ २४	३१ १४ ४८	३० २७ १२	२९ ३९ ३६	२८ ५२ ०	२८ ४ २४	२७ १६ ४८	२६ २९ १२	२५ ४१ ३६	७ ३८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क.	० ४८	१ ३५	२ २३	३ १०	४ ५८	५ ४६	६ ३३	७ २१	८ ८	९ ५६	१० ४४	११ ३१	१२ १९	१३ ६	१४ ५४	
क.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
क.	१२ ४२	१३ २९	१४ १७	१५ ४	१५ ५२	१६ ४०	१७ २७	१८ १५	१९ २	२० ५०	२१ ३८	२२ २६	२३ १३	२४ ०	२५ ४८	
क.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
क.	२४ ३६	२५ २३	२६ १९	२६ ५८	२७ ४६	२८ ३४	२९ २१	३० ९	३० ५६	३१ ४४	३२ ३२	३३ १९	३४ ७	३४ ५४	३५ ४२	
क.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
क.	३६ ३०	३७ १७	३८ ५	३८ ५२	३९ ४०	४० २८	४१ १५	४२ ३	४२ ५०	४३ ३८	४४ २६	४५ १३	४६ १	४६ ४८	४७ ३६	
जं.को	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	
फ.	२४ ५४ ०	२३ १४ २४	२२ ३४ ४८	२१ ५५ १२	२० १५ ३६	१९ ३६ ०	१८ ५६ १४	१७ १६ ४८	१६ ३७ ३२	१५ ५७ ३६	१४ १८ ०	१३ ३८ ०	१२ ५८ ४८	११ २९ १०	१० ३९ ३६	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क.	१ ४०	३ १९	४ ५९	६ ३८	८ १८	९ ५८	११ ३७	१३ १७	१४ ५६	१६ ३६	१६ १६	१७ ५५	१८ ३५	१९ १४	२० ५४	
क.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
क.	२६ ३४	२८ ३३	२९ ५३	३१ ३२	३३ १२	३४ १२	३६ २१	३८ ११	३९ ५०	४१ ३०	४३ १०	४४ ४९	४६ २९	४८ ८	४९ ४८	
क.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
क.	५१ २८	५३ ७	५४ ४७	५६ २६	५८ ६	५९ ४६	६१ ३५	६३ ५	६४ ४४	६६ २४	६८ ४	६९ ४३	७१ २३	७३ २	७४ ४९	
क.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	७६ २२	७८ १	७९ ४१	८१ २०	८३ ०	८४ ४०	८६ १९	८७ ५९	८९ ३८	९१ १८	९२ ५४	९४ ३७	९६ १७	९७ ५६	९९ ६६	

पु
५
३

(१६८)

द्वैतविनोद-

अंत्यांकफलसारिणी.

अ. सं. क्र.

अं. क्रो.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
क.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	०	०	०	०	०
ख.	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	४८	३६	२४	१२	०
ग.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	
ङ.	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	
च.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
छ.	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	
ज.	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	
झ.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
ञ.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	
ट.	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	
ठ.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
ड.	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	
ण.	४२	४४	४६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	

अंत्यांक गतिफलसारिणी.

अं. क्रो.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
क.	३	५	६	७	९	१०	१२	१३	१५	१६	१७	१९	२०	२२	२३	०
ख.	३४	०	२५	५१	१७	४३	८	१४	०	२५	५१	१७	४३	८	३४	०
ग.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ङ.	१	३	४	६	७	९	१०	११	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२१	०
च.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
छ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
ज.	२३	२४	२६	२७	२९	३०	३१	३३	३४	३६	३७	३९	४०	४२	४३	०
झ.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
ञ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	०
ट.	४४	४६	४७	४९	५०	५१	५३	५४	५५	५७	५८	०	२	३	५	०
ठ.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
ड.	१	१	१	१	१	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
ण.	६	७	९	१०	१२	१३	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२४	२६	०

अथ धनधनयोगः ऋणऋणयोगः धनऋणयोगः इति.

भौममन्दफलसारिणी.

अं.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.प.
फ.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	५
	०	२१	१३	३४	४६	५८	९	२३	३२	४४	५६	७	१९	३०	४१	४८
	०	३६	१२	४८	२४	०	२६	२९	४८	२४	०	३६	१२	४८	२४	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	
	१२	२३	३५	४६	५८	१०	२१	३३	४४	५६	८	१९	३०	४२	५४	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	
	६	१७	२९	४०	५२	६	१५	२७	३८	५०	२	११	२५	३६	४८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	
	०	११	२३	३४	४६	५८	९	२१	३३	४४	५६	७	१९	३०	४२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	
	५४	५	१७	२८	४०	५२	३	१५	२६	३८	५०	१	१३	२४	३६	
अं.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.प.
फ.	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५
	५४	५	१६	२७	३८	५०	१	१३	२४	३६	४६	५७	८	१९	३०	३६
	०	१३	२४	३६	४८	०	१३	२४	३६	४८	०	१३	२४	३६	४८	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	
	११	२३	३५	४६	५८	७	१८	३०	४१	५२	३	१४	२६	३७	४८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	
	५९	१०	२३	३४	४६	५८	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	
	४७	५८	१०	२०	३३	४५	५६	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	८	८	८	८	८	८	८	८	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	
	३५	४६	५८	९	२०	३१	४२	५४	५	१६	२७	३८	५०	१०	२१	

(१७०)

देवज्ञ विनोद-

भौममंदफल सारिणी.

सु.घ.
११
१२

अं.को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.घ.	
क.	५ ४२ ०	५ ५३ १२	६ २४ २४	६ २५ ३६	६ २६ ४०	६ २७ ०	६ २८ १२	७ ० २४	७ ११ ३६	७ २२ ४०	७ ३३ ०	७ ४४ १०	७ ५५ २०	७ ६६ २४	८ ७७ ३६	८ ८८ ४०	५ ३६
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
क.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२		
	११	२२	३३	४४	५५	६	१०	२०	३१	४२	५३	६४	७५	८६	९७		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५		
	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८		
	४७	५८	६०	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११		
	३६	४७	५८	६	२०	३१	४५	५६	५	१७	२८	३९	५०	६	१२		
अं.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.घ.	
क.	८ ३० ०	८ ३१ ३६	८ ४२ ३२	८ ४३ ४८	९ ४४ २४	९ ४५ ०	९ ४६ ३६	९ ४७ ३२	९ ४८ ४८	९ ४९ २४	१० ५० ०	१० ५१ ३६	१० ५२ ३२	१० ५३ ४८	१० ५४ ४४	१० ५५ २४	४ ४८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
क.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२		
	१०	२०	२९	३८	४८	५८	६	१६	२६	३६	४६	५५	६	१६	२६		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	२	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४		
	३४	४३	५३	२	१२	२२	३२	४१	५०	०	१०	१९	२८	३८	४८		
	११	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	४	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	७		
	५८	८	१०	२४	३६	४६	५५	६	१४	२४	३४	४४	५३	६	१२		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९		
	२९	३१	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	६	१६	२६	३६			

सु.घ.
११
१२

भौममन्दफल सारिणी.

अ.को	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.फ.	
फ	११ १५ ०	११ ० ०	११ ६ ०	११ १२ ०	११ १८ ०	११ २४ ०	११ ३० ०	११ ३६ ०	११ ४२ ०	११ ४८ ०	११ ५४ ०	१२ ० ०	१२ ६ ०	१२ १२ ०	१२ १८ ०	३	
क	२	२	२	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
फ.	० ६	० १२	० १८	० २४	० ३०	० ३६	० ४२	० ४८	१ ५४	१ ६०	१ ६६	१- ७२	१- ७८	१- ८४	१- ९०		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	१ ३६	१ ४२	१ ४८	१ ५४	२ ०	२ ६	२ १२	२ १८	२ २४	२ ३०	२ ३६	२ ४२	२ ४८	२ ५४	३ ०		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	३ ६	३ १२	३ १८	३ २४	३ ३०	३ ३६	३ ४२	३ ४८	३ ५४	४ ०	४ ६	४ १२	४ १८	४ २४	४ ३०		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	४ ३६	४ ४२	४ ४८	४ ५४	५ ०	५ ६	५ १२	५ १८	५ २४	५ ३०	५ ३६	५ ४२	५ ४८	५ ५४	६ ०		
अ.को	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०	ग.फ.
फ	१२ २४ ०	१२ २६ २४	१२ २८ ४८	१२ ३१ १९	१२ ३३ ३६	१२ ३६ ०	१२ ३८ २४	१२ ४० ४८	१२ ४३ १२	१२ ४५ ३६	१२ ४८ ०	१२ ५० २४	१२ ५२ ४८	१२ ५५ ३०	१२ ५७ ३६	१२ ५९ ३६	१२ ६० ०
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
फ.	० ३	० ५	० ७	० १०	० १२	० १६	० १७	० १९	० २२	० २६	० २६	० २९	० ३१	० ३४	० ३६		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	० ३८	० ४१	० ४२	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५५	० ५८	१ ६०	१ ६२	१ ६५	१ ६७	१ ७०	१ ७२		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	१ १४	१ १७	१ १९	१ २२	१ २४	१ २६	१ २९	१ ३१	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४१	१ ४३	१ ४५	१ ४८		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	१ ५०	१ ५३	१ ५५	१ ५८	२ ०	२ ३	२ ५	२ ७	२ १०	२ १३	२ १५	२ १७	२ १९	२ २२	२ २४		

(१७२)

द्वैतविनोद-

बुधशीघ्रफलसारिणी.

गु.ध.
१६
२४

अं.को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.ध.
फ	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	१००
	०	१६	३२	४९	५	२२	३८	५४	११	२७	४४	०	१६	३३	४९	२०
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४	
	१६	३३	४९	६	२२	३८	५५	११	२८	४४	०	२७	४३	५०	६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	४	४	४	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	
	२२	२९	५५	२२	२८	४४	१	१७	३४	५०	६	१३	२९	५६	१२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	
	२८	४६	१	१८	३४	५०	७	२३	४०	५६	१२	२९	४५	१	१८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१६	१६	
	३४	५१	७	२३	४०	५६	१३	२९	४६	२	१८	३५	५१	८	२४	
अं.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.ध.
	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	७	७	७	७	१०७
	६	२२	३८	५४	१०	२६	४२	५८	१४	३०	४६	१	१८	३४	५०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४	
	१६	३२	४८	६	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२०	४४	०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	
	१६	३२	४८	६	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	१२	
	२६	४२	४८	५	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१६	१६	
	३६	५३	७	२०	३६	५२	८	२४	४०	५६	१२	२८	४४	०		

गु.ध.
०
१६

बुधश्रीघ्नफल सारिणी

अ को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग घ
फ	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	१०२
	६	२०	३४	४९	३	१८	३२	४६	१	१५	३०	४४	५८	७३	८७	२०
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	
	१४	२९	४३	५८	१२	२६	४१	५५	१०	२४	३८	५३	६७	८२	९६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३	४	४	४	४	५	५	५	६	६	६	६	६	६	७	
	५०	५	१९	३४	४८	२	१७	३०	४५	०	१४	२८	४३	५८	७२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	
	२६	४१	५५	१०	२४	३८	५३	७	२२	३६	५०	६५	७९	९४	१०८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	११	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	
	०	१७	३१	४६	०	१४	२९	४३	५८	७२	८६	१००	११५	१३०	१४५	
अ को	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग घ
फ	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१८
	४२	५५	८	२१	३४	४८	१	१४	२७	४०	५४	७	२०	३३	४६	४४
	०	१३	२६	३९	५२	०	१३	२६	३९	५२	०	१३	२६	३९	५२	
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३		
	१२	२६	४०	५३	६	१९	३३	४६	५९	७२	८५	९८	१११	१२४	१३७	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	
	३१	४४	५८	७२	८६	१००	११४	१२७	१४१	१५५	१६९	१८३	१९७	२१०	२२४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	
	४९	२	१६	२९	४३	५६	७०	८३	९७	११०	१२४	१३८	१५२	१६६	१८०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	
	७	२०	३६	५१	०	१३	२६	४०	५३	६७	८१	९५	१०९	१२३	१३७	

(१७४)

देवज्ञ विनोद-

बुध शीघ्र फल सारिणी.

अं.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.ध.
क.	१५	१५	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७	१७	१२
घ.	०	११	२२	३३	४४	५५	७	१८	२९	४०	५२	३	१४	२५	३६	४७
ङ.	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	
च.	११	२२	३३	४४	५५	७	१८	३०	४१	५२	३	१४	२५	३६	४७	
ज.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
झ.	२	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	
ञ.	५९	१०	२२	३३	४४	५५	६	१८	२९	४०	५१	२	१४	२५	३६	
ट.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
ठ.	५	५	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	
ड.	४७	५८	१०	२१	३२	४३	५४	६	१७	२८	३९	५०	२	१३	२४	
ण.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
त.	८	८	८	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	१२	
थ.	३५	४६	५८	१	२०	३१	४२	५४	५	१२	२७	३८	५०	१	१२	
अं.को.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.ध.
क.	१७	१७	१८	१८	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१९	१४
घ.	४८	५९	७	१३	२१	३०	३८	४६	५५	३	१२	२०	२८	३७	४५	२०
ङ.	१	२०	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	
च.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ज.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	
झ.	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	७	१६	२४	३२	४१	४९	५८	६	
ञ.	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
ट.	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	
ठ.	१४	२३	३१	४०	४८	५६	५	१२	२०	३०	३८	४७	५५	६	१२	
ड.	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
ण.	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	
त.	२०	२९	३७	४६	५४	६२	७	११	१९	२८	३६	४४	५३	६	१८	
थ.	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
द.	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	
ध.	२६	३५	४३	५२	०	८	१७	२५	३४	४२	५०	५९	६	१५	२४	

गु.घ.
११
१२गु.घ.
२६
२८

बुध शीघ्रफल सारिणी

अ.को	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	ग.घ
फ.	२१ १२ ०	२१ ५ १२	२० ५८ २४	२० ५१ ३६	२० ४४ ४६	२० ३८ ०	२० ३१ १२	२० २४ २४	२० १७ ३६	२० १० ४८	२० ४ ०	१९ ५७ १२	१९ ५० २४	१९ ४३ ३६	१९ ३६ ४८	३८ ४४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क.	० ७	० १४	० २०	० २७	० ३४	० ४१	० ४८	० ५४	१ २	१ ८	१ १५	१ २२	१ २८	१ ३५	१ ४१	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ ४५	१ ५६	२ १	२ ९	२ १६	२ २३	२ ३०	२ ३६	२ ४३	२ ५०	२ ५७	३ ४	३ १८	३ २७	३ २४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	३ ३९	३ ३८	३ ४४	३ ५१	३ ५८	४ ५	४ १२	४ १८	४ २५	४ ३२	४ ३९	४ ४६	४ ५२	४ ५९	५ ६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	५ १३	५ २०	५ २६	५ ३३	५ ४०	५ ४७	५ ५४	६ ०	६ ७	६ १४	६ २१	६ २८	६ ३४	६ ४१	६ ४८	
अ.को	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	ग.घ
क.	१९ ३० ०	१९ १४ ०	१८ ५८ ०	१८ ५२ ०	१८ २६ ०	१८ १० ०	१७ ५४ ०	१७ ३८ ०	१७ २२ ०	१७ ६ ०	१६ ५० ०	१६ ३४ ०	१६ १८ ०	१६ २ ०	१५ ४६ ०	१९ ८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क.	० १६	० ३२	० ४८	१ ४	१ २०	१ ३६	१ ५२	२ ८	२ २४	२ ४०	३ ५६	३ १२	३ २८	३ ४४	४ ०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	४ १६	४ ३२	४ ४८	५ ४	५ २०	५ ३६	५ ५२	६ ६	६ २४	६ ४०	६ ५६	७ १२	७ २८	७ ४४	८ ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	८ १६	८ ३२	८ ४८	९ ४	९ २०	९ ३६	९ ५२	१० ८	१० २४	१० ४०	११ ५६	११ १२	११ २८	११ ४४	१२ ०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१२ १६	१२ ३२	१२ ४८	१३ ४	१३ २०	१३ ३६	१३ ५२	१४ ८	१४ २४	१४ ४०	१५ ५६	१५ १२	१५ २८	१५ ४४	१६ ०	

गु.फ.
६८गु.फ.
१६०

बुधशीघ्रफल सारिणी.

अं.को.	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	ग.स.
फ.	१५ ३० ०	१५ ३ ३६	१६ ३७ १२	१६ १० ४८	१३ ४४ २४	१३ १८ ०	१२ ५१ ३६	१२ २५ १३	११ ५८ ४८	११ ३२ २४	११ ६ ०	१० ३९ ४६	१० १३ २२	९ ४६ ४८	९ २० २४	१० ४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	० २६	० ५३	१ २९	१ ४६	२ १२	२ ३८	३ ५	३ ३१	३ ५८	४ २४	४ ५०	५ १७	५ ४३	६ ९	६ ३६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१३	
	२	२९	५५	२२	४८	१४	४१	७	३४	०	२६	५३	१९	४५	१२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१३	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	
	३८	५	३१	८	२४	५०	१७	४३	१०	३६	२	२९	५५	२२	४८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२५	२५	२६	
	१४	४१	७	३४	०	२६	५२	१९	४६	१२	३८	५	३१	५८	२४	
अं.को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	
फ.	८ ५४ ०	८ १८ २४	७ ४२ ४८	७ १२ ३६	६ ३९ ०	५ ५६ ०	५ २० २४	४ ४४ ४८	४ ९ १२	३ ३३ ३६	२ ५८ ०	२ ३३ ०	१ ४६ ४८	१ ११ १२	० ३५ ३६	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
फ.	० ३६	१ ११	१ ४७	२ २२	२ ५८	३ २४	४ ९	४ ४६	५ २०	५ ५६	६ ३२	७ ७	७ ४३	८ १८	८ ५४	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१३	१४	१४	१५	१६	१६	१७	१७	
	३०	५	४१	१६	५२	२८	३	३९	१४	५०	२६	१	३७	२२	४८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१८	१८	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२३	२३	२४	२४	२५	२६	२६	
	२४	५९	३५	१०	४६	२२	५७	३३	८	४४	२०	५५	३१	६	४२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	२६	२७	२८	२९	२९	३०	३०	३१	३२	३३	३३	३३	३४	३५	३५	
	१८	५३	२९	४	७०	१६	५१	२७	२	३८	१४	४९	२५	०	३६	

(१७८)

देवज्ञविनोद-

अत्यांकगतिफल सारिणी.

अं.को	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
फ.	३७	३९	४०	४२	४३	४५	४६	४७	४९	५०	५२	५३	५५	५६	५७	५९
क.	५३	९०	४२	९	३५	९	२६	५२	२०	४३	९	३५	९	२६	५२	५८
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	१	३	४	६	७	९	१०	११	१२	१४	१६	१७	१९	२०	२२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	२३	२४	२६	२७	२९	३०	३२	३३	३४	३६	३७	३९	४०	४१	४३	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	२	२	
	४४	६६	४७	४८	५०	५१	५३	५४	५६	५७	५८	०	१	३	५	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
	६	७	९	१०	११	१२	१४	१६	१७	१९	२०	२२	२३	२५	२६	

बुधमंद फल सारिणी.

अं.को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.फ.
फ.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	०	०	०	०	१	१	४
	०	४	९	१४	१९	२४	२८	३३	३८	४३	४८	५२	५७	०	७	४८
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	
घ.	५	१०	१४	१९	२०	२९	३४	३८	४२	४६	५३	५८	२	७	१२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	
	१७	२२	२२	३१	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	९	१४	१९	२४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	
	२०	२३	२८	४३	४८	५३	५८	२	७	१२	१७	२२	२६	३१	३६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१	३	१	१	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	
	४१	४६	५०	५५	४	५	१०	१८	१९	२४	२९	३४	३८	४३	४८	

सं. ४८६
मु.के. ०००६

बुधमन्दफलसारिणी.

अ.सो.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.फ	गु.थ.
फ.	१ १२ ०	१ १५ ३६	१ १९ २२	१ २२ ४८	१ २६ २४	१ ३० ०	१ ३३ ३६	१ ३७ १२	१ ४० ४८	१ ४४ २४	१ ४८ ०	१ ५१ ३६	१ ५५ २२	१ ५८ ४८	२ २ २४	३ ३ ३६	गु.थ. ३ ३६
क.	१ ० ४	२ ० ७	३ ० ११	४ ० १४	५ ० १८	६ ० २२	७ ० २५	८ ० २९	९ ० ३२	१० ० ३६	११ ० ४०	१२ ० ४३	१३ ० ४७	१४ ० ५०	१५ ० ५४		सू.के. ००००००००
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१		
	५८	१	५	८	१२	१६	१९	२३	२६	३०	३४	३७	४१	४४	४८		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२		
	५२	५५	५९	२	६	१०	१३	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	४२		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३		
	४६	४९	५३	५६	०	४	७	११	१४	१८	२२	२५	२९	३२	३६		
अ.सो.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.फ	गु.थ.
फ.	२ ६ ०	२ ८ ४८	२ ११ ३६	२ १४ २४	२ १७ २२	२ २० ०	२ २२ ४८	२ २५ ३६	२ २८ २४	२ ३१ १२	२ ३४ ०	२ ३६ ४८	२ ३९ ३६	२ ४२ २४	२ ४५ १२	२ ४८	गु.थ. २ ४८
क.	१ ० ४	२ ० ७	३ ० ११	४ ० १४	५ ० १८	६ ० २२	७ ० २५	८ ० २९	९ ० ३२	१० ० ३६	११ ० ४०	१२ ० ४३	१३ ० ४७	१४ ० ५०	१५ ० ५४		सू.के. ००००००००
घ.	० ३	० ६	० ८	० ११	० १४	० १७	० २०	० २२	० २५	० २८	० ३१	० ३४	० ३६	० ३९	० ४२		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१		
	४६	४८	५०	५३	५६	५९	२	४	७	१०	१३	१६	१८	२१	२४		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२		
	२७	३०	३२	३५	३८	४१	४४	४६	४९	५२	५५	५८	०	३	६		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२		
	९	१२	१४	१७	२०	२३	२६	२८	३१	३४	३७	४०	४२	४६	४८		

(१८०)

देवज्ञ विनोद-

बुधमंद फल सारिणी.

 बु.प्र.
२
स.के.
००००००००

अ.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.फ.	
फ.	२ ४८ ०	२ ५० ०	२ ५२ ०	२ ५४ ०	२ ५६ ०	२ ५८ ०	३ ० ०	३ २ ०	३ ४ ०	३ ६ ०	३ ८ ०	३ १० ०	३ १२ ०	३ १४ ०	३ १६ ०	२ ०	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
घ.	० २	० ४	० ६	० ८	० १०	० १२	० १४	० १६	० १८	० २०	० २२	० २४	० २६	० २८	० ३०		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१		
	३१	३४	३६	३८	४०	४२	४४	४६	४८	५०	५२	५४	५६	५८	०		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	१. २	१ ४	१ ६	१ ८	१ १०	१ १२	१ १४	१ १६	१ १८	१ २०	१ २२	१ २४	१ २६	१ २८	१ ३०		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	१ ३१	१ ३४	१ ३६	१ ३८	१ ४०	१ ४२	१ ४४	१ ४६	१ ४८	१ ५०	१ ५२	१ ५४	१ ५६	१ ५८	१ ६०		
अं.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.फ.	
फ.	१ १८ ०	२ १८ ४८	३ १९ ३६	३ २० २४	३ २१ १२	३ २२ ०	३ २२ ४८	३ २३ ३६	३ २३ २४	३ २४ १२	३ २५ ०	३ २६ ४८	३ २६ ३६	३ २७ २४	३ २८ १२	३ २९ ०	४८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
घ.	० १	० २	० २	० ३	० ४	० ५	० ६	० ६	० ७	० ८	० ९	० १०	० १०	० ११	० १२		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
	१३	१४	१४	१५	१६	१७	१८	१८	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२५		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
	२६	२६	२६	२७	२८	२९	३०	३०	३१	३२	३३	३४	३६	३६	३६		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०		
	५७	५८	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६३	६४	६५	६६	६६	६७	६८		

 बु.प्र.
४८
स.के.
००००००००

बुधमंदफल सारिणी.

अं.को.	७५	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	ग.फ.
क.	३ ३० ०	३ ३० २४	३ ३० ४८	३ ३१ १२	३ ३१ ३६	३ ३२ ०	३ ३२ २४	३ ३२ ४८	३ ३३ १२	३ ३३ ३६	३ ३४ ०	३ ३४ २४	३ ३४ ४८	३ ३५ १२	३ ३५ ३६	० २४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३१	३२	

गु.घ.
०
२४
०
०
०
०
०
०
०
०
०
०
०
०
०
०

गुरु शीघ्रफल सारिणी.

अं.को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग.घ.
क.	० ० ०	० १० ०	० २० ०	० ३० ०	० ४० ०	० ५० ०	१ ० ०	१ १० ०	१ २० ०	१ ३० ०	१ ४० ०	१ ५० ०	२ ० ०	२ १० ०	२ २० ०	१३ २०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	
	४०	४०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	
	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	७	७	८	८	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	
	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	१०	२०	३०	४०	५०	०	

गु.घ.
०
१०
०
०
०
०
०
०
०
०
०
०
०
०
०
०

(१८२)

दैवज्ञ विनोद-

गुरु शीघ्र फल सारिणी.

सु.घ.
८
५८

अं.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.घ.
फ.	२ ३० ०	२ ३८ ४८	२ ४७ ३६	२ ५६ २४	३ ५ १२	३ १४ ०	३ २२ ४८	३ ३१ ३६	३ ४० २४	३ ४९ १२	४ ५८ ०	४ ६ ४८	४ १५ ३६	४ २४ २४	४ ३३ १२	१२ २०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० ९	० १८	० २६	० ३५	० ४४	० ५३	१ २	१ १०	१ १९	१ २८	१ ३७	१ ४६	१ ५५	२ ३	२ १२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ २१	२ ३०	२ ३८	२ ४७	२ ५६	३ ५	३ १४	३ २२	३ ३१	३ ४०	३ ४९	३ ५८	४ ६	४ १५	४ २४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	४ ३३	४ ४२	४ ५०	४ ५९	५ ६	५ १७	५ २४	५ ३३	५ ४२	५ ५१	६ १	६ १०	६ १८	६ २७	६ ३६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	६ ४५	६ ५४	७ २	७ ११	७ २०	७ २९	७ ३८	७ ४६	७ ५५	८ ४	८ १३	८ २२	८ ३०	८ ३९	८ ४८	
अं.को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.घ.
फ.	४ ४२ ०	४ ५० २४	४ ५८ ४८	५ ६ १२	५ १५ ३६	५ २४ ०	५ ३२ २४	५ ४० ४८	५ ४९ १२	६ ५७ ३६	६ ६ ०	६ १४ २४	६ २२ ४८	६ ३१ १२	६ ३९ ३६	१२ ०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० ८	० १७	० २५	० ३४	० ४२	० ५०	० ५९	१ ७	१ १६	१ २४	१ ३२	१ ४१	१ ५०	१ ५९	२ ६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ १४	२ २३	२ ३१	२ ४०	२ ४८	२ ५६	३ ५	३ १३	३ २२	३ ३०	३ ३८	३ ४७	४ ५५	४ ६	४ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	४ २०	४ २९	४ ३७	४ ४६	५ ५४	५ ६	५ १५	५ २४	५ ३३	५ ४२	५ ५१	६ ५३	६ १	६ १०	६ १८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	६ २६	६ ३५	६ ४३	६ ५२	७ ०	७ ८	७ १७	७ २५	७ ३४	७ ४२	७ ५०	७ ५९	८ ७	८ १६	८ २४	

सु.घ.
२६
८

गुरु शीघ्र फल सारिणी.

अं.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.ध.
क.	६ ४८ ०	६ ५४ ४८	७ १ ३६	७ ८ २४	७ १५ १२	७ २२ ०	७ २८ ४८	७ ३५ ३६	७ ४२ २४	७ ४९ १२	७ ५६ ०	८ २ ४८	८ ९ ३६	८ १६ २४	८ २३ १२	१० ५०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० ७	० १४	० २०	० २७	० ३४	० ४१	० ४८	० ५४	१ १	१ ८	१ १५	१ २२	१ २८	१ ३५	१ ४२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	
	४९	५६	२	९	१६	२३	३०	३६	४३	५०	५७	४	१०	१७	२४	
	३१	३१	३२	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	
	३१	३८	४८	५०	५८	५	१२	१८	२५	३२	३९	४६	५३	५९	६६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	
	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	४८	
अं.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.ध.
क.	८ ३० ०	८ ३५ १२	८ ४० २४	८ ४५ ३६	८ ५० ४८	८ ५६ ०	९ १ १२	९ ६ २४	९ ११ ३६	९ १६ ४८	९ २२ ०	९ २७ १२	९ ३२ २४	९ ३७ ३६	९ ४२ ४८	९ ४८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० ५	० १०	० १६	० २२	० २६	० ३१	० ३७	० ४२	० ४७	० ५३	० ५८	१ २	१ ८	१ १३	१ १८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	
	२३	२८	३४	३९	४४	४९	५४	०	५	१०	१५	२०	२६	३१	३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	
	४२	४६	५२	५७	६	१३	१८	२३	२८	३३	३८	४४	४९	५४		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	
	५९	५	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५१	५६	६१	६६	७२	

गु.ध.
६
४८

गु.ध.
५
१२

गुरु शीघ्र फल सारिणी-

अ.को	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	ग.घ.
फ.	१० ४८ ०	१० ४५ ३६	१० ४३ ३२	१० ४० ४८	१० ३८ २४	१० ३६ ०	१० ३३ ३६	१० ३१ ३२	१० २८ ४८	१० २६ २४	१० २४ ०	१० २१ ३६	१० १९ ३३	१० १६ ४८	१० १४ २४	३ ०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क्र.	० २	० ५	० ७	० १०	० १२	० १४	० १७	० १९	० २२	० २४	० २६	० २९	० ३१	० ३४	० ३६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	
	३८	४१	४३	४५	४८	५०	५३	५५	५८	०	२	५	७	१०	१२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	०
	१४	१७	१९	२२	२४	२६	२९	३१	३४	३६	३८	४१	४३	४५	४८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
	५०	५३	५५	५८	०	२	५	७	१०	१२	१४	१७	१९	२२	२४	
अं.को.	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	ग.घ.
फ.	१० १२ ०	१० ६ ४८	१० १ ३६	९ ५६ २४	९ ५१ १२	९ ४६ ०	९ ४० ४८	९ ३५ ३६	९ ३० २४	९ २५ १२	९ २० ०	९ १६ ४८	९ ११ ३६	९ ६ २४	९ १ १२	० ५६ २२
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क्र.	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४१	० ४७	० ५२	१ ५७	१ २	१ ८	१ १३	१ १८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	
	२३	२८	३४	३९	४४	४९	५४	०	५	१०	१५	२०	२६	३२	३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	
	४१	४६	५२	५७	२	७	१२	१८	२३	२८	३३	३८	४४	४९	५४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	
	५९	४	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५१	५६	६२	६७	७२	

गु.क्र.
२
२४

गु.क्र.
५२

(१८६)

देवज्ञविनोद-

गुरु शीघ्र फल साखिणी.

गु.क्र.
१२

अं.को.	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	ग.क्र.
फ.	८	८	८	८	८	८	७	७	७	७	७	७	७	६	६	२
	५४	४४	३५	२६	१७	८	५८	४९	४०	३१	२२	१३	४	५४	४५	४०
	०	४८	३९	३०	२१	०	४८	३९	३०	२१	०	४८	३९	३०	२१	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
स.	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	
	९	१८	२८	३७	४६	५५	६	१४	२३	३२	४१	५०	०	९	१८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	
	२७	३६	४५	५४	६	१३	२२	३१	४०	५०	५९	६	१८	२७	३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	४	४	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	
	४५	५४	६	१३	२२	३१	४०	५०	५९	६	१७	२६	३६	४५	५४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	
	३	१२	२१	३०	४०	४९	५८	६	१७	२६	३५	४४	५३	६	१२	
अं.को.	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	ग.क्र.
फ.	६	६	६	६	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	३	५
	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
स.	०	०	०	०	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	३	
	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५	५	५	५	६	
	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	६	६	६	६	७	७	७	७	७	८	८	८	८	८	९	
	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	१२	
	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	

गु.क्र.
१२

गुरु शीघ्र फल सारिणी.

अ. को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	ग. फ.
फ.	३ ३६ ०	३ २९ ३६	३ ७ १२	३ ५२ ६८	२ ३८ २४	२ ३४ ०	२ ३६ १२	१ ५५ १२	१ ४० ६८	१ २६ २४	१ १२ ०	० ५७ ३६	० ४३ १२	० २८ ६८	० ४४ २४	७ ०
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
सं.	० १४	० २९	० ४३	० ५८	१ १२	१ २६	१ ४२	१ ५५	२ १०	२ २४	२ ३८	३ ५३	३ ६७	३ ८२	३ ९६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३ ५०	४ ५	४ १९	४ ३४	४ ४८	५ २	५ १७	५ ३२	५ ४६	६ ०	६ १४	६ २९	६ ४३	६ ५८	७ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	७ २६	७ ४१	७ ५५	८ १०	८ २३	८ ३७	८ ५२	९ ६	९ २१	९ ३६	९ ५०	१० ५	१० १९	१० ३८	१० ५८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	११ २	११ १७	११ ३१	११ ४६	१२ ०	१२ १४	१२ २९	१२ ४३	१३ ५८	१३ १२	१३ २६	१३ ४३	१३ ५५	१४ १०	१४ २४	

गु. फ.
१४
३४

गुरु मंद फल सारिणी.

अ. को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	ग. फ.
फ.	० ० ०	५ ३६	११ ४२	१६ ६८	२२ २४	२८ ०	३३ ३६	३९ १२	४४ ६८	५० २४	५६ ०	१ ३६	१ १२	१ ४८	१ २४	० २४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० ६	० ११	० १७	० २२	० २८	० ३४	० ३९	० ४५	० ५०	० ५६	१ २	१ ७	१ १३	१ १८	१ २४	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ ३०	१ ३५	१ ४१	१ ४६	१ ५२	१ ५८	२ ३	२ ९	२ १४	२ २०	२ २६	२ ३१	२ ३७	२ ४२	२ ४८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२ ५४	२ ५९	३ ५	३ १०	३ १६	३ २२	३ २७	३ ३३	३ ३८	३ ४४	३ ५०	४ ५	४ १०	४ १६	४ २२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	४ १७	४ २२	४ २९	४ ३४	४ ४०	४ ४६	४ ५१	४ ५७	५ २	५ ८	५ १४	५ १९	५ २५	५ ३०	५ ३६	

गु. फ.
३६

गु. फ.
०
०
०

(१८८)

द्वैतविनोद-

गुरुमंद फलसारिणी.

सुध
५
२३
५०००००

अ को	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग फ
	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	०
	२४	२९	३४	३९	४४	५०	५५	०	५	१०	१६	२१	२६	३१	३८	२६
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१		
	५	१०	१६	२१	२६	३१	३६	४२	४७	५२	५७	६	८	१३	१८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	
	२३	२८	३४	३९	४४	४९	५४	०	५	१०	१५	२०	२६	३१	३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	
	४१	४६	५२	५६	६	७	१२	१८	२३	२८	३३	३८	४४	४९	५४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	
	१९	४	१०	१५	२०	२५	३०	३६	४१	४६	५२	५६	६	१०	१२	
अ को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग घ
फ.	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	०
	४२	४६	५१	५६	६	६	१०	१५	२०	२५	३०	३५	३९	४४	४९	२४
	०	४८	५६	६४	७२	०	४८	५६	६४	७२	०	४८	५६	६४	७२	
क	२	२	२	५	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	
	५	१०	१५	२०	२६	३१	३६	४२	४७	५२	५७	६३	६८	७३	७८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१	१	१	१	१	१	१	१	२	०	२	२	२	२	२	
	१७	२१	२६	३१	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	१०	१५	२०	२५	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	
	२९	३३	३८	४२	४८	५३	५८	६	७	१२	१७	२२	२७	३१	३६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१	१	१	१	४	५	५	५	५	५	५	५	५	५	५	
	४१	४६	५०	५५	०	६	१०	१५	२०	२५	३०	३५	४०	४३	४८	

सुध
४
५
५०००००

गुरु मंदफल सारिणी.

अं.को	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.फ.
फ.	३ ५४ ०	३ ५७ ३६	४ १ १२	४ ४ ४८	४ ८ २४	४ १० ०	४ १५ ३६	४ १९ १२	४ २२ ४८	४ २६ २४	४ ३० ०	४ ३३ ३६	४ ३७ १२	४ ४० ४८	४ ४४ ४८	० १८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घं.	० ४	० ७	० ११	० १४	० १८	० २२	० २६	० २९	० ३०	० ३६	० ४०	० ४३	० ४७	० ५०	० ५४	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० ५८	१ १	१ ५	१ ८	१ १२	१ १६	१ १९	१ २३	१ २६	१ ३०	१ ३४	१ ३७	१ ४१	१ ४४	१ ४८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१ ५२	१ ५५	१ ५९	२ २	२ ६	२ १०	२ १३	२ १७	२ २०	२ २४	२ २८	२ ३१	२ ३५	२ ३८	२ ४२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	२ ४६	२ ४९	२ ५३	२ ५६	३ ०	३ ४	३ ७	३ ११	३ १४	३ १८	३ २२	३ २६	३ २९	३ ३२	३ ३६	

गु.घं.
३
३६
३६
००००५

गु.घं.
३
४६
३६
००००५

(१९०)

देवज्ञ विनोद-

शुरु मंद फल सारिणी.

शु.ध.
४८
शु.के
००००

अ.को	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	
फ.	५ ३० ०	५ ३० ४८	५ ३१ ३६	५ ३३ ३२	५ ३३ ०	५ ३४ ०	५ ३४ ४८	५ ३५ ३६	५ ३६ २४	५ ३७ १२	५ ३८ ०	५ ३८ ४८	५ ३९ ३६	५ ४० २४	५ ४१ १२	५ ४२ ०	५ ४३ ४८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५		
घ.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	२५	२६	२७	२८	२९	३०	३०	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३५	३६		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०			

शुक्र शीघ्र फल सारिणी.

शु.ध.
२५
१२

अ.को	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गघ
फ.	०	०	०	१	१	२	२	३	३	३	४	४	५	५	५	७४
	०	२५	५०	१५	४०	६	३३	५६	३३	४६	१२	३७	२	२७	५२	५३
	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	०	०	१	१	२	२	३	३	४	४	५	५	५	५	६	
	२५	५०	१५	४०	६	३३	५६	३३	४६	१२	३७	२	२७	५२	५३	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	६	७	७	७	८	८	९	९	१०	१०	११	११	१२	१२	१२	
	४३	८	२४	५०	२४	४९	१५	४०	५	३०	५६	२१	४६	११	३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१३	१३	१३	१४	१४	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१८	१८	१८	
	१	२	५	१७	४३	७	३३	५७	२३	५८	१३	३८	४	२९	५४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१६	१९	१०	२०	२१	२१	२१	२३	२३	२३	२३	२४	२४	२५	२५	
	१२	४४	१०	३५	०	२५	५८	१६	४८	६	३१	५६	५२	४७	१२	

शुक्र शीघ्रफल सागिणी.

अ.को	१४	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.ध
क.	६ १८ ०	६ ४३ १२	७ ८ २४	७ ३३ ३६	७ ५८ ४०	८ २४ ०	८ ४० १२	९ ४० २४	९ ३९ २४	१० ४ ३६	१० १० ४८	१० ५५ १२	११ २० २४	११ ४४ ३६	१२ १० ४८	७४ ५३ ४८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ	० २५	० ५०	१ १६	१ ४१	२ ६	२ ३१	२ ५६	३ २३	३ ४७	४ १२	४ ३७	५ ४	५ २९	५ ५३	६ १८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	६ ४३	७ ८	७ ३४	७ ५९	८ २४	८ ४०	९ १५	९ ४०	१० ५	१० ३०	१० ५५	११ २१	११ ४६	१२ ११	१२ ३६	
	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	
	११ १	१३ २६	१३ ५२	१४ १७	१४ ४२	१५ ७	१५ ३२	१५ ५७	१६ २३	१६ ४८	१६ ११	१७ ३८	१७ ४	१८ २९	१८ ५४	
	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	
	१९ १९	४४ १०	३५ ०	२५ ०	५० १६	५० ४९	१६ ४९	६ ३२	५६ २३	५६ ५८	५७ ५८	५८ २३	५९ ४७	६० १२		

शु.ध
२५
१२

शु.ध.
२४
०

अ.को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.ध
क.	१२ ३६ ०	१३ ० ०	१३ २४ ०	१३ ४८ ०	१४ १२ ०	१४ ३६ ०	१५ ० ०	१५ २४ ०	१५ ४८ ०	१६ १२ ०	१६ ३६ ०	१७ ० ०	१७ २४ ०	१७ ४८ ०	१८ १२ ०	७४ ८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ	० २४	० ४८	१ १२	१ ३६	२ ०	२ २४	२ ४८	३ १२	३ ३६	४ ०	४ २४	४ ४८	५ १२	५ ३६	६ ०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	६ २४	६ ४८	७ १२	७ ३६	८ ०	८ २४	८ ४८	९ १२	९ ३६	१० ०	१० २४	१० ४८	११ १२	११ ३६	१२ ०	
	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	
	१३ २४	१३ ४८	१३ १२	१३ ३६	१४ ०	१४ २४	१४ ४८	१५ १२	१५ ३६	१६ ०	१६ २४	१६ ४८	१७ १२	१७ ३६	१८ ०	
	१९	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२२	२३	२३	२३	२४	२४	२५	
	१९ १९	४४ १०	३५ ०	२५ ०	५० १६	५० ४९	१६ ४९	६ ३२	५६ २३	५६ ५८	५७ ५८	५८ २३	५९ ४७	६० १२		
	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२४		
	२४ ०	४८ ०	१२ ०	३६ ०	०	२४ ०	४८ ०	१२ ०	३६ ०	०	२४ ०	४८ ०	१२ ०	३६ ०		

(१९२)

द्वैवज्ञ विनोद-

शुक्र शीघ्र फल सारिणी.

गु.घ.
२४
०

अं.को	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	गण
क.	१८ ३६ ०	१९ ० ०	१९ २४ ०	१९ ४८ ०	२० १२ ०	२० ३६ ०	२१ ० ०	२१ २४ ०	२२ ४८ ०	२२ १२ ०	२२ ३६ ०	२३ ० ०	२३ २४ ०	२४ ४८ ०	२४ १२ ०	७४ ८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० २४	० ४८	१ १२	१ ३६	२ ०	२ २४	२ ४८	३ १२	३ ३६	४ ०	४ २४	४ ४८	५ १२	५ ३६	६ ०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	६ २४	६ ४८	७ १२	७ ३६	८ ०	८ २४	८ ४८	९ १२	९ ३६	१० ०	१० २४	११ ४८	११ १२	११ ३६	१२ ०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१२ २४	१२ ४८	१३ १२	१३ ३६	१४ ०	१४ २४	१४ ४८	१५ १२	१५ ३६	१६ ०	१६ २४	१६ ४८	१७ १२	१७ ३६	१८ ०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१८ २४	१९ ४८	१९ १२	१९ ३६	२० ०	२० २४	२० ४८	२१ १२	२१ ३६	२२ ०	२२ २४	२२ ४८	२३ १२	२३ ३६	२४ ०	

गु.घ.
२२
२४

अं.को	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	गण
क.	२४ ३६ ०	२४ ५८ ०	२५ २० ४८	२५ ४३ १२	२६ ५ ३६	२६ २८ ०	२६ ५० २४	२७ १२ ४८	२७ ३५ १२	२७ ५७ ३६	२८ २० ०	२८ ४२ २४	२९ ४ ४८	२९ २७ १२	२९ ४९ ३६	७३ ८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० २४	० ४८	१ ७	१ ३०	१ ५२	२ १६	२ ३७	२ ५९	३ २२	३ ४४	४ ६	४ २९	४ ५१	५ १४	५ ३६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	५ ५८	६ २१	६ ४३	७ ६	७ २८	७ ५०	८ १३	८ ३५	८ ५८	९ २०	९ ४२	१० ५	१० २७	१० ५०	११ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	११ २२	११ ३४	११ ५५	१२ १९	१२ ४१	१२ ६	१२ २६	१२ ४२	१३ ११	१३ ३६	१४ ५४	१४ १८	१४ ४२	१५ ३	१५ २५	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१७ १६	१७ ३३	१७ ५५	१८ १८	१८ ४०	१९ ३	१९ २४	१९ ४७	२० १०	२० ३२	२० ५४	२१ १७	२१ ३९	२२ २	२२ २४	

शुक्र शीघ्र फल सारिणी.

अं.को.	७४	७६	७७	७८	७९	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	गघ
क.	३० ६२ ०	३० ३२ ४८	३० ५३ ३६	३१ २४ २४	३१ ३६ १७	३२ ० ०	३२ १६ ४८	३२ ३७ ३६	३२ ५८ २४	३३ १९ १२	३३ ४० ०	३४ ० ४८	३४ ३१ ३६	३४ ४२ ३६	३५ ३ २४	७० ८ १
क.	१	२	२	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० २१	० ४२	१ २	१ ३३	१ ४४	२ ५	२ ७६	२ ४६	३ ७	३ २८	३ ४९	४ १०	४ ३०	४ ५१	४ ३३	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	५ १६	५ ५४	६ १४	६ ३५	६ ५६	७ १७	७ ३८	७ ५८	८ १९	८ ४०	९ १	९ २२	९ ४३	१० ३	१० २४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१० ४५	११ ६	१२ २६	११ ४७	१२ ८	१२ २९	१३ ५०	१३ १०	१३ ३२	१३ ५२	१४ १३	१४ ३३	१४ ५४	१५ १५	१५ ३६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१५ ५७	१६ १८	१६ ३८	१६ ५९	१७ २०	१७ ४१	१८ २	१८ २२	१८ ४३	१९ ४	१९ २५	१९ ४६	२० ६	२० २७	२० ४८	
अं.को.	९०	९१	९२	९३	९४	९५	९६	९७	९८	९९	१००	१०१	१०२	१०३	१०४	गघ
क.	३५ २४ ०	३५ ४३ १३	३६ ० २४	३६ ३१ ३६	३६ ४० ४८	३७ ० ०	३७ १९ १२	३७ ३८ २४	३७ ५७ ३५	३८ १६ ४८	३८ ३६ ०	३८ ५७ १२	३९ १५ २४	३९ ३३ ३६	३९ ५२ ४८	१०१ ८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० १९	० ३८	० ५७	१ २७	१ ३६	१ ५५	२ १४	२ ३३	२ ५२	३ ११	३ ३१	३ ५०	४ १०	४ २९	४ ४८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	५ ७	५ २६	५ ४५	६ ४	६ २४	६ ४२	७ २	७ २२	७ ४०	८ ०	८ ११	८ ३८	८ ५७	९ १७	९ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	९ ५५	१० १४	१० ३४	१० ५३	११ १२	११ ३२	११ ५१	१२ ११	१२ ३१	१२ ५०	१३ ७	१३ २७	१३ ४६	१४ ५	१४ २५	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१४ ४३	१४ २	१५ २२	१५ ४१	१६ ०	१६ १९	१६ ३८	१६ ५८	१७ १७	१७ ३६	१७ ५५	१८ १४	१८ ३४	१८ ५३	१९ १३	

गु.घ
२०
४८

गु.घ.
१९
१२
०

(१९४)

देवज्ञ विनाद-

शुक्र ग्रीष्म फल सारिणी

सु.प.
११
१२

अं.को.	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	ग.प.
क.	४०	४०	४०	४०	४१	४१	४१	४१	४२	४२	४२	४२	४३	४३	४३	६८
	१२	२७	४२	५७	७२	८८	०	१२	२७	४२	५८	०	१२	२७	४२	५८
	०	१२	२७	४२	५८	७२	०	१२	२७	४२	५८	०	१२	२७	४२	५८
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	३	
	२५	३०	४५	६०	७५	९०	१०५	१२०	१३५	१५०	१६५	१८०	१९५	२१०	२२५	४८
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	
	३	१८	३४	४९	६४	७९	९४	१०९	१२४	१३९	१५४	१६९	१८४	१९९	२१४	३६
	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	
	७	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	
	५१	६	२२	३७	५२	६७	८२	९७	११२	१२७	१४२	१५७	१७२	१८७	२०२	४८
	४४	४७	५०	५३	५६	५९	६२	६५	६८	७१	७४	७७	८०	८३	८६	
	११	११	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४	१५	१५	
	२९	५८	१०	२४	४०	५५	७०	८५	१००	११५	१३०	१४५	१६०	१७५	१९०	
अं.को.	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	ग.प.
क.	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४४	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	६४
	०	८	१६	२५	३३	४२	५०	५८	६७	७५	८३	९२	१००	१०९	११७	४
	०	२४	४०	५६	७२	८८	१०४	१२०	१३६	१५२	१६८	१८४	२००	२१६	२३२	
क.	१	१	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	२	
	८	१७	२६	३५	४४	५३	६२	७१	८०	८९	९८	१०७	११६	१२५	१३४	६४
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	४	४	
	१४	२३	३२	४०	४८	५६	६४	७२	८०	८८	९६	१०४	११२	१२०	१२९	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	
	२०	२९	३७	४५	५३	६१	६९	७७	८५	९३	१०१	१०९	११७	१२५	१३४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	७	८	८	८	
	२६	३५	४३	५१	५९	६७	७५	८३	९१	९९	१०७	११५	१२३	१३१	१४०	

सु.प.
७३

शुक्र शीघ्र फल सारिणी

अं. को.	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	ग.प.
क.	४६	४५	४५	४५	५१	४५	४५	५५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	४५	५५
ख.	६	५८	५९	५४	१०	३०	२२	१५	८	१	५४	४६	३९	३२	२५	४२
ग.	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	
घ.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
च.	०	०	०	०	०	०	०	०	१	२	३	४	५	६	७	
	७	१४	२२	२९	३६	४३	५०	५८	५	१२	१९	२६	३४	४१	४८	
	१६	२०	२८	३९	४०	२३	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	
	५५	२	१०	१७	२४	३१	३८	४६	५३	०	७	१५	२३	३०	३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	
	४२	५०	५८	५	१२	१९	२६	३४	४१	४८	५५	२	१०	१७	२४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७		
	३१	३८	४६	५३	०	७	१४	२२	२८	३६	४३	५०	५८	५	१२	
	१५०	१५१	१५२	१५३	१५४	१५५	१५६	१५७	१५८	१५९	१६०	१६१	१६२	१६३	१६४	ग.प.
	४४	४३	४२	४१	४१	४०	३९	३८	३८	३७	३६	३५	३४	३४	३३	३०
	१८	३९	४४	५७	१०	२४	३७	५०	३	१६	३०	४३	५६	९	४२	५०
	०	१३	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८	
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	०	१	२	३	३	४	५	६	७	७	८	९	१०	१०	११	
	४७	३४	२०	७	५४	४१	२८	१४	१	४८	३५	२३	८	५५	४२	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१२	१३	१४	१५	१५	१६	१७	१७	१८	१९	२०	२१	२१	२२	२३	
	२९	१६	२	४९	३६	२३	१०	५६	४३	३०	१७	४	५०	३७	२४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२४	२४	२५	२६	२७	२८	२८	२९	३०	३१	३१	३२	३३	३४	३५	
	११	५८	४४	३२	१८	५	४२	३८	२५	१२	५९	४६	३२	१९	६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४०	४१	४२	४३	४३	४४	४५	४६	४६	
	५३	४०	२६	१३	०	४७	३४	२०	०	५४	४१	२८	१५	०	४८	

शु.क्र.
७
१२

शु.क्र.
३
४८

(१९६)

दैवज्ञ विनोद-

शुक्र शीघ्रफल सारिणी

शु.क्र.
१३०
२६

अं.को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	ग.फ.
फ.	३३ ३६ ०	३० २५ १५	२८ १५ १२	२६ ४ १८	२३ ५४ २४	२१ ४४ ०	२० ४४ ५३	१७ २३ १२	१५ १२ ४८	१३ २ २४	१० ५९ ०	८ ४१ ३६	६ ३१ ३२	४ २० ४८	२ १० २४	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क.	२ १०	४ २३	५ ३१	६ ४२	१० ५२	१३ ५२	१५ ५३	१७ २३	१९ ३४	२१ ४४	२३ ५४	२६ ५	२८ १५	३० २६	३२ ३६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३४ ४६	३६ ५७	३९ ७	४१ १८	४३ २८	४५ ३८	४७ ४९	४९ ५९	५१ ७०	५३ ८०	५६ ९०	५८ १०	५९ ५१	६१ २	६५ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	६७ २२	६९ ३३	७१ ४३	७३ ५४	७६ ६	७८ १४	८० २५	८२ ३५	८४ ४५	८६ ५६	८९ ६	९१ १७	९३ २७	९५ ३८	९७ ४८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	२९ ५८	१०२ ९	१०४ १९	१०६ २०	१०८ ४०	११० ५०	११२ १	११५ ११	११७ २२	११७ ३२	१२१ ४२	१२३ ५३	१२६ ३	१२८ १४	१३० २८	

अंत्यांक फल सारिणी.

शु.क्र.
२०

अं.को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	ग.फ.
	० ०	० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	३ ०	३ ४०	१ ०	१ २०	१ ०	० ४०	० २०	
थ	थ	थ	थ	थ	थ	थ	थ	थ	क	क	क	क	क	क	क	
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	० २०	० ४०	१ ०	१ २०	१ ४०	२ ०	२ २०	३ ०	३ ४०	३ ०	३ ४०	४ ०	४ २०	४ ४०	५ ०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	५ २०	५ ४०	६ ०	६ २०	६ ४०	७ ०	७ २०	७ ४०	८ ०	८ २०	८ ४०	९ ०	९ २०	९ ४०	१० ०	
	३६	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१० २०	१० ४०	११ ०	११ २०	११ ४०	१२ ०	१२ २०	१२ ४०	१३ ०	१३ २०	१३ ४०	१४ ०	१४ २०	१४ ४०	१५ ०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१५ २०	१५ ४०	१६ ०	१६ २०	१६ ४०	१७ ०	१७ २०	१७ ४०	१८ ०	१८ २०	१८ ४०	१९ ०	१९ २०	१९ ४०	२० ०	

अंत्यांक गति फल सारिणी.

अ. को.	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	१८०
क	६ ८ ५	२ ४८ ५	० ३२ ५	३ ५२ ५	७ ६२ ५	१० ३२ ५	१३ ५२ ५	१७ ३२ ५	२० ३२ ५	२३ ५२ ५	२७ ३२ ५	३० ३२ ५	३३ ५२ ५	३७ ३२ ५	४० ३२ ५	४३ ५२ ५
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
	५३	५७	०	३	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३७	४०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
	४३	४७	५०	५३	५७	०	३	७	१०	१३	१७	२०	२३	२७	३०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	२	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	
	३३	३७	४०	४३	४७	५०	५३	५७	०	३	७	१०	१३	१७	२०	

सु.घ.
२०
५२
५३

शुक्र मंद फल सारिणी.

अ. को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गफ
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	२
क.	०	२	४	७	९	१२	१४	१६	१९	२१	२४	२६	२८	३१	३३	२४
क.	०	२४	४८	६२	७६	०	२४	४८	६२	७६	०	२४	४८	६२	७६	
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	२	५	७	१०	१२	१४	१७	१९	२२	२४	२६	२९	३१	३४	३६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	३८	४१	४३	४५	४८	५०	५३	५५	५८	०	२	५	७	१०	१२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
	१४	१७	१९	२२	२४	२६	२९	३१	३४	३६	३८	४१	४३	४५	४८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
	५०	५३	५५	५८	०	२	५	७	१०	१२	१४	१७	१९	२२	२४	

सु.घ.
२
२४

शुक्रमंदफल सारिणी.

अं.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.फ.
फ.	१ १८ ०	१ १८ २४	१ १८ ४८	१ १९ १२	१ १९ ३६	१ २० ०	१ २० २४	१ २० ४८	१ २१ १२	१ २१ ३६	१ २२ ०	१ २२ २४	१ २२ ४८	१ २३ १२	१ २३ ३६	० २४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० ६	० १	० १	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	० ५	० ५	० ६	० ६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१८	१८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	
अं.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.फ.
फ.	१ २४ ०	१ २४ २४	१ २४ ४८	१ २५ १२	१ २५ ३६	१ २६ ०	१ २६ २४	१ २६ ४८	१ २७ १२	१ २७ ३६	१ २८ ०	१ २८ २४	१ २८ ४८	१ २९ १२	१ २९ ३६	० २४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० १	० १	० १	० २	० २	० २	० ३	० ३	० ४	० ४	० ४	० ५	० ५	० ६	० ६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११	१२	१२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१८	१८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२२	२२	२३	२३	२४	२४	

गु.घ.
२४
सु.के.
३
०००

गु.घ.
२४

अष्टादश विनोदः १८. 25264 (२०१)

शनि शीघ्र फल सारिणी.

अं.को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग.थ.
फ.	१ ३० ०	१ ३५ १२	१ ४० २४	१ ४५ ३६	१ ५० ४८	१ ५६ ०	२ १ २२	२ ६ २४	२ ११ ३६	२ १६ ४८	२ २२ ०	२ २७ १२	२ ३२ २४	२ ३७ ३६	२ ४२ ४८	७ १२
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४२	० ४७	० ५२	० ५७	१ २	१ ८	१ १३	१ १८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ २३	१ २८	१ ३४	१ ३९	१ ४४	१ ४९	२ ५४	० ५	१ १०	२ १५	२ २०	२ २६	२ ३१	२ ३६	२ ४१	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२ ४१	२ ४६	३ ५१	३ ५६	३ ६	३ ११	३ १६	३ २१	३ २६	३ ३१	३ ३६	३ ४१	३ ४६	३ ५१	३ ५६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३ ५९	४ ६	४ १०	४ १५	४ २०	४ २५	४ ३०	४ ३६	४ ४१	४ ४६	४ ५१	४ ५६	५ २	५ ७	५ १२	
अं.को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग.थ.
फ.	२ ४८ ०	२ ५२ २४	२ ५६ ४८	३ १ १२	३ ५ ३६	३ १० ०	३ १५ २४	३ २० ४८	३ २५ १२	३ ३० ३६	३ ३५ ०	३ ४० २४	३ ४५ ४८	३ ५० १२	३ ५५ ३६	६ २४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० ४	० ९	० १३	० १८	० २२	० २६	० ३०	० ३५	० ४०	० ४६	० ५१	० ५६	१ ५७	१ ६२	१ ६७	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ १०	१ १५	१ २०	१ २५	१ ३०	१ ३५	१ ४०	१ ४५	१ ५०	१ ५५	१ ६०	१ ६५	२ ७०	२ ७५	२ ८०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२ १६	२ २१	२ २६	२ ३०	२ ३६	२ ४१	२ ४६	२ ५१	२ ५६	३ ६१	३ ६६	३ ७१	३ ७६	३ ८१	३ ८६	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३ २२	३ २७	३ ३२	३ ३६	३ ४०	३ ४५	३ ५०	३ ५५	३ ६०	४ ६५	४ ७०	४ ७५	४ ८०	४ ८५	४ ९०	

गु.थ.
५
१२

गु.थ.
४
२४

(२०२)

देवज्ञ विनोद-

ज्ञानि गीघ फल सारिणी.

गु.घ.
३
३६

अ.को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	ग.घ.
फ.	३ ५४ ०	३ ५७ ३६	४ १ ३२	४ ४८	४ २४	४ ०	४ ३६	४ १२	४ ४८	४ २४	४ ०	४ ३६	४ १२	४ ४८	४ २४	५ २६
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	० ४	० ७	० १२	० १४	० १८	० २२	० २५	० २९	० ३२	० ३६	० ४०	० ४३	० ४७	० ५०	० ५४	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	० ५८	१ १	१ ५	१ ८	१ १२	१ १६	१ २०	१ २४	१ २८	१ ३२	१ ३६	१ ४०	१ ४४	१ ४८	१ ५२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
	५२	५५	५९	२	६	१०	१३	१७	२०	२४	२८	३१	३५	३८	४२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	३	
	४६	४९	५३	५६	०	४	७	११	१४	१८	२२	२५	२९	३२	३६	
अ.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.घ.
	४ ४८ ०	४ ५० २४	४ ५२ ४८	४ ५५ ३२	४ ५७ ३६	५ ०	५ २४	५ ४८	५ ७२	५ ९६	५ १२०	५ १४४	५ १६८	५ १९२	५ २१६	४ २४
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	० २	० ५	० ७	० १०	० १२	० १४	० १६	० १९	० २२	० २४	० २६	० २९	० ३०	० ३४	० ३६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ ३८	० ४१	० ४३	० ४५	० ४८	० ५०	० ५३	० ५५	० ५८	१ ०	१ ३	१ ५	१ ७	१ १०	१ १२	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
	१४	१७	१९	२३	२४	२६	२९	३१	३४	३६	३८	३९	४३	४५	४८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
	५०	५३	५५	५८	०	२	५	७	१०	१३	१४	१७	१९	२३	२४	

गु.घ.
२
२६

(२०४)

दैवज्ञ विनोद-

शनिशीघ्रफलसारिणी.

जं.को.	१०५	१०६	१०७	१०८	१०९	११०	१११	११२	११३	११४	११५	११६	११७	११८	११९	ग.प.
क.	५ ४२ ०	५ ४० २५	५ ३८ ४८	५ ३६ १२	५ ३५ ३६	५ ३४ ०	५ ३३ २४	५ ३२ ४८	५ ३१ १२	५ ३० ३६	५ २९ ०	५ २८ २४	५ २७ ४८	५ २६ १२	५ २५ ३६	० २४
क.	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
प.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	२	३	५	६	८	१०	१२	१३	१४	१६	१८	१९	२१	२२	२४	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	२६	२७	२९	३०	३२	३४	३५	३७	३८	४०	४२	४३	४५	४६	४८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	
	५०	५१	५२	५४	५६	५८	५९	१	२	४	६	७	९	१०	१२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	१	२	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
	१४	१५	१७	१८	२०	२२	२३	२५	२६	२८	२९	३१	३३	३४	३६	
	१२०	१२१	१२२	१२३	१२४	१२५	१२६	१२७	१२८	१२९	१३०	१३१	१३२	१३३	१३४	
	५	५	५	५	५	५	४	४	४	४	४	४	४	४	४	१
	१८	१४	११	८	५	२	५८	५५	५२	४९	४६	४२	३९	३६	३३	१२
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२	
	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	
	३	६	१०	१३	१६	१९	२२	२६	२९	३२	३५	३८	४२	४५	४८	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	
	५०	५४	५८	२	४	७	१०	१४	१७	२०	२३	२७	३०	३३	३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	
	३६	४२	४६	४९	५२	५५	५८	२	५	८	११	१४	१८	२१	२४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	२	
	३७	३८	३४	३७	४०	४२	४६	५०	५३	५६	५९	६२	६६	६९	७२	

शु.क.

शु.क.

ज्ञानि शीघ्र फल सारिणी.

अ को	१३५	१३६	१३७	१३८	१३९	१४०	१४१	१४२	१४३	१४४	१४५	१४६	१४७	१४८	१४९	ग.क.
फ	४ ३० ०	४ २७ १२	४ २४ २४	४ २१ ३६	४ १० ४८	४ ६ ०	४ १ १२	३ ५६ २४	३ ५१ ३६	३ ४६ ४८	३ ४२ ०	३ ३७ १२	३ ३३ २४	३ ३० ३६	३ २७ ४८	२ ४८
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
क	० ५	० १०	० १६	० २१	० २६	० ३१	० ३६	० ४१	० ४६	० ५१	० ५६	१ ६१	१ ६६	१ ७१	१ ७६	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१	१	१	१	१	१	०	१	१	२	२	२	२	२	२	
	१७	२२	२६	३०	३६	४१	४६	५०	५५	०	५	९	१४	१९	२४	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३	
	२०	३३	३८	४३	४८	५३	५८	६३	६८	७३	७८	८३	८८	९३	९८	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	५	५	५	५	
	५३	५६	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५	११०	

गु.क.
०.५.४८

गु.क.
०.५.४८

(२०६)

देवड़ा विनोद-

शनिशीघ्रफल सारिणी.

अं को	१६५	१६६	१६७	१६८	१६९	१७०	१७१	१७२	१७३	१७४	१७५	१७६	१७७	१७८	१७९	गण.
फ	१ ४८ ०	१ ४० ४८	१ ३३ ३६	१ २६ २४	१ १९ २२	१ १२ ०	१ ६ ४८	० ५७ ३६	० ५० २४	० ४३ १२	० ३६ ०	० २९ ४८	० २२ २६	० १६ २४	० ९ १२	५ १०
क	१ ०	२ ०	३ ०	४ ०	५ ०	६ ०	७ ०	८ ०	९ १	१० १	११ १	१२ १	१३ १	१४ १	१५ १	
क्र.	७	१६	२२	२९	३६	४३	५०	५८	६५	७२	७९	८६	९३	१००	१०७	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	१ ५५	२ २	३ १०	४ १७	५ २४	६ ३१	७ ३८	८ ४५	९ ५३	१० ०	११ ७	१२ १६	१३ २२	१४ २९	१५ ३६	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	३ ४३	४ ५०	५ ५८	६ ६५	७ ७२	८ ७९	९ ८६	१० ९३	११ १००	१२ १०७	१३ ११४	१४ १२१	१५ १२८	१६ १३५	१७ १४२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	६ ३१	७ ३८	८ ४५	९ ५३	१० ०	११ ७	१२ १६	१३ २२	१४ २९	१५ ३६	१६ ४३	१७ ५०	१८ ५८	१९ ६५	२० ७२	

शनिमंदफल सारिणी

अ को	०	१०	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	गण
फ	० ० ०	० ७ २६	० १५ १२	० २२ ४८	० ३० २४	० ३८ ०	० ४५ ३६	० ५३ १२	१ ६८ ४८	१ ७६ २४	१ ८५ ०	१ ९४ ३६	१ १०३ १२	१ ११२ ४८	१ १२१ २४	० १५
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
घ.	८	१५	२३	३०	३८	४६	५३	६१	६९	७७	८५	९३	१०१	१०९	११७	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ २	३ ९	४ १७	५ २६	६ ३२	७ ४०	८ ४७	९ ५५	१० ६२	११ ७०	१२ ७८	१३ ८६	१४ ९३	१५ १०१	१६ १०८	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	३ ५६	४ ६३	५ ७०	६ ७७	७ ८४	८ ९१	९ ९८	१० १०५	११ ११२	१२ ११९	१३ १२६	१४ १३३	१५ १४०	१६ १४७	१७ १५४	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	६ ५०	७ ५७	८ ६५	९ ७२	१० ७९	११ ८६	१२ ९३	१३ १००	१४ १०७	१५ ११४	१६ १२१	१७ १२८	१८ १३५	१९ १४२	२० १४९	

कुम्भ
१२गुध
३६
सके
०००८

शनि मंद फल सारिणी.

अ का	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	ग फ
फ	१ ५४ ०	२ २ २४	३ १० ४८	४ १९ १२	५ २७ ३६	६ ३६ ०	७ ४४ २४	८ ५२ ४८	९ ६० १२	१० ६९ ३६	११ ७८ ०	१२ ८६ २४	१३ ९५ ४८	१४ १०४ १२	१५ ११३ ३६	० १७ ३६
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध	० ८	० १७	० २५	० ३२	० ४२	० ५०	० ५९	१ ६	१ १६	१ २४	१ ३२	१ ४१	१ ५१	१ ६१	२ ७०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ १४	२ २३	२ ३१	२ ४०	२ ४८	२ ५७	३ ६५	३ ७३	३ ८२	३ ९०	३ ९९	३ १०७	३ ११६	४ १२५	४ १३३	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	४ २०	४ २९	४ ३७	४ ४६	४ ५४	५ ६२	५ ७१	५ ८०	५ ८९	५ ९८	५ १०७	५ ११६	६ १२५	६ १३३	६ १४२	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	६ २६	६ ३५	६ ४३	६ ५२	७ ६०	७ ६९	७ ७८	७ ८७	७ ९६	७ १०५	७ ११४	७ १२३	८ १३२	८ १४१	८ १५०	
अ को	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	ग फ
फ	४ ० ०	४ ८ ०	४ १६ ०	४ २४ ०	४ ३२ ०	४ ४० ०	४ ४८ ०	५ ५६ ०	५ ६४ ०	५ ७२ ०	५ ८० ०	५ ८८ ०	५ ९६ ०	५ १०४ ०	५ ११२ ०	० १६ ३६
क	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	
ध	० ८	० १६	० २४	० ३२	० ४०	० ४८	० ५६	१ ६४	१ ७२	१ ८०	१ ८८	१ ९६	१ १०४	१ ११२	२ १२०	
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
	२ ८	२ १६	२ २४	२ ३२	२ ४०	२ ४८	३ ५६	३ ६४	३ ७२	३ ८०	३ ८८	३ ९६	३ १०४	४ ११२	४ १२०	
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	
	४ ८	४ १६	४ २४	४ ३२	४ ४०	४ ४८	५ ५६	५ ६४	५ ७२	५ ८०	५ ८८	५ ९६	५ १०४	६ ११२	६ १२०	
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	
	६ ८	६ १६	६ २४	६ ३२	६ ४०	६ ४८	७ ५६	७ ६४	७ ७२	७ ८०	७ ८८	७ ९६	८ १०४	८ ११२	८ १२०	

शु ध
२४
मु के

शु ध
२४
मु के

(२०८)

द्वैत विनोद-

शनि मंद, फल सारिणी.

अ.को	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	ग.फ.
क.	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७	७	१३
क.	०	०	३३	३४	३२	०	४०	३६	३५	३२	०	४०	३६	३५	३२		
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	
	७	१४	२०	२७	३४	४१	४८	५४	६१	६८	७५	८२	८९	९६	१०३		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	-	
	१	१	२	२	३	३	३	०	३	३	३	३	३	३	३	३	-
	४९	५६	६३	६९	७६	८३	९०	९६	१०३	११०	११७	१२४	१३१	१३८	१४५		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५		
	३१	३०	४४	५१	५८	६५	७२	७९	८६	९३	१००	१०७	११४	१२१	१२८		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	५	५	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६		
	१३	२०	२६	३३	४०	४७	५४	६१	६८	७५	८२	८९	९६	१०३	११०		
अ.को.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९	७०	७१	७२	७३	७४	ग.फ.	
क.	७	७	७	७	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	८	०	
क.	०	०	३६	३६	३२	०	४०	३६	३५	३२	०	४०	३६	३५	३२		
घ	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१		
	५	१०	१४	१९	२४	२९	३४	३९	४४	४९	५४	५९	६४	६९	७४		
	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०		
	१	१	१	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२		
	१७	२२	२७	३१	३६	४१	४६	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५		
	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५		
	२	२	२	२	२	२	२	३	३	३	३	३	३	३	३		
	२९	३३	३८	४२	४६	५०	५४	५८	६२	६६	७०	७४	७८	८२	८६		
	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०		
	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४		
	४१	४६	५०	५५	६०	६५	७०	७५	८०	८५	९०	९५	१००	१०५			



अथ ग्रहके नक्षत्र और राशिचार करनेकी विधि:—अवधिरथ ग्रहका और अभीष्ट राशि नक्षत्रपर लानाहो जिसका अंतर करके गतिके भागसे लब्ध जो अंशादिफल आवें सो गत होवें तो ऋण. गम्य होवे तो धन किये ग्रहका राश्यादिचार होताहै. अथ चन्द्रग्रहणके जाननेकी विधि:—इस चंद्रग्रहणमें पृथ्वीकी छाया चन्द्रबिंबको आच्छादन करती है और चंद्रपातके बिना बिलकुल ग्रहण सिद्ध नहीं होसका और वही चन्द्रपातका नाम राहु है. जब राहु और चन्द्रमा एक राशिका वा सात राशिके अंतरसे हों और पूर्णिमा रात्रितक बनी रहें तब पृथ्वीकी छायामें राहु मिलके आच्छादन करनेसे चन्द्रग्रहणका संभव है. जिसके लिये पूर्णिमांतके इष्टपै राहु और सूर्य चन्द्रमा स्पष्ट करके फिर सूर्य चंद्रसे शुद्ध तिथि घटी पूर्वोक्त विधिसे स्पष्ट करके पूर्णिमांत घटी शुद्ध करनेसे ग्रहणका मध्य काल होता है. फिर राहुको सूर्यमें हीन करे व्यगु कहलाताहै. उसका उक्त विधिसे भुजांश बनावे वह १४ अंशोंसे अल्प होय तो अवश्य चन्द्रग्रहणका संभव है. नहीं तो नहीं है. अथ शर साधनेकी विधि:—व्यगुके भुजांग नीचे सारिणी कोष्ठकमें स्पष्ट शर कलादि लेके उसको व्यगु भेपादिमें उत्तर संज्ञक और तुलादिमें दक्षिणशर सगज्ञना चाहिये. अथ विभ्वसाधनविधि:—पंचांगमें तिथि गतैष्य घटीका योग सारिणीके कोष्ठक सूत्रमें चन्द्रबिंब और भूभाबिंब स्पष्ट होते हैं. अथ ग्रास लानेकी विधि:—चन्द्रबिंब और भूभाबिंबको जोड़के उसको आधा करके इसमें उक्त शरको हीन किये ग्रास होता है. शर उत्तरसंज्ञक हो तो ग्रास दक्षिणसंज्ञक और दक्षिण शर हो तो ग्रास उत्तरसंज्ञक समज्ञना चाहिये. यदि शर ग्राससे ज्यादा होय तो ग्रहण नहीं होताहै. अथ खग्रास लानेकी विधि:—चंद्रबिंबसे जिनना अधिक ग्रास आवे उतनाही खग्रास अर्थात् चंद्रबिंब ग्रासके आकारा ग्रासित होताहै. और चंद्रबिंबसे जिनना ग्रास कमती हो उतनाही ग्रहण कमती होताहै. अथ विश्वा लानेकी विधि:—ग्रामको २० से

गुणके उसके चंद्रबिंबके भागसे लब्ध आवे तो विश्वा ममदना चाहिये अथ स्पर्शमोक्षकी स्थिति घटीके लानेकी विधि:—ग्रासके अंक नीचे सारिणीमें स्थिति घटी लेके फिर व्यगृ भुजांशको दूना करके उसको पल समझके मेपादि व्यगुमें हो तो उक्त स्थिति घटीमें पूर्वाक्त पलोंको युक्त और तुलादि व्यगुके कारण ऋण किये स्थिति घटी स्पष्ट होनी है. इन्होंको मध्यकालमें हीनकिये ग्रहणका स्पर्शकाल और युक्त किये मांशकाल होताहै.

अथ ग्रहणके परिलेख (किस कोणसे स्पर्श और किस कोणसे मोक्षके जाननेकी विधि:—ग्रास उत्तर हो तो चंद्रग्रहण ईशानकोणसे स्पर्श और नैऋतसे मोक्ष होताहै और दक्षिण ग्रास होनेसे अग्रिकोणसे स्पर्श और वायव्यसे मोक्ष होताहै. इति चंद्रग्रहणसाधनविधि: ।

अथ सूर्यग्रहण स्पष्ट करनेकी विधि:—पंचांगमें जितनी घटी पल अमावास्याहो उसी इष्टऊपर सूर्य चंद्र और राहु स्पष्ट करना पीछे सूर्य चंद्रसे तिथि घटी लेके अमावस्याकी घटी स्पष्ट हो उसी इष्ट ऊपर सूर्य चंद्रसमान राश्यादि कर लेना चाहिये. अथ ग्रहणसंभव जाननेकी विधि:—सूर्यमें राहुको हीनकिये व्यगु कहलाता है. उक्त व्यगुका १४ भुजांशसे कमहुए उत्तरगोली व्यगुमें सूर्यग्रहण होता है. और याम्य गोली व्यगुमें ८ भुजांशसे कम हुएसे सूर्यग्रहणका संभव है नहीं तो नहीं है. अथ नत लानेकी विधि:—पर्वतको दिनार्द्धमें हीन किये तो पूर्वनत और दिनार्ध पर्वतमें हीन

१२विके ऊपर चंद्रमास्य छाया जितनी बार रहै उसीका नाम सूर्यग्रहण है. उक्त ग्रहण की सिद्धि चंद्रपातसे है. और चंद्रपातका नाम ही राहु है. जो चंद्रबिंबकी छायामें राहु मिलके पर्व आवे तब मालाके बरदानसे सूर्यको आच्छादन करता है. इसका प्रमाण ऋग्वेदकी संहिताके चौथे अष्टक में है "यं वै सूर्यं स्वर्भानुस्तमसाविष्यदासुराः। अत्रयस्तमन्वाविन्दब्रह्मान्ये अशशुष्व" इत्यमत्रसे सूर्य गूँष वा पश्चिमको चंद्रमाका जितना अंतरहै उसीका नाम लंबनहै. और सूर्यसे उत्तर दक्षिण चंद्रमाका अंतर है उसीका नाम नति है उक्त दोनों संस्कार सूर्यग्रहणमें ही देना होताहै. चंद्रग्रहणमें ही देना पडता. क्योंकि चंद्रग्रहणमें चंद्रकक्षापरही छाया रहतीहै. और सूर्यग्रहणमें चंद्रमा सूर्यमें कुछ डेटा दृष्टिगत होताहै जिस कारणसे लंबन और नति संस्कार दिनेसे दृक्सूत्रमें बरोबर शुद्ध आवेगा मही तो अंतर रह जायगा.

हुयेपर नत कहलाता है. अथ लंबन लानेकी विधिः—नतको ४ से गुणके फिर दिनार्द्धके भागसे लब्ध घट्यादि लंबन लेके पूर्वनत हो जब तो उक्त लंबनको अमांतकी घटी पलोंमें ऋण और पश्चिम नत हो जब धन किये ग्रहणका मध्यकाल होता है. अथ शरलानेकी विधिः—उक्त लंबनको १३ से गुणनेसे कलादि फलको व्यगुमें लंबन धन हो तो धन और ऋण हो तो ऋण करके फिर इसी व्यगुके भुजांश तुल्य शरसाधनसारिणीमें अंगुलादि शर होता है. व्यगु मेपादि हो तो उत्तर और तुलादि हो तो दक्षिणसंज्ञक शर समझना चाहिये. अथ नति और शुद्धशर लानेकी विधिः—नतके चारके भागसे लब्ध राश्यादि चार अंक लेके सायन सूर्यमें नत पूर्व हो तो ऋण और पश्चिमनत हो तो धन करके नतिसारिणीमें जो राशि अंश नजदीक हों उसीसे न्यून कोष्ठक की नति लेनी फिर निजकोष्ठक का अगले कोष्ठक से अंतर करे उसको सारिणीमें नतसंस्कृत सायन सूर्य राशि अंश है सो और निजनतसंस्कृत सायन सूर्यके अंतरांक से गुणके १५के भागसे लब्ध अंगुलादि दो अंक लेना फिर निज कोष्ठक की नतिसे अग्रिम कोष्ठक की नति न्यून हो तो निजनतिमें हीन और अधिक हो तो धन करदेनेसे सदैव दक्षिण नति स्पष्ट होती है यह नति केवल दिष्टीप्रांतकी समझनी चाहिये और देशकी भिन्न भिन्न नति होती है जिसकारण सूर्यका ग्रहण देशभेदसे कहीं कम कहीं विशेष कहीं पूर्णप्राप्त कहीं शुद्ध रूपसे दर्शन देता है उक्त नति को दक्षिणशरमें धन और उत्तरशरमें ऋण किये शुद्धशर होताहै ।

अथ विंब और मानैक्य खंडके लानेकी विधिः—सूर्यराश्यादि कोष्ठक नीचे सारिणीमें सूर्यविंब लेना और चंद्रविंब पृर्वोक्त सारिणीसे लब्ध लेके सूर्यविंबमें जोडके उसको आधा करनेसे मानैक्य खंड होताहै अथ ग्रासलानेकी विधि—मानैक्य खंडमें शुद्ध शर हीनकिये जिस दिशाको शरहो उसी दिशाका प्राप्त समझना चाहिये यदि मानैक्यखंडमें शर नहीं हीन होवे तो ग्रहण नहीं दास्तेगा ऐसा समझना चाहिये अथ स्थितिघटी और मध्यम मानके स्पर्श-

काललानेकी विधि:-अंगुलादि ग्रासके नीचेसारिणीमें स्थिति घटी लेके इसको मध्यकालमें हीन कियेसे स्पर्शकाल और युक्तकियेसे मोक्षकाल मध्यमानके होतेहैं अथ शुद्ध स्पर्श काल और मोक्षकाल लानेकी विधि:-मध्यम मानके स्पर्शकालकी नत बनावेके पूर्वोक्त विधिसे लंबन करना इसको स्पार्शिक लंबन कहतेहैं और मध्यम मानकी मोक्षघटीको नत बनावेके उससे लंबन पूर्वोक्त विधिसे आताहै वह मौक्षिक लंबन कहलाताहै इसको उक्त विधिसे मध्यम स्पर्शकाल और मोक्षकालके संस्कार देनेसे स्पर्शकाल और मोक्षकाल शुद्ध होताहै अथ विश्वा लानेकी विधि-ग्रासको २० से गुणके सूर्यबिंबके भागसे लब्धांकको विश्वा समझना चाहिये अथ ग्रहणपरिलेख करनेकी विधि:-उत्तर ग्रास होवे तो सूर्यबिंब वायव्यसे स्पर्श होके और अग्निसे मोक्ष होताहै और दक्षिण ग्रास होवे तो नैऋतसे स्पर्श होके ईशान दिशासे मोक्ष होताहै यदि १ अंगुलसे ग्रास कमती होवे तो सूर्य चंद्र ग्रहण दीखना मुष्किल है और इन चंद्र और सूर्यग्रहणादि गणित विषयकी सारिणी है जिसमें कथित अंकसे न्यूनाधिक होवे तो उसके पूर्वोक्त त्रैराशिक गणित देलेना चाहिये.

इति भीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभापाविभूषिते चंद्रसूर्यग्रहणगणित-
विधिकथनं नाम एकोनविंशतितमविनोदः ॥ १९ ॥

अथ शुक्रोदयास्तके साधनकी विधि:-शुक्रके उदयास्त स्पष्ट करनेमें प्रथम शीघ्रकर्ण चाहिये. जिसकेलिये शीघ्रकर्ण बनानेकी विधि लिखतेहैं. इसी शीघ्रकर्णसाधनका १ । २ । ३ । ४ । ४ । २ इतने खंडहैं. सो द्वि-शीघ्रकेंद्र शुक्र ६ राशिसे अधिक होवे जब वारामें शोधना नहीं तो है सोही राशितुल्य उक्त शीघ्रखंडको अलग रखके फिर अधस्थ अंशादिकों को ऐष्य खंडसे गुणके ३० भागसे लब्ध तीन अंक लेके पूर्वोक्त खंडमें जोडके फिर १९ में शोधनकिये शुक्रका शीघ्रकर्ण होताहै. अथ शरसाधनम् । शुक्र-पात राश्यादि २ । ० । ० । ० में प्रथम शीघ्र केंद्रको हीनकिये से राश्यादि

स्पष्टपात होताहै. इसको फिर मंद स्पष्ट शुक्रमें हीनकिये राश्यादिपातोनकेंद्र होताहै इसका भुजांश बनाके क्रांतिसारिणीसे क्रांति लेनी चाहिये फिर क्रांति को २३ से गुणके शीघ्र कर्णके भागसे लब्ध आवे सो अंगुलादि शर कहलाताहै. उक्त शर पातोन द्विशीघ्रकेंद्र मेपादि हो तो उत्तर तुलादि हो तो दक्षिणसंज्ञक समझनाचाहिये. अथ नतांशसाधनविधिः—स्पष्ट शुक्रमें तीनराशि हीन और पश्चिमोदयास्त स्पष्ट शुक्रमें तीन राशि युक्त करके फिर अयनांशा युक्त करना फिर क्रांतिसारिणीसे क्रांति साधन करके याम्याक्षांशा रामगढका २७ । १० या और शहरोंका अमुक अक्षांश हीन युक्त कर देना चाहिये यहां मेपादि सायन रविसे उत्तर क्रांति और तुलादि रविसे दक्षिण क्रांति कहलातीहै और अक्षांश तो हमेशाही दक्षिणसंज्ञक है. जब क्रांति और अक्षांशोंकी एक जाति अर्थात् दक्षिणक्रांति होय तो युक्त और उत्तर क्रांति अर्थात् भिन्न जातिके कारण हीनकिये दक्षिणसंज्ञक नतांशा सदैव होताहै.

अथ दृक्कर्मसाधनविधिः—नतांशके १० के भागसे लब्ध आवे जिसको दृक्कर्मसंज्ञकांक कहना चाहिये वह दृक्कर्मज खंड ६ । ७ । ८ । ९ । १२ । १८ इतना होताहै. उक्त भागसे लब्धांक तुल्य दृक्कर्मज खंडांकको अलग रखके फिर ऐप्य खंडांकसे दशहत् शेष कलादिकों को गुणके फिर १० के भागसे लब्ध कलादि दृक्कर्म लेके नतांश और शरकी एक दिशाके कारण पूर्वोदय साधनोपयोगी स्पष्ट शुक्रमें धन और भिन्नदिशाके कारण हीन करना चाहिये और पश्चिमोदयास्त उपयोगी स्पष्ट शुक्रमें नतांश और शरकी एक एक दिशाके कारण हीन और भिन्न दिशाके कारण युक्त करनेसे दृक्कर्मदत्त स्पष्ट शुक्र होताहै. अथ इष्टकालांश लानेकी विधिः—एक जगह सूर्य स्पष्ट और दूसरी जगह दृक्कर्मदत्त शुक्र धरके इन दोनोंमें अधिक हो उसीको लग्न और कमहो जिसको सूर्य कल्पना करना. उक्त दोनोंमें अयनांश जोडके फिर पूर्वोदयास्त साधन करना हो तो हे जमाही और पश्चिमोदयास्त साधन-

विधि में ६ राशि और दोनोंमें युक्त करके फिर दोनोंका अंतर करना फिर जिसको लग्न कल्पित किया उसीकी राशि तुल्य स्वदेशी लग्नमानसे इस अंतरको गुणके ३० के भागसे लग्न कलादि लेके उसका ६० के भागसे अंशादि करके फिर ६ से गुणे इष्टकालांशा होताहै. अथ स्पष्टकालांशा लानेकी विधि:—उक्त सायन स्पष्ट शुक्र जो कि, पूर्वोदयास्त साधन में है जैसा और पश्चिमोदयास्त साधन में सपङ्के तुल्य लग्नमानको और ३०० पलोंको अंतर करके २७ के भागसे लग्न अंक तीन लेना उक्त ३०० पलोंसे लग्नमान यदि कम हो तो ऋण और अधिक हो तो धनसंज्ञक फल समझके दृक्कर्म में धन ऋण करदेना दोनों धन धन हों तो धन और ऋण ऋण हों तो धन और एक ऋण और एक धन ऋण हो तो अंतर करके फिर ५ के भागसे लग्न कलादि धन फल अधिक हो तो स्थूलकालांशा ९ में धन और ऋण फल अधिकके कारण स्थूल कालांशोंमें ऋणकिये स्पष्ट कालांशा होताहै. अथ उदयास्तके गतगम्यदिन जाननेकी विधि:—स्पष्टकालांशासे इष्टकालांशा अधिक हो तो शुक्रोदय होचुका और कम हो तो शुक्रोदय आगे होवेगा अथ अभीष्ट दिनादि लानेकी विधि:—इष्टकालांशा और स्पष्टकालांशका अंतर फिर उसकी कला करके उसको ३०० से गुणके उक्त सायन सूर्य पूर्वोक्तकी राशितुल्य लग्न मानके भागसे लग्न लेके शुक्र रविका गत्यंतर करके यदिवा शुक्र वक्री हो तो उक्त दोनों गतियोंके योगके भागसे लग्न दिनादिफल आवें सो उक्त विधिसे ऋणधनकिये शुक्रका स्पष्ट उदयास्त होताहै क्योंकि विवाहादिकामोंमें शुक्रके उदयास्तकी आवश्यकता जियादा रहनेके कारण इसका स्पष्टतर गणित यहां लिखागया बाकी और ग्रहोंका उदयास्त स्थूलमान (शीघ्रांश) से पहले लिखाही है और सूक्ष्म उदयास्तादि उनका भी जानना हो तो वे सूर्यसिद्धांत तुल्य उनका गणित करलिया जावे इति शुक्रोदयास्तके साधन विधि अथ अगस्त्यमुनिके उदयास्तके साधन की

विधिः—पलभाको ८ से गुणके ७८ में हीन किये शेष रहें उसके ३० के भागसे लब्ध रविकी राशि और शेष बचे सो अंश तुल्य अगस्त्यका अस्त होताहै फिर उक्त पलभाको ८ से गुणके फिर ७८ में युक्त करके ३० के भागसे लब्ध रविकी राशि और शेष अंश प्रमाण अगस्त्यका उदय होताहै अथ सुगमरीतिसे प्रभवादिसंवत्सर प्रवेश करनेकी विधिः—गत संवत्के पंचांगमें जिस इष्ट ऊपर संवत्सर प्रवेशहै उसी इष्टका सूर्य स्पष्ट करके फिर उसमें ४। १३। ५५। १९ यह अंक हीन किये संवत्सर प्रवेश समयका सूर्य स्पष्ट होताहै फिर वह सूर्यसे इष्ट घटीकोष्टेष्ट सूर्यविवमित्यादिना गणित लेके वर्तमान संवत्सर प्रवेशका इष्ट करलेना चाहिये.

अथ रोहिणी ऊपर ग्रहवेध करे वा नहीं जिसके जाननेकी विधिः—राहु जब पुनर्वसुनक्षत्र आदि ८ नक्षत्र ऊपर रहै तब वृषभाका १७ अंश ऊपर चन्द्रमाका शर ५० अंगुलसे ऊंचा होनेसे चन्द्रमा रोहिणीको निश्चय वेधता है बाकी और ग्रहोंका शर न्यूनही रहजानेके कारण नहीं वेध सके जो कभी कोई युगान्तर में वेधा होयगा तो आश्चर्य नहीं क्योंकि बिना कुछ वेध किये बिना तो शनैश्वरका और दशरथका युद्ध क्यों होता और उनकी कथा कैसे संसारमें चलती. परंच इस समयमें तो वह बात देखनेमें नहीं आती है. अथ सप्तऋषियोंके स्पष्ट जाननेकी विधिः—संवत् १९४९ वैक्रमीयमें सप्तऋषियोंका स्पष्ट राश्यादि ५। २०। ४०। ० यह हुये इन्होंके प्रतिवर्षके स्पष्ट करनेमें ८ कला धन करदेनी. चाहिये क्योंकि जिस समय राजा युधिष्ठिर राज्य करताथा उस समयमें सप्त ऋषियोंकी मघानक्षत्र ऊपर स्थिति थी इस समयमें हस्त नक्षत्र ऊपर उक्त ऋषि महाराज निवास करते हैं. अथ सारिणीसे लग्न स्पष्ट करनेकी विधिः—स्वदेशी लग्नसारिणीमें सूर्य स्पष्टके अंशतुल्य कोष्ठकमें इष्ट युक्त करनेसे जो अंक उत्पन्नहो उससे एक कोष्ठक कमती के तुल्य उस लग्नका अंश लेना फिर स्पष्ट सूर्यकी कला विकला इस लग्नके नीचे रखनी चाहिये. और सारिणीमें

लग्नके अंशतुल्य कोष्ठकका और पूर्वानीत अंकका अंतर करके और दोनों पार्श्वोत्तरके अंकके भागसे लब्ध अंशादि तीन अंक लेके पूर्वोक्त लग्नके अंशादिकों में युक्त करनेसे ग्रहलाघवके गणिततुल्य शुद्ध लग्न स्पष्ट होता है. अथ दशम और चतुर्थके साधनोपयोगी नत बनानेकी विधि:—अर्धरात्रिसे मध्याह्नके पहिले अपनी इष्टघटीपर्यंतके समयका नाम पूर्वनत है. और मध्याह्नसे अर्धरात्रिसे पहले जो इष्टसमय है उसीको पश्चिम नत समझ लेना यदि पूर्वनत हो तो ३० से जरूर शुद्ध करलेना चाहिये फिर दशम चतुर्थ सारिणीमें पूर्वोक्त लग्न स्पष्ट विधिके तुल्यही संस्कार देनेसे दशम वा चतुर्थ लग्न स्पष्ट होताहै.

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभापाविभूपिते उदयास्तादि-

वर्णनं नाम विंशतितमविनोदः ॥ २० ॥

व्यगुभुजभागात् शरसारिणीअंगुलादि.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
१	३	४	६	७	९	११	१२	१४	१५	१७	१८	२०	२२
३४	८	४३	१७	५१	२६	०	३४	८	४३	१७	५१	२६	०

तिथिसारिणीगतैष्ययोगेचंद्रभूभाविंव.

५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९	६०	६१	६२	६३	६४	६५	तिथिगतैष्ययोगानाम्
११	११	११	११	१०	१०	१०	१०	१०	९	९	९	९	चंद्रविंव.
४८	३५	२२	११	५९	४८	३८	२८	१८	८	५९	४९	४१	भूभाविंव.
२९	२९	२८	२८	२७	२७	२६	२६	२६	२५	२५	२४	२४	मानैक्यखंड.
४९	१७	४६	१६	४८	२०	५३	३६	३	३६	१७	५१	१८	
२०	२०	२०	१९	१९	१९	१८	१८	१८	१७	१७	१७	१७	
४९	२६	४	४४	२४	४	४६	३२	१०	५३	३६	१०	४	

चंद्रग्रहणे त्रासोपरिघटीसारिणीस्थिति.

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	
१	१	१	१	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४	४
३७	०	१७	४८	३	१८	३०	४२	५३	१	९	१५	११	१७	३३	३६	४०	४०	४०	४०	४०	

लग्नसारिणी अयनांशा २३ अक्षप्रभा ६ । १२ चरखंडा ६२ । ४१। २० अक्षांशाः २७ । १०

राश्याः	० १	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०
० मेष	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०	
१ मृगश	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०					
२ मिथुन	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०										
३ कर्क	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०														
४ सिंह	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०																			
५ कन्या	२४	२५	२६	२७	२८	२९	३०																							
६ तुला	२८	२९	३०																											
७ धनुष	३०																													
८ मकर																														
९ मकर																														
१० कुंभ																														
११ मीन																														

सु.भा.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९
श्र	०	०	०	१	१	२	२	२	३	३
ध.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	१	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	०	२४	४८	१२	३५	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११
	१०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	१८	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६

क्रांतिसाधनसारिणी.

सु.भा.	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९
अं.	४	४	४	५	५	६	६	६	७	७
क.	०	२४	४८	२२	३६	०	२४	४८	१२	३६
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	६	६	६	७	७	८	८	८	९	९	१०	१०	१०	११	११
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	१८	१८	१८	१९	१९	२०	२०	२०	२१	२१	२२	२२	२२	२३	२३
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६

क्रांतिसारिणी.

भु. अ.	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
अ.	८	८	८	९	९	९	१०	१०	१०	११
क.	०	२२	४४	६	२८	५१	१३	३५	५७	१९
क.	०	१२	२४	३६	४८	०	१२	२४	३६	४८

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	२	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५
ध.	०	२२	४४	६	२८	५१	१३	३५	५७	१९	४२	४	२६	४८	१०
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	५	५	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९	१०	१०
ध.	३३	५१	१७	३९	१	२४	४६	८	३०	५२	१५	३७	५९	२१	४३
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१६
ध.	६	२८	५०	१२	३४	५७	१९	४१	३	२५	४८	१०	३२	५४	५६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१९	१९	१९	२०	२०	२१	२१	२१	२१
ध.	३९	१	२३	४५	७	३०	५२	१४	३६	५८	२९	४३	५	२७	५९

क्रांतिसारिणी.

भु. अ.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९
अ.	१३	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४
क.	४२	२	२२	४३	३	२४	४४	४	२५	२५
क.	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	४	४	४	५
ध.	०	२०	४०	२	२२	४२	२	२२	४३	३	२४	४४	४	२५	४५
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	५	५	५	६	६	६	७	७	७	८	८	८	९	९	९
ध.	६	२६	४६	७	२७	४८	८	२८	४९	९	३०	५०	११	३१	५१
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१४	१४	१४
ध.	१२	३२	५२	३४	३४	५५	१६	३६	५६	१६	३७	५७	१७	३८	५८
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१५	१५	१५	१६	१६	१७	१७	१७	१८	१८	१८	१९	१९	१९	२०
ध.	३९	३९	५९	२०	४०	१	२१	४१	०	३२	४१	३	२३	४४	४

(२२४)

द्वैजविनोद-

क्रांतिसारिणी.

मु. अ.	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९
अ.	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१६	१७	१७	१७
क.	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८
	०	०	०	०	०	०	०	१०	०	०

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	१	१	१	२	२	२	३	३	३	३	४
ध.	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	४	४	५	५	५	६	६	६	६	७	७	७	८	८	९
ध.	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	९	९	९	९	१०	१०	१०	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३
ध.	०	१८	३६	५४	१२	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१३	१३	१४	१४	१४	१५	१५	१५	१५	१६	१६	१६	१७	१७	१७
ध.	३०	४८	६	२४	४२	०	१८	३६	५४	१२	३८	४८	६	२४	४२

क्रांतिसारिणी.

मु. अ.	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
अ.	१८	१८	१८	१८	१९	१९	१९	१९	२०	२०
क.	६	२२	३६	५१	६	२१	३६	५१	६	२१
	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३
ध.	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	३	४	४	४	४	५	५	५	५	६	६	६	६	७	७
ध.	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११
ध.	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	११	११	११	१२	१२	१२	१२	१३	१३	१३	१३	१४	१४	१४	१४
ध.	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५	०	१५	३०	४५

क्रांतिसारिणी.

मु. अ.	६०	६१	६२	६३	६४	६५	६६	६७	६८	६९
अ.	२०	२०	२०	२१	२१	२१	२१	२१	२२	२२
क.	३६	४६	५७	८	१९	३०	४०	५१	२	१३
	०	४८	३६	२४	१२	०	४८	३६	२४	१२

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११	१३	१४
क.	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१	१	१	१
घ.	०	१०	२१	३१	४३	५४	६	१५	२६	३७	४८	५९	७०	८१	९२
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२१	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	२	२	३	३	३	३	३	३	४	४	४	४	४	५	५
घ.	४२	५३	६	१५	२६	३६	४७	५८	९	२०	३०	४१	५१	६	१४
को.	३०	३१	३१	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४१	४३	४४
क.	५	५	५	५	६	६	६	६	६	७	७	७	७	७	७
घ.	२४	३५	३५	४६	८	१८	२९	४०	५१	६	११	२३	३४	४५	५६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५१	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	८	८	८	८	९	९	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	१०
घ.	६	१७	२८	३९	५०	०	११	२१	३३	४४	५५	५	१६	२७	३८

क्रांतिसारिणी.

मु. अ.	७०	७१	७१	७३	७४	७५	७६	७७	७८	७९
अ.	११	३१	११	२१	११	१३	१३	१३	१३	१३
क.	१४	३१	३८	४५	५१	०	७	१४	११	१८
	०	११	०	३६	४८	०	११	१४	३६	४८

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	११	१३	१४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१	१	१
घ.	०	७	१४	११	२८	३५	४२	५०	५७	६	११	१९	२५	३३	४०
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२१	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	१	१	२	२	१	१	१	१	१	१	३	३	३	३	३
घ.	४८	५९	७	१६	२४	३२	४८	५५	६३	०	७	१४	२१	२८	३५
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४१	४३	४४
क.	३	३	३	३	४	४	४	४	४	४	४	४	४	५	५
घ.	३६	४३	५०	५९	६	१०	१८	२६	३३	४०	४८	५५	६	९	१६
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५१	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	५	५	५	५	५	६	६	६	६	६	६	६	६	६	७
घ.	३४	३१	३८	४५	५१	०	७	१४	२१	२८	३५	४२	५०	५९	६

(२२६)

द्वैवज्ञविनोद-

क्रांतिसारिणी.

भु. अ.	८०	८१	८२	८३	८४	८५	८६	८७	८८	८९	९०
अ.	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२३	२४
क.	३६	३८	४०	४३	४५	४८	५०	५२	५५	५७	०
	०	२४	४८	१२	३६	०	२४	४८	१२	३६	०

कलाविकलाफल.

को.	०	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०
घ.	०	२	४	७	९	११	१४	१५	१८	२१	२३	२५	२८	३०	३३
को.	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	२७	२८	२९
क.	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	०	१	१	१	१
घ.	३६	३८	४०	४२	४५	४७	५०	५२	५४	५७	५९	१	४	६	८
को.	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४
क.	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१	१
घ.	१२	१४	१६	१९	२१	२३	२६	२८	३०	३२	३५	३७	४०	४२	४४
को.	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	५३	५४	५५	५६	५७	५८	५९
क.	१	१	१	१	१	१	२	२	२	२	२	२	२	२	२
घ.	४८	५०	५२	५५	५७	५९	२	४	६	९	११	१३	१६	१८	२०

करणनामानि ।

अथ शुक्लपक्षे कारणविचारः					अथ कृष्णपक्षे कारणविचारः						
ति	पूर्वद.	उत्तरद.	ति.	पूर्वद.	उत्तरद.	ति	पूर्वद.	उत्तरद.	ति	पूर्वद.	उत्तरद.
१	किस्तु	घव.	९	घा.	को.	१	वाल	कोल	९	ते.	ग.
२	घा.	को.	१०	ते.	ग.	२	ते.	ग.	१०	घ.	भ.
३	ते.	ग.	११	घ.	भ.	३	घ.	भ.	११	घ.	वा.
४	घ.	भ.	१२	घ.	घा.	४	घ.	घा.	१२	को.	ते.
५	घ.	घा.	१३	को.	ते.	५	को.	ते.	१३	ग.	घ.
६	को.	ते.	१४	ग.	घ.	६	ग.	घ.	१४	भ.	श.
७	ग.	घ.	१५	भ.	घ.	७	भ.	घ.	१५	घ	ना.
८	भ.	घ.	०	०	०	८	घा.	को	०	०	०

अथ संवत्सररत्नेकी विधिः—वर्तमान शकमें १७७६ हीन करनेसे
वर्तमान संवत्सर होता है. यहां उक्त संवत्सरो का फल लिखा जाताहै. अथ
विस्तरतः पष्टिवर्षाणां स्पष्टता फले।।प्राचीनवचनैरेव गद्यरीत्या निगद्यते ।।१।।
प्रभवः १ ब्रह्मा स्वामी चैत्रवैशाखश्रेष्ठ समस्तवस्तुसमर्घता ज्येष्ठादयो मासा-
स्त्रयः सर्वधान्यं महर्घं गोधूममुद्रादीनां युगंधरीणां च विशेषमहर्घं भाद्रपदोपि
शुभः आश्विनश्च क्वचिन्महर्घः पश्चाद्भोगपीडा महती सर्वक्रयाणकं महर्घं १
विभवः २ विष्णुः स्वामी रोगव्याप्तिः पृथिव्यां नागपुरादिपु भंगः तैलंगमगध
चीनदेशे महर्घता उच्चमुल्लतानस्थले महाविग्रह अन्यत्र समता. चैत्रादिमा-
सत्रये महर्घता आपाढादित्रये मेघवृष्टिः आश्विने सर्वरसमहर्घता ततो मेघ-
बाहुल्यं कार्तिकादिमासेषु सर्ववस्तुसमर्घता गोधूमाः समाः २ शुक्रः ३ रुद्रः
स्वामी छत्रभंगो म्लेच्छदेशेषु मंत्रिणो राज्यं चैत्रादिमासत्रये समता
आपाढादिमासत्रये महामेघा आश्विने जनरोगः घृतानां समर्घत्वम् अन्यत्सर्वं
महर्घं कार्तिकादिचतुष्टये सर्वधान्यं समर्घं फाल्गुनमासे सर्वत्र विग्रहः
लोकग्रामपीडा देशेषु आकुलता शून्यत्वं ग्रामेषु ३ प्रमोदः ४ रविः स्वामी.
मध्यमं वर्षं अल्पवृष्टिः मंडले भेदपाटपीडा देशोद्वाप्तः म्लेच्छवर्णक्षयः छत्रभंगः
पर्वततेटे स्वल्पा प्रजा तैलंगे राजविह्वरं चैत्रे वैशाखे च महर्घता ज्येष्ठे रोग-
पीडा आपाढादिमासत्रये अल्पमेघः आश्विने किंचिद्वर्षा धान्यस्य त्रयोदश
फदिया कलशिका १ कार्तिकादिमासचतुष्टये सर्वरसमहर्घता फाल्गुनो-
मध्यमः ४ प्रजापतिः ५ चंद्रः स्वामी द्वादशैव मासाः शुभाः अल्पमेघः आ-
श्विने रोगबाहुल्यं धान्यस्य कलशिका त्रिंशत्फदिया नाणकः कार्तिकादि-
मासद्वयं मंदं पौषादिमासत्रयेऽरिष्टं क्वचिदुत्पातदर्शनेपि पीडा ५ अंगिरा ६
मंगलः स्वामी चैत्रो वैशाखश्च मंदः ज्येष्ठे वायुः प्रबलः आपाढे मेघबाहुल्यं श्राव-
णादिमासत्रये रोगपीडा कार्तिके संघातनिष्पत्तिः पौषादिमासत्रये समता ६
सुमुखः ७ बुधः स्वामी चैत्रे सर्वधान्यं महर्घम् आपाढकृष्णपक्षे अत्यंतमेघ
वर्षा श्रावणे गोधूमा महर्घाः घृते धान्ये च द्विगुणो लाभः वणिग्लोकपीड

पश्चिमायां रौरवंम् पूर्वस्यां परचक्रम् उच्च मुलतानस्थले प्रजापीडा भाद्रपदे वर्षा आश्विनादिषु प्रजाप्रसादः ७ भावः ८ गुरुः स्वामी बहुक्षीरा गावः वर्षा बहुला विंशोपकाः सर्ववस्तुमहर्घता उच्चमुलतान अयोध्यासु राजविङ्करं लोकपीडा घृत गुड आहिफेन पूगीलफ मंजिष्ठ मरिच चंदन वस्तुमहर्घता चैत्रे-समता वैशाखे महर्घं धान्ये द्विगुणो लाभः आपाढे श्रावणे किंचिद्वर्षा भाद्रे मेघवर्षा. आश्विने रोगबाहुल्यं कार्तिके उत्तमः मार्गशीर्षादिमासचतुष्टयं मंदं राज-विङ्करं ८ युवा-९ शुक्रः स्वामी भूकंपः उल्काभयं बहुलं चैत्रादिमासद्वये उत्पातः ज्येष्ठे रोगः आपाढशुद्धपक्षे महामेघः श्रावणे वायुर्वाति अन्नं महर्घं भाद्रपदे दिन १४ महावृष्टिः व्याकुलता राजविग्रहः उत्तरदेशे रौरवं दुर्भिक्षं पूर्वस्यां निष्फला रुषिर्दक्षिणस्यां वैरं विरोधः, मार्गे विषमता पश्चिमायां लोकपीडा पश्चात् दुर्भिक्षं सर्वरसेषु समता कार्तिकादिमासद्वयम् उत्तमं पौषमाघौ मध्यमौ फाल्गुनमासे किंचित् क्लेशः माघादौ मार्गे विग्रहः ९ धाता १० शनिः स्वामी चैत्रवैशाखयोः सर्वधान्यमहर्घता. ज्येष्ठे मासे समता आपाढे अल्पमेघः घृततैलयुगंधरी कार्पासमंजिष्ठमरिचपूगफल महर्घता, श्रावणे सर्वधान्यमहर्घता, भाद्रपदे पुरुषा नपुंसकाः पश्चिमायां महती मेघवर्षा सर्वधान्यं महर्घं उत्तरदक्षिणयोर्मध्ये महामेघः परलोक पीडा आश्विने रसकसधातुमहर्घता. कार्तिके सर्वमन्नम् समर्घम् । १०

ईश्वरः ११ राहुः स्वामी उत्तरस्यां दुर्भिक्षं पूर्वस्यां सुभिक्षं पश्चिमायां पर-स्परविरोधः चैत्रवैशाखे अन्नमहर्घता ज्येष्ठापाढयोः अल्पमेघः परं सर्वधा-न्यमहर्घता धान्ये द्विगुणलाभः भाद्रपदे महान् मेघः परं सर्ववस्त्रधान्य-महर्घता. आश्विने घृतमहर्घता कार्तिके रौरवं दुर्भिक्षं, मंजिष्ठ मरिच लवण पला पूगीफल एतद्वस्तु महर्घता. मार्गशीर्षादिमास ४ अतिदुर्भिक्षं धान्यं महर्घं मनुष्याणां रुंडमुंडादि भूमौ पतन्ति ११ बहुधान्यः १२ केतुः स्वामी पुरुषा निर्वीर्याः पश्चिमायां सुभिक्षं परसौर्यं सर्वदेशमध्ये दक्षिणस्यां विग्रहः परं महाभयं उत्तरपथे सर्वदेशेषु पीडा पूर्वस्यां दुर्भिक्षं अन्नसंग्रहः कार्यः चैत्रवैशा-

स्वयोः अन्ने किञ्चिन्महर्षता ज्येष्ठमासे चतुर्गुणो लाभः श्रावणापाढयोर्मेघः
 अन्नं सर्वं महर्षं पङ्कणो लाभः भाद्रपदे अत्यन्तमेघाः सर्वधान्यसमर्षता आश्विने
 मेघः कनकधाराभिः कार्तिकादिमासचतुष्टये समता १२ प्रमार्थी १३ रविः
 स्वामी आपाढे श्रावणे च अल्पमेघः भाद्रपदे पंचम्यां किञ्चिन्मेघः चैत्रे
 गोधूमयुगंधरीमहर्षता वैशाखे ज्येष्ठे वा सर्वत्र धान्यमहर्षता. परं कृष्ण-
 सप्तम्याममायां च महामेघः परं अतीवारिष्टं कार्तिके दिन २१ मास ५ सर्वा
 न्नमहर्षता सर्वरसमहर्षता. मंजिष्ठ पूगीफल हिंगुल काश्मीरजन्म अगरु पट्ट-
 सूत्र नारिकेलं एतद्वस्तु महर्षता १३ विक्रमः १४ चंद्रः स्वामी राज प्रजा
 सौख्यम् अतिमेघः चैत्रवैशाखे महर्षम् अन्ने द्विगुणलाभः परं वैशाखे म्लेच्छत-
 यात् नगरं उद्वसत्वं अरण्ये वासः वैशाखे दिन १० महान् वायुः भूमिकंपः
 प्रजापीडा ज्येष्ठमासे दुर्भिक्षं आपाढे प्रलयः श्रावणभाद्रपदे महामेघः
 प्रजासुखं सर्वधान्यं समर्षं. सर्ववस्तुसमता आश्विने रोगः सर्वरससमता
 कार्तिकादिमास ५ सर्व अन्न समता १४ वृषः १५ भौमः स्वामी. वर्षा बहुला
 परं नृपाणां पीडा छत्रभंगः ज्येष्ठे वर्षे अन्नसमर्षता धान्ये त्रिगुणो लाभः
 आपाढे अन्नमहर्षता श्रावणे महान् मेघः आश्विने सर्वधान्यसमता घृत-
 महर्षता पश्चिमेन्नं महर्षं देशा उद्दासाः पश्चिमायां किञ्चित् दुर्भिक्षं आश्विने
 मेघः सर्ववस्तुसमर्षता कार्तिके किञ्चिदरिष्टं मार्गशीर्षे दौःस्थ्यं पौषादिमासत्रयं
 महर्षं परं मध्यमः समयः १५ चित्रभानुः १६ बुधः स्वामी लोकसुखी पूर्वं
 अल्पमेघः पश्चात् महती वर्षा धान्यघृतसमता वैशाखे अन्नं समं भावेन
 ज्येष्ठादित्रये महान् मेघः सर्वधान्यमहर्षता भाद्रादिमासद्वये रोगार्तिः कार्तिके
 महामारीभयं मार्गशीर्षद्वयेऽरिष्टं माघद्वये सरोगप्रजा परं सर्वान्नरससमर्षता
 वैशाखज्येष्ठयोः रोगपीडा अन्नं महर्षं क्रयाणकसर्ववस्तुमहर्षता १६ सुभानुः
 १७ गुरुः स्वामी पूर्वस्यां दुर्भिक्षं लोकः सुखी चैत्रे महर्षता वैशाखज्येष्ठयोः
 रोगपीडा आपाढेऽन्नं महर्षं श्रावणे मेघः अन्नसमता भाद्रे महामेघः आश्विने
 रोगपीडा गोधूमसमता युगंधरी मुद्रादि मण प्रति फदिया नाणकानि १२ धातु

सर्ववस्तुमहर्षे घृतसमता कार्तिकादिमासद्वयं मध्यमं राजपीडिता लोकाः
 पौषादिमासत्रये रोगपीडा भयंकरः परस्परं विरोधः १७ तारणः १८ शुक्रः
 स्वामी अतिवायुः परस्परं युद्धं बहुलं चैत्रे रोगः वैशाखे सर्ववस्तु समर्घं ज्येष्ठे
 महान् वायुः आपाठे अल्पवृष्टिःश्रावणे सप्तमीतो नवमीतो वा वर्षा भाद्रपदे एका-
 दश्याम् अत्यंतमेघः आश्विने अन्नं महर्षे सर्वरससंग्रहः कार्यः कार्तिके महर्घता
 मार्गे विग्रहः धान्यं महर्घं योगिनीपुरे महाभयं राज्ञां विरोधः म्लेच्छभयं पौषे
 युद्धं पश्चिमायां धान्यं महर्घं उत्तरपथे महादुर्भिक्षं फाल्गुनमासे मध्यमः
 तस्करभयं अन्नं महर्घं विग्रहः राजविरोधात् महत्पातकं पूर्वस्यां दक्षिणस्यां
 वा वनेवासः पश्चिमायां महायुद्धं परं चान्यवस्तु समर्घं १८ पार्थिवः १९
 शनिःस्वामी उत्पाताः बहुलाः चैत्रे वैशाखे च महर्घता सर्वतो विग्रहःज्येष्ठे रोगः
 पीडा यद्वा नृपयुद्धं आपाठे अल्पमेघः धान्यं महर्घं महावायुः श्रावणे खंडवृष्टिः
 भाद्रपदे नैर्ऋतवायुः अन्यमहर्घता आश्विने वृष्टिः गोधूमयुगंधरी मुद्रादिमहर्घता
 कार्तिकादिद्वये रोगपीडा पौषमाघयोर्महर्घता फाल्गुने समता १९ व्ययः
 २० राहुः स्वामी अनावृष्टिःदुर्भिक्षं रौरवं चैत्रो मध्यमः वैशाखद्वये महर्घता देश-
 विग्रहः आपाठे अल्पमेघः परं महर्घता श्रावणे दुर्भिक्षं मध्यदेशे विग्रहः दक्षि-
 णस्यां प्रजापीडा भाद्रपदे खंडवृष्टिः अन्नमहर्घता आश्विने रोगपीडा पूर्वस्यां
 विग्रहः गोधूममहर्घता मध्यमः समयः कार्तिके रोगपीडा यद्वा विग्रहोपशमः
 मार्गशीर्षमासे अन्नमहर्घता न परं युद्धं किंचित् पौषादिमासद्वये अतिमहर्घता
 फाल्गुने समता परं मार्गवैषम्यं अन्नं महर्घं २० इति उत्तमविंशतिफलम्
 सर्वजित् २१ ब्रह्मा स्वामी चैत्रादिमासत्रयं समर्घं आपाठे अल्पमेघः
 श्रावणे महामेघः सर्वधान्यरसवस्तुसमर्घता नवीनमुद्गोदयः राजविग्रहः परस्परं
 अन्नमहर्घता भाद्रपदे दिन ५ पश्चान्महती वृष्टिः आश्विने रोगार्तिः सर्वधान्य
 समर्घता कार्तिके राजा राज्यं करोति प्रजासुखं अन्नसमर्घता मार्गशीर्ष-
 पौषौ उत्तमौ सर्वलोकसुखम् माघमासे मेघा दिन ३ मंजिष्ठा मुहरा मरिच
 शुंठी पिप्पली मुपारी प्रमुख महर्घता फाल्गुने सर्ववस्तु रस समता उत्तमः

समयः २१ सर्वधारी २२ विष्णुः स्वामी राजा राज्यसुस्थः प्रजासुखं अन्नं
 समर्घं मार्गशीर्षः पौषश्च उत्तमः सर्वलोकसुखं पद्दर्शनमहत्पूजा सर्वनगर-
 देशेषु स्थानवासः चैत्रे सर्वधान्यसमता उत्तरापथे दुष्कालः वैशाखज्येष्ठयो-
 र्महर्घता ज्येष्ठे महाभयं अरिष्टं आपादे मेघः श्रावणे अल्पवर्षा अन्नं महर्घं
 भाद्रपदे दुर्भिक्षं आश्विने रोगः अन्नसमता राज्ञां परस्परविरोधः अन्न
 महर्घता २२ विरोधी २३ रुद्रस्वामी चैत्रादिमासत्रये धान्यमहर्घता
 आपादे श्रावणे अतिवर्षा भाद्रपदे खंडवृष्टिः मासत्रयेऽतिभयं किंचिदुत्पातः
 राजा सुखी प्रजाहर्षः कचिद्राजयुद्धं सर्वधान्यसमर्घता आश्विने सर्वसमर्घं
 कार्तिके मारीरोगबहुलता मार्गशीर्षादिमास ४ गुर्जरे मरुदेशे अन्नं महर्घं
 २३ विकृतः २४ रविः स्वामी अकाले वर्षा राजविग्रहः देशोद्वास मरुध-
 रायां दुर्भिक्षं चैत्रादिमास ४ महर्घता कणकलशिका प्रति फदिया नाणके
 एकशतेन लाभः श्रावणमासद्वये मेघवृष्टिर्नास्ति रौरवं दुर्भिक्षं आश्विने उत्पात
 भूमिकंपः कार्तिके छत्रभंगः सुवर्णं रूपा ताम्रं कांस्यं सर्वधातुसमर्घता
 कणकलशिका प्रति २० फदिया नाणकानां एकप्राप्तिर्न लभ्यते २४ खरः
 २५ चंद्रः स्वामी चैत्रादिमासपंचके महती वर्षा सुभिक्षं प्रजासुखं सर्वलो-
 के गुरुणां महत्त्वं पश्चिमायां सुभिक्षं आश्विने अन्नसमता रसमहर्घता मंजिष्ठा
 सुहागा वस्तुतो मरुधरायां त्रिगुणो लाभः म्लेच्छक्षयः पररोगपीडा सर्व
 धान्यनिष्पत्तिः प्रजासुखं कार्तिकादि मासपंचकं मध्यमं सर्व
 धान्यसमर्घता २५ नंदनः २६ भौमः स्वामी प्रजासुखं सर्वधान्यसमता चैत्र-
 मध्ये करकाः पतन्ति वैशाखे धान्यं महर्घं प्रचंडवायुः ज्येष्ठेऽपि तथैव महर्घं आ-
 पादे महामेघः श्रावणे अल्पवर्षा भाद्रपदे महावृष्टिः आश्विने सुभिक्षं राजा
 राज्यं प्रजासुखं कार्तिके सुभिक्षं अन्नसमता. मार्गशीर्षादि मास ४ महर्घता
 मंजिष्ठा लवणमहर्घता २६ विजयः २७ स्वामी बुधः सर्वदेशेषु महापीडा
 राज्ञां परस्परविरोधः अन्नं महर्घं तुच्छजलं मही लोहितपायिनी विप्रपीडा गो-
 महिष अश्व हस्ति पीडा चैत्रमध्ये महती वर्षा वैशाखे ज्येष्ठे अन्नमहर्घता

आषाढे श्रावणे अल्पमेघः कणकलशिका प्रति फदिया ४० भाद्रपदे वर्षा वर्षति कलशिका प्रति फदिया ९४ आश्विनमध्ये वणिग्जनपीडा अन्न-महर्षता फाल्गुने समता परं विग्रहः धान्ये पड्डुणो लाभः २७ जजः २८ गुरुः स्वामी महासुभिक्षं चैत्रे महर्षता वैशाखज्येष्ठयोः समर्षता आषाढे मेघवर्षा अन्नं महर्षं श्रावणे दिन २४ महामेघः भाद्रपदे दिन ७ मेघवृष्टिः आश्विने अन्नं समर्षं कणानां मणं प्रति द्रामा ३५ लभ्या स्वर्णादिधातुसमता कार्ति-कादिमासपंचक उत्तमं अन्नसमता अन्यवस्तुनि महर्षता भवति परं मौ-क्तिकादिप्रवालकमहर्षता मार्गशीर्षे रोगबहुलता वणिक्पीडा उच्चमुलतान-देशे रोगपीडा छत्रभंगः लोका दुःखिताः २८ मन्मथः २९ शुक्रः स्वामी राजवि-रोधः पूर्वदेशे लोकपीडा परं अतिवृष्टिः रोगबाहुल्यं धान्यसंग्रहः चैत्रवर्षा भूमिकंपः वैशाखे समर्षता ज्येष्ठाषाढयोर्महर्षता धान्ये पड्डुगुणो लाभः श्रावणे अल्पमेघाः भाद्रे महामेघा दिन २४ आश्विने रोगपीडा अन्नं महर्षं धान्यं मणं प्रति द्रामा ६० लभ्यते सर्वधान्यसमर्षता कार्तिकं सुभिक्षं अन्नसमता मार्गशीर्षादिमासत्रये अन्नं समर्षं लोकसुखं राजा सुखं सर्वधातुसमर्षता वन्नमहर्षता २९ दुर्मुखः ३० शनिः स्वामी अत्र अशुभं अल्पमेघाः महतां लोकानां पीडा सरोगाकुलाः उत्तरापथे दुष्कालः पश्चिमायां महापीडा पूर्वदेशे सुभिक्षं अन्यत्रा महर्षं क्षत्रियेषु न कुलसर्षवद्देपो गृह्यते चैत्रादिमासत्रये महर्षता. आषाढे अल्पमेघः श्रावणे प्रचंडवायुः सर्वधान्यमहर्षता भाद्रपदे कणानां मणं प्रति द्रामा ८५ लभ्यते खंडवृष्टिः आश्विने रोगपीडा सर्वे धातवः समर्षाः कार्तिकादिमासेषु ४ रौरवं दुर्भिक्षं जीवादयः अकराः प्रवर्तते मात्रा पुत्रविक्रयः पिता पुत्रस्नेहमुक्तः फाल्गुने रोगपीडा राजा परस्परं विरोधो लोकपीडा ३० हेमलंबः ३१ राहुः स्वामी अतिरौरवं सरोगा लोकाः भूकंपादयः उत्पाताः वणिक्पीडा चैत्र वैशाखमासे पीडा धान्यादि मंजिष्ठामंदजावः परचक्रागमः ज्येष्ठादिमासत्रये धान्यं महर्षं चतुर्गुणो लाभः भाद्रपदे महामेघः अन्नसमता मंजिष्ठा मरिच लवंग दंत महावस्तु महर्षता.

कार्तिक छत्रभंगः लोकपीडा अन्नकलशिका प्रतिफदिया १०२ सर्वधातु-
समर्धता चतुष्पदानां पीडा मार्गशीर्षादिमास ४ राज्ञां स्वस्थता लोकाः सुखिनः
३१ विलंब ३२ रविः स्वामी चैत्रवैशाखयोर्धान्यसमर्धता आपाढे श्रावणे
धान्यकलसिका प्रति टका ५ फदिया २५ लभ्यते आपाढे मेघ अल्पः
श्रावणे महामेघः सुभिक्षं भाद्रपदे दिन २१ वर्षा बहुला परं गोधूमाश्व महर्धता
पश्चिमायां सुभिक्षं राजविग्रहः पूर्वदेशे अन्नं महर्धं अन्नं दुष्प्राप्यं दक्षिणदेशे
राज्ञामन्योन्यविरोधः आश्विने अन्नमहर्धता रोगपीडा सर्वक्रयाणकवस्तु
महर्धं कार्तिकादिमासपंचके धान्यकलसिका प्रतिफदिया १० लभ्यते ३२
विकारी ३३ चंद्रः स्वामी सर्वे अन्नं महर्धं सर्ववस्तुमहर्धता द्विजाः
सुखिनः चैत्रादिमासत्रये धान्यमहर्धता आपाढे श्रावणे महान्मेघः सुभिक्षं
भाद्रपदे स्वल्पमेघः आश्विने सर्पभयं केतूदयः अन्नकलसिका प्रति फदिया
दश लभ्यते सर्ववस्तुमहर्धता कार्तिकादिमासद्वये धान्यं समर्धं पौषे रोगपीडा
लोकः सुखी फाल्गुने धान्यमहर्धता ३३ शर्वरी ३४ भौमस्वामी वर्षाल्पा-
प्रजाप्रलयः राज्ञां विरोधः चैत्रादिमासत्रये अन्नसमता आपाढद्वये महामेघः
परं खंडवृष्टिः अन्नसमर्धता भाद्रपदे वर्षा नास्ति राजपीडा लोकेषु आश्विने
रोगपीडा अन्नकलसिकां प्रति फदिया १० नाणकैर्लभ्यंते पश्चिमायां दुर्भिक्षं
पूर्वस्यां सुभिक्षं कार्तिकादिमासद्वये अन्नं महर्धं पौषादिमासत्रये धान्यं
समर्धं ३४ पुष्यः ३५ बुधः स्वामी वर्षाकाले वर्षाबहुला उत्तमः समयः चैत्रे
धान्यमंदता वैशाखे भूमिः जयंकरी ज्येष्ठे अन्नसमर्धता तैलंगे पूर्वदेशे पीडा
आपाढे महावायुः उत्पाताः लोकाःसरोगाः श्रावणे महान्मेघो दिन २७ वर्षा
भाद्रपदे घनो घनागमः धान्यं समर्धं कणकलसिका एका फदिया नाणकैरष्ट-
भिर्लभ्यते आश्विने सर्ववस्तुसर्वधातुसमर्धता गोधूमानां महर्धता कार्तिके अन्नं
समर्धं लोकः सुखी मंडपांचालो विग्रहः पौषादिमासत्रये अतिसुभिक्षं राजा-
राज्यं ३५ शुभकृत ३६ गुरुः स्वामी अतिवर्षा राजा प्रजा सुखेन वर्तते उत्तरा-
पथे बह्निभयं चैत्रे वैशाखे समर्धता धातुसमर्धता श्रावणे नवमीतिथितो वर्षा

अन्नसमर्घता भाद्रपदे महान् मेघः वह्निभयं अन्नकलसिका एका फदिया
 नाणकैरष्टभिः घृततैलं समर्घं कार्तिकादिमासत्रयं गुग्गुली गोधूमचणकतिल
 मुद्गतदुला इत्यादि अन्नं समर्घं राज्ञां परस्परविरोधः ज्येष्ठादिमासेषु सर्व-
 वस्तु समर्घं फाल्गुने किञ्चिदुत्पातः मरुदेशे रोगः परं सुभिक्षम् ३६ शोभनः
 ३७ शुक्रः स्वामी राज्ञां प्रजानां च सुखं अतिवर्षा चैत्रादिमासत्रये
 धान्यं समर्घं राजविग्रहः किञ्चिदुत्पातः आपाढे अल्पमेघः श्रावणे अतिवर्षा
 परं लोकपीडा भाद्रपदे महान्मेघः आश्विने सुभिक्षं ततोपि किञ्चिद्विग्रहः ३७
 क्रोधी ३८ शनिः स्वामी द्वादशमासात् अन्नं महर्घं मध्यमः समयः राज्ञां
 परस्परविरोधः प्रजायाः परलोको निर्धना व्यापारिणः चैत्रवैशाखयोः करकापातः
 रोगमारीभयं ज्येष्ठे धान्यं महघ आपाढे समता अल्पो मेघः श्रावणे रौरवं
 भाद्रपदे खंडवृष्टिः अन्नं महर्घं आश्विने मेघवर्षा सर्वत्र रसकसवस्तुसमता
 अन्नवस्तु सर्वं समर्घं कार्तिके समता ३८ विश्वावसुः ३९ राहुः स्वामी
 वर्षा समता अन्नमहर्घता चैत्रे राज्ञां विरोधः धान्यं महर्घं वैशाखे
 मंडपदुर्गे विग्रहः मरुदेशे दुर्भिक्षं पश्चिमायां अन्नं महर्घं ज्येष्ठे विग्रहः
 अन्नस्य ४५ फदिया नाणकैरेका कलशिका आपाढे अल्पमेघः श्रावणे
 भाद्रपदे दुर्भिक्षं ५५ फदिया नाणकैरेका कलसिका अन्यत्रदेशे सुभिक्षं
 आश्विने रोगपीडा रोगबाहुल्यं गोमहिषी घोटक अजा महर्घता सुवर्णादि
 धातुसमर्घता कार्तिकादिमासत्रये समर्घता. कणकलसिका एक फदिया
 १८ । ३९ पराभवः ४० केतुस्वामी. द्वादशमासा वर्षा मध्यमवृष्टिः चैत्र-
 वैशाखे चान्नं महर्घं मेघगर्जिते विद्युतो वायवः ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः उद्वंढवायुः
 आपाढे अल्पमेघः अन्ने द्विगुणलाभः श्रावणे महती वर्षा अन्नसमता. भा-
 द्रपदे खंडवृष्टिः परं दुर्भिक्षं आश्विने किञ्चिन्नोकसुखं परं धान्यरसवस्तु-
 महर्घता धातुसमर्घता कार्तिकादिमासपंचके समता पश्चिमायां अन्नसमता
 सिंधुदेशाद्धान्यागमः । इति मध्यमविंशतिफलम् ॥ २० ॥ पुर्वंगः ४१
 ब्रह्मा स्वामी चैत्रवैशाखे च महर्घता ज्येष्ठमध्ये राजपीडा आपाढे अल्प-

मेघः भूमिकंपः हस्तिपीडा. तुरंगमहर्षता. श्रावणे महामेघः भाद्रपदे
 अष्टमीतो महामेघः आश्विने रोगः रसमहर्षता फाल्गुने कणकलसिका एक
 फदिया १० प्रमाणैः अश्वमहिपीपीडा लोकपीडा ४१ कीलकः ४२ विष्णुः
 स्वामी वर्षा मध्यमा चैत्रे धान्यं महर्ष वैशाखे. रोगः मरुदेशे दुर्भिक्षं पश्चिमा-
 यां समर्षता ज्येष्ठे धान्यसंग्रहः आपाठे श्रावणे अल्पमेघः अन्नं समर्ष धान्ये
 द्विगुणो लाभः भाद्रपदे अष्टम्यां मेघः आश्विने वर्षा अन्नं महर्ष राजधानी
 नगरे उद्वसता रोगा बहुला गोधूमा महर्षाः सर्वधान्यं समर्ष रसाः समर्षाः
 घृते एकमणं प्रति फदिया ५०० कार्तिकादिमासत्रये समर्षता. माघमासे
 अन्नमहर्षता रोगपीडा महती. फाल्गुने राजा राज्यसुस्थः प्रजासौख्यं
 अन्नसमता ४२ सौम्यः ४३ रुद्रः स्वामी अल्पमेघः गावः अल्पक्षीराः वृक्षे
 अल्पफलं चैत्रे महर्षता वैशाखे उद्वंडवायुः ज्येष्ठे विग्रहः प्रजापीडा आपाठे
 अल्पमेघः अन्नं महर्षं श्रावणे महामेघः धान्ये द्विगुणो लाभः गोधूमानां क-
 लशिका एकां प्रति फदियाः ५० प्रमाणं लभ्यते सर्वधान्यसमता रसमहर्ष-
 ता भाद्रे खंडवृष्टिः अन्नं दुर्भिक्षं आश्विने राजविरोधः लोकपीडा मार्गे विप-
 मता अन्ने संग्रहः धान्ये द्विगुणो लाभः सर्व रसधातु समर्षता कार्तिकादि
 मास ४ तेषु समता परं राजविङ्करं बालकरोगः देशा उद्वस्ता देशांतरीय
 लोकपीडा फाल्गुने उद्वंडवायुः पश्चिमायां सुभिक्षं सिंधुदेशे राजविरोधः अन्न
 समर्षता ४३ साधारणः ४४ रविः स्वामी चैत्रे धान्यमंदता वैशाखे ज्येष्ठे च
 उत्पातः भूमिकंपः रोगवृद्धिः राजविरोधः धान्यमहर्षता आपाठे वायुदंडः
 रौरवं कचिदल्पमेघः श्रावणे महती वर्षा अन्नसमता भाद्रपदे अल्पमेघः आ-
 श्विने अल्पधान्यनिष्पत्तिः कार्तिकादिमासद्वयं मध्यममरिष्टं भूमिकंपः
 अकस्माद्राजविग्रहः अन्नमहर्षता सर्वरससंग्रहः परं राजा सुखी. ४४
 विरोधकृत् ४५ चंद्रः स्वामी पंडलपालदुर्गविग्रहः कोङ्कणदेशे मेदपाटमंडले
 मध्यदेशे महारौरवं परस्परराजविग्रहः मार्गा विपमाः चैत्रादिमासत्रये अन्न
 समता आपाठे अल्पमेघः श्रावणे महावर्षा अन्नसमर्षता. भाद्रपदे मेघः

अन्नसमता सर्वधातुमहर्षता, फाल्गुने देशविरोधः मार्गवैषम्यं मंजिष्ठा
सुपारिका पट्टसूत्रं दंत महद्वस्तु तुरंगमादि महर्षता ४५ परिधावी
४६ शौमः स्वामी दुर्भिक्षं नागपुरे मेदपाटे जालंधरदेशे राज्ञां विरोधः
चैत्रादि मास ४ अन्नसमता. तत्र संग्रहः कार्यः लोकेरोगभयं
मरुदेशे मनुष्येषु मारीभयं चतुष्पदमाहिपीतुरंगहस्तीनां पीडा
श्रावणे भाद्रपदे अल्पमेघः खंडवृष्टिः अन्नमहर्षता. सर्वरसमहर्षता
सर्वे धातवः समर्थाः कार्तिकादिमासपंचके धान्यसमता राजविहूरं
सिंधुदेशाद्धान्यागमः ४६ प्रमाथी ४७ बुधः स्वामी कौकणे दुर्भिक्षं विग्रहः
चैत्रे धान्यसमतावैशाख ज्येष्ठयोर्धान्यसंग्रहः आपाटे नवीनमुद्रा परं अल्प-
मेघः श्रावणस्यार्द्धे मेघवर्षा अन्नं महर्षं धान्ये त्रिगुणलाभः भाद्रपदे महामेघः
अन्नसमर्षं आश्विनादि मासाः ६ सुभिक्षं सर्वरसमहर्षता लोकः सुखी गुरुणां
पूजा महिपवृद्धिः राज्यधर्म, ४७ आनंदः ४८ गुरुः स्वामी वर्षा बहुला सुभिक्षं
चैत्र वेशाखे च अन्नं समर्षं ज्येष्ठापाठयोर्मध्यमवृष्टिः परं नवीनमुद्रा जायते
श्रावणे महामेघः भाद्रपदे खंडवृष्टिः गोधूमा महर्षा आश्विने समर्षा रसअन्न
वस्तु समता धातुमहर्षता कार्तिके अकस्माद्भयं लोकपीडा मार्गशीर्षे लोकानां
दक्षिणदिशि गमनं पौषमाघयोर्मेघवर्षा अन्नं समर्षं फाल्गुने धान्यं महघ ४८
राक्षसः ४९ भृगुः स्वामी धान्यसंग्रहः कार्यः चैत्रे करकाः पतंति वैशाखे ज्येष्ठे
तैलं महर्षं ज्येष्ठे आपाटे गुडशर्करा द्रव्यं महर्षं श्रावणे अल्पमेघः अन्नमह-
र्षता भाद्रपदे महान्मेघः अन्नसमर्षता आश्विने समता कार्तिके रोगार्तिः
मार्गशीर्षादि मास ४ धान्यसमर्षता राजा सुखी प्रजा राजमान्या फाल्गुने
समर्षता वृक्षा नवपल्लवाः मार्गे सुखं सुभिक्षं ४९ नलः ५० शनिः स्वामी
अल्पमेघः परं समर्षं चैत्रे रोगपीडा धार्दितं बहुला वायुः प्रबला वैशाखे अरिष्टं
अन्नसंग्रहः कार्यः ज्येष्ठे राज्ञां परस्परं विरोधः लोकः सुरती मार्गवैषम्यं क्वचित्
आपाटे संग्रहः कार्यो कार्तिके विक्रयः मार्गशीर्षादिमासत्रये अन्नसमता
फाल्गुने बालानां रोगः तस्करभयं उत्तरदेशे दुष्कालः पूर्वस्यां दुर्भिक्षं ५०

पिंगलः ५१ राहुः स्वामी उच्चमुलतान नागपुर मरु दिह्री मंडलेषु मथुरायां पूर्व देशेषु दुर्भिक्षं अन्नं महर्घं सर्वधातुसमर्घं परं सर्वत्र विग्रहः नगरे वासः ग्रामाणां उद्वसनं ५०० रोगपीडा राजस्वास्थ्य प्रजासुखं अन्नसमता गुर्जरदेशे समर्घता सिंधुदेशे धान्यागमः चैत्रे धान्यमहर्घता प्रजापीडा वैशाखादिमासत्रये अन्न समर्घता प्रजाक्षयः अश्वपीडा आपाढे श्रावणे अल्पमेघः धान्ये चतुर्गुणो लाभः भाद्रे खंडवृष्टिः आश्विने समता कार्तिकादि मास ५ विग्रहपीडा अन्नमहर्घता चतुष्पादरोगः ५१ कालः ५२ केतुः स्वामी अल्पमेघः देशे उद्वसनं अल्प- व्यापारः राजविग्रहः चैत्रे वैशाखे च अत्यरिष्टं उत्तरापथदेशभंगः ज्येष्ठे धान्य संग्रहः धान्ये षड्गुणो लाभः आपाढे अल्पमेघः लोके दुःखं मार्गे विपमता श्रावणे महान्मेघः अन्नसमता भाद्रपदे खंडवृष्टिः धान्यं दुर्भिक्षं उत्पातः आश्विने रोगशीतलादिविकारः धान्यफदिया ७५ नाणकैः कलशिकैका लभ्यते सर्वरसमहर्घता सर्वधातुसमर्घता कार्तिकादिमासपंचके यावत् परं राज विद्वरमश्वचतुष्पदपीडा वृक्षाः सफलाः ५२ सिद्धार्थः ५३ रविः स्वामी सुभिक्षं सर्व देशे वसतिर्बहुला अन्नविक्रयः चैत्रे वैशाखे लोकपीडा ज्येष्ठापाढयोः उदंड वायुः श्रावणे दिनत्रयं महावर्षा सर्वान्नमहर्घता भाद्रपदे खंडवृष्टिः आश्विने अन्नसमता कार्तिके धान्यनिष्पत्तिः बहुला अन्नसमर्घता सर्वधातुसमता मार्गादि मास ४ अनंतरं सर्वत्र ग्राहकतोत्पातः कचिद्राज्यविरोधः लोक विग्रहश्च अश्वमूल्यमहर्घता ५३ रौद्रः ५४ चंद्रः स्वामी पृथिव्यां विरोधबाहुल्यं चतुष्पदनाशः छत्रभंगः स्वदेशे ग्रामभंगः अल्पमेघः चैत्रादिमासत्रये महर्घ आपाढे श्रावणे अल्पमेघः खंडवृष्टिः भाद्रपदे महान्मेघः अन्नसमर्घता अन्य- द्वस्तु मंजिष्ठा सुपारिका लवंग महर्घता लोकः सुखी चतुष्पदसमर्घता हस्तिनां पीडा ५४ दुर्मतिः ५५ भौमः स्वामी चैत्रे वैशाखे च धान्यं समर्घ ज्येष्ठे अन्नसमता आपाढे उदंडवायुः श्रावणे अल्पमेघः कणकलसिका फदिया ३५ प्रमाणेन लभ्यते सर्वधातवः समर्घतया लभ्यन्ते आश्विने सर्वरस समर्घता धान्यसमता कार्तिकादिमासद्वये यावत् सर्ववस्तुसमता राजा सुस्थः

ग्रामे ग्रामे नवीनवसतिः सर्वलोकः सुखी. अश्वमहर्षता चतुष्पद ३२ मह
 र्षता पाषादिमासद्वये यावत् सर्वधातुसमर्षता ५५ दुदुंभिः ५६ बुधः स्वामी
 वर्षा बहुला अन्नसमर्षता रसकसवस्तुसमर्षता चैत्रादिमासत्रये अन्नसमर्षता
 आपाठे द्विगुणो लाभः अल्पमेघः श्रावणे दिन ११ महावृष्टिः भाद्रपदे मेघदिन
 ९ वर्षतिअन्नं समर्षं देशो नवीनो वसति आश्विने अन्नं समर्षं रोगाः बहुला मंजिष्ठा
 मरिचानां समर्षता सर्वरससर्वधातुसमर्षः कार्तिके धान्यं समर्षं अन्नं दुर्भिक्षं
 पश्चिमायां शुभम् मार्गशीर्षं समर्षता राज्ञां परस्परविरोधः लोका देशांतरं यांति
 पौषादिमासत्रये समता अश्वमहर्षता मंजिष्ठा महर्षा ५६ रुधिरोग्दारी ५७
 गुरुः स्वामी राज्ञां परस्परविरोधः लोका देशांतरं यांति दुर्भिक्षं द्विजपीडा जीवादि
 दुःखं म्लेच्छराज्यं परदेशात् धान्यमायाति आपाठशुक्लपक्षे महामेघः श्रावणे
 दिन १५ महावर्षा चैत्रादिमासत्रये समर्षता धातवः समर्षाः उत्तरापथे
 उच्चमुलतान तिल तैलगे गौडे मोट एषु देशेषु दुर्भिक्षं पश्चिमायां सुभिक्षं सिंधु
 देशे धान्यनिष्पतिः भाद्रपदे खंडवृष्टिः धान्ये त्रिगुणो लाभः आश्विने समता
 रोगः स्वल्पः कार्तिकादिमासपंचके अन्नं समर्षं मेदपाटे लोकपीडा
 ५७ रक्ताक्षः ५८ शुक्रः स्वामी अन्नं समर्षं मेदपाटे पक्षे महामेघः आपाठे
 महती जलवृष्टिः सुराग्रायां ग्रामप्रवाहकः अन्नं समर्षं श्रावणे अल्पमेघः
 किंचिद्विग्रहः भाद्रपदे अल्पवर्षा रोगपीडा आश्विने अन्नं समर्षं रसकसवस्तु
 समर्षं कार्तिकादि मासपंचके धान्यं महर्षं विवाहादिकं नास्ति अश्वपीडा
 पश्चिमायां ५८ क्रोधनः ५९ शनिः स्वामी सेना बहुला मंदवृष्टिः प्रजापीडा उत्तरा
 पथे दुष्कालः लोका निर्धनाः चैत्रवैशाखे अल्पमेघः अन्न समर्षता ज्येष्ठे मंदरोग
 पीडा अन्नसमता आपाठश्रावणयोरल्पवर्षा धान्ये द्विगुणो लाभः भाद्रपदे मेघः
 अन्नं समर्षं आश्विने रोगपीडा कार्तिके विग्रहः धान्यं समर्षं मार्गशीर्षं धान्य
 समता अकस्मादुत्पातः पौषे समर्षता वणिक्पीडा धान्ये द्विगुणो लाभः
 अन्यद्वस्तु समर्षं ५९ क्षयः ६० राहुः स्वामी चैत्रे करकापातः वैशाखे
 उत्पातः भूमिकंपः ज्येष्ठाषाढयोः बालरोगः नवीनमुद्रोदयः अल्पमेघः

पिंगलः ५१ राहुः स्वामी उच्चमुलतान नागपुर मरु दिङ्घी मंडलेषु मथुरायां पूर्व देशेषु दुर्भिक्षं अन्नं महर्घं सर्वधातुसमर्घं परं सर्वत्र विग्रहः नगरे वासः ग्रामाणां उद्वसनं ५०० रोगपीडा राजस्वास्थ्य प्रजासुखं अन्नसमता गुर्जरदेशे समर्घता सिंधुदेशे धान्यागमः चैत्रे धान्यमहर्घता प्रजापीडा वैशाखादिमासत्रये अन्न समर्घता प्रजाक्षयः अश्वपीडा आपाढे श्रावणे अल्पमेघः धान्ये चतुर्गुणो लाभः भाद्रे खंडवृष्टिः आश्विने समता कार्तिकादि मास ५ विग्रहपीडा अन्नमहर्घता चतुष्पादरोगः ५१ कालः ५२ केतुः स्वामी अल्पमेघः देशे उद्वसनं अल्प- व्यापारः राजविग्रहः चैत्रे वैशाखे च अत्यरिष्टं उत्तरापथदेशभंगः ज्येष्ठे धान्य संग्रहः धान्ये षड्गुणो लाभः आपाढे अल्पमेघः लोके दुःखं मार्गे विपमता श्रावणे महान्मेघः अन्नसमता भाद्रपदे खंडवृष्टिः धान्यं दुर्भिक्षं उत्पातः आश्विने रोगशीतलादिविकारः धान्यफदिया ७५ नाणकैः कलशिकैका लभ्यते सर्वरसमहर्घता सर्वधातुसमर्घता कार्तिकादिमासपंचके यावत् परं राज विद्वरमश्वचतुष्पदपीडा वृक्षाः सफलाः ५२ सिद्धार्थः ५३ रविः स्वामी सुभिक्षं सर्व देशे वसतिर्बहुला अन्नविक्रयः चैत्रे वैशाखे लोकपीडा ज्येष्ठापाढयोः उद्वंढ वायुः श्रावणे दिनत्रयं महावर्षा सर्वान्नमहर्घता भाद्रपदे खंडवृष्टिः आश्विने अन्नसमता कार्तिके धान्यनिष्पत्तिः बहुला अन्नसमर्घता सर्वधातुसमता मार्गादि मास ४ अनंतरं सर्वत्र ग्राहकतोत्पातः कचिद्राज्यविरोधः लोक विग्रहश्च अश्वमूल्यमहर्घता ५३ रौद्रः ५४ चंद्रः स्वामी पृथिव्यां विरोधवाहुल्यं चतुष्पदनाशः छत्रभंगः स्वदेशे ग्रामभंगः अल्पमेघः चैत्रादिमासत्रये महर्घं आपाढे श्रावणे अल्पमेघः खंडवृष्टिः भाद्रपदे महान्मेघः अन्नसमर्घता अन्य- द्वस्तु मंजिष्ठा सुपारिका लवंग महर्घता लोकः सुखी चतुष्पदसमर्घता हस्तिनां पीडा ५४ दुर्मतिः ५५ भौमः स्वामी चैत्रे वैशाखे च धान्यं समर्घं ज्येष्ठे अन्नसमता आपाढे उद्वंढवायुः श्रावणे अल्पमेघः कणकलसिका फदिया ३५ प्रमाणेन लभ्यते सर्वधातवः समर्घतया लभ्यन्ते आश्विने सर्वरस समर्घता धान्यसमता कार्तिकादिमासद्वये यावत् सर्ववस्तुसमता राजा सुस्थः

ग्रामे ग्रामे नवीनवसतिः सर्वलोकः सुखी. अश्वमहर्षता चतुष्पद ३२ महर्षता पाषादिमासद्वये यावत् सर्वधातुसमर्षता ५५ दुर्दुभिः ५६ बुधः स्वामी वर्षा बहुला अन्नसमर्षता रसकसवस्तुसमर्षता चैत्रादिमासत्रये अन्नसमर्षता आपाढे द्विगुणो लाभः अल्पमेघः श्रावणे दिन ११ महावृष्टिः भाद्रपदे मेघदिन ९ वर्षतिअन्नं समर्षं देशो नवीनो वसति आश्विने अन्नं समर्षं रोगाः बहुला मंजिष्ठा मरिचानां समर्षता सर्वरससर्वधातुसमर्षः कार्तिके धान्यं समर्षं अन्नं दुर्भिक्षं पश्चिमायां शुभम् मार्गशीर्षे समर्षता राज्ञां परस्परविरोधः लोका देशांतरं यांति पौषादिमासत्रये समता अश्वमहर्षता मंजिष्ठा महर्षा ५६ रुधिरद्वारी ५७ गुरुः स्वामी राज्ञां परस्परविरोधः लोकां देशांतरं यांति दुर्भिक्षं द्विजपीडा जीवादि दुःखं म्लेच्छराज्यं परदेशात् धान्यमायाति आपाढशुक्लपक्षे महामेघः श्रावणे दिन १५ महावर्षा चैत्रादिमासत्रये समर्षता धातवः समर्षाः उत्तरापथे उच्चमुलतान तिल तैलंगे गौडे मोट एषु देशेषु दुर्भिक्षं पश्चिमायां सुभिक्षं सिंधु देशे धान्यनिष्पतिः भाद्रपदे खंडवृष्टिः धान्ये त्रिगुणो लाभः आश्विने समता रोगः स्वल्पः कार्तिकादिमासपंचके अन्नं समर्षं मेदपाटे लोकपीडा ५७ रक्ताक्षः ५८ शुक्रः स्वामी अन्नं समर्षं मेदपाटे पक्षे महामेघः आपाढे महती जलवृष्टिः सुराष्ट्रायां ग्रामप्रवाहकः अन्नं समर्षं श्रावणे अल्पमेघः किंचिद्विग्रहः भाद्रपदे अल्पवर्षा रोगपीडा आश्विने अन्नं समर्षं रसकसवस्तु समर्षं कार्तिकादि मासपंचके धान्यं महर्षं विवाहादिकं नास्ति अश्वपीडा पश्चिमायां ५८ क्रोधनः ५९ शनिः स्वामी सेना बहुला मंदवृष्टिः प्रजापीडा उत्तरापथे दुष्कालः लोका निर्धनाः चैत्रवैशाखे अल्पमेघः अन्न समर्षता ज्येष्ठे मंदरोग पीडा अन्नसमता आपाढश्रावणयोरल्पवर्षा धान्ये द्विगुणो लाभः भाद्रपदे मेघः अन्नं समर्षं आश्विने रोगपीडा कार्तिके विग्रहः धान्यं समर्षं मार्गशीर्षे धान्य समता अकस्मादुत्पातः पौषे समर्षता वणिक्पीडा धान्ये द्विगुणो लाभः अन्यद्वस्तु समर्षं ५९ क्षयः ६० राहुः स्वामी चैत्रे करकापातः वैशाखे उत्पातः भूमिकंपः ज्येष्ठापाढयोः बालकरोगः नवीनमुद्गोदयः अल्पमेघः

अन्नसमर्घता भाद्रपदे खंडवृष्टिः चतुष्पदहानिः फदिया ५० नाणकैर्धान्य
कलसिकैकालभ्यते आश्विने रोगोत्पत्तिः परमन्नं समर्घं सर्वधातुसमता मध्यमः
समयः राजविरोधः पश्चिमायां सुभिक्षं अन्नं समर्घं सिंधुदेशात् स्थलदेशा
द्वा अन्नागमः पूर्वस्यां विह्वरमन्नसमता ॥ ६० ॥

इति कश्यपसंहितायां गद्यरीत्यानयेन संवत्सरफलं समाप्तम् ।

इति श्रीमनुरचिते द्वैवज्ञविनोदे सुभापाविभूषिते संवत्सर
फलकथनं नामैकविंशतितमो विनोदः ॥ २१ ॥

अथ संवत्सरफलान्याह कश्यपः—ईतयश्चाग्निकोपश्च व्याधयः प्रचुरा भु-
वि ॥ प्रभवाब्दे मंदवृष्टिस्तथापि सुखिनो जनाः १ दंडनीतिपरा भूपा बहुस-
स्यार्धवृष्टयः ॥ विभवाब्देऽखिला लोकाः सुखिनः स्युर्विवैरिणः २ शुक्लाब्दे
निखिला लोकाः सुखिनः सुजनैः सह ॥ राजानो युद्धनिरताः परस्परजयै-
पिणः ३ प्रमोदाब्दे प्रमोदंते राजानो निखिला जनाः ॥ वीतरोगा
वीतभया ईतिवैरिविवर्जिताः ४ न चलंत्यखिला लोकाः
स्वस्वमार्गात्कथंचन ॥ अब्दे प्रजापतौ नूनं बहुसस्यार्धवृष्टयः ५
अन्नायं भुंजते शश्वज्जनैरतिथिभिः सह ॥ अंगिराब्देऽखिला लोका भूपाश्च
कलहोत्सुकाः ६ श्रीमुखाब्देऽखिला धात्री बहुसस्यार्धसंयुता ॥ अध्वरे निरता
विप्रा वीतरोगा विवैरिणः ७ भावाब्दे प्रचुरा रोगा मध्यसस्यार्धवृष्टयः राजानो
युद्धनिरतास्तथापि सुखिनो जनाः ८ प्रभूतपयसो गावः सुखिनः सर्वजंतवः ।
सर्वकामक्रियासक्तो युवाब्दे युवतीजनः ९ धातृवर्षेऽखिलाः क्ष्मेशाः सदा युद्ध-
परायणाः ॥ संपूर्णा धरणी भाति बहुसस्यार्धवृष्टिभिः १० ईश्वराब्देऽखिला
अंतून् धात्री धात्रीव सर्वदा ॥ पोपयत्यतुलं चान्नं फलं सूते च पुष्कलम् ११
अनीतिरतुला वृष्टिर्वहुधान्याख्यवत्सरे ॥ विविधैर्धान्यनिचयैः संपूर्णा निखिला
धरा १२ न मुंचंति पयोवाहः कुत्रचित्कुत्रचिज्जलम् ॥ मध्यमा वृष्टिर्बश्च नून-
मब्दे प्रमाथिनि १३ विक्रमाब्दे धराधीशा विक्रमाक्रांतभूतयः ॥ सर्वत्र सर्व-

दा मेघा मुंचंति प्रचुरं जलम् १४ वृषाब्दे निखिलाः क्षमेशा युध्यंति वृषभा इव
विद्याप्रसक्ता विप्रेन्द्रा यजंते सततं सुरान् १५ चित्रार्धवृष्टिः सस्याद्यैर्विचित्रा-
निखिला धरा ॥ निराकुलाखिला लोकाश्चित्रभानोश्च वत्सरे १६ सुभानुवत्सरे
भूमौ भूमिपानां च विग्रहः ॥ भाति भूर्भूरिसस्याख्या भयंकरभुजंगमा १७
कथंचिन्निखिला लोकास्तरंति प्रतिपन्नताम् ॥ नृपाहवक्षताद्रोगाद्रैपज्यैस्तारणा-
ब्देके १८ पार्थिवाब्दे तु राजानः सुखिनः सुप्रजा भृशम् ॥ बहुभिः फलपुष्पाद्यै-
र्विविधैश्च पयोधरैः १९ व्ययाब्दे निखिला लोका बहुव्ययपरा भृशम् ॥ वीरमत्ते-
भतुरगै रथैर्भूपातिसर्वदा २० सर्वजिद्वत्सरे सर्वे जनास्त्रिदशसन्निभाः ॥ राजानो
विलयं यांति भीमसंग्रामभूमिषु २१ सर्वधार्यब्देके भूपाः प्रजापालनतत्पराः
प्रशांतवैराः सर्वत्र बहुसस्यार्धवृष्टयः २२ विरोधीवत्सरे भूपाः परस्परविरोधिनः
भूरिभूतिश्रुता भूमिर्भूरिवारिसमाकुला २३ प्रकृतिर्विकृतिं याति विकृतिः प्रकृतिं
तथा ॥ तथापि सुखिनो लोका भृशं विकृतिवत्सरे २४ खराब्दे निखिला लोका
अन्योन्यं समरोत्सुकाः मध्यमा वृष्टिरत्युग्ररोगैर्यान्तिलयं नृपाः २५ नंदनाद्रे सदा-
पृथ्वी बहुसस्यार्धवृष्टिभिः आनंददाऽखिलानां तु जंतूनां समहीभुजाम् २६ विजया-
ब्दे तु राजानः जयसंघोषतत्पराः सुनंदंतिप्रजाः सर्वा बहुसस्यार्धवृष्टिभिः २७ जयमं
गलघोषौघैः संकुला धरणी सदा ॥ जयाब्दे धरणीनाथाः संग्रामजयकांक्षिणः २८
मन्मथाब्दे प्रजाः सर्वास्तस्करा इव लोलुपाः शालीक्षुयवगोधूमैर्नयनाभिनवा धरा
२९ दुर्मुखाब्दे मध्यवृष्टिरीतिचोराकुला धरा ॥ महावैरा महीनाथा वीरवारणवा-
जिभिः ३० आकुला हेमलंबे तु मध्यसस्यार्धवृष्टिभिः ॥ भाति भूर्भूपतिक्षोभवहुवि-
युल्लतादिभिः ३१ विलंबीवत्सरे भूपाः परस्परविरोधिनः ॥ प्रजापीडा अनर्घ्य-
त्वं तथापि सुखिनो जनाः ३२ विकार्यब्देऽखिला लोकाः सरीगा वृष्टिपीडिताः पूर्व-
सस्यफलं स्वल्पं बहुलं चापरं फलम् ३३ शार्वरीवत्सरे पूर्णा धरा सस्यार्धवृष्टिभिः
जनाश्च सुखिनः सर्वे राजानः स्युर्विवैरिणः ३४ पुष्याब्दे निखिला धात्री वृष्टिभिः
पुवसन्निभा ॥ रोगकाले त्वीतिभीतिः संपूर्णे वत्सरे फलम् ३५ शुभरुद्रवत्सरे पृथ्वी
संपूर्णा विविधोत्सवैः ॥ आतंकचौरामयदा राजानः समरोत्सुकाः ३६ शीतकृद्-

त्सरे धात्री प्रजानां रोगशोकदा ॥ तथापि सुखिनो लोका बहुसस्यार्धवृष्टिभिः ३७
 क्रोधव्येदिनिखिला लोकाः क्रोधलोभपरायणाः ॥ इतिदोषेण सततं मध्यसस्यार्धवृ-
 ष्टयः ३८ अब्दे विश्वावसौ शश्वद्वोररोगधरा नराः ॥ सस्यार्धवृष्टयो मध्या भूपाला
 नातिभूतयः ३९ पराभवाब्दे राज्ञः स्यात्समरं सह शत्रुभिः ॥ आमयः क्षुद्रसस्यानि
 प्रभूतान्यल्पवृष्टयः ४० पुष्यगाब्दे मध्यवृष्टिरोगचौराकुला धराः ॥ अन्योन्यसमरे
 भूपाः शत्रुभिर्हतभूमयः ४१ कीलकाब्दे त्वीतिभीतिः प्रजाः क्षोभनृपाहवौ ॥
 तथापि वर्धते लोकाः समधान्यार्धवृष्टिभिः ४२ सौम्याब्दे निखिला लोका बहु-
 सस्यार्धवृष्टिभिः ॥ विवैरिणो धराधीशा विप्राश्चाध्वरतत्पराः ॥ ४३ साधारणा
 ब्दे वृष्टयर्धे भयं साधारणं मतम् ॥ मध्यसंपद्धराधीशाः प्रजाः स्युः स्वस्थचेतसः ४४
 विरोधकृद्गतसरे तु परस्परविरोधिनः ॥ सर्वे जना नृपाश्चैव मध्यसस्यार्धवृष्टयः ४५
 भूपाहवो महारोगो मध्यसस्यार्धवृष्टयः ॥ दुःखिनो जंतवः सर्वे वत्सरे परि-
 धाविनि ४६ प्रमाथीवत्सरे तत्र मध्यसस्यार्धवृष्टयः ॥ प्रजाः कथंचिज्जीवंति
 समात्सर्याः क्षितीश्वराः ४७ आनंदाब्देखिला लोकाः सर्वदानंदचेतसः ॥
 राजानः सुखिनः सर्वे वत्सरे मेदिनीशिषम् ४८ राक्षसाब्देखिलालोका राक्षसा
 इव निष्कृपाः ॥ इंद्रोपि न जलं दद्यात्सुभिक्षं नैव जायते ४९ नलाब्दे मध्य-
 सस्यार्धवृष्टिभिः प्रवरा धरा ॥ नृपसंक्षोभसंजाताभूरितस्करगीतयः ५०
 पिंगलाब्दे त्वीतिभीतिर्मध्यसस्यार्धवृष्टयः ॥ राजानो विक्रमाक्रांता भुंजते-
 शत्रुमेदिनीम् ५१ वत्सरे कालयुक्तारस्ये सुखिनः सर्वजन्तवः ॥ ततो-
 पि संति सस्यानि प्रचुराणि तथा गदाः ५२ सिद्धार्थीवत्सरे भूपाः शान्तवैरास्तथा-
 प्रजाः ॥ सकला वसुधा भाति बहुसस्यार्धवृष्टिभिः ५३ रौद्राब्दे नृपसंभूतसंक्षो-
 भकेशभागिनः ॥ सततं त्वखिला लोका मध्यसस्यार्धवृष्टयः ५४ दुर्मत्यब्दे
 खिला भूपा लोका दुर्मतयः सदा ॥ तथापि सुखिनः सर्वे संग्रामाः
 संति चेदपि ५५ सर्वसस्ययुता धात्री पालिता धरणी धरेः ॥ पूर्वदेशादि
 नाशः स्यात्तत्र दुंदुभि वत्सरे ५६ आहवे निरताः सर्वे भूपा रोगैस्तथा जनाः ॥
 यथाकथंचिज्जीवंति रुधिराद्गारिवत्सरे ५७ रक्षाक्षीवत्सरे सस्यवृद्धि-

वृष्टिरनुत्तमा ॥ प्रेक्षते सर्वदान्योन्यं राजानो रक्तलोचनाः ५८ क्रोधनाब्दे
मध्यवृष्टिः पूर्वदेशे विशेषतः ॥ संग्रामनिरताः सर्वे भूपाः क्रोधपरायणाः ५९
कार्पासं गन्धतैलेशुमधुसस्यविनाशनम् ॥ क्षीयमाणाश्वापि नरा जीवंति क्षयवत्सरे
६० इति संवत्सरफलम् ।

अथ राजफलम् ।

चैत्रशुदि १ का वार संवत्का राजा होताहै जिसका फल ।

श्लोक ॥ सूर्ये नृपे स्वल्पफलाश्च मेघाः स्वल्पं पयो गोषु जनेषु पीडा ॥ स्वल्पं सु-
धान्यं फलमल्पवृक्षाश्चौराग्निबाधा निधनं नृपाणां १ चंद्रे नृपे मंगलशोभनानि प्रभू-
तवृष्टिः प्रचुरं च धान्यं । सौरख्यं जनानामुदयो नृपाणां प्रशाम्यति व्याधिज रानराणाम्
२ भौमे नृपे वह्निभयं जनक्षयं चौराकुलं पार्थिवविग्रहं च ॥ दुःखं प्रजाव्याधिवियोग-
पीडा स्वल्पं पयो मुंचति वारिवाहाः ३ बुधस्य राज्ये सजलं महीतलं गृहे गृहे तूर्यविवाहं
गलम् ॥ प्रकुर्वते दानदया जनोपि स्वास्थ्यं सुभिक्षं धनधान्यसंकुलम् ४ गुरौ नृपे वर्ष-
तिकामदं जलं महीतलं कामदुघाश्च धेनवः ॥ यजंति विप्रा बहवो भिहोत्रिणो महोत्स-
वं सर्वजनेषु वर्तते ५ शुक्रस्य राज्ये बहुसस्यसंकुला स्वतीव्रवेगाः सरितो बुराशिभिः ॥
फलंति वृक्षा बहुगो प्रसूतिर्वसुंधरा पार्थिवसौख्यसंयुता ६ शनैश्चरे भूमिपतौ सत्कृज्जलं
प्रभूतरोगैः परिपीडयते जनः ॥ युद्धं नृपाणां गदतस्करा यैर्भ्रमंतिलोकाः क्षुधिताश्च
देशान् ७ इति राजफलम् ॥

अथ मंत्रिफलम् ।

भेषसंक्रांतिका वार मंत्री होताहै जिसका फल ।

श्लोक ।

नृपभयंगदतोपिहितस्करान्प्रचुरधान्यधनादिमहीतले ॥ रसचयं हि स मर्धतमंतदार-
विरमात्यपदं हि समागतः १ शशिनि मंत्रिगते बहुसस्यवत्पि धरारमते सुखमंडिता ।
वियति वारिधरा बहुवर्षिणो जनपदाः सुखराशिसुशोभिताः २ अवनिजोननु मंत्रि-
पदं गतो भवति दस्युमदादिजवेदनाः ॥ जनपदे पुजयं सुखसंचयं न बहुगोपुपयो द्विज-
कर्मच ३ शशिसुतेशुभमंत्रिसमागते स्वपतिना कुरुते मदनक्रियाम् । बहुधनं बहुवारि-

समन्वितंयवमसूरिचणान्नमहर्धता ४ विविधान्ययुताखलुमेदिनीप्रचुरतोयघना
मुदिताभवेत् ॥ नृपतयोजनपालनतत्पराःसुरगुरौननुमंत्रिसमागते ५ भृगुसुते ननु-
मंत्रिपदंगेशलभमूपकरावथमाहिषैः ॥ भवतिधान्यसमर्धतयाभयंजनपदेषुजलं-
सारितोधिकम् ६ रविसुतेयदिमंत्रिणिपार्थिवाविनयसंरहिताबहुदुःखदाः ॥ नजल-
दाजलदाजनतापदाजनपदेषुसुखंधनदंक्चिद् ७ इतिमंत्रिफलम् ॥

अथ सस्येशफलम् ।

कर्कसंक्रांतिका वार सस्येश होताहै तिसकाफल—श्लोक ।

सस्याधिनाथेतरणौहिपूर्वं धान्यंसमर्धबहवोपिचौराः ॥ युद्धंनृपाणांजलदाज-
लाढ्याः स्वल्पंचसस्यंबहुभूरुहाश्च १ सस्याधिपेशीतकरेप्रजासुखं मेघाः पयो
मुंचतिगोपगोधुक् ॥ देवद्विजाराधनतत्परानृपाधराभवेद्धान्यधनौघपूर्णा २ प्रथम-
धान्यपतौधरणीपतौगजतुरंगस्वरोद्भ्रगवामपि ॥ प्रभवदाबहुरोगधनोजलनंसम-
सौख्यकरंतुपधान्यहत् ३ जलधराजलराशिमुचोभृशंसुखसमृद्धियुतंनि-
रुपद्रवम् ॥ द्विजगणः स्तुतिपाठकरः सदाप्रथमसस्यपतौसतिबोधने ४
सस्यपतौसुरराजपुरोहिते सकलसौख्यकरः श्रुतिपूर्वकाः ॥ जलधराजलदा
बहुसस्यदारसपयांसिवहूनिवसूनि वै ५ शुक्रोयदाधान्यपतिर्धरायामेघोजलं-
वर्षतिशोभनंप्रियम् ॥ गोधूमशालेक्षुधनप्रियंगुवृक्षेषु पुष्पाणि सुखप्रदानि ६
रविसुतेयदिधान्यपतौजनोनृपातिभिः परिपीडितविग्रहः ॥ गदभयंतुपधान्यह-
रंसदादुरितवादविवादयुतानराः ७ इतिसस्येशफलम् ॥

अथ धान्येशफलम् ।

धनसंक्रांतिका वार धान्येश होताहै तिसका फल—श्लोक ।

पश्वाद्धान्याधिपेसूर्येपश्वाद्धान्यंतदा नहि। विशंहंभृतांधान्यंमहर्धज्वरपीडनम् १
चंद्रेधान्याधिपेजातिप्रजावृद्धिःप्रजायते ॥ गोधूमाः सर्पपाश्वैवगोपुक्षीरं तथावहु २
भूमिजेशीष्मधान्येशीष्मधान्यमहर्धकम् । शालीक्षुघृततैलादिमहर्घाणिभवंति च
३ बुधेधान्याधिपेमेघा जलंमुंचतिवैभृशम् ॥ संधवेलाटदेशे च माधवोल्पं च वर्षति
४ गुरौधान्यपतौयातियवगोधूमशालयः ॥ पच्यंतेसर्वदेशेषुयज्वानोब्रह्मवादिनः
५ भृगौ पश्चिमधान्येशेपश्वाद्धान्यं न पश्यति ॥ सस्याःसमर्धतांयांतिस्वल्पंक्षीरं-

गवामपि ६ दुर्भिक्षंजायते तत्र कलहं देशविग्रहम् ॥ सौराष्ट्रदेशनष्टश्वयत्रधान्याधिपोशनिः ७ ॥ इति धान्येशफलम् ॥

अथ भेषेशफलम् ।

सूर्य आर्द्रानक्षत्रपर जिसदिनं प्रवेशकरै वो वार भेषेश होताहै—श्लोक ।
जलदपेयदिवासरपेतदासरसिधैरमतेजनतारसम् । यवचनेक्षुनिवारसुशालिभिः सुखचयंसुलभंभुविर्वर्तते १ शशिनितोयदपेयदिगोमाहिष्यजवरादिपुद्गधरसंतदा । फलवतीधनधान्यवतीधराविविधभोगवतीननुभामिनी २ अन्ननिजे जलदस्यपतौभुविश्रुतिविचारविहीनधराभवाः । क्वचिदपिप्रचुरंजलमल्पकंक्वचिदपिप्रचुरंबहुतापदम् ३ अमृतरश्मिसुतेयदिवारिषे बहुजलंतुपधान्यरसादिकम् ॥ द्विजवरायजनोत्सुकचेतसाविविधसौख्ययुताधरणीतदा ४ गुरुरविप्रियदृष्टिकरः सदाखिलविलासवतीधरणीतदा । श्रुतिविचारपरानरपालका रससमृद्धियुताखिलमानवाः ५ भृगुसुतेजलदस्यपतिर्यदाजलयुतो जलदादिविशोभनाः ॥ धननिधानयुताद्विजपालका नृपतयोजनतासुखदायकाः ६ रविसुतेजलदस्यपतौभवेद्विरतवृष्टिवतीवसुधातदा ॥ मनसितापकरोनृपतिः सदा विविधरोगरताजनतायदा ७ इति भेषेशफलम् ॥

अथ रसेशफलम् ।

तुलासंक्रांतिकावार रसेश होताहै—श्लोक ।

रसपतौ तरणौधरणीतदा विरसभोगरताल्पप्रयोधरा । वसन्नैलघृतप्रियमानवाः सुखरसंच भुनक्तिमहीपतिः १ यदिविधौरसपेभुविमानवोनवनवांपुवतींभुजे प्रियाम् । जलधराबहुवारिविधायका रसवतीधनधान्यवतीमही २ यदि धरातनयोरसपोभवेन्नरसराशियुता जनताशुभा । नरपतिर्विपमोजनतापदोनजलदोबहुवृष्टिकरोभुवि ३ रसपतौद्विजराजसुते मही सुलभधान्यघृतादियुता जनाः प्रमुदितावरनायकपालिनावहुजलाखिलदेशामुरक्षिताः ४ यदिगुरौरसपेजनसौरुपदे कमलवंतिसरांसितृणानिच । जनपदा द्विजपूजनतत्परागजसवाजिरयोः प्रयुतानृपाः ५ यजनयाजनकोत्सवकोत्सुका जनपदाजलनोपिनमानसाः । सुखभुभिक्षसमोदवतीधराधरणिपाहनपापगणा प्रिया ६ रविसुतेरसपेरससंक्षयो

नजलद्रागददाश्वपयोधराः । अजगवांगजवाजिस्त्रोष्ट्रहा जनपदेपुनरा नरसैर्युता ॥ ७ ॥ इति रसेशफलम् ।

अथ नीरसेशफलम् ।

मकरसंक्रांतिका वार नीरसेश होता है—श्लोक ।

नीरसाधिपतौ सूर्ये त्रपुचंदनयोरपि । रत्नमाणिक्यमुक्तादेरर्धवृद्धिः प्रजायते
१ शुक्लवर्णादिवस्तूनांमुक्तारजतवाससाम् । अर्धवृद्धिः प्रजायेत शशांकेनीरसाधि-
पे २ नीरसेशोयदाशौमः प्रवालारक्तवाससाम् । रक्तचंदनताम्राणामर्धवृद्धिर्दिनेदिने
३ चित्रवस्त्रादिकंचैवशंखचंदनपूर्वकम् । अर्धवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशोबुधोयदि ४
हरिद्रापीतवस्तूनां पीतवस्त्रादिकंचयत् । नीरसेशोयदाजीवः सर्वेषांप्रीतिरुत्तमा ५
कर्पूरागरुगंधानां हिममौक्तिकवाससाम् । अर्धवृद्धिः प्रजायेत नीरसेशोभृगुर्यादि ६-
त्रपुषिंडादिलोहानां लृष्णवस्त्रादिवस्तूनाम् । अर्धवृद्धिः प्रजायेत मंदिनीरसनायके ७
इति नीरसेशफलम् ॥

अथ फलेशफलम् ।

मीनसंक्रांतिका वार फलेश होता है—श्लोक ।

ध्रुमवतीफलपुष्पवती धरा प्रमुदिताफलभोगविरोधतः । बहुजलंजलदोभ्रुवि-
मुंचतिकचिदपिप्रमितंफलपोरविः १ यदिविधुः फलपोद्भुमराशयः फलयुता
त्रतिभिः कुसुमैर्युता । द्विजमुखावरभोगसमान्विता नृपतयोनधनाटनतत्पराः २
फलपतिर्यदिभूतनयो भवेत्सुबहुष्पफलान्वितमेदिनी । गतभयानृतदेशजनास्त-
दानृपतयोबहुविग्रहकारकाः ३ यदि बुधेफलपेफलमुत्तमंजलधराजलराशि-
मुचस्तदा । बहुतृणकुसुमंकमलैर्युतंजनपदाजनसौर्यमुदान्विताः ४ सुरगुरुः
फलनायकतांगतो गतभयावनराशिमहाद्रुमाः । यजनयाजनकोत्सवमंदिराः श्रु-
तिविचारपराद्विजपूर्वकाः ५ यदिफलस्पतौभृगुजेधरामृदुकुमारमहीरुहरा-
शयः । बहुपथानरनाथसुभोगदाद्विजवराः श्रुतिपाठपरायणाः ६ यदि शनिः फलयः
कलहो भवेज्जनितपुष्पगणास्तरवः सदा । हिमभयंनरतस्करजंतदाजनपदाजनरा-
शिसमाकुलाः ७ इति फलेशफलम् ।

अथ धनेशफलम् ।

कन्यासंक्रांतिका वार धनेश होता है— श्लोक ॥ श्रविणपेयदिवात्तरपे

तदावणिजतोबहुद्रव्यसमागमः । गजतुरंगममेषकरोधृतो धनचयलभतेऋयविक्र-
यात् १ धनपतिर्मृगलाञ्छनकोयदारसचयात्क्रयविक्रयतो धनम् । वसनशालियुगं
धनजंबहुद्रविणतैलघृतं नृपसौख्यकम् २ असतिमौल्यकरो धरणीसुतः शरदि-
ताम्रकरस्तुपधान्यद्वत् । महामिभासिभवेद्विगुणतदानरपतिर्जनशोकविधायकः ३
द्रविणपोहिमरश्मिसुतोयदाविविधसंग्रहवस्तुफलातदा । द्विजवराजपयज्ञसुसंयुताः
ऋषिविशेषविशेषितमानसाः ४ सुमनसांचगुरुर्द्रविणाधिपोवणिजवृत्तिपराः सुख-
भाजनाः । फलितपुष्पितभूमिरुहाः सदाविविधद्रव्ययुताभुविमानवाः ५ द्रविण-
पो भृगुजोद्रविणैर्युताः समधनाः सकलाभुविमानवाः । समसुखाः क्रयविक्रयजीवि-
नो नृपतयोजनपालनतत्पराः ६ द्रविणपेरविजेविरलं धनंगदरता धरणीपतयः
सदा । अधनिकावणिजः ऋषिजीविनो द्विजवराः परिपीडितमानसाः ७ इति द्रव्ये-
शफलम् ।

अथ दुर्गेशफलम् ।

सिंहसंक्रांतिका वार दुर्गेश होता है—श्लोक ॥ नयविशेषकरस्तरणिस्त-
दागतभयानरराजपुरोगमाः । समधिकेनतदानृपतो न्यतः पथि संव्रजतांभयं
कचित् १ गढपतिर्मृगलाञ्छनकोयदानृपसुराज्यविलासितपौरजाः । बहुधने-
श्रुजगोरसभोगिनोनरवरा नरवर्णितविग्रहाः २ अवनिजोगढनायकतांगतोविवि-
धदुःखवियोगसमन्वितः । जनपदेषु जनाः क्रयविक्रये भयविशेषतयानफलं
कचित् ३ विषयसाम्यसुखंशशिजेप्रभौ भवतिराशिगतेतुविशेषतः । शशिसुतेयदि
कोटकपालकेपथिपुद्रव्ययुजानभयंकचित् ४ सुरगुरौगढपेनयशोभितानरवरा
नरपाः करपालिताः । गिरिपुवैनगरेपुसमंसुखंसुखमतिद्विजशस्त्रवतांविशाम् ५
नरवरेपुविशेषपतिर्यदा भृगुसुतोबहुसौख्यकरोमतः । विनयवाणिजगेहसमः सुखो
गतयनंनिकटेपिचदूरतः ६ रविसुतेगढपालिनिविग्रहे सकलदेशगताश्वलिताज-
नाः । विविधधैरिविशेषितनागराः ऋषिधनंनलभेद्विकश्चन ७ इति
कोटपालफलम् ।

अथ चतुर्मेघफलं—त्रिभिर्गताब्दाः सहिताश्वतुभिः शेषंभवेदंबुपतिः
ऋमेण। भावर्तसंवर्तकपुष्करश्चद्रोणश्चतुर्योमुनिभिःप्रदिष्टः १ फलम्-आवर्तेद्विज-
वृष्टिभ्यंसंवर्तेजलपूरिता । पुष्करेमंदवृष्टिश्च द्रोणे वर्षतिसर्वदा २ इति मेघफलम् ॥

अथ गुरुदयवशेन वर्षनामफलम् ।

श्लोकः—नक्षत्रेणसहोदयमस्तं वा येन याति सुरमन्त्री।तत्संज्ञवक्तव्यं वर्षं मास
क्रमेणैव ॥ १ ॥ कार्तिक्यादिपुसंयोगे लत्तिकादिद्वयं द्वयम् । अतोपांत्यौ पंचमश्च
त्रिधामासत्रयं स्मृतम् ॥ २ ॥ अथ फलं-सस्यानिघृतकापासतैलादिसुखसंचयः।
चैत्रवर्षं भवेद्बुद्धिर्नृपसौख्यफलप्रदा १ अर्धं विविधभावेन जायतेद्रविणप्रदम् । नी-
रुजानिर्भयालोका वैशाखे जनपूजिताः २ तस्करैः पापरोगैर्वापीड्यते, पीडयां
जनाः । भ्रमंतेस्वेच्छयान्भूम्यानिर्द्रव्यैर्ज्येष्ठसंज्ञके ३ अर्धमहर्षतां याति, धनधान्यं
समं भवेत् । आपादेस्वल्पवृष्टिश्चतुपधान्यमहर्षता ४ मनोल्हादंप्रकुर्वतिजनाः
सौख्यसमायुताः । श्रावणे वृष्टिरत्युग्रागोमहिष्यादिकं सुखम् ५ अर्धमहर्षतां यात
धनधान्यं समं भवेत् । मघवावर्षतिस्वच्छं संपदोभाद्रवर्षके ६ सुभिक्षं पूर्वसस्यं स्या
ज्वररोगाकुलं जगत् । आश्विनेशो जनावृष्टिर्नृपसौख्यकरी सदा ७ पापबुद्धिरता
लोका भवंति कार्तिके सदा । देवतानैव मन्यन्ते राज्यंच तस्करैर्हृतम् ८ कार्पासादिभ-
हर्षस्याद्गोधूमापतिलादिकम् । मेघोवर्षति देवो वामार्गशीर्षविशेषतः ९ ज्वर-
रोगक्षुधार्ताश्रनानाजनपदाः सदा । महर्षतुत्रयोमासापौषे स्वास्थ्यंततः परं १० सु-
भिक्षं पूर्वयाम्यायां मध्यमं पश्चिमे तथा । उत्तरे रौरवं माघे वर्षं धान्यमहर्षता ११ सु-
भिक्षं प्रचुरा वृष्टिरुत्तरे याम्यपश्चिमे । पूर्वस्यां रौग्वंधोरं फाल्गुने वत्सरे शुभम् १२
इति गुरुवर्षफलम् ।

अथ अधिकमासफलम् ॥ स्वल्पवृष्टिर्भवेन्मेघो धनधान्यसमाकुलम् । घृतं तै-
लंच कार्पासंसुभिक्षं माघवद्वये १ विद्भरं भूमिपाद्गीतिस्तस्करादिभयं भवेत् । घृतं तै-
लं तथा धान्यंसमर्षस्याद्विज्येष्ठके २ सुभिक्षं शुभवृष्टिश्च धनधान्यसमाकुलम् । घृतं-
तैलं च कार्पासं सुभिक्षं चैत्रकद्वये ३ त्रुपधान्यादिवृद्धिः स्यात्पशुरोगोतिवृष्टितः ।
राजांसुखकराभूमिरापाद्द्वितयं यदा ४ द्विश्रावणेतिदुर्भिक्षं स्वल्पवृष्टिर्महद्भयं । पाप-
बुद्धिरतालोका राजानः कुरगामनाः ५ द्विभादे क्षेममारोग्यंसस्यनिष्पत्तिरुत्त-
मा । बहुक्षीरघृतागाधो वृष्टिः कार्तिकमाग्निता ६ सस्यं महर्षतां याति स्वल्पवृष्टि-
र्भयं नृपात् । शारदानि च स्वल्पानि गजघाधाश्विनद्वये ७ इत्यधिकमासफलम् ।

अथ गुरुचारशनिचारफलं प्रारभ्यते.

अथातःसंप्रवक्ष्यामि गुरुचारमनुत्तमम् । अनेनगुरुचारेणप्रभववायब्दसंभवः १
 मेषराशौयदाजीवस्तत्रसंवत्सरस्तदा । प्रवद्धनामाजलदोवर्षाचसर्वतोमुखी २ सुभि-
 क्षंविग्रहोराज्ञांसमर्धवस्त्रकर्पटं । हेमरूप्यंतथाताम्रंकार्पासंचप्रवालकम् ३ मंजिष्ठा
 नारिकेलंचपट्टसूत्रंसमर्धता । कांस्यंलोहंतथैवैक्षुपूगादीनांचसंग्रहः ४ राजपीडा-
 मंहारोगोद्विजानांकष्टसंभवः । मासत्रयेफलमिदंपश्चाद्द्राद्रपदेपुनः ५ गोधूमशा-
 लिमापाणामाज्यस्याग्नेमहर्धता । दक्षिणस्यामुत्तरस्यांसंडवृष्टिः प्रजायते ६ दक्षि-
 णोत्तरयोर्दशैश्चभंगोपिकुत्रचित् । दक्षिणमपिपण्मासादाश्विनेफलगुनतेथा ७
 पश्चात्सुभिक्षं द्वौमासौनाम्नामेघोजलेद्रकः । कार्तिकंमार्गशीर्षचकार्पासान्नमहर्ध-
 ता ८ मेदपाटेराजपीडादेशभंगोल्पवर्षणम् । लोकाः सरोगाद्दुर्भिक्षं पौर्णमेसमहर्ध-
 ता ९ वाणिज्येसंशयोलाभोवैशाखेदुर्जरारसाः । छत्रभंगस्तथापाटेश्रावणेच्चाभयं
 युधि १० नवीनोजायतेराजाकचिन्मेघोपिकार्तिके । धान्यादिसंग्रहेलाभंस्त्रिगु-
 णोमासपंचमे ११ अब्दमध्येयदाजीवः क्रमाद्राशित्रयंसंपृशेत् । तदासुभटको
 टीभिः प्रेतपूर्णाविसुंधरा १२ उदग्वीर्थांचरञ्जीवः सुभिक्षक्षेमकारकः । मध्य-
 मेमध्यमंचार्थमेवंमन्येपिखेचराः १३ एपराशिफलभेदविशेषः शेषमत्रगुरुगम्य-
 मशेषं द्विपमत्रगुरुचारविचार संग्रहेभजतुजातुनकश्चित् १४ इतिमेषराशिफलम् ।
 वृषराशौयदाजीवोवैशाखोवत्सरस्तदा । नंदशालीभवेन्मेघः सर्वधान्यसमर्धता १५
 वैशाखेआश्विनेमासेश्लिणारोगाश्चदंतिनाम् । अश्वानांचमहापीडागृहवैरंपरस्पर-
 म् । १६ उत्तरस्यामनावृष्टिर्दुर्भिक्षमंडलेकचित् । पूर्वस्यांचमहासौर्यंराजबु-
 ध्दिविपर्ययः १७ घृतं तैलंच मंजिष्ठाभौक्तिकंचप्रवालकम् । लवणंरक्तवहं
 चनारिकेलंसमर्धता १८ गोधूमाः शालिचणकामुद्रामापास्तथातिजाः ।
 महर्घाःश्रावणेज्येष्ठेमेघानांचमहाजलम् १९ शृगालकेमालवेचउत्पातोराज-
 विग्रहः । देशभंगाद्भयंभूरिघृतधान्यमहर्धता २० मेदपाटेग्रीष्मकृतौसमर्ध
 धान्यमीरितम् । मरौधान्यंघृतं तैलं महर्धं धातवोन्यथा २१ अश्वरोगश्चतुष्पा-
 दनाशः पीडागमः क्वचित् । आपाटेश्रावणेवर्षानवर्षांन्नाद्रपादके २२ सिंधुदे-

(२४८)

द्वैतविनोद-

अष्टोत्तरिंशत्तन आयव्ययसारिणी.

जिसवपंकाराजाजोग्रहउसीकेसूत्रगतराशियोंकालाभखचंदेखना.

राशि.	मं.	वृ.	मि.	क.	सि.	क.	तु.	वृ.	ध.	मं.	कुं.	मी.
रवि. ६	२ १४	११ ५	१४ २	८ २	११ ११	१४ २	११ ५	२ १४	५ ५	८ १४	८ १४	५ ५
चंद्र. १५	१४ २	८ ११	११ ८	५ ८	८ २	११ ८	८ ११	१४ २	२ ११	५ ५	५ ५	२ ११
मं. ८	८ १४	२ ८	५ ५	१४ २	२ १४	५ ५	२ ८	८ १४	११ ५	१४ १४	१४ १४	११ ५
बुध. १७	५ ५	१४ ११	२ ११	११ ८	१४ २	२ ११	१४ ११	५ ५	८ ११	११ ५	११ ५	८ ११
शुक्र. १९	११ ५	५ १४	८ ११	२ ११	५ ५	८ ११	५ १४	११ ५	१४ ११	२ ८	२ ८	१४ ११
शु. २१	२ ८	११ १४	१४ ११	८ ११	११ ५	१४ ११	११ १४	२ ८	५ १४	८ ८	८ ८	५ १४
शनि १०	१४ १४	८ ८	११ ५	५ ५	८ १४	११ ५	८ ८	१४ १४	२ ८	५ २	५ २	२ ८

कुयोगसारिणी.

	योगकिनाम.	रविवार	सोम०.	मंग०	बुधवार	शुक्रवार	शुक्र०	शनि०
२	ऋकचयोग.	१२ ति.	११ ति.	१० ति.	९ ति.	८ ति.	७ ति.	६ ति.
३	दग्धयोग.	१२ ति.	११ ति.	५ ति.	३ ति.	६ ति.	८ ति.	९ ति.
४	मृत्युयोग.	११ ^१ ति. ६	७ ^२ ति. १२	६ ^१ ति. ११	६ ^३ ति. ११	९ ^४ ति. १४	५ ^५ ति. १२	१० ^६ ति. १५
५	सिद्धियोग.	० ति.	० ति.	८ ^३ ति. १३	५ ^२ ति. १२	१० ^४ ति. १५	६ ^३ ति. ११	९ ^५ ति. १४
६	उत्पातयोग.	विशा.	पूर्वा.	धनिष्ठा.	रेवती.	रोहि.	पुष्य	उत्तरा.
७	मृत्युयोग.	अनुरा.	उत्तरा.	शतता.	अश्विनी	मृगशी.	आश्ले.	हस्त.
८	कालयोग.	ज्येष्ठा.	अभिजि	पूर्वा.	भर.	अर्द्रा.	मघा.	चित्रा.
९	सिद्धियोग.	मूळ.	श्रव.	उत्तरा	कृत्ति.	पुनर्व.	पूर्वा	रेवती.
१०	यमदंष्ट्रयोग.	मघा. धनिष्ठा	मूळ. विशा.	कृत्ति. रोहि.	पूर्वा पा पुनर्वसु	उत्तरा अश्विनी	रोहिणी अनुरा.	श्रवण. शत.
११	यमपेट.	मघा.	विशा.	मृग.	मूळ.	कृत्ति	रोहि	हस्त.
१२	मुसल. यज्ञ.	भर.	चित्रा.	उत्तरा	धनि.	उत्तरा.	ज्येष्ठा.	रेवती.
१३	अमृतसिद्धियोग	हस्त.	श्रव.	आश्वि.	अनुरा.	पुष्य	रेवती.	रोहिणी.

अथ गुरुदयवशेन वर्षनामफलम् ।

श्लोकः—नक्षत्रेणसहोदयमस्तं वा येन याति सुरमन्त्री। तत्संज्ञं वक्तव्यं वर्षं मास
क्रमेणैव ॥ १ ॥ कार्तिक्यादिपुसंयोगे कृत्तिकादिद्वयं द्वयम् । अतोपांत्यौ पंचमश्च
त्रिधामासत्रयं स्मृतम् ॥ २ ॥ अथ फलं—सस्यानिघृतकापासतैलादिसुखसंचयः ।
चैत्रवर्षं भवेद्वृद्धिर्नृपसौख्यफलप्रदा १ अर्धं विविधभावेन जायते द्रविणप्रदम् । नी-
रुजानिर्भयालोका वैशाखे जनपूजिताः २ तस्करैः पापरोगैर्वापीड्यते पीडय्या
जनाः । ज्येष्ठेस्वेच्छया भूम्यानिर्द्रव्यैर्ज्येष्ठसंज्ञके ३ अर्धं महर्घतां याति धनधान्यं
समं भवेत् । आपादेस्वल्पवृष्टिश्चतुपधान्यमहर्घता ४ मनोल्हादं प्रकुर्वति जना-
सौख्यसमायुताः । श्रावणे वृष्टिरत्युग्रा गोमहिष्यादिकं सुखम् ५ अर्धं महर्घतां याति
धनधान्यं समं भवेत् । मघवावर्षतिस्वच्छं संपदो भ्राद्रवर्षके ६ सुभिक्षं पूर्वसस्यं स्या
ज्वररोगाकुलं जगत् । आश्विनेशो भनावृष्टिर्नृपसौख्यकरी सदा ७ पापबुद्धिरता-
लोका भवति कार्तिके सदा । देवतानैव मन्यते राज्ञ्यं तस्करैर्हृतम् ८ कार्पासादिम-
हर्घस्याद्गोधूमापतिलादिकम् । मेघो वर्षति देवो वामार्गशीर्षे विशेपतः ९ ज्वर-
रोगक्षुधार्ताश्च नानाजनपदाः सदा । महर्घं तु त्रयोमासापौषे स्वास्थ्यं ततः परं १० सु-
भिक्षं पूर्वयाम्यायां मध्यमं पश्चिमे तथा । उत्तरे रौरवं माघे वर्षं धान्यमहर्घता ११ सु-
भिक्षं प्रचुरा वृष्टिरुत्तरे याम्यपश्चिमे । पूर्वस्यां रौरवं घोरं फाल्गुने वंत्सरे शुभम् १२
इति गुरुवर्षफलम् ।

अथ अधिकमासफलम् ॥ स्वल्पवृष्टिर्भवेन्मेघो धनधान्यसमाकुलम् । घृतं तै-
लं च कार्पासं सुभिक्षं माघवद्वये १ विद्वं भूमिपाद्भितिस्तस्करादिभयं भवेत् । घृतं तै-
लं तथा धान्यं समर्घं स्याद्द्विज्येष्ठके २ सुभिक्षं शुभवृष्टिश्च धनधान्यसमाकुलम् । घृतं
तैलं च कार्पासं सुभिक्षं चैत्रकद्वये ३ तुपधान्यादिवृद्धिः स्यात्पशुरोगोतिवृष्टितः ।
राज्ञां सुखकरा भूमिरापादद्वितयं यदा ४ द्विश्रावणेति दुर्भिक्षं स्वल्पवृष्टिर्महर्घं । पाप-
बुद्धिरतालोका राजानः क्रूरशासनाः ५ द्विभादे क्षेममारोग्यं सस्यनिष्पत्तिरुत्त-
मा । बहुक्षीरघृतागावो वृष्टिः कार्तिकसम्भिता ६ सस्यं महर्घतां याति स्वल्पवृष्टि-
र्भयं नृपात् । शारदानि च स्वल्पानि गजवाधाश्चिनद्वयं ७ इत्यधिकमासफलम् ।

अथ गुरुचारशनिचारफलं प्रारभ्यते.

अथातःसंप्रवक्ष्यामि गुरुचारमनुत्तमम् । अनेनगुरुचारेणप्रभवाद्यद्भसंभवः १
 भेषराशौयदाजीवस्तत्रसंवत्सरस्तदा । प्रबद्धनामाजलदोवर्पाचसर्वतोमुखी २ सुभि-
 क्षंविग्रहोराज्ञांसमर्धवस्त्रकर्पटंहेमरूप्यंतथाताम्रंकार्पासंचप्रवालकम् ३ मंजिष्ठा
 नारिकेलंचपट्टसूत्रंसमर्धता । कांस्यंलोहंतथैवेक्षुपूगादीनांचसंग्रहः ४ राजपीढा-
 मंहारोगोद्विजानांकट्टसंभवः । मासत्रयेफलमिदंपश्चाद्द्राद्रपदेपुनः ५ गोधूमशा-
 लिमापाणामाज्यस्याग्नेमहर्धता । दक्षिणस्यामुत्तरस्यांखंडवृष्टिःप्रजायते ६ दक्षि-
 णोत्तरयोर्देशेछत्रभंगोपिकुचचित् । दर्भिक्षमपिपणमासादाश्विनेफलगुनेतथा ७
 पश्चात्सुभिक्षं द्वौमासौनाम्नामेघोजलेद्रकः । कार्तिकंमार्गशर्षीर्षचकार्पासात्रमहर्ध-
 ता ८ भेदपाटेराजपीढादेशभंगोल्पवर्षणम् । लोकाः सरोगादुर्भिक्षंपौषैरसमहर्ध-
 ता ९ वाणिज्येसंशयोलाभोवैशाखेदुर्जरारसाः । छत्रभंगस्तथापाढेश्रावणेचाभयं
 युधि १० नवीनोजायतेराजाकचिन्मेघोपिकार्तिके । धान्यादिसंग्रहेलाभंस्त्रिगु-
 णोमासपंचमे ११ अब्दमध्येयदाजीवः क्रमाद्राशित्रयंपृशेत् । तदासुभटको
 टीभिःप्रेतपूर्णावसुंधरा १२ उदग्वीथींचरञ्जीवः सुभिक्षक्षेमकारकः । मध्यं-
 येमध्यमंचार्थमेवमन्येपिखेचराः १३ एपराशिफलभेदविशेषः शेषमत्रगुरुगम्य-
 मशेषां द्वेपमत्रगुरुचारविचार संग्रहेभजतुजातुनकश्चित् १४ इतिपेपराशिफलम् ।
 वृपराशौयदाजीवोवैशाखोवत्सरस्तदा । नंदशालीभवेन्मेघःसर्वधान्यसमर्धता १५
 वैशाखेआश्विनेमासेस्त्रीणारोगाश्चदंतिनाम् । अश्वानांचमहापीढागृहेवैरंपरस्पर-
 म् । १६ उत्तरस्थामनावृष्टिर्दुर्भिक्षमंडलेकचित् । पूर्वस्यांचमहासौख्यंराजबु-
 द्धिविपर्ययः १७ घृतंतैलंच मंजिष्ठामौक्तिकंचप्रवालकम् । लग्णंरक्तवह्निं
 चनारिकेलंसमर्धता १८ गोधूमाः शालिचणकामुद्रामापास्तथातिग्जाः ।
 महर्घाःश्रावणेज्येष्ठेमेघानांचमहाजलम् १९ शृगालकेमालवेचउत्पातेराज-
 निग्रहः । देशभंगाद्भयंभूरिघृतधान्यमहर्धता २० भेदपाटेऽग्नीष्मकृतौसमर्ध-
 धान्यमीरितम् । मरौधान्यंघृतंतैलमहर्धधातवोन्यथा २१ अश्वरोगश्चतुष्पा-
 दनाशः पीढागमः कचित् । आपाढेश्रावणेवर्षानवर्षाज्जाद्रपादके २२ सिंधुदे-

शेनागपुरेश्रीविक्रमपुरस्थले । धान्यमहर्षसमर्ष भेदपाटे तदाभवेत् २३
 मासद्वयसंग्रहः स्याद्धान्यानांचततोऽशुभम् । दुर्भिक्षंमासदशकेमार्गरोधः
 प्रजाक्षयः २४ मुनिवृषभैर्वृषभतोगुरौफलंसकलमेवमादिष्टम् । जिनवृषदृष्ट्या-
 नवलादचलासर्वत्रसरसास्यात् २५ इतिवृषराशिफलं मिथुनेसंगतेजविज्ये-
 ष्ठाख्योवत्सरो भवेत् । बालानांदोषमश्वानांखंडवृष्टिस्तदाभवेत् २६ कर्कोटकोय-
 दामेघोगंडूपदोमतांतरे । तस्करैः पीड्यतेलोकःपापोपहतमानसैः २७ पश्चिमा-
 यांसिंधुदेशेवायव्येचोत्तरादिशि । चित्राविचित्राजायंतरोगाः पीडोत्तरापथे २८
 श्वेतवस्त्रं तथाकांस्यं कर्पूरं चंदनादिकम् । मंजिष्ठानालिकेरंचपूगीस्वर्णं चरूप्यकम्
 २९ मासानांपंचकंयावत्समर्षंचित्रतोभवेत् । पश्चान्महर्षपूर्वोक्तंधान्यानांचसम-
 र्घता ३० पूर्वाश्रियाभ्यनैर्ऋत्यामीशानेचसुभिक्षता । श्रावणेत्तुमहत्कष्टंमहिषीणांच
 हस्तिनां ३१ राजयुद्धंप्रजावृद्धिः सुभिक्षंमंगलंशुवि।समर्षं तैलखंडादिशर्कराधा-
 तवोपिच ३२ सृगालदेशेचोत्पाताःक्रयाणकेपुमंदता । महावर्षाघृतंधान्यंसमर्ष
 चगुरुस्तथा ३३ शुठीमरीचपिप्पल्योमंजिष्ठाजातिकोशकाः । महर्षमेतद्वस्तु
 स्यात्फाल्गुनेधान्यसंग्रहः ३४ कार्पासलवणंगुडतिलगोधूमयुगंधरीचणकमु-
 द्रान् । ग्राह्यविक्रयक्रयतस्त्रिगुणोलाभस्त्रिमासांते ३५ गुरुरपिमिथुननिलीनःसा-
 रस्यंमनस्यंतः करोतिजने । व्यभिचारचारचर्यावलात्कचिद्देशभंगजन्यम् ३६
 इति मिथुनराशिफलम् ३ कर्कागुरुस्तथापादेवत्सरेतत्रजायते । पूर्वदक्षिणयोर्म-
 घोमध्यमंकंबलाभिधः ३७ महर्षसर्वधान्यानांकार्तिकेफाल्गुनेतथा । पश्चिमाया
 सिंधुदेशेवायव्येचोत्तरादिशि ३८ क्षयश्चतुष्पदानांस्याद्दुर्भिक्षंमृगसैन्यकम् ।
 हेमरूप्यं तथा ताम्रंपट्टसूत्रंप्रवालकं ३९ मौक्तिकंद्रव्यमन्नादिलोको-
 त्तया लोकविक्रयः । मंजिष्ठाश्वेतवस्त्राणांमहर्षसुप्तदक्षयः ४० गोधूमशा-
 लितैलाज्यलवणादिगुडंपुनः । मापामहर्षंजायंतेपापकर्म्मरतोजनः ४१ कार्तिक
 द्वितयेधान्यंघृतंतैलंमहर्षता । पट्टसूत्रंचवस्त्राणिजातीफललवंगकं ४२ मीरचंशी-
 तकालेपुसंग्राह्याणिवणिगजनैःविशाखज्येष्ठयोर्लाजोद्विगुणस्तस्यविक्रपात् ४३
 वर्षांकालेमहावर्षासर्वधान्यमहर्षता सुभिक्षंतिलकार्पासचणक्यानांगुडस्यच ४४

गोधूममाषतुवरीयुगंधरीमुद्गकोद्रवादीनां । आपाढेसंग्रहतोलाभः पुनरुद्भवोद्विगुणः
 ४५ इतिकर्कराशिफलं । सिंहेजीवेश्रावणाख्योवत्सरोवासुकिर्धनः । बहुक्षीरघृता
 गावोजलपूर्णाचमेदिनी ४६ देवब्राह्मणपूजास्यान्नराणां मान्यतासताम् । रोगावि-
 वाहश्चान्योन्यंचतुष्पदमहर्घता ४७ म्लेच्छदेशे महायुद्धं छत्रभंगश्चाविङ्करम् । उद्वसः
 क्रियते लोकः पश्चिमोत्तरवायुपु ४८ गोधूमतिलमापाज्यशालीनांचमहर्घता ।
 सुवर्णरूप्यताम्रादिप्रवालानां समर्घता ४९ सुभिक्षंसर्वदेशे च मेघोप्यापाढभाद्रयोः ।
 श्रावणेवृष्टिरल्पैवसुकालः कार्तिकेस्मृतः ५० सोपारीखोपराडोडामंजिष्ठशुंठि-
 खारिकाः । पट्टकूलंजातिफलं कर्पूरंसुमहर्घकं ५१ उदक्काले गुरुः खंडाहिंघृती
 श्वित्रशर्करा । महर्घमेतद्वस्तु स्याद्धान्यस्यातिसमर्घता ५२ ज्येष्ठेष्टस्कंदकैर्धान्यं-
 लभ्यते मणमानतः । स्कंदकैः पंचविंशत्याघृतं तैलं तु विंशतिः ५३ स्कंदकैर्दशभिर्ल-
 भ्यागोधूमामणसंमिताः । धान्यकार्पासैतैलादिरससंग्रहणं शुभम् ५४ फाल्गुनेरत्न-
 तो ज्येष्ठालाभोद्विगुणतः परं । गुरौसूर्यग्रहप्राप्ते सर्वत्र भाभिकोदयः ५५ इति सिंहे
 राशिफलम् । कन्याभोगे गुरोर्जाते मेघनामतमस्तमः । भाद्रसंवत्सरस्तत्र सप्तमासान्न
 रौरवम् ५६ ततः परं सुभिक्षं स्यात्कार्तिकान्माधवावधि । आयः संग्रहणाद्याभो
 द्विगुणो भाद्रमासतः ५७ चतुष्पदानां पीडापि गोधूमशालिशर्करा तैलमापामहर्घाः
 स्युर्गुडादीक्षुरसस्तथा ५८ शूद्राणामंत्यजानांचकष्टंसौराष्ट्रमंडलं । खंडवृष्टिर्दक्षि-
 णस्यामुत्पाताम्लेच्छमंडले ५९ भेदपाटेशुगाले च परचक्रभयंरणं । सर्वदेशेवाह्नि-
 भयं मेघोल्पश्चरसाल्पता ६० मरुदेशे छत्रभंगश्चैत्रे वामाधवे भवेत् । गोधूमघृततै-
 लानिमहर्घाणिसमादिशेत् ६१ वस्त्रकंबलधातूनां रत्नादेश्चमहर्घता । आपाढे धान्य-
 संदोहोभाद्रेलाभश्चतुर्गुणः ६२ इतिकन्याराशिफलं ६ गुरोस्तुलायामेघः स्यात्त-
 क्षकोवत्सरोश्विनः । तदातिवृष्टिर्मंजिष्ठानारिकेलमहर्घता ६३ अन्योन्यं राजयुद्धा
 निसमर्घभोज्यतैलयोः । मार्गशीर्षतथापौषे द्वयोर्धान्यस्य संग्रहः ६४ लाभः स्या-
 त्पंचमेमासे मार्गादारभ्य चैत्रतः ॥ छत्रभंगस्ततो राजविग्रहः कापिमंडले ६५ उत्पा
 तो मरुदेशे स्यान्मार्गभयंच चोरतः । कोटजे सलमेवाचैः परचक्रागमोमतः ६६
 स्कंदकैर्दशभिश्चैकमणधान्यंच उच्यते । कार्तिके मार्गशीर्षे वामे घस्त्वापाढके

महान् ६७ त्रयोदशस्कंदकैश्वपंढामणमवाप्यते । पंचाशत्स्कंदकैर्मिश्रीशर्करा
मणविक्रयः ६८ रसक्रयाणकादीनांसंग्रहेण चतुर्गुणः । लाभश्चतुर्थमासेस्याद्धातू-
नांचमहर्घता ६९ इतितुलाराशिफलं ७ वृश्चिस्थेगुरौसोमेमेघः कार्तिकमा-
सतः । संवत्सरः खंडवृष्टिर्धान्यदल्पंभयंमहत् ७० गृहेपरस्परं वैरमष्टौमासानसं-
शयः । भाद्राश्विनेकार्तिकारूयास्त्रयोमासामहर्घता ७१ ततः सुभिक्षंजायेतमंद
वृष्टिश्चमंडले । पश्चिमायांजीववृष्टिर्दुर्भिक्षंवायुमंडले ७२ हेमरूप्यकांस्यताम्रति-
लाज्यश्रीफलादिषु । महर्घगुडकार्पासलवणश्वेतनक्षकम् ७३ महिषीवृषभाश्वः
समर्घाधान्यमंडले । तीडानाम्लेच्छलोकानामहोत्पातश्चसंभवेत् ७४ शृगालदेशे
कटकं रोगोश्वमहिषीपुच । राज्ञीनिचमहर्घाणिहिंनुस्वारिकस्वोपराः ७५ देशभंगः
स्वल्पवृष्टिस्तृणानामपिदुःखिता । मरौतथानागपुरेदेशे क्लेशाकुलाः प्रजाः ७६
गोधूमचणकतुवारियुगंधरीमापमुद्रकंगुतिलाः । संज्ञाह्यास्तेमासाः पंचपरं विक्रयाद्धि
गुणलाभः ७७ इतिवृश्चिकराशिफलम् ८ धनुर्गुरौहेममालीगेघसंवत्सरस्तदा ।
मार्गशीर्षेदिव्यवृष्टिः स्त्रीणांपीडागृहेगृहे ७८ पूर्वकालेभवेद्धान्यंगोधूमशालि-
गर्कराः । कार्पासश्चप्रवालानिकांस्यलोहंघृतंत्रपु ७९ हेमरूप्यमहर्घाणितिलतैलं
गुडस्तथा । पूगीफलंश्वेतवस्त्रमहर्घचक्रचिद्भवेत् ८० मार्गशीर्षादिचपुनर्ज्येष्ठे
यावन्महर्घता । महिषीवाजिधेनूनांमंजिष्ठायामहर्घता ८१ देशभंगश्चदुर्भिक्षं
क्वचिन्मारकसंभवः । संजातेशीतकालेथग्नीष्मेम्लेच्छजनक्षयः ८२ श्रावणे धान्य-
कलसीत्रिंशतास्युष्टैर्भवेत् । पंचाशत्स्कंदकैराज्यमणंभाद्रैर्बुधोमहान् ८३ आश्विं
नेरोगितासर्पदंशोधान्यमणपुनः । दशभिःस्कंदकैराज्यमणैस्तावाद्भिरैवच ८४ खंड-
लभ्यासेरमिताएकेनस्कंदकेन च । गुडसितोपलापंचमहर्घत्वंकचिद्भवेत् ८५ कुल-
त्यैकामसूरात्रंरक्तवस्त्रमहर्घकम् । तथैवगोधूमयवाश्छत्रभंगश्चगौर्जरे ८६ मार्ग
शीर्षतथापौषेमंजिष्ठाहिंनुमौक्तिकं । जातीफलंचसौपारीप्रवालानाम्महर्घता ८७
चतुष्पदादिकार्पासंसंग्रहोरसमासकान् । तल्लाभःसप्तमेमासेप्रोक्तोव्यक्तेश्वतुर्गुणः
८८ इतिधनराशिफलं ९ गुरौमकरगेमेघोजलेंद्रः पौषवत्सरः । चतुष्पदक्षयोत्तम्यां
दुर्भिक्षंनिर्जलोजनः ८९ मार्गशीर्षाद्धान्यमनुमंग्रहः क्रियतेतदा । विग्रहश्चमहा

घोरोराज्ञांबुद्धिविपर्ययः ९० उत्तरे पश्चिमे देशेखंडवृष्टिः कदापिच । पूर्वस्यादाक्षि-
णस्यांचदुर्भिक्षंराजविङ्करम् ९१ पापबुद्धिरतालोकाहाहाभूताचमेदिनी । तिलतै-
लाज्यदुग्धान्नरक्तवस्त्रमहर्षता ९२ उत्तमामध्यमाः सर्वेसर्वभक्षणतत्पराः । क्षत्रि-
याणांछत्रभंगोम्लेच्छानांचततःक्षयः ९३ चैत्राश्विनापाढमासास्त्रयोमहर्षहेतवे ।
पश्चाद्धान्यंसुभिक्षंस्यात्प्रजा पीडाचतस्कराः ९४ हेमरूप्यं ताम्रलोहंकर्पूरंचंदना
दिकं । महर्वनर्मदातीरेअन्यदेशेशुभंभवेत् ९५ मेघोमालपदेदेशेभंगोवर्षानभूयसी ।
व्याधयोबहुलारूप्यधातूनांचमहर्षता ९६ मेदपाटेचकटकेमार्गशीर्षेपिपौषके ।
महांजनानांपीडापिछत्रभंगोमहाभयं ९७ देवग्रामपुरांदीनांलुठनंयुद्धसंभवः । शाल
योयवगोधूमामहर्षाःस्युस्तथारसः ९८ खंडाधान्यगुण्डानाम्मंजिष्ठायाःसितोपला
दीनाम् । सर्वत्रमहर्षत्वंचैत्रेचफाल्गुनेमासे ९९ घृततैलपट्टसूत्रकंबलवस्त्राणिचक्षु
रसवस्तु । आपाढेतुमहर्षमेघोल्पोपिचसुभिक्षंस्यात् १०० दशकैःस्कंदकैर्धान्यं
मणंपोडशभिस्ततः । पंचदशभिस्तैलंचतुर्भिःशेषधान्यकम् १ इतिमकरराशि-
फलं १० कुंभेगुरौवज्रदंष्ट्रेमेघोमाघादिवत्सरः । सुभिक्षंजायतेतत्रऋषिदेवद्विजा-
र्चनम् २ कांस्यंचपित्तलंलोहंमंजिष्ठात्रपुकांचनम् । एषांमासत्रयंयावत्सुमर्ष-
त्वंप्रजायते ३ मौक्तिकंचप्रवालानिमंजिष्ठापट्टकूलकं । पूगीरूप्यंनालिके-
रंश्वेतवस्त्रमहर्षकम् ४ फाल्गुनभाद्रचैत्रेपुरोगामासत्रयेमताः । महर्षलवणं
लोकेमरौधान्यमहर्षकं १०५ चैत्रवैशाखयोः सिंधुदेशेकटकचालकः ।
वस्त्रकंबलहिंनूनाममहर्षताप्रजायते ६ कार्तिकेचाश्विनोरोगांछत्रभंगोमह-
द्भयम् । रसकार्पासवस्त्राणांसर्वत्रस्यान्महर्षता ७ आपाढेमणगोधूमाश्वतुर्भिः
स्कंदकैर्मता । अष्टादशभिराज्यंचतैलतैर्मनुसंमिते ८ श्रावणेवाभाद्रपदेधान्यं
संगृह्यतेतदा । पौषेस्याद्विगुणोलाजो युगंधर्याश्वक्रियात् ९ इतिकुंभरा-
शिफलं मीनेगुरौफाल्गुनेस्याद्वत्सरः संभवोघनः । खंडवृष्टिर्महर्षा-
णिसर्वधान्यानिभूतले ११० वायुरोगस्यपीडाचदेशांतरंज्जेजनः ।
मासानांपंचमंयावद्भयंराजविरोधतः ११ पश्चात्सुखंसुभिक्षंचशालिगोधूम-
शर्कराः । तिलतैलगुण्डानांचमहर्षत्वंसमीरितम् १२ मंजिष्ठानारिकेलानिश्वेत-

वर्षचदंतकाः । कर्पूरलवणाज्यानांमहर्षत्वंप्रजायते १३ चतुष्पदा-
नां मरणं वैशाखज्येष्ठयोर्भवेत् । आषाढे श्रावणे धान्यघृततैलमहर्षता १४
श्रावणस्योत्तरेपक्षेमहावर्षा प्रजायते । घृतंसमर्षंभाद्रपदेशुभावाश्विनकार्तिकौ
१५ समर्घास्तिलकार्पासाश्छत्रभंगस्ततोर्बुदे । मार्गशीर्षतथापौषेह्युत्पातोमरुमं-
डले १६ ग्रीष्मेकटकसंग्रामे चतुष्पदमहर्षता । स्यान्नागपुरदुर्भिक्षं वर्षाकाले
सुभिक्षता १७ इति कतिपयशास्त्रात् । वीक्षणाद्रौरेवेणगुरुचरितविचारः स्फार
बोधायकृद्दः । इहमतिरतिशायिनैव युक्ता प्रयुक्तादविकलफललाभोवाक्यतोयं
यतःस्यात् १८ ॥ इतिनक्षत्रसंवत्सराणां नामगुरुचारविचारः ॥

अथ विशेषज्ञानिचारफलम् ।

सद्योबोधायगद्येनविस्तरेणनिगद्यते ॥ शनैःशनैःशनैश्चारः फलं शास्त्रविमर्शतः
१ मेपराशौयदासौरिस्तदापश्चिमायांराजविग्रहः वस्तुमहर्षता नृपतेर्भयं गुर्जर
गौडसौराष्ट्रदेशेषु धान्यमहर्षता द्विगुणो व्यापारेलाभः छत्रभंगः राशिभोगा-
त्परतः उत्पातबहुलामही तथा महीनदीपार्श्वेपीडा राज्ञामुपद्रवः मेघावहवः
सप्तधान्यानियुगंधर्यादीनिसंगृह्यते मासचतुष्टयानंतरेविक्रये द्विगुणलाभः गुर्जर-
देशे अहिफेनगुडशर्कराखंडागोधूमवाजरचवलाविक्रयेलाभः सुवर्णरूप्य-
लाभः प्रथमं शनैश्चरसप्तमासराशिभोगतः पश्चादुत्पातंचालका भूकंपगर्जि-
तैः क्वचित्फाल्गुनेउपद्रवः तदावन्नमहर्षता व्यापारेजयः मालवदेशे घृत शर्करा
तैलखोपरारायणः इत्येतानि महर्षाणि कटकचालकः अष्टौमासान् १ इति मे-
पराशिशानिफलम् १ वृषेयदाशनिस्तदाविग्रहोदक्षिणादिशि परचक्रभयं वैराटदेशे
अस्वस्थता पश्चिमापथे दक्षिणस्यांयाति देशउद्वसः अन्नमहर्षं गोधूमचणक
लवणव्यापारेलाभः सुवर्णरूप्यपित्तल कांस्य व्यापारे लाभो मासपट्कंयावत्
आपादादिमासत्रयेमहान् व्यवसायेलाभः अशोरदेशेयुद्धं स्लेच्छहिंदुराज्यस्य
क्षयः भाद्रपदेअहिफेनालाभः देवगढदेशेविग्रहः दुर्गभंगः शनैश्चरस्यराशिभोगे
एकवर्षानंतरंचमहर्षता तन्मध्ये अजमकःतस्यमाघमासेविक्रयेलाभःइति वृषरा-
शिशानिफलम् २ मिथुनेशनिस्तदा पश्चिमायांदुर्भिक्षं राजकुलविग्रहः मालवदेशे

विग्रहः राशिभोगात् मासपंचकतः पश्चात् उज्जयिन्यामुत्पातः दुर्गभंगः सामद्वयात्प-
रंदुर्भिक्षं मासं १ यावत् ततोवत्सरे शुभम् धान्यनिष्पत्तिः पूर्वदेशे उत्पातः गुडसमता
लवंग केसर एलची पारद हिंगु पानडी रेशम कथीर शुंठि एतानि महर्घाणि
क्षात्रियाणां मालवदेशे खंडे जयदुर्गरोधः उच्चवस्तु विक्रयः इति मिथुनराशिशानि-
फलम् ३ कर्कराशिशानिस्तदा मेदपाटदेशे मालवासीमांतम् उद्रसता छत्रभंगोम-
हीपतेः राजयुद्धं सबलं मालवदेशे मुगलकटकं तापीनदीतीरे यावत् विग्रहः परंकु-
शलं दक्षिणदिशिलोकनाशः ग्रामभंगः श्रावणे धान्यमहर्घं भाद्रपदे जलोपद्रवः
मेघाबहवः आश्विने वर्षा अहिफेनमहर्घता मासद्वये पुनः समर्घता वापर वस्तु
महर्घं घोटकमहिषमहर्घता व्यापारे लाभः इति कर्कराशिशानिफलं ४ सिंह-
राशिशानिस्तदा अन्नं सर्वत्र निष्पद्यते जलवृष्टिबहुलता मालवदेशे व्यापारे लाभः
राशिभोगानंतरं मासदेशागमनं याति साहिचलाचलत्वं परम् अन्नं समर्घं शोकबंधु-
तुल्याः संग्रामाः प्रतिग्रामं गुडगोधूमचणकतंदुलशालिमसूरान्नघृतादिवस्तु-
व्यापारे लाभः पूर्वमुभिक्षं परं मारीभयं सर्वदेशेषु पीडा व्याकुलता अशुभं संव-
त्सरफलं मरीचशुंठिप्रमुखक्रयाणे लाभः ताम्रपित्तलमहर्घता घृततैलादि-
रस महर्घता कोंकणदेशे तृण मर्सजी समर्घता मालवमध्ये उपद्रवः
परं राज्यसुखं कटकविग्रहः पूर्वदेशे वस्त्रलाभः सर्ववस्तुमहर्घं
इति सिंहाराशिफलम् ५ कन्यायां यदाशानिः तदा दुर्भिक्षं चतुर्दिशासु पितापुत्रं
विक्रीणाति अन्ननाराः जलवर्षानास्ति गुरुदेशे शिवपुर्यां द्रविडदेशे राजपीडा
छत्रभंगः शोषाः सर्वे देशाः शुभा अर्बुददेशे सुभिक्षं शिरोहिमध्ये अन्नलाभः
सर्वधान्यसंग्रहे द्विगुणलाभः मासनवकं यावत् धान्यं रक्षणीयं पश्चाद्विक्रयः
धातुवस्तु समर्घम् उत्तमवस्तु महर्घं मालवदेशे परस्परविरोधः राजन्याद्भूम्यां
किंचिदुत्पातादि अशुभं गुडसमता धान्यं महर्घम् अन्नभयं महावृष्टिः क्रयक्रया-
णकानि समर्घाणि इति कन्याराशिफलम् ६ तुलाराशौ यदासौरिः सुभिक्षं स्या-
च्चराचरम्। प्रजानां सुखसौभाग्यं धनं धान्यंचसंपदः १ बंगालदेशे विग्रहः तत्रैव
प्रजापीडा रोगबहुलता कार्तिके महाजनत्रये कष्टं बहुलं बंगाले उत्पातः छत्र-

भंगः अर्धराशिभोगात् परउत्पातः दक्षिणादिशिउपद्रवः गोधूम चणकचोखा
 भारंगी कांगुणी उडद एतन्महर्घता ज्येष्ठमासादिक्रये द्विगुणोलाभः अन्ये
 सर्वदेशाःसुभिक्षाःसुस्थाःइति तुलाराशिशनिफलम् ७ वृश्चिकेयदाशनिस्तदाहस्ति
 नागपुरे तद्देशे वैराट्देशे विग्रहः मालवमेदपाटवागड गुजरात सौर उत्तरार्ध
 देशे एतेषु कटकचालकः अन्नाल्लाभः गोधूमकार्पासमसूरान्नतिल-
 कापढादिव्यापारेलाभः मासनवक परम् उपद्रवः राज राणा म्लेच्छानां परस्परं
 युद्धं पातसाहिगृहे क्लेशःमालवदेशेतिपीडा आयांति सर्ववस्तु मूल्यवृद्धि अफी
 मलाभः ज्येष्ठमासेवृद्धिः अजमोमेथी प्रमुख विक्रयः रोगचालकः वर्षाबहुला
 इति वृश्चिकराशिफलं ८ धनेशनिः तदासर्वत्रमहर्घता लोकदुर्वलता तैलतिलदाणा
 गोधूम चणक चोखा खांड लूंग डोडा असालिनुं अजमोमेथी घृत एतानि
 वस्तूनि महर्घाणि श्रावणादिमासचतुष्टये मारीपीडा राजसुखम् उत्तरा पथे
 कटकचालकःइति धनेशनिफलं ९ मकरेशनिस्तदानंदःसर्वत्र सुभिक्षं राजानिर्भयः
 आरोग्यं समाधानं तथा कर्पूर पारद जातिफल लूंग खोपराहिं गुजीरा सोपारी
 आबीरहाली घृत लवण महर्घता मूल्यवृद्धिः आपाढादिमाससप्तकंयावत् अहि-
 फेनात् लाभःदक्षिणस्यान् अहिफेनमहर्घता चोरभयं देशांतरे महाजनपीडा धन
 हानिः शास्ताप्रमाणेन मालवदेशे रोगपीडा प्रथमं वर्षं भयंकरं पश्चात् शुभं देवा
 भंगः राशिभोगांते इति मकरेशनिफलम् १० कुंभेशनिस्तदा दक्षिण कोंकण
 महाविग्रहराजक्षयः प्रजाभयंधनप्रलेपः राशिभोगात् माससप्तकंयावत् सर्व-
 धान्यमहर्घता आपाढादिमासपंचकं यावत् गोधूम मंडूई चीणा मसूर भृंग
 युगंधरी चोखा उडद चहुला तुवरी कांगुणी चाउल बाजरो एतानि महर्घाणि
 दुकालः माघेवृष्टिः प्रबला ततोधान्यविनाशः छत्रभंगः फाल्गुनचैत्रयोर्धान्यसं-
 ग्रहः अन्यत्र जनानमंति अमार्गणा मार्गयंति धान्याद्विगुणलाभः इति
 कुंभेशनिफलं ११ मीनेशनिस्तदा दुर्भिक्षं लोको दुर्वलः मातापुत्रं विक्रीणाति
 मालवदेशे महर्घता उत्पातः धान्यलाभः दक्षिणस्यां धान्यमहर्घं मलयदेशे

राजविरोधः प्रजावसति वास्वरवस्तुमहर्घता धातुवस्तुसुवर्णरूप्यताप्रत्रपु-
लोहमहर्घ सर्ववस्तुपु वाणिज्यलाभः इतिमीनराशिफलम् ॥

इति श्रीमनुरचितेदवज्ञविनेदेसुभापाविभूपितेसंवत्सरदशाधिकारीआयव्ययादि-
कुयोगसुयोगसारिणीगुरुचारशनिचारादिकथननामद्वाविंशतितमविनोदः २२

अथ सस्यजन्मपत्री—जिस समयमें जिस अन्नका जन्म होताहै उसकी जन्म पत्री देखनेकी क्रिया व्यासआदि महर्षियों ने लिखीहै. अतः उसके देखनेकी क्रिया यहां लिखतेहैं प्रथम अन्न बोयेपीछे उगे तिसकी ग्रीष्म शरद यह दो प्रधान ऋतु हैं जिसमें बाजरी, जुवार, चावल, मोठ, भूंग, तिलइत्यादि तो ग्रीष्मऋतु (ज्येष्ठआषाढ) में बोयेजातेहैं और यव गेहूं चणा इत्यादि शरद (आशोज कार्तिक) में बोयेजातेहैं जिस्में ग्रीष्मऋतुका बोयाहुवा सस्य तो शारदधान्य कहलाताहै और शरदऋतुका बोयाहुवा ग्रीष्मकधान्य कहलाताहै. जब वृश्चिककी संक्रांति समयमें गुरु और चंद्रमा कुंभ अथवा सिंहका स्थित हो तो ग्रीष्म अन्नकी उत्पत्ति अच्छी होतीहै. सूर्यसे दूसरे बुध शुक्र हो अथवा वारवे हो और गुरुकी दृष्टि हो तो निष्पत्ति ग्रीष्मअन्नकी श्रेष्ठ होती है यदि वृश्चिकका सूर्य शुभ ग्रहों करके युक्त हो वा सप्तम ग्रह शुभ हो तो श्रेष्ठ उत्पत्ति समझनी यदि सूर्यसे गुरु दूसरे हो. तो अर्द्धनिष्पत्ति होतीहै सूर्यसे ११ । ४ शुक्र और बुध हो यदि दशमगुरु हो तो सस्य की अच्छी उत्पत्ति होतीहै सूर्यके वृश्चिक प्रवेशसमयमें कुंभका गुरु और वृषभका चंद्रमा और मंगल शनि मकरका हो तो अन्न अच्छा होवे परंतु प्रजाको रोगादिकोंकी बाधा होती है जब सूर्यसे दोनापार्श्व (वारवे और दूसरे) स्थान पर पापग्रह हो तो अन्नका नाश करे यदि सूर्यसे सप्तम पापग्रह हो तो जन्मे अन्नका विनाश करते हैं यदि दूसरे स्थान सूर्यसे क्रूरग्रह हो और शुभग्रहोंकी दृष्टि नहीं हो तो प्रथमउत्पत्ति हुये अन्नका विनाश करके पीछेके बोये हुयेको सुधारताहै. सूर्यसे सातवे और केंद्र ४ । १ । ७ । १० इन स्थानोंमें पृथक् पृथक् दो क्रूर ग्रह हो तो टीढी वा कातरो वा वृष्टिकी संचइत्यादि अनेक अन्नके परिपाकमें विपदा होती है. सूर्यसे ६।७ क्रूरग्रह प्राप्त होवे तो

अन्नकी उत्पन्नता तो होवे परंच महर्घता बनीही रहै. एवं जिस महिनेमें जो अन्न बोयाजावे उस महिनेकी संक्रांति कर्के वस उसी सूर्यसे उक्त योग देखना वृश्चिक संक्रांतिका जैसा फल लिखा तैसा ही सारे संक्रांतियोंका जान लेना चाहिये. जिस महिनेका सूर्य शुभग्रहोंकरके युक्त वा शुभग्रहोंकरके दृष्ट वा उक्त शुभ योगोंकरके विभूषित ज्योंज्यों विचरेगा त्योंत्यों उस महिने की उत्पत्ति पाईहुई वस्तुओंकी सस्ती और पुष्टिकरता चलाजायगा और इसी विधानसे पापग्रहोंकरके युक्त और पापग्रहों करके दृष्ट वा उक्त कुयोगोंसे विभूषित ज्योंज्यों रवि आगे बढेगा त्यों त्यों उस महिनेकी औत्पत्तिक वस्तुओंकी तेजी और क्षीणता करता चलाजायगा इति सस्यजातकम् ।

अथवृष्टिअवरोधकयोगोंके जाननेकी विधि:—वर्षाऋतुमें रविके अंशोंसे आगे मंगल चले और सूर्य मंगल एकराशिका होवे तो वर्षाका अवरोध होताहै. १ यदि बुध और शुक्र. एक राशिका होवे और उनके बीच अंशोंसे सूर्य होवे तो वर्षा वर्षणका अवरोध कुयोग कहलाता है. २ जब बृहस्पति और मंगल एक राशिका होवे तो चतुर्मासमें वृष्टिको रोकनाहै. यदि वसंतादि अन्य ऋतुओंमें उक्त योग होवे तो वृष्टि होती है. ३ और सिंह कुंभका राहु केतु क्रूरग्रहों करके युक्त होवे और क्रूर ग्रहोंकरके दृष्ट होवे तो वर्षा वर्षणमें बाधा होतीहै. और ऐसे ऐसे अनेक योग वर्षाके अवरोधक हैं परंच इनमें विशेष योग इन्हीकोही समझना चाहिये अब यहां और भी कितनी वस्तुओंकी महर्घता का योग लिखे जाते हैं. ज्येष्ठा नक्षत्र ऊपर रवि और मंगल होवे तो एक मासतक गेहूं वगैरे अन्न महंगा रहै. १ सूर्य और केतु भरणीनक्षत्र ऊपर होवे जब लवण महंगा होवे २ अनुराधाका शनि और ज्येष्ठाका गुरु होवे तो प्रजामें जंग मचे और अन्न महंगा होवे ३ धनका शनैश्वर और मिथुनका मंगल इन दोनों ग्रहोंके साथ राहु केतु आर्द्रा और पूर्वाषाढका होवे तो अन्न और रस महंगा करे. और ऐसा योग वर्षाऋतुमें होवे तो वर्षाकाभी अवरोधकरे ४ धनिष्ठाका शनैश्वर और मंगल

होवे तोभी वर्षाका अवरोध करै ५ शततारका नक्षत्र ऊपर गुरु और चित्रा नक्षत्र ऊपर मंगल यदि ऐसा योग माघ फाल्गुनमें होवे तो गेहूँकी फसलको अवश्यमेव बिगाड़ेगा ६ आर्द्रा नक्षत्रऊपर शनि और राहु प्राप्ति होवे तो उस वर्षमें वर्षाका अवरोध करके दुर्भिक्षका संभव करेगा ७ वृष का राहु और मंगलका योग होवें जब अन्न खरीदनेवालोंको ६ मासके लगभग दूना नफा मिलता है ८ वृषभराशिका सूर्य शनि और मंगल होवे तो एकमास वर्षाका अवरोध रहै. उत्तराभाद्रपदाका शनि और विशाखाका मंगल कर्कका बृहस्पति होवे तो दुर्भिक्षका संभव है. ९ उत्तराभाद्रपदा और हस्त इन दोनों नक्षत्रोंपर राहुकेतु होवें तो रस और कार्पासकी महँगाई करै. यदि एकपर होवे तो शून्यफल समझना चाहिये. १० वृश्चिक और मेपके शुक्रमें अन्न महँगा होता है. ११ मकर और कुंभके सूर्यमें वज्र महँगा होता है. मकर और कुंभका राहु शनि और बुध होनेसे द्विपद और चतुष्पद प्राणियोंको महा दुःख होता है १२ मेप और वृश्चिकमें राहु केतु मंगल और शुक्र सूर्य होनेसे गुड और कार्पास महँगा होता है. १३ मेप और वृश्चिकका राहु और शनि होवे तो ताम्र महँगा होता है. इति संक्षेपतो महर्घयोगः ॥

अथ समर्घ्ययोगाः—संसारमें एक कहानी चलती है कि, मारनेवालेसे जिवानेवाला बहुत प्रबल है. सो यह बात सत्य है. क्योंकि अनुभव करनेमें आता है कि, महर्घ्य योगोंमें समर्घ्य योग यदि आज्ञावे तो समर्घ्यकी प्राबल्यता विशेष रहती है. जिसके लिये यहां कितनेही समर्घ्य योग दिखलाये जाते हैं. शनि और राहु एक राशिपर होवें तो अन्न सस्ता करे १ बुध और शुक्र मंगल आश्लेषा नक्षत्र ऊपर होवे तो राज्य प्रजामें आनंद और अन्न सस्ता रहै २ मूलका शनैश्वर स्वातिका बुध होवें तो अन्न सस्ताकरे ३ आर्द्राको बृहस्पति रस और कार्पासकी मंदी करै ४ श्रावणका बुध शुक्र और पूर्वाषाढका गुरु होवे तो अन्न और रस कार्पासकी मंदी करै. ५ मघा और धनिष्ठाका गुरु मृगशीर्षका राहु होवे तो अन्नकी मंदी करै. ६ बुध और

शुक्र सूर्य एक राशिका होवे तो सर्वधान्यकी मंदी होवे ७ बुध शुक्र और सूर्य एकराशिका होवे जिसमें सूर्यके आगे बुध शुक्र होवे तो वर्षा श्रेष्ठ होती है. ८ सूर्यके अनुगामी भौम होनेसे वर्षा अच्छी होती है. ९ कृत्तिका और उत्तराभाद्रपदाका गुरु होनेसे चांदी और कार्पास रस और चावल इन्होंकी मंदी होती है. १० सूर्य बुध और गुरु शुक्र एक राशिका होनेसे अन्नकी और रसकी मंदी होती है. ११ विशाखाका और भरणीका शुक्र गुरु होनेसे अन्न और कार्पासकी मंदी होती है. १२ पुनर्वसुका शुक्र होनेसे कार्पास मंदा होता है. १३ श्रवण और धनिष्ठाके शुक्र और गुरु होनेसे गेहूँकी मंदी होती है. १४ अधिकमासमें यदि भौमका राशिचार होवे तो वर्षा श्रेष्ठ होती है. १५ जब कर्ककी संक्रांति प्रवेश समयमें कुंभ मीनका चंद्रमा होवे तो चारमासही श्रेष्ठ वर्षा होती है. १६ शनैश्वरसे नवम पंचम और सप्तमस्थानपर चंद्रमा होवे और गुरु शुक्रकी पूर्णदृष्टि होवे तो वर्षा बहुत श्रेष्ठ होती है. १७ शुक्रसे सप्तमराशि ऊपर चंद्रमा होवे और गुरुकी पूर्ण वृष्टि होवे और वर्षाका अवरोधक योग होवे नहीं तो वर्षा बहुत श्रेष्ठ होती है. १८ तुला राशिका शुक्र और भौम होवे तो अन्नकी मंदी होती है १९ आगे सूर्य मध्यमें बुध और पीछे शुक्र ऐसा योग होवे तो अन्नकी मंदी होती है २० यहाँ ध्यान देना चाहिये कि, ऐसे ऐसे महर्घ्य समर्घ्य योग अनेक हैं परंच जिस जिस योगोंमें हमारी श्रद्धा जमा वही यहाँ लिखेगये हैं वाकी और योगोंकी जिनको अपेक्षा होवे तो वर्षप्रबोध, संवत्सरी, मेघमाला, भडुली, नारदसंहिता, वृहत्संहिता इत्यादि ग्रंथोंमें देख लेंगे अथ वनस्पतिके विशेष फल फूलोंसे वस्तुओंकी उत्पत्ति जाननेकी विधि—जिस वर्षमें पीपलके फूलफल अधिक आनेसे सर्व धान्यकी उत्पत्ति अधिक होती है १ वटके फल फूल अधिक आनेसे चावल अच्छा होता है २ जांबूके फल फूल अधिक आनेसे तिल और उट्टकी उत्पत्ति होती है ३ शिरीषके फल फूल अधिक होनेसे मालकौंगनी अच्छी होती है ४ कुंदके फूलोंसे कार्पासकी वृद्धि श्रेष्ठ होती है ५

चित्रकके फल फूल अधिक होनेसे सरसोंकी उत्पत्ति श्रेष्ठ होती है ६ बदरी (बोर) के फल फूल अधिकके कारण कुलथी अन्नकी उत्पत्ति होती है ७ करंजके फलफूल अधिक होनेके कारण भूंगमोठकी उत्पत्ति अच्छी होती है. ८ कुशा और दूर्वाके विशेष बढनेसे पौंढा (गुड खॉड) की साख अच्छी होती है ९ नींबके फल फूल अधिक होनेसे संवत् श्रीकार होता है १० शमी (जांटी) और खैरके फल फूल अधिक होनेके कारण दुःकाल होता है ११ आमके फल फूल विशेष होनेसे प्रजामें कल्याण अधिक होताहै १२ भिला-
के फल फूल अधिक होनेसे प्रजामें रोगकी वृद्धि होती है १३ इसीप्रकार वृक्षोंका नाम तो विशेष (बहुत) हैं परंच उनके ज्ञानविना प्रयोजन सिद्ध-
नहीं होसक्ता जिससे वे यहाँ नहीं लिखे गये. अथ संक्रांतिके मुहूर्त जान-
नेकी विधिः—सूर्यसंक्रांति आर्द्रा स्वाति. ज. श. ऽश्ले. ज्येष्ठामें प्रवेश होवे
तब १५मुहूर्ती जाननी. म. क. ऽश्वि. मृग. चि. ऽनु. मू. श्रव. ध. रे. पुष्य. ह.
पूर्वा.फा.पूर्वाषा.पूर्वाभाद्र. इन नक्षत्रोंमें प्रवेश होवे तो ३०मुहूर्ती जाननी,रोहि.
पुन. विशाखा उत्तराफाल्गुनी उत्तराषाढा उत्तराभाद्रपद उक्त नक्षत्रोंमें प्रवेश
होवे तो ४५ मुहूर्ती समझनी चाहिये और पूर्व संक्रांतिके वारसे २ । ३ वार
और पूर्वनक्षत्रसे २ । ३ नक्षत्र संक्राति प्रवेश करे और ४५ मुहूर्ती होवे तो
धान्यकी समर्धता होती है और पूर्ववार और नक्षत्रसे ४ । ५ वार नक्षत्रमें
प्रवेश करे और १५ मुहूर्ती होवे तो धान्यकी महर्धता होती है और शेष
फलकी समाधानी समझनी चाहिये ॥

घरसवास.				राहवास.				मूलवास.				
सि.	कं.	तु.	पूर्वादि.	वृश्चि.	ध.	म.	पुष्य.	मि.	सि.	कं.	म.	स्वर्ग.
वृश्चि.	ध.	म.	दक्षिण	कुं.	मी.	मे.	दक्षिण.	कं.	तु.	मी.	ध.	भूमि.
कुं.	मी.	मे.	पश्चिम	वृष.	मि.	कं.	पश्चिम.					
वृ.	मि.	कं.	उत्तर.	सि.	कं.	तु.	उत्तर.	मे	व.	वृ.	कुं.	पाता.

संक्रांतिनामफल.					संक्रांतिसमयफल.		
वार	नक्षत्र	न.ना.	नाम	उत्तमफल	काल	नेष्टफल	दिशागमन.
रवि	म-म-पू-३	उग्र	घोरा	शूद्रसुखी	पूर्वाह्न	राशोहंति	पूर्व
चंद्र	अ.पु.ह.अभि.	क्षिप्र.	ध्वांक्षी	वैश्यानुसु.	मध्याह्न.	द्विजानहं.	पश्चिम
मंगल	पू-स्वा-श्र-ध-श.	चर	महोदरी	चोरसुखी	अपराह्न	वैश्यानुहं.	दक्षिण
बुध	मृ-चि-शु-श.	मैत्र	मंदाकि-	राजासु.	प्रदोष	पिशाचानहं.	दक्षिण
शुक्र	रो उ ३	ध्रुव	नंदा	गणकट्टि.सु.	मध्यरात्रि	राक्षसानहं.	उत्तर
शुक्र	कृ.विशा.	मित्र.	मिश्रा	पशुसुखी	अपररा.	नटानहंति	पूर्व
शनि	आ-आक्षे-ज्ये.म.	साधारण	राक्षसी	चांडालसु.	प्रेभात	गोरक्षकानहं	पश्चिम

संक्रांतिकरणोपरिवाहनादिसारिणी.

करण.	बव.	बाल.	कौल	तैलिल	गर.	वणिज	विष्टि.	शकु.	चतु.	नाग.	किंस्तु.
स्थिति.	बैठी.	बैठी.	ऊभी.	सूती.	बैठी.	बैठी.	बैठी.	ऊभी.	सूती.	सूती.	ऊभी.
फल.	मध्य.	मध्य.	महर्ष	नेष्ट.	मध्य.	मध्य.	मध्य.	महर्ष.	नेष्ट.	नेष्ट.	समर्ष.
वाहन.	सिंह.	व्या.	सिंह.	रासभ	हस्ती	महि.	अश्व.	श्वान.	मीढक	बलद.	कङ्कट.
उपवा.	गज.	अश्व.	बलद	मींदा.	खर.	बैट.	सिंह.	शार्दूल	महि.	व्याघ्र.	बंदर.
फल.	भीति.	भीति.	पीडा.	सुभि	लक्ष्मी	क्लेश.	स्थैर्य.	सुभि.	पीडा.	स्थैर्य.	अपमृ.
वस्त्र.	श्वेत.	पात	हरित.	सफेद	लाल.	श्याम	काला	चित्रक	केवल.	दिग्बर.	पनवर्ण.
आयुध.	मुशुं.	गदा.	खड्ग.	दंड.	धनुष	तोमर.	कुत.	पाश.	अंकुश	तल्वा.	तीर.
पात्र.	सुवर्ण	रौप्य	ताम्र	कांस्य	लोह.	स्वप्प	पत्र.	वस्त्र.	कर.	भूमि.	काष्ठ.
क्षभण.	अन्न.	दूध.	भैक्ष्य	पकवा	पय.	दधि.	चित्रा.	गुड.	मधु.	घृत.	खांड.
लेपन.	कस्तूर.	कुंकु.	चंद.	मौंटी.	गोरोच	अल.	हलद	कज्जल	सिंदूर	अगरु.	कपूर.
जाति.	देव.	भूत.	सर्प.	पक्षी.	पशु.	मृग.	विषं.	क्षत्रि.	वैश्य.	शूद्र.	मिश्र.
पुष्प.	पुन्नाग	जाती	बकु.	केवडा	बिल्व.	अकं.	दूर्वा	कमल	मोगरा	पाटली.	जाती.
भूषण.	पिरो.	कंकण	मोती.	मवाल.	मुकुट.	मणि.	गुजा.	कौडी.	नील.	काच	सुवर्ण.
कंचुकी.	विचि	पर्ण.	हरित.	भूर्जप.	सित.	पांडु.	नील	कृ.जि.	चर्म.	बलकल	पांडुर.
वय.	बाला.	कुमा.	गता.	युवा.	प्रौढा.	मगन्भा	श्रद्धा.	बंध्या.	अति.	पुत्रे.व.	संन्मा.सि.

अथद्वादशसंक्रांतिपर्वकाल.

मेष १	पूर्व १५ घ.	पर १५ घ.	दानमेष.	तुल ७	पू १५	प. १५	तिल गोरस दा
वृष. २	१६ घ.	०	गोदान.	वृश्चि ८	१६ घ	०	दीपदान
मिथुन ३	०	१६ घ.	वस्त्रात्र.	धन ९	०	१६ घ	वस्त्रदान
कर्क ४	३० घ.	०	घृत घेतु	मकर १०	०	४० घ	काष्ठ भन्न
सिंह ५	१६ घ.	०	लव	कुम्भ ११	१६ घ	०	गोड भन्न
कन्या ६	०	१६ घ.	गृह वस्त्र	मीन १२	०	१६ घ	भूमि माळा.

अथ संक्रांतिफलं—रविवारको संक्रांति अर्के जव युद्ध होवे राजविग्रह होय. सूर्य बहुत तपे, रोगउपजे. धान्य महंगा होय. १ सोमवारको संक्रांति प्रवेश करे तब दक्षिणकी पवनचले धान्य सस्ता होवे सर्व वस्तु सस्ती रहें रस घृत किराणुं तेज रहै. लोक महाजन प्रसन्न रहें. गौ ब्राह्मणकी पूजा और सुख संपदा रहै. २ भौमके दिन संक्रांति प्रवेश होवे तब अन्न महंगा होवे गेहूँ वा लालवस्तु महंगी रहै. विग्रह प्रजामें रहे युद्धकोदंगल होवे. अग्निभय. घृत तैल लवण रस कर्पूर चंदन यह सब महंगे होवें ३ बुधदिन संक्रांति प्रवेश होवे तो रसकस घृत महंगे और वस्त्रकी सस्ती होवे कार्पास (रुई) सस्ती चिके प्रजा को भयकारक और चातुर्मासमें वर्षा कम होवे ४ गुरुदिन संक्रांति प्रवेश होवे तो पीतवस्तु महंगी और प्रजासुखी. धान्य सस्ता. बहुत अन्न. उत्पन्न होवे. गौ को बहुत दुग्ध और ब्राह्मणकी पूजाकरे ५ शुक्रदिन संक्रांति प्रवेश कियेसे प्रजाको सुख होवे सुवर्ण चाँदी महंगी होवे गो महिषी हस्ती घोड़ा महंगे और रस कस लवण घृत समता रहै. ६ शनिदिन संक्रांति प्रवेश होवे तो लगतीही महा अशुभ फल कारक है. सर्व वस्तुका क्षय करे. दुर्भिक्षकारक है धान्य महंगा लोक दुखी और रोगकी उपाधिकारक है. अथ संक्रांतिपर्वकाल-निर्णयः—केपांचिन्मतभेदात्त्रिंशत्कथिताः पराः पुण्याः। चत्वारिंशदन्यमुनेर्मता मकरसंक्रमे तु १ ययस्तेवाप्रदोषेवानिशीथेमकरंगते ॥ भास्करेतूत्तरदिनपुण्यामित्याहमाधवः २ हेमाद्रिर्धरात्रात्पूर्वचेत्संक्रमोभवति तदहस्तुपुण्यमेवपरतश्चेत्परे-हनीत्याह ३ तच्चंप्रदोषसमयाद्दूर्ध्वचेत्संक्रमोभवति परदिवसेन्यथासत्पूर्वदि-वसेतुपुण्यकालः ४ इति संक्रातिपर्वकालनिर्णयः ॥

वस्तुनां राशिसारिणी.

श्लोक-य एषां द्रव्याणामधिपतयो राशयः समुद्दिष्टा मुनिभिः शुभाशुभार्थं तानाममतः भवश्यामि ॥ १ ॥

भेष.	वृषभ.	मिथुन.	कर्क.	सिंह.	कन्या.	तुल.	वृश्चिक	धन.	मकर.	कुंभ.	मीन.
सोना मसूर	वख पुष्प.	वाजरी. कई	कोद्र. केला.	शाली.	जवासा बट	उडद. लाल	मुडखाड.	रख. घोडा ह.	कनीर.	रख पोस्त	सोप. मो.
कंवळ. पस	सरसांगेहूँ	कपास	कम दूवां. जायफ	पट्टरख.	ला. कुलथी.	गीहूँ नाळि.	नागरपा.	लवण. चित्र.	सकूट	रख अमो.	समु. शो.
मीतुपालज	पय चावल	लकंद गुवार	ल. तमालपत्र	मृगछा.	पंग. सफेद. अर.	सरसो	लोहमीडा	वख आयुध.	मजठिच.	चित्र वि.	होरा अत
ल गहूँ. यव.	माहिय बेल	जुवार	मकांदा लचीनी.	गुड खांड गेहूँ. अलसी	हरडे मटर.	शर्करा.	लथणुं	मुळ.	जामीकंद.	वस्तु.	रस. मोती.

श्लोकः—पट् सप्तमगो हानिं वृद्धिं शुक्रः करोति शेषेषु ॥ उपचयसंस्थाः क्रूराः शुभदाः शेषेषु हानिकराः ॥ १ ॥ इत्यादि इस चक्रको न्यास तथा चक्रका देखना वाराही संहितामें हे जिसका उदाहरण जिस वस्तुकी तेजी वा मंदी देखनी हो वा वस्तुकी चक्रमें राशि कौन है ऐसी प्रथम देखनी फिर वा राशिसे कौन ग्रह कौन कौन ठिकाने हैं ऐसा देखना जो वस्तुकी राशिसे गुरु ४।१०।२।१।७।९।५ इतनी राशिये होय तो वा वस्तुकी मंदी करै और १।३।६।८।१२ इतने ठिकाने गुरु होवे तो वा वस्तुकी तेजी करै ऐसे ही २।१।१।१०।५।८ बुध होय तो मंदी करै और १।३।४।५।८।९।१०।११।२ इतनी जगह बुध होवे तो तेजी करै शुक्र ६।७ सदा तेजी करै और १।२।३।४।५।८।९।१०।११।२ शुक्र सदा मंदी करै मंगल, शनि, राहु, केतु, सूर्य क्षीणचंद्र यह ग्रह इतनी जगह ३।६।१०।११ ऐसे नववें ग्रहसे देखके फलकी दोषंकि स्थापित करनी जिनग्रहोंमें जियादह बल होवे और तेजी मंदीतरफ जियादह ग्रह होवें वही फल विशेष होता है यह निःसंदेह है फिर ग्रहोंका उच्च मूलत्रिकोणी स्पृहादि यथावत् बलको निर्धारकरना जैसे कि, एक तरफमें मंदीका करणेवाला चार ग्रह हैं और मंगल मकर को प्राप्त हुवा तो जैसा मंगलका फल विशेष होवे गा ऐसा उन चारोंका नहीं होवेगा.

द्विपंचाशदवधौ रामविनोदजो स्पष्टरविः ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	
०	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५
०	६	१३	२०	२७	३	१०	१७	२३	०	७	१३	२०	२७	३	१०	१७	२३	०	७	१३	२०	२७	३	११	१८	
०	५०	१८	३६	५०	५४	३६	१७	५७	३६	१५	५३	३१	९	४७	२७	६	४७	३०	१३	५९	४५	३४	२४	१६	१०	
०	१३	३०	४७	६४	८१	९८	११५	१३२	१४९	१६६	१८३	२००	२१७	२३४	२५१	२६८	२८५	३०२	३१९	३३६	३५३	३७०	३८७	४०४	४२१	
५८	५८	५८	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५६	५६	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५९	५९	
४५	२९	१२	५७	४५	३४	२३	१३	५	१७	५६	५०	५०	५५	५७	५	१२	२२	३४	४५	५७	१२	२९	४५	०	१६	
२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	
५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	
२५	२	९	१६	२३	०	७	१४	२१	२८	५	१२	२०	२७	४	११	१८	२५	२	९	१७	२४	१	८	१४	२१	
५	३	२	३	६	१०	१५	२२	३०	३९	४८	५८	६	१८	२७	३६	४५	५४	१	७	१	४	५	६	३	५९	५३
५१	२१	४०	६३	९०	१२३	१६३	२१०	२६४	३२५	३९३	४६८	५४३	६२४	७११	८०१	८९६	९९६	११०१	१२१२	१३२९	१४५२	१५८१	१७१६	१८५७	१९९९	
५९	५९	६०	६०	६०	६०	६०	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६०	६०	६०	६०	६०	५९	५९	५९	५९	५९	
३१	४६	२	१८	३०	४०	५३	६९	८९	११९	१५२	१८९	२३२	२८१	३२६	३७७	४२६	४७३	५१९	५६२	६०३	६४२	६८१	७१९	७५६	७९३	

द्विपंचाशदवधौ ग्रहलाघवजो स्पष्टरविः ।

१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२	१३	१४	१५	१६	१७	१८	१९	२०	२१	२२	२३	२४	२५	२६	
११	०	०	०	०	१	१	१	१	२	२	२	२	३	३	३	३	४	४	४	४	५	५	५	५	५	५
२९	३	१३	२०	२७	३	१०	१७	२३	०	७	१३	२०	२७	३	१०	१७	२३	०	७	१३	२०	२७	३	११	१८	
५३	४९	३८	२५	१०	५४	३६	१७	५७	३६	१६	५३	३१	९	४७	२७	६	४७	३०	१३	५९	४५	३४	२४	१६	९	
३३	५५	३९	३३	३१	११	३६	४५	५६	२८	५	२२	४	१७	९	४	३	३	१४	४१	३९	५९	१५	१२	४	४९	
५८	५८	५८	५८	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५६	५६	५६	५६	५७	५७	५७	५७	५७	५७	५८	५८	५८	५९	५९	
४५	२८	१४	१	४८	३७	२७	११	१३	५	०	५४	५३	५८	३	१०	१७	२६	३६	४६	५८	११	२५	५९	५७	१५	
२७	२८	२९	३०	३१	३२	३३	३४	३५	३६	३७	३८	३९	४०	४१	४२	४३	४४	४५	४६	४७	४८	४९	५०	५१	५२	
५	६	६	६	६	७	७	७	७	८	८	८	८	९	९	९	९	१०	१०	१०	१०	११	११	११	११	११	
२५	२	९	१६	२३	०	०	१४	२१	२८	५	१२	२०	२७	४	११	१८	२५	२	९	१७	२४	१	८	१४	२१	
५	३	२	३	६	९	१५	२१	२८	३७	४६	५५	६	१५	२३	३३	४०	४८	५३	५८	१	३	३	०	५८	५२	
३४	७३	१०	३	४३	२७	५	३१	५७	१८	१६	४६	३३	२३	४९	७	५५	२	५३	२७	४९	३६	३७	५७	२३	५६	
५९	५९	६०	६०	६०	६०	६०	६०	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६१	६०	६०	६०	६०	६०	५९	५९	५९	५९	
३३	४७	२	१४	२६	२७	४६	५६	४	१३	१५	२१	२२	१८	१३	८	०	५१	३४	३१	१९	३६	५२	३७	३०	३	

इति श्रीमनुरचिते दैवज्ञविनोदे सुभापाविभूषिते सस्यजातकादिसंक्रां-
तिफलकथनं नाम त्रयोविंशतितमो विनोदः ॥ २३ ॥

अथ पंचांगलेखनक्रमः॥श्रीगणेशाय नमः॥ अचिंत्याव्यक्तरूपाय निर्गु-
णाय गुणात्मने ॥ समस्तजगदाधारमूर्तये ब्रह्मणे नमः ॥ १ ॥ अथ श्रीमन्नु-

पतिविक्रमादित्यराज्यात् संवत् शालिवाहनशके, सत्ययुगप्रमाण १७२८०००
 त्रेतायुगप्रमाणवर्ष १२९६००० द्वापरयुगप्रमाण ८६४००० कलियुगप्र-
 माण ४३२००० गतकलिः भोग्यकलिः । अथास्मिन्वर्षे राजा मंत्री
 सस्याधिपतिः धान्येशो मेघेशो रसेशो नीरसेशः फलेशो धनेशो दुर्गेशो
 एते दशाधिकारिणः वर्षनाम संवत्सरनाम मेघनाम रोहिणीवासः समय-
 निवासः समयवाहनरोहिणी आपादकृष्णस्तंभाः सोमवतीअमावास्या
 सोमवती पंचमी रविसप्तमी अंगारकचतुर्थी बुधाष्टमी रविदशमी ग्रहणं विश्वा
 शनिदृष्टि उत्पत्ति खपति अगस्त्यउदयं सिंहाकार्का २८ शे बुधोदयं समयमुहूर्ताः
 समयदिनानि क्षयतिथिः वृद्धतिथयः पूर्णिमाघट्यादि अमाघट्यादि अनयो-
 रंतरघट्यादि रविदशमी घट्यादि सौभाग्यपंचमीघट्यादि वर्षाविश्वा धान्यं
 तृणं शीतं तेजो वायुः वृद्धिः क्षय विग्रह अहंकारैक्यं सत्यं धर्म पापं
 इसके आगे संवत्सर शुभाशुभ और परमेश्वरका नाम लिखना चाहिये
 अथ वर्षनाम—चैत्र, शुक्ल १ के दिन जिस नक्षत्रऊपर गुरु हो उसीके
 नामसे मासनाम हो सो ही वर्षनाम समझना और संवत्सर पूर्वोक्त गणितसे लाके
 फिर लिखना चाहिये अथ चतुर्मेघ लानेकी विधिः—शाकेमें १५१२ हीनकरै
 शेष रहै जिसमें तीन और युक्त करके ४ के भागसे शेष १ आवर्त २ संवर्त
 ३ पुष्कर ४ द्रोण नाम मेघ होताहै. अथ रोहिणीवासः—मेघसंक्रांतिके समय
 नक्षत्रसे २ नक्षत्र समुद्रका ३ तट ४ संधि ५ पर्वत ६ संधि ७ तट ९ समुद्र
 १० तट ११ संधि १२ पर्वत १३ संधि १४ तट १५ समुद्र १७ तट १८
 संधि १९ पर्वत २० संधि २१ तट २३ समुद्र २४ तट २५ संधि २६
 पर्वत २७ संधि २८ तट ऐसे गिनके जिस ठिकाने गणनासे रोहिणी नक्षत्र की
 गिनती प्राप्ति होवे जहांही समुद्रादि निवास लिखना जिसका फल—समुद्रे तु
 महावृष्टिस्तटे वृष्टिः सुशोभना ॥ पर्वते विंदुमात्रश्च खंडवृष्टिश्च संधिषु ॥ अथ सम-
 यनिवासः—रोहिणीका वास समुद्रमें हो तो समयका निवास मालीके घर संधिमें
 वैश्यके घर पर्वतमें कुम्हारके घर रोहिणीतटमें तब रजकके घर समयका नि-

वास कहना अथसमयवाहनाः—सूर्यादिवार संवत्का राजा होवे उसीसे अश्व १
 मृग २ वृषभ ३ सिंचाणु ४ चातक ५ दर्दुर ६ महिष ७ उक्त वारों के क्रमसे
 समयके वाहन समझना चाहिये अपाढरुष्णपक्षकी रुष्णारोहिणी कहलाती
 है अथस्तंभा चैत्रशुदि १ रेवतीजल वैशाखशुदि १ भरणी तृण ज्येष्ठशुदि
 १ मृगशीर्षवायु आपाढशुदि १ पुनर्वसु होवे तो अन्नका स्तंभ समझना चाहिये
 अथ शनिदृष्टिः—मेघ वृष मिथुनके शनिकी पूर्वदृष्टि कर्क सिंह कन्याके शनिकी
 दक्षिण तुला वृश्चिक धनके शनिकी पश्चिम और मकर कुम्भ मीनके शनिकी
 उत्तरमें दृष्टि होती है अथ उत्पत्ति और स्वपतिविश्वाः—लाभके विश्वा
 इकट्ठा करनेसे उत्पत्ति विश्वा और द्वादशराशियोंके स्वर्चके विश्वा
 इकट्ठा करनेसे स्वपति विश्वा होता है. अथ अगस्त्यअस्तोदय-
 रामगढमें अगस्ति अस्त सूर्य ० । २८ । २४ ऊपर और उदय
 ४ । २७ । ३६ ऊपर होताहै और देशोंमें पलभासे पूर्वोक्त गणित
 करके देखलेना चाहिये अथ समयमुहूर्ताः—संक्रांतिके वारह मासके मुहूर्त
 इकट्ठा करनेसे समय मुहूर्त होताहै अथ समयदिनानिः—वारहमासकी तिथि
 इकट्ठी करके उसमें क्षयतिथि हीन किये समयका दिन होताहै कार्तिकशुदि पंच
 सौभाग्य पंचमी कहलातीहै शुक्ल पक्षकी दशमी रवियुक्त होवे सो रविदशमी
 होती है शुक्ल पक्षकी तिथि जो वार होवे वही वारके नामसे वह तिथि बोली
 जाती है. वारह मासकी पूर्णिमाकी और अमावास्याकी घटी होती है इन्होंनेके
 अंतर करनेसे—अंतर घटी होती है. अथ वर्षादिकोंके विश्वा लानेकी विधि-
 वर्तमानशाके को ३ से गुणके ७ के भागसे शेषरहे जिसको द्विगुणित करके
 फिर ५ और युक्त करनेसे वर्षाका विश्वा होता है. एवं ७के भागसे लब्धांकको
 शक कल्पना करके फिर उक्त विधिसे गणितके लानेसे धान्य तृण शीत
 तेज, वायु, वृद्धि, क्षय और विग्रह पर्यतके विश्वा होता है. इनसबको इकट्ठा
 करनेसे अहंकारैक्यके विश्वा होते हैं.

अथ धर्म और पापके विश्वा लानेकी विधि:-कलियुगके गतवर्षोंके २१६००० के भागसे लब्धधर्मका विश्वा और धासमें हीनकिये पापका विश्वा होते हैं. अथ संवत्के विश्वा लानेकी विधि:-कर्कसंक्रांति प्रवेशके दिन जो वार होवे उसीसे सूर्य १० चंद्र २० मंगल ८ बुध १२ बृहस्पति १८ शुक्र १८ शनि ५ संवत्के विश्वा होते हैं. अथ पुरुष स्त्री नपुंसक नक्षत्र संज्ञा:-आर्द्रादि स्वात्यांत १० नक्षत्रस्त्री विशाखादि ज्येष्ठांत ३ नपुंसक और मूलादि मृगशीर्षांत १४ नक्षत्र पुरुषसंज्ञक समझना चाहिये जिसका फल स्त्रीसंज्ञक नक्षत्रके दिन पुरुषसंज्ञक नक्षत्र ऊपर सूर्य प्राप्त होय तो वर्षा वर्षती है परंच यहां वृष्टिरोधक योग कोई आन पड़े तो वर्षा नहीं वर्षती है और इसका वाहन भी देखलेना चाहिये-

अथ वाहनानि-सूर्यके प्राप्त नक्षत्रसे दिनके नक्षत्रतक गिनके ९ के भागसे शेषवचे १ अश्व २ जंबुक ३ मंडूक ४ मेघ ५ चातक ६ मूषक कोई मतसे मृग ७ महिष ८ खर ९ नाग नक्षत्र वाहन होते हैं अथ वर्ष और वर्षेश कुंडली बनानेकी विधि:-गत संवत्सरकी चैत्रवदि अमावास्याकी घटीके इष्ट ऊपर जो लग्न होवे और ग्रह हो सो वर्षलग्न और मेघसंक्रांति प्रवेशसमयके लग्नको वर्षेश लग्न समझना चाहिये अथ गर्भलक्षणं-मार्गशीर्ष शुदि १ से जिस नक्षत्रमें बहल वायु इत्यादि गर्भ रहा सो १९५ दिनोंसे वर्षता है परंतु मेघसंक्रांतिमें अश्विन्यादि नक्षत्र १० वर्षतेो उक्तदिनमें थोड़ा वर्षता है अथ चंद्रोदय जाननेकी विधि:-रात्रिमानको तिथिके अंकसे गुणकर लृष्णपक्षमें २ हीन और शुक्लपक्षमें २ युक्त करके फिर १५ के भागसे लब्ध घटी: और शेषको ६० गुणके १५ भागसे पल लेनी उक्त घटी पलोंके समय लृष्ण पक्षमें चंद्रमाका उदय और शुक्लपक्षमें चंद्रमाका अस्त समझना चाहिये.

अथ इंग्रेजी महीनोंके नाम-जनवरी मास १ तारीख ३१ फरवरी मास २ तारीख २८ मार्चमास ३ तारीख ३१ अप्रैल मा० ४ तारीख ३० मई मास ५ ता० ३१ जून मा० ६ ता० ३० जुलाई मा० ७ ता० ३१

अगष्ट मा० ८ ता० ३१ सप्टेंबर मा० ९ ता० ३० अक्टोबर मा० १०
 ता० ३१ नोवेंबर मा० ११ ता० ३० दिसेंबर मा० १२ ता ३१ उक्त
 इंग्रेजी वर्ष जनवरी माससे और धनसंक्रांतिके १८ अंशके लगतग प्रारंभ
 होता है और इंग्रेजी सन्के ४ के भागसे शेष रहै उसवर्षमें फरवरी मासकी
 २८ तारीखमें १ और तारीख बढ़ाके २९ तारीख लिखनी चाहिये परंतु
 शताब्दीमें नहीं बढ़तीहै अथ मुसलमानी महीनाका नाम—मोहोरम १ सफ्फर
 २ रबिलावल ३ रबिलाखर ४ जमादिलावल ५ जमादिलाखर ६ रज्जव ७
 सावान ८ रमजान ९ सव्वाल १० जिलकाद ११ जिल्हेज १२ उक्त मुग-
 लाई वर्ष मोहोरमसे प्रथम लगताहै और इसकी तारीख चंद्रोदयसे दूसरे दिन
 प्रथम लिखनी चाहिये अथ मुगलाई तिब्हार—रोजा रमजानकी १ तारीखसे
 सुप्त होताहै वह सव्वालकी १ तारीखको ईद मनाके पूरा होताहै और जिल्हेजकी
 १० तारीखको बकरीद और ९ तारीखको हज्ज होती है, और मोहोरम-
 की १० तारीखको ताजिया सावानकी १४ तारीखको सञ्चरात होती
 है. अथ पारसी महीनोंका नाम फरवर्दिन १ आर्दिबेहस्त २ खौरदाद ३
 तिर ४ अमरदाद ५ शरेखर ६ मेहेर ७ आवान ८ आदर ९ देह १०
 बहमन ११ आस्पदाद १२ उक्तमहीने ३० दिनके होते हैं पीछे दिन ५
 की गाथा होती है. अथ इंग्रेजी सन् बनानेकी विधि—वर्तमान शाकेमें ७९
 युक्त करनेसे इंग्रेजी सन् पौष महीनेसे शुरू होता है. अथ मुसलमानी हिज-
 री सन बनानेकी विधि—शाकेमें ५४३ हीनकर शेषको २ जगे रखके
 ६१ के भागसे दूसरी जगेके अंकमें हीनकिये शेषके ३२ के भागसे लब्ध-
 को दूसरी जगेके अंकमें युक्त करके १२ के भागसे लब्ध आवे सो हि-
 जरी सन् और शेष रहे सो उसके गतमास समझना चाहिये अथ पारसी सन्
 (इयज्जेर्दी) बनानेकी विधिः—शालीवाहन शकमें ५५३ हीन करनेसे
 शेष रहे सो पारसीसन् इसका प्रारंभ भाद्रपद महीनेमें होना है. अथ याहुदी
 सन् बनानेकी विधिः—शालीवाहन शकमें ३८३८ युक्त करनेसे याहुदी

सर्व आसोज सुदि १ के लग भगसे प्रारंभ होता है. अथ दिनमान लिखनेकी विधि:—दिनमान सारिणीसे मेये भानुः पंचांगमें देखके उसके दूसरे दिनसे दिनमान क्रमसे धरदेना चाहिये ।

अथ चन्द्रलिखनेकी विधि:—सर्वर्क्ष बनाके जिस पादमें राशी प्राप्त हो उसको निकालके इष्ट करके चन्द्र लिखना चाहिये ।

अथ सायन संक्रांति बनानेकी विधि:—अयनांश और घटी पल सहितको ३० से शोधके शेषांकके समीप अवधिस्थ सूर्यका अंतर करके फिर गोमृत्रिकामें गतिसे गुणके ६०के भागसे लब्ध दिनादि फलको अवधीष्टमें उक्त ३०से शोधित अयनांश अवधिस्थ सूर्यसे हीन हो तो हीन और अधिक हो तो युक्तकिये सायनसंक्रांति होतीहै अथ सर्वशास्त्रोंकी सिद्धांतरीतिसे विवाह-लग्न बनानेकी विधि:—धर्म अर्थ और कामकी सिद्धिके लिये सुमहूर्तसे विवाह करना चाहिये उक्त विवाह मेघ वृषभ मिथुन वृश्चिक मकर और कुंभ इन संक्रांतियोंमें करना अच्छाहै जिसमें मिथुनके सूर्यमेंभी आपादशुदि १० दश मीतक करना श्रेष्ठहै और उक्त महीनों में शुक्र गुरुका उदयास्त हो तो उनके अस्तसे तीन दिन पहलेसे लेके और उदयके तीन दिन पीछेतक विवाह नहीं करना और सिंहस्थ (सिंहराशिपर गुरु) हो तब भी विवाह नहीं करना चाहिये अथ पंचांगशुद्धि:—रोहिणी १ उत्तराफाल्गुनी २ उत्तरापाद ३ उत्तराभाद्र-पद ४ रेवती ५ मूल ६ स्वाती ७ मघा ८ अनुराधा ९ हस्त १० मृगशीर्ष ११ यह ग्यारह नक्षत्र विवाहमें महर्षियोंने उत्तम मानाहै पहले त्रेताके समय पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमें सीताकाविवाह हुआ था फिर सीतार्जुने सुखकम भोगाथा जिससे इस समयमें पूर्वाफाल्गुनीमें विवाह नहीं होताहै और पुष्य नक्षत्र ब्रह्मदेवसे शापितहै जिससे पुष्यभी नहीं लेना चाहिये और वाकी नक्षत्र-जितनेहैं वे सब विवाहके योग्य भी नहींहैं और तिथियोंमें रुष्ण पक्षकी त्रयो-दशीसे लेके शुक्ल पक्षकी प्रतिपदातक विवाहमें नहीं लेना क्योंकि वहां क्षीण चंद्रमा है और वाकी तिथियां विवाहमें श्रेष्ठ हैं यद्यपि चतुर्थी चतुर्दशी नवमी

इन्होंको रिक्का मानके शास्त्रकारोंने वर्जित करीती हैं तथापि इन्हों के दोष परिहारक योग अनेकहैं जिससे उक्त तिथियोंमें विवाह शिष्टाचारसे सदैव होताहै व्यतीपात वैधृति यह दोनों योग और भद्रा करणभी नहीं लेना चाहिये. और तेरह तिथियोंका पक्ष और लुप्ताब्दमेंती विवाह करना अच्छा नहीं इति पंचांगशुद्धिः ॥ अथ दशदोषोंकी सारिणीप्रवेशः—लात दोषकी सारिणीमें जिस नक्षत्रका विवाह हो उसके नीचे कोष्ठकमें सूत्रगत ग्रह की नक्षत्र स्थिति होवे तो लातदोष होताहै परंच यहां गंत पूर्णिमाकी घटी समाप्तहो जिस समयमें जो नक्षत्र भोगे उस नक्षत्रका पूर्ण चंद्रमालेना चाहिये उक्त लातदोष का विवाह मालवदेशमें नहीं होता और सबदेशोंमें होता है . १ और पात दोष सूर्यनक्षत्रसे देखाजाता है उक्त पातदोषका विवाह कुरुक्षेत्र देशमें नहीं होता और सब देशोंमें होता है २ अथ युतिः—जिस राशिका चंद्रमा हो उसी राशिका पापग्रह होवे तो युतिदोष होताहै उक्त युतिदोषका विवाह सब देशोंमेंही होता है. क्योंकि इसका परिहार अनेक प्रकारसे है ३ वेधसारिणीमें जिस विवाह नक्षत्रके अधस्थ नक्षत्र ऊपर ग्रह वर्तमान होनेसे वेधदोष लगता है उक्त वेधदोषका विवाह किसी देशमें भी नहीं होता इस वेधमें और एकार्गलमें अभिजित् सहित नक्षत्रोंकी गणना होती है. बाकी और दोषोंमें अभिजित् विना सप्तविंशति नक्षत्रोंके अनुकूल सारिणी बनाई गई है. उक्तअभिजित् नक्षत्रका भोग उतरापाठके अंत चरण और श्रवणकी चार घटी प्रथमतक है. इन घटियों में प्राप्तहुवा ग्रह रोहिणी नक्षत्रको वेधता है. और चाकी उतरापाठके आय

१ यादीतास्त्रपूर्णिमाविवाहिनिकपातद्वतभोविशुनधेयः लतावेधविप्रीनुवीसर्गायो मान्यवैति पुगावदति सारम् ॥ १ ॥ पूर्णिमांतदलस्थायि यापन्मासंभवेद्वलि । भंतस्त्वविप्रीमीक्षेतविवाहेवेधलतपो ॥ २ ॥ पूर्णिमास्याव्ययदक्षे बलंतस्यैकमासकम् । पावत्रान्या भोत्पूर्णातमेगान्मयिचारपेदिति । वीशित्तद्विदताय । स्पष्टं किंरुदुना । सितचतुर्दशीयिचोद्वैप्यव्यपदितातीतपूर्णिमासीगप्रवत्स्यंद्द्रं माहम् .

२ पदपमागदशदोषे अभिजित्कुवमासी तदाह-एकार्गलेनैवेधमाभिजद्रणयेदुध । लभोपमहपातेपुपादि त्रेविनतद्वेत् । इतिविवाहदने नमुनसत्रदयज्ञरीरिण्यभिक्रितिविवाहः । वार्योतवेतिसंरुयेगर्गः । लिभित्ता वृषिकाचारमभियकरमुतमम् । शिरस्पुरसिसंद्दमात्रिप्रपदपस्तपोदरे ॥ १ ॥

सन् आसोज सुदि १ के लग भगसे प्रारंभ होता है. अथ दिनमान लिखनेकी विधि:—दिनमान सारिणीसे मेपे भानुः पंचांगमें देखके उसके दूसरे दिनसे दिनमान क्रमसे धरदेना चाहिये ।

अथ चन्द्रलिखनेकी विधि:—सर्वर्क्ष वनाके जिस पादमें राशी प्राप्त हो उसको निकालके इष्ट करके चन्द्र लिखना चाहिये ।

अथ सायन संक्रांति बनानेकी विधि:—अयनांश और घटी पल सहितको ३० से शोधके शेषांकके समीप अवाधिस्थ सूर्यका अंतर करके फिर गोमूत्रिकागें गतिसे गुणके ६० के भागसे लब्ध दिनादि फलको अवधीष्टमें उक्त ३० से शोधित अयनांश अवाधिस्थ सूर्यसे हीन हो तो हीन और अधिक हो तो युक्तकिये सायनसंक्रांति होती है अथ सर्वशास्त्रोंकी सिद्धांतरीतिसे विवाह-लग्न बनानेकी विधि:—धर्म अर्थ और कामकी सिद्धिके लिये सुमुहूर्तसे विवाह करना चाहिये उक्त विवाह मेप वृषभ मिथुन वृश्चिक मकर और कुंभ इन संक्रांतियोंमें करना अच्छा है जिसमें मिथुनके सूर्यमेंभी आपादशुदि १० दश मीतक करना श्रेष्ठ है और उक्त महीनों में शुक्र गुरुका उदयास्त हो तो उनके अस्तसे तीन दिन पहलेसे लेके और उदयके तीन दिन पीछेतक विवाह नहीं करना और सिंहस्थ (सिंहराशिपर गुरु) हो तब भी विवाह नहीं करना चाहिये अथ पंचांगशुद्धि:—रोहिणी १ उत्तराफाल्गुनी २ उत्तरापाद ३ उत्तराभाद्र-पद ४ रेवती ५ मूल ६ स्वाती ७ मघा ८ अनुराधा ९ हस्त १० मृगशीर्ष ११ यह ग्यारह नक्षत्र विवाहमें महर्षियोंने उत्तम माना है पहले त्रेताके समय पूर्वाफाल्गुनीनक्षत्रमें सीताका विवाह हुवा था फिर सीतार्जुनि सुखकम भोगा था जिससे इस समयमें पूर्वाफाल्गुनीमें विवाह नहीं होता है और पुष्य नक्षत्र ब्रह्मदेवसे शापित है जिससे पुष्यभी नहीं लेना चाहिये और बाकी नक्षत्र-जितने हैं वे सब विवाहके योग्य भी नहीं हैं और तिथियोंमें कृष्ण पक्षकी त्रयो-दशीसे लेके शुक्ल पक्षकी प्रतिपदातक विवाहमें नहीं लेना क्योंकि वहां क्षीण चंद्रमा है और बाकी तिथियां विवाहमें श्रेष्ठ हैं यद्यपि चतुर्थी चतुर्दशी नवमी

इन्हेंको रिक्ता मानके शास्त्रकारोंने वर्जित करीभी हैं तथापि इन्हों के दोष परिहारक योग अनेकहैं जिससे उक्त तिथियोंमें विवाह शिष्टाचारसे सदैव होताहै व्यतीपात वैधृति यह दोनों योग और भद्रा करणभी नहीं लेना चाहिये. और तेरह तिथियोंका पक्ष और लुप्ताब्दमेंभी विवाह करना अच्छा नहीं इति पंचांगशुद्धिः ॥ अथ दशदोषोंकी सारिणीप्रवेशः—लात दोषकी सारिणीमें जिस नक्षत्रका विवाह हो उसके नीचे कोष्ठकमें सूत्रगत ग्रह की नक्षत्र स्थिति होवे तो लातदोष होताहै परंच यहां गंत पूर्णिमाकी घटी समाप्तहो जिस समयमें जो नक्षत्र भोगे उस नक्षत्रका पूर्ण चंद्रमा लेना चाहिये उक्त लातदोष का विवाह मालवदेशमें नहीं होता और सबदेशोंमें होता है . १ और पात दोष सूर्यनक्षत्रसे देखाजाता है उक्त पातदोषका विवाह कुरुक्षेत्र देशमें नहीं होता और सब देशोंमें होता है २ अथ युतिः—जिस राशिका चंद्रमा हो उसी राशिका पापग्रह होवे तो युतिदोष होताहै उक्त युतिदोषका विवाह सब देशोंमेंही होता है. क्योंकि इसका परिहार अनेक प्रकारसे है ३ वेधसारिणीमें जिस विवाह नक्षत्रके अधस्थ नक्षत्र ऊपर ग्रह वर्तमान होनेसे वेधदोष लगता है उक्त वेधदोषका विवाह किसी देशमें भी नहीं होता इस वेधमें और एकार्गलमें अभिजित सहित नक्षत्रोंकी गणना होती है. बाकी और दोषोंमें अभिजित विना सप्तविंशति नक्षत्रोंके अनुकूल सारिणी बनाई गई है. उक्तअभिजित नक्षत्रका भोग उतरापाढके अंत चरण और श्रवणकी चार घटी प्रथमतक है. इन घटियों में भ्रातृदुवा ग्रह रोहिणी नक्षत्रको वेधता है. और बाकी उतरापाढके आय

१ यातीतास्यपूर्णिमाविगाहं निष्पातद्वत्तभोविशुद्धिः लतावेधविधौ सुवीक्षणोप्यो नाम्यत्रेति पुषान्दति सारम् ॥ १ ॥ पूर्णिमांतद्वलस्यापि पापन्मासभवेद्वलि । भंतत्त्वविधुमीक्षेतविवाहेवेपलतयोः ॥ २ ॥ पूर्णिमास्यां चयदक्षे बलेतस्यैवमासन्म् । यावन्नान्या भवेत्पूर्णातमेवाञ्जयिचारयेदिति । कौशिकसंहिताया स्पष्टं किं बहुना ॥ सितचतुर्दशीतिवाहेष्वप्ययदितातातपूर्णिमासिनक्षत्रस्थे चंद्रे ग्राह्यम् .

२ पश्यमाणदशदोषे अभिजित्तुत्रमाहो तदाह एकार्गलेष्वेवेचनमाभिजित्प्रणयेदुध । लोपयद्दपातेषुपामि त्रेपिनतद्रवेत् । इतिपियाहरने नमुनक्षत्रदयशरीरिष्यभित्तिरिवाहः कार्थोन्वेतिसंक्षेपेणै । लिखित्वा शुभिकानारमभिविषयमुत्तमम् । शिरस्पुरसिद्धेदद्यात्त्रिपटपस्तपोदरे ॥ १ ॥ .

तीन चरणगत ग्रह मृगशीर्षको वेधता है. और उत्तरापादके चतुर्थ चरणमें अभिजित्की स्थिति है. जिससे उक्तचरणमें विवाह करना वा नहीं यह संशय दूरकरनेके लिये गर्गाचार्य कहते हैं कि, उत्तरापादके चतुर्थ चरणमें भी विवाह करना अच्छा है. उसमें अभिजित्का कुछभी दोष नहीं फ़क्त श्रवणकी चारघटीमें अभिजित्की प्रवृत्ति है सो उसमें विवाह नहीं करना चाहिये ४ अथ यामित्रदोषः—वैवाहिक नक्षत्रसे चतुर्दशवें नक्षत्र ऊपर पापग्रह होनेसे यामित्रदोष लगताहै उक्त दोषके अनेक प्रकारसे परिहार होनेके कारण सब देशोंमें यामित्रदोषका विवाह होताहै ५ अथ वाणपंचकदोषः—सारिणीमें सूर्यसंक्रांतिके स्पष्ट अंशके तुल्य देखलेना जिसमें अग्नि चौर नृप और रोग इन वाणोंका परिहार तो अनेक प्रकारसेहै जिससे उक्तवाण दोषोंमें विवाह करलेना बाकी मृत्युवाण दोषका. विवाह सब देशोंमेंही त्याज्य है. ६ अथ एकार्गलदोषः—वैवाहिक नक्षत्रके नीचे सारिणीमें नक्षत्र लिखे हुये हैं उनके ऊपर सूर्य होवे तो एकार्गलदोष लगता है. उक्त एकार्गल दोषका विवाह काश्मीरदेशमें नहीं होता. और सबदेशोंमें होता है ७ अथ उपग्रहदोषः एकार्गलकी सदृशही उपग्रह सारिणीमें देखलेना चाहिये उक्त उपग्रह दोषका विवाह बाह्यक देशमें नहीं होता और सब देशोंमें होताहै ८ अथ क्रांतिसाम्यदोषः—सारिणीमें सूर्यकी संक्रांति देखके उसके नीचे चंद्र लिखा सो विवाहमें होवे तो क्रांतिसाम्य दोष लगता है उक्त क्रांतिसाम्यका विवाह सब देशोंमें त्याज्यहै ९ अथ दग्धातिथिदोषः—सारिणी में सूर्यराशिके नीचे दग्धातिथि लिखी सो उस दिन होवे तो दग्धातिथि दोष लगता है उक्त दग्धातिथिके दिन भी लग्नादिकेंद्र कोणमें बुध गुरु और शुक्र होवें तो विवाह करलेना यदि उक्त स्थानोंमें उक्त ग्रह नहीं होवे तो दूसरा इसका परिहार भी नहीं है । इति विवाहे दशदोषाः।

विवाहे दशदोपसारिणी.

१ लातसारिणी.

वि.न.	रो.	मृ.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	उ.पा.	उ.भा.	रे.
सू.	पू.पा.	उ.पा.	उ.भा.	अश्वि.	भ.	रो.	भा.	पुष्य.	म.	स्वा.	वि.
चं.	पू.भा.	उ.भा.	रो.	भाद्रा.	पुन.	ऽश्ले.	पू.फा.	ह.	स्वा.	पू.पा.	उ.पा.
मं.	भ.	कृ.	पुष्य.	म.	पू.फा.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	श.	पू.भा.
बु.	म.	पू.फा.	वि.	ज्ये.	मू.	उ.पा.	ध.	पू.भा.	रे.	मू.	भाद्रा.
बृ.	उ.भा.	रे.	मू.	पुन.	पुष्य.	म.	उ.फा.	चि.	वि.	उ.पा.	श्र.
शु.	पुष्य.	ऽश्ले.	चि.	वि.	ऽनु.	मू.	उ.पा.	ध.	पू.भा.	कृ.	रो.
श.	श.	पू.भा.	कृ.	मू.	भाद्रा.	पुष्य.	म.	उ.फा.	चि.	मू.	पू.पा.
रा.	उ.फा.	ह.	ज्ये.	पू.पा.	उ.पा.	ध.	पू.भा.	रे.	भ.	पुन.	पुष्य.

२ पातसारिणी.

वि.न.	रो.	मृ.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	उ.पा.	उ.भा.	रे.
सू.	भाद्रा.	मू.	अश्वि.	कृ.	भ.	रो.	भ.	रो.	भ.	भ.	ऽश्वि.
सू.	पुन.	भाद्रा.	मू.	पु.	भाद्रा.	पुष्य.	भाद्रा.	ऽश्ले.	पुन.	पू.फा.	म.
सू.	पू.फा.	म.	ऽश्ले.	पू.फा.	म.	ह.	पू.फा.	ज्ये.	वि.	उ.फा.	पू.पा.
सू.	स्वा.	चि.	ह.	वि.	स्वा.	श्र.	पू.पा.	मू.	ऽनु.	वि.	स्वा.
सू.	मू.	ज्ये.	ज्ये.	पू.भा.	श.	ध.	उ.पा.	ध.	उ.पा.	पू.पा.	मू.
सू.	श.	ध.	रे.	उ.भा.	पू.भा.	रे.	पू.भा.	रे.	पू.भा.	श.	ध.

३ युतिश्चंद्रयुतकूरः—इति.

४ वेधयंत्रम्.

वि.न.	रो.	मृ.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मू.	उ.पा.	उ.भा.	रे.
व.धः	ऽभि.	उ.पा.	श्र.	रे.	उ.भा.	श.	भ.	पुन.	मू.	ह.	उ.फा.

(२७६)

द्वैतविनोद-

५ यामित्रदोषसारिणी.

न.	रो.	मृ.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मृ.	उ.पा.	उ.भा.	रे.
या	ऽनु.	ज्ये.	ध.	पू.भा.	उ.भा.	ऽभि.	कृ.	मृ.	पुन.	उ.फा.	ह.

६ मृत्युपंचकयंत्रम्.

१	२	४	६	८	१०	११	१३	१५	१७	१९	२०	२२	२४	२६	२८	२९	सु.	अ.
मृ.	ऽभि.	नृ.	चो.	रो.	मृ.	ऽभि.	नृ.	चो	रो.	मृ.	ऽभि.	नृ.	चो.	रो.	मृ.	ऽभि	पंच	क.

७ एकार्गलयंत्रम्.

न.	रो.	मृ.	म.	उ.फा.	ह.	स्वा.	ऽनु.	मृ.	उ.पा.	उ.भा.	रे.	योग.
वि.	पू.भा.	श.	पू.पा.	ज्ये.	ऽनु.	स्वा.	ह.	पू.फा.	ऽऽऽऽ.	कृ.	भ.	प्री.
आ.	रे.	उ.भ.	ऽभि.	पू.पा.	मृ.	ऽनु.	स्वा.	ह	पू.फा.	मृ.	रो.	सौ.
शो.	भ.	ऽभि.	ध.	ऽभि.	उ.पा.	मृ.	ऽनु.	स्वा	ह.	पुष्य.	भा.	अ.
सु.	रो.	कृ.	पू.भा.	ध.	श्र.	उ.पा.	मृ	ऽनु.	स्वा.	ऽऽऽऽ.	पुष्य	धृ.
श.	भा.	मृ.	रे	पू.भा	श.	श्र.	उ.पा.	मृ.	ऽनु.	पू.फा.	म.	गं.
पृ.	पु.	पुन.	भ.	रे.	उ.भा.	श.	श्र	उ.पा	मृ.	ह.	उ.फा.	धृ.
व्या.	म.	ऽऽऽऽ.	रो	भ.	ऽभि.	उ.भा.	श.	श्र.	उ.पा	स्वा.	चि.	ह.
व.	उ.फा.	पू.फा.	आ	रो.	कृ.	ऽभि.	उ.भा.	श.	श्र.	ऽनु.	वि.	ति.
व्य.	चि.	ह.	पुष्य.	भा.	मृ.	कृ.	ऽभि.	उ.पा.	श.	मृ.	ज्ये.	व.
प.	वि.	स्वा.	म.	पुष्य.	पु.	मृ.	कृ	ऽभि.	उ.भा.	उ.पा.	पू.पा.	शि.
सि.	ज्ये.	ऽनु.	उ.फा.	म.	ऽऽऽऽ.	पुन.	मृ.	कृ.	ऽभि.	श्र.	ऽभि.	सा.
शु.	पू.पा.	मृ.	चि	उ.फा.	पू.फा.	ऽऽऽऽ.	पुन.	मृ.	कृ.	श.	ध	शु.
ब्र.	ऽभि.	उ.पा	वि.	चि.	ह.	पू.फा.	ऽऽऽऽ.	पुन	मृ.	उ.भा.	पू.भा	रें.
वे.	ध.	श्र.	ज्ये.	वि.	स्वा.	ह.	पू.फा.	ऽऽऽऽ.	पुन.	ऽभि.	रे.	वि.
यो.	सु.	सु.	सु.	सु.	सु.	सु.	सु.	सु	सु.	सु.	सु.	यो.

८ उपग्रहयंत्रम्.

वि	रो	मृ	म	उ.फा.	ह	स्वा	शु.	मू.	उ.षा.	उभा.	रे
५	रे	अ	आ	पुष्य	श्ले	पू.फा	ह.	स्वा.	शु.	अ.	ध
८	श	पू.भा	कु-	मृ	आर्द्रा	पु.प्य.	म.	उ.फा.	चि.	मू.	पू.षा
१४	ज्ये	मू	रा	उ.भा.	रे	भ.	रो.	आर्द्रा.	पुष्य.	ह.	चि
१८	चि	स्वा	पू.षा.	श्र	ध	पू.भा.	रे.	भ.	रो.	श्ले.	म
१९	ह	चि	मू	उ.षा.	श्र	श.	उ.भा.	श्रि.	क.	पुष्य.	श्ले
२२	म	पू.फा.	वि	ज्ये	मू	उ.षा.	ध.	पू.भा.	रे.	मू.	आशि
२३	श्ले	म	स्वा	शु	ज्ये	पू.षा.	श्र.	श.	उभा.	रो.	मृग
२४	पुष्य.	श्ले	चि	वि	शु	मू	उ.षा.	ध.	पू.भा.	क.	रो

९ क्रांतिसाम्पयंत्रम्.

मे.	वृ.	मि	क.	ति.	क.	तु.	वृ.	ध.	म.	कुं	मी	सु.
मि.	म.	ध.	वृश्चि.	मे.	मी.	कुं.	कंके.	मि	वृष.	तु.	कंभ.	चं.

१० दग्धातिथियंत्रम्.

मे.	वृ.	मि.	क	ति.	क.	वृ.	तु.	ध.	म.	कुं	मी.	सु.
६	४	८	६	१०	८	१२	१०	२	१२	४	३	ति.

विश्वप्रदाग्रहाः

सु	चं	मं	बु	वृ	शु	श	रा
११	२	१२	११	२	११	२	११
३	३	६	३	६	३	६	३
८	११	३	५	१०	५	१	८
३॥	५	१॥	२	३	२	१॥	१॥

लग्नात्वाजितग्रहाः

सु.	चं	मं	बु	वृ	शु	श	रा	लग्नग
१	१	१	७	८	६	१	१ ४	६
७	८	८	८	८	७	७	७	
	६	८			८			

अथ लग्नशुद्धिः—चंद्रमा सायंकाली लग्नसे एकादश द्वितीय और तृतीय होवे तो गोधूलि और चतुर्थ पंचम सप्तम नवम द्वादश होवे तो गर्गके मतसे धूलिमुख कहलाता है उक्त गोधूलि लग्नसे शुक्र भौमादि अष्टमस्थान होवें तो भी दोष नहीं क्योंकि गोधूलि लग्नसे सप्तम सूर्य तो हमेशाही रहता है जब सूर्य जन्यदोष हीन मानों तो और ग्रहोंका दोष तो होनाही क्या केवल लग्न पठाष्टममें चंद्रमा होवे तो गोधूलि लग्न नहीं करना चाहिये यदि रात्रिलग्न शुद्ध बनता होवे तो गोधूलि लग्नसे रात्रि लग्न शुद्ध है क्योंकि स्त्रीकृत्य जितने हैं वे सब रात्रिमें करनाही अच्छा है यद्यपि शास्त्रकारोंने लग्नशुद्धि रात्रि दिवा दोनोंहीमें समान लिखी है परंच हेमाद्रि देवलके मतसे कन्यादान देना रात्रिमेंही श्रेष्ठ लिखा है उक्त लग्नशुद्धि सारिणीमें देखके अशुभ लग्नको छोडके शुद्ध लग्न लेलेना और उस लग्नके ग्रहोंका सारिणीसे विश्वाभी लेलेना चाहिये कितने शास्त्रकारोंने बारहवें शनि दशम मंगल और तृतीयशुक्रसे लग्न दूषित किया है परंच इनके दोष परिहारक वचन अनेक हैं जिससे उक्त दोषोंसे लग्न दूषित नहीं होता है, अथ सुगमरीतिसे सूक्ष्म क्रांतिसाम्य देखनेकी विधिः—विवाह लग्नके इष्ट ऊपर सूर्य चंद्र और राहुको स्पष्ट करके फिर सूर्यका भुजांश बनाके क्रांतिसारिणीसे क्रांति लेनी और राहुको चंद्रमामें हीनकिये व्यगु कहलाता है उक्त व्यगुका भुजांश बनाके राशि छोडके अंशादिकों को डेढा करनेसे व्यगु मेपादि हो तो उत्तर और तुलादि हो तो दक्षिण संज्ञक शर समझना चाहिये फिर चंद्रमाका भुजांश बनाके क्रांति सारिणीमें क्रांति लेनी यदि मेपादि चंद्रमा हो तो उत्तर और तुलादि होतो दक्षिण संज्ञक चंद्रमाकी क्रांति समझनी चाहिये उक्त चंद्रक्रांति और शरकी एक दिशा हो तो धन और भिन्नदिशा हो तो चंद्र और शरका अंतरकिये चंद्रमाकी स्पष्ट क्रांति होती है उक्त सूर्य और चंद्रमाकी एक क्रांति होवे तब सूक्ष्म क्रांतिसाम्य दोष होता है और आधुनिक ज्योतिर्विद सायनसूर्य चंद्रसे क्रांतिसाम्य बनाते हैं सो ठीक नहीं यद्यपि सिद्धांतोंमें पात स्पष्ट सायन गणितसेही कियागया है

परंच धर्मशास्त्रोंमें निरयन गणितसेही धर्मकी सिद्धि मानी है क्या उनको सायन गणितका ज्ञान नहीं था? नहीं उनका अभिप्राय कुछ औरही था यदि सायन गणितसे क्रांतिसाम्य दोष मानेंगे तो एकार्गलादि दोषोंको भी सायन गणितसेही मानना चाहिये जब तो सब शास्त्र औरही बनाने होंगे जिससे उनका सायन गणितसे क्रांतिसाम्य बनाना शास्त्रकी असंगतिकारक है क्योंकि उनके गणितसे तो क्रांतिसाम्य मकरके सूर्यमें मेषके चंद्रमामें संभव है और मुहूर्तचिंतामण्यादि ग्रंथोंसे मकरेण वृषाक्रांत (अर्थात्) मकरके सूर्य और वृषके चंद्रमाका है वा वृषभका सूर्य मकरके चंद्रमाका है इससे ज्योतिष-शास्त्रके मुहूर्तप्रतिपादक ग्रंथोंकी व्यवस्था और धर्मशास्त्रके ग्रंथोंकी व्यवस्था निरयन गणितके विना नहीं बैठसकी जिससे निरयन गणितसेही क्रांतिसाम्य बनाना शास्त्रसिद्ध है.

इति श्रीमनुरचिते देवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते पंचांगलेखन-

क्रमो नाम चतुर्विंशतितमोविनोदः ॥ २४ ॥

अथ व्रतादिनिर्णयः आदौसप्तकल्पादितिथिः—चैत्रशुक्ल १ चैत्रशुक्ल ५
 वैशाखशुक्ल ३ कार्तिकशुक्ल ७ मार्गशीर्षशुक्ल ९ माघशुक्ल १३
 चैत्ररुग्णा अथ ३ चतुर्दशमन्वादितिथिः—चैत्रशुक्ल ३ चैत्रशुक्ल १५ ज्ये-
 ष्ठशुक्ल १५ आषाढशुक्ल १ ० भाद्रपदरुग्णा ८ भाद्रपदशुक्ल ३ आश्विनशुक्ल ९
 कार्तिकशुक्ल १२ कार्तिक शुक्ल १५ पौषशुक्ल ११ माघशुक्ल ७
 फाल्गुनशुक्ल १५ चैत्ररुग्णा अमावास्या ३० अथदशावतारजयंतीः—
 चैत्रशुक्ल ३ अपराह्णे मत्स्योत्पत्तिः चैत्रशुक्लप्रतिपन्मत्स्यजयंतीत्येके चैत्र-
 शुद्ध ९ मध्याह्णे रामजयंती चैत्रशुक्ल १५ सूर्योदये हनुमज्जयंती वैशाख
 शुक्ल ३ मध्याह्णे परशुरामजयंती प्रदेशे बहवो वदन्ति वैशाखशुक्ल १४
 सायं नरसिंहावतारः वैशाखशुक्ल १५ मध्याह्णे सायं वा क्रूर्मोत्पत्तिः श्रावण
 शुक्ल १० सायंकाले कल्कीजयंती भाद्रपद रुग्णा ८ निशायि श्रीरुग्ण

जयंती भाद्रपदशुक्ला १२ मध्याह्ने वामनप्रादुर्भावः आश्विनशुक्ला १० सायंभौद्धावतारः मार्गशीर्षशुक्ला १५ दत्तजयंती. माघशुक्ला १ श्रीवल्लभ जयंती. अथ चतुर्थ्युगादि—वैशाखशुक्ला ३ त्रेतायुगादि. आश्विनकृष्णा १३ कलियुगादि. कार्तिकशुक्ला ९ कृतयुगादि. माघकृष्णा ३० द्वापरयुगादि चैत्रशुक्ला ३ गौरीव्रतं. चैत्रशुक्ला ८ भवान्युत्पत्ति. शतश्लोकी प्रमाणसे अथ चैत्रादिमासनिर्णयः—चैत्रकृष्णा १ वसंत प्रतिपदा उदयव्यापिनी लेनी चैत्रकृष्णा ८ शीतलाष्टमी शुभवारकी करनी दो दिन शुभवार युक्ता हो तो ज्येष्ठा-अनुराधा नक्षत्रयुक्तसप्तमीविद्धाको शीतलाकी पूजा करनी. चैत्रकृष्णा अमा-वास्या ३० मन्वादि अपराह्णव्यापिनी लेनी. चैत्रशुक्ला १ संवत्सरप्रतिपदा कहलाती है सो उदयव्यापिनी लेनी जब दो दिन उदय व्यापिनी होवे तो भी प्रथ-महीकी लेनी उसदिन तैलाभ्यंगादि स्नान करना जिस दिनका वार संवत्का राजा होता है. गुर्जरोंके मतसे चैत्रवदि ३०का वारभी वर्षका राजा होता है. परं-च सर्वसंमत नहीं सर्वसंमतसे तो प्रतिपदा उदयव्यापिनीका वारही राजा हो ता है यदि प्रतिपदाकी वृद्धि होवे तो दूसरी प्रतिपदाके दिन नवरात्रारंभ करना चाहिये. और चैत्रअधिक मास होवे तो प्रथम चैत्रशुदि १ प्रतिपदाका वार संवत्का राजा होता है. और द्वितीय चैत्रशुक्ला प्रतिपदासे नवरात्रारंभ होता है. इसका निर्णय शारदीयनवरात्र प्रमाणसे है. ॥ चैत्रशुक्ला ३ गौरीव्रत चतुर्थी युक्त करना. दूसरेदिन मुहूर्तमात्रभी होवे तो दूसरे दिन व्रत करना यह मन्वादि तृतीया कहलाती है. और देवीपूजा नवमीयुक्ता अष्टमी दिनमें करलेना. और चैत्रशुक्ला ९ रामनवमी सो मध्याह्नव्यापिनी लेनी. यदि पुनर्वसु नक्षत्र होवे तो महत्पुण्यदायक है. जब मध्याह्नव्यापिनी अष्टमीके दिन नवमी नहीं होवे वा उदय नवमी भी मध्याह्नव्यापिनी नहीं होवे तो भी उदयव्यापिनीके दिन व्रत करना. अथवा पुनर्वसुके दिन होवे तो उसदिन स्मार्ताको व्रत कर

१ पराशरः—सप्तमीसहितकार्याचैत्रकृष्णाष्टमीसदा। नवम्यानाधि। तौस्ति शीतलापूजनेमुने ॥ ज्ये-ष्ठाभिरक्षसयोगेतापमत्र समर्पयेत् । शालानांशान्तिदधेव इतिदैवविदोविदुः ॥

लेना चाहिये. परंच वैष्णवों को तो अष्टमीयुक्ता नवमीका त्याग करना और उदय नवमीका व्रत करके दशमीके दिन पारण करना. तीन मुहूर्त अर्थात् ६ घटी भी नवमी उदयमें होवे तो वैष्णवोंको यही दिन व्रत करना चाहिये और स्मार्तोंको पूर्वादिन व्रत करना चाहिये यदि अष्टमी ६ घटी भोगके फिर नवमीका क्षय होवे जब तो अष्टमी विद्धाही व्रत वैष्णवोंने करलेना. चैत्रशुक्ला ११ एकादशीके दिन लक्ष्मीकांतका दोलोत्सव करना. चैत्रशुक्ला १२के दिन हरिदमनोत्सव करना. और चैत्रशुक्ला १५ हनुमज्जयंती सूर्योदयव्यापिनी करनी यदि दो दिन सूर्योदयव्यापिनी होवे तो प्रथमके दिनही हनुमज्जन्मोत्सव करना चाहिये. ॥ इतिचैत्रमासः ॥

अथ वैशाखमासः—चैत्रशुदि १५ से वैशाखशुक्ला १५ तक वैशाखस्नान वा भेषसंक्रातिसे स्नान प्रारंभ करना वैशाखशुक्ला ३ अक्षय्य तृतीया पूर्वाह्नव्यापिनी लेनी दोदिनतक पूर्वाह्नव्यापिनी होवे तो दूसरे दिनकी लेनी. इसी दिन परशुरामका जन्म हुवा. सो प्रथम प्रहर रात्रिमें तृतीयाकी प्राप्ति होवे जबही पूजा करनी और वैशाखशुक्ला १४ ऋसिंहजयंती प्रदोषव्यापिनी करनी. प्रदोषकाल सूर्यास्त हुयेसे घटी ३ पर्यंत कहलाता है. यदि दोदिन प्रदोषव्यापिनी होवे तो परा करनी कमती होवे तो पूर्वादिन करनी वैशाखशुक्ला को गंगोत्पत्ति उत्सव मध्याह्नमें करना यदि दो दिन हो तो पूर्वको करना वैशाखशुक्ला १५ उदयव्यापिनी लेनी दोदिन होवे तो दूसरे दिनकी लेनी उसदिन यम और धर्मराजके प्रीत्यर्थ जलकुंभ दान और अन्न देनेका बड़ा माहात्म्यहै

अथ ज्येष्ठमासः—ज्येष्ठशुदि ३० भावुका कहलाती है ज्येष्ठशुक्ला ३ रंभाव्रतमें द्वितीयायुक्त पूर्वविद्धा लेनी ज्येष्ठशुक्ला १० दशहरा होताहै इसमें दशयोगकी ज्येष्ठमास १ शुक्लपक्ष २ दशमी ३ बुधवार ४ हस्तनक्षत्र ५ व्यतीपातयोग ६ गरकरण ७ कन्याका चंद्र ८ वृषभका सूर्य ९ आनंद

योग १० यह पूर्वाह्नव्यापिनी करनी यदि दो दिन पूर्वाह्नव्यापिनी होवे तो विशेष दशमी जिस दिन होवे उसी दिन करना ज्येष्ठमास अधिक होवे तो अधिकमासकी शुद्ध दशमीको दशहरा करलेना ज्येष्ठ शुदि १५ वटसावित्रीपूजामें चतुर्दशीयुक्त लेनी यदि चतुर्दशी १८ घटिकापर्यंत होवे तो पूजन-विषयमें उदयपूर्णिमा लेनी उक्त वटसावित्रीका व्रत १३ से प्रारंभ करना और प्रतिपदाके दिन पारणा करना यह सावित्रीव्रत दक्षिणीलोक केवल पूर्णिमासी दिनही करते हैं और पश्चिमदेशीय लोक आपाठ कृष्ण ३० दिन करते हैं ज्येष्ठशुक्ला १५ मन्वादितिथि श्राद्ध विषयमें पूर्वाह्नव्यापिनी करनी ज्येष्ठशुक्ला १ करि दिन और उस दिनसे दशहराव्रतका प्रारंभ करना और शुक्ला १० दिन गंगाका अवतार हुवाहै और शुक्ला १३ से प्रारंभ किया वटत्रिरात्र व्रत इसी १५ के दिन समाप्तकरना । इति ज्येष्ठमासः ॥

अथ आपाठमासः—आपाठशुक्ला १० वा १५ यह मन्वादितिथि हैं. सो पूर्वाह्नव्यापिनी लेनी. आपाठशुक्ला ११ विष्णुशयनीका उत्सव करना यदि अधिकमास होवे तो शुद्धमासकी एकादशी लेनी अधिककी नहीं लेनी चाहिये. आपाठशुक्ला १२ भाद्रपद शुक्ला १२ कार्तिकशुक्ला १२ इन के दिन क्रमसे अनुराधाके आय पाद श्रवणके मध्यपाद और रेवतीके अन्त्य पादका संयोग होनेसे हरिवासर कहलाता है सो उक्त द्वादशी और नक्षत्र पादका संगम छोडके पारणा करना चाहिये नहीं तो एकादशीके व्रतका भंग होताहै यदि द्वादशी स्वल्पघटी होवे और नक्षत्रका योग आन पड़े तो द्वादशीमें केवल पारणा करनेवालेको नक्षत्र वेध नहीं मानना चाहिये यह कौस्तुभकारका आशय है अथवा संगम कालको छोडके प्रातःकाल अथवा मध्याह्नकाल पारणा करना यह पुरुपार्थचिंतामणिवालेका आशय है. इसमें कालनिर्णय कहतेहैं. सूर्योदयात् ६ घटी प्रातःकाल ६ घटी फिर संगवकाल तदनंतर ६ घटी मध्याह्नकाल. तदनंतर ६ घटी अपराह्नकाल. तदनंतर ६ घटी सायाह्नकाल इसप्रमाण ५ प्रकारसे कालसंज्ञा है. इसीप्रकार सूक्ष्म-

काल दिनमान के पंचमांशको समझना चाहिये । इतिहरिवासरनिर्णयः ॥

आषाढशुक्ला ११ से चातुर्मास्यारंभ और शुक्ला १५ के दिन व्यासपूजा अथवा गुरुकी पूजा करनी सायंकालव्यापिनी पूर्णिमा में पवन देखनी जिसमें ऐशान्य उत्तर और पूर्वकी पवन तो उत्तम है और दक्षिण अग्नि और नैऋतकी नेष्ट बाकी और मध्यम है उक्त चातुर्मास व्रतका आरंभ शुक्र गुरुके अस्त वा अधिकमासमें प्रथम नहीं करना और खंडतिथिके दिनभी प्रथम प्रारंभ नहीं करना सूर्योदयसे दो प्रहर पहलेही समाप्तहो उसीको खंडतिथि कहतेहैं. उक्त खंडतिथि में व्रतका आरंभ और उद्यापन नहीं करना और दान विषय और अध्ययन स्नानसंध्यादि विषय ये तो एक पलमात्रभी उदयव्यापिनी तिथि हो उसीको संकल्पमें बोलना चाहिये । इति आषाढमासः ॥

अथ श्रावणमासः—श्रावणशुक्ला १ से नक्तव्रतका आरंभ करना. और भाद्रपदशुक्ला १ पर्यंत उक्त व्रत करके फिर उद्यापन करदेना उक्त व्रतारंभमें सूर्योदयव्यापिनी तिथि लेनी श्रावणशुक्ला ३ मधुश्रवा गुर्जर देशमें प्रसिद्धहै सो उर्वरिता उदयव्यापिनी लेनी शुक्ला ४ वरदचतुर्थी तृतीया युक्त लेनी शुक्ला ५ नागपंचमी षष्ठीयुक्त लेनी शुक्ला ६ वर्णषष्ठी और सप्तमी ७ के दिन शीतलापूजन शुक्ला ८ दुर्गा अष्टमी शुक्ला १२ पवित्रार्पण शुक्ला १५ रक्षाबंधन और श्रावणशुक्ला १२ से भाद्रपद शुक्ला १२ पर्यंत दधिभक्षण व्रतकरना अथ श्रावणीनिर्णयः—ऋग्वेदियोंको श्रवण नक्षत्रमें श्रावणी करनी यदि दोदिन श्रवण होवे तो पूर्वदिनोदयसे दूसरेदिन ६ घटीपर्यंत होवे तो पूर्वदिनही करलेनी जब पूर्वदिन उदयमें नहीं श्रवण होवे और दूसरे दिन उदयसे ४ घटीपर्यंत होवे तो दूसरे दिनही करलेनी चाहिये यदि दूसरेदिन ४ घटीसे श्रवण न्यून होवे और पूर्वदिन उत्तराषाढका वेध होवे तों श्रावणी कर्म श्रावणशुक्ला ५ अथवा हस्त नक्षत्रमें ऋग्वेदवालोंको करनी चाहिये. अथ यजुर्वेदीयश्रावणी निर्णयः—सर्व यजुर्वेदियोंके उपाकर्म विष-

योग १० यह पूर्वाह्नव्यापिनी करनी यदि दो दिन पूर्वाह्नव्यापिनी होवे तो विशेष दशमी जिस दिन होवे उसी दिन करना ज्येष्ठमास अधिक होवे तो अधिकमासकी शुद्ध दशमीको दशहरा करलेना ज्येष्ठ शुदि १५ वटसावित्रीपूजामें चतुर्दशीयुक्त लेनी यदि चतुर्दशी १८ घटिकापर्यंत होवे तो पूजन-विषयमें उदयपूर्णमा लेनी उक्त वटसावित्रीका व्रत १३ से प्रारंभ करना और प्रतिपदाके दिन पारणा करना यह सावित्रीव्रत दक्षिणीलोक केवल पूर्णमासी दिनही करते हैं और पश्चिमदेशीय लोक आपाढ कृष्ण ३० दिन करते हैं ज्येष्ठशुक्ला १५ मन्वादितिथि श्राद्ध विषयमें पूर्वाह्नव्यापिनी करनी ज्येष्ठशुक्ला १ करि दिन और उस दिनसे दशहराव्रतका प्रारंभ करना और शुक्ला १० दिन गंगाका अवतार हुवाहै और शुक्ला १३ से प्रारंभ किया वटत्रिरात्र व्रत इसी १५ के दिन समाप्तकरना । इति ज्येष्ठमासः ॥

अथ आपाढमासः—आपाढशुक्ला ३० वा १५ यह मन्वादितिथि हैं. सो पूर्वाह्नव्यापिनी लेनी. आपाढशुक्ला ११ विष्णुशयनीका उत्सव करना यदि अधिकमास होवे तो शुद्धमासकी एकादशी लेनी अधिककी नहीं लेनी चाहिये. आपाढशुक्ला १२ भाद्रपद शुक्ला १२ कार्तिकशुक्ला १२ इन के दिन क्रमसे अनुराधाके आद्य पाद श्रवणके मध्यपाद और रेवतीके अन्त्य पादका संयोग होनेसे हरिवासर कहलाता है सो उक्त द्वादशी और नक्षत्र पादका संगम छोडके पारणा करना चाहिये नहीं तो एकादशीके व्रतका भंग होताहै यदि द्वादशी स्वल्पघटी होवे और नक्षत्रका योग आन पड़े तो द्वादशीमें केवल पारणा करनेवालेको नक्षत्र वेध नहीं मानना चाहिये यह कौस्तुभकारका आशय है अथवा संगम कालको छोडके प्रातःकाल अथवा मध्याह्नकाल पारणा करना यह पुरुपार्थचिंतामणिवालेका आशय है. इसमें कालनिर्णय कहतेहैं. सूर्योदयात् ६ घटी प्रातःकाल ६ घटी फिर संगमकाल तदनंतर ६ घटी मध्याह्नकाल. तदनंतर ६ घटी अपराह्नकाल. तदनंतर ६ घटी सायाह्नकाल इसप्रमाण ५ प्रकारसे कालसंज्ञा है. इसीप्रकार सूक्ष्म-

यमें पूर्णिमा मुख्य काल है जिसमें यंजुर्वेदी दो प्रकारके हैं शुक्लयजुर्वेदी और कृष्णयजुर्वेदी पूर्णिमा पूर्वदिन सूर्योदयसे २ घटी ऊपर प्राप्ति होवे और दूसरे दिन १२ घटीपर्यंत रहै तो दूसरेदिनही उपाकर्म करना चाहिये यदि दोनों दिन सूर्योदयव्यापिनी होवे तो प्रथमदिनही करनी चाहिये जब प्रथमदिन २ घटी पश्चात् पूर्णिमाकी प्राप्ति होवे और दूसरे दिन १२ घटीसे न्यून होवे तो कृष्णयजुर्वेदी तो उत्तरदिन और शुक्लयजुर्वेदियोंको प्रथम दिन उपाकर्म करना चाहिये फिर यदि पूर्वदिन २ घटी अन्तर पूर्णिमा प्राप्त होवे और उत्तरदिन ४ घटीसे कम होवे वा क्षय होवे तो पूर्वदिनही उपाकर्म करना सर्वसंमत है अथवा श्रावणशुक्ला १५ दिन सूर्यसंक्रांति होवे वा ग्रहण होवे तो श्रावणशुक्ला ५ के दिन उपाकर्म करना श्रेष्ठ है यदि दैवयोगसे श्रावणमें वृष्टि नहीं होवे औपध्यादि उत्पन्न न होवें तो भाद्रपदमें हस्त नक्षत्रके दिन उपाकर्म करना श्रेष्ठ है अथ सामवेदीय श्रावणीका मुख्यकालः—भाद्रपद शुक्लपक्ष हस्त नक्षत्रमें मुख्य है और जिस दिन संक्रांति प्राप्त होवे तो श्रावणशुक्लमें हस्त नक्षत्र मुख्य यह निर्णयसिंधुका आशय है अथवा श्रावणीपूर्णिमाके दिन उपाकर्म करके फिर भाद्रपद शुक्लपक्ष हस्त नक्षत्रमें वेदारंभ करना यह कोईक आचार्यका मत है उक्त वेदवालोंको उपाकर्म अपराह्णमें करना और नर्मदाके उत्तरभागमें बसनेवाला सामवेदी सिंहाराशिस्थ सूर्यमें हस्तके दिन उपाकर्म करते हैं और नर्मदासे दक्षिणवासी कर्कस्थ सूर्यमें हस्तर्क्षदिन उपाकर्म करते हैं अथाथर्ववेदी इनको भाद्रपद पूर्णिमा उपाकर्म करनेको श्रेष्ठ है यदि स्वस्वकालमें कार्यवशसे कर्म नहीं होसके तो इतरवेदीके उक्त कालमें उपाकर्म करना परंच कर्मका लोप नहीं करना चाहिये और नवीन मौजीबंधन किया होवे तो शुक्रगुरुके अस्तमें प्रथम उपाकर्मका प्रारंभ न करे और उक्त श्रावणी पूर्णिमादिन भद्रारहित समयमें रक्षाबंधन करना श्रेष्ठ है .

इति श्रावणमासः ॥

अथ भाद्रपदमासः—भाद्रपदरुष्णा ६ चंद्रपत्री चंद्रोदयव्यापिनी लेनी दोदिन होवे तो पूर्व लेनी भाद्रपद रुष्णा ८ जन्माष्टमीका २ भेद हैं जिसमें केवल अष्टमी तो जन्माष्टमी कहलाती है और चंद्रोदय कालिका अष्टमी रोहिणी नक्षत्र युक्ता जयंती कहलाती है उक्त व्रतका ४ भेद है पूर्वदिन निशीथयोगिनी १ परदिन निशीथयोगिनी २ दोनोंदिन निशीथयोगिनी ३ दोनों दिन न निशीथ योगिनी ४ निशीथ अर्थात् अर्धरात्रिकी संज्ञा है जिसमें सप्तमीके-दिन निशीथकालव्यापिनी अष्टमी होवे तो भी ग्राह्य है और परदिवसी निशीथव्यापिनी अष्टमी होवे तो पर करनी श्रेष्ठ है दोदिन निशीथव्यापिनी अष्टमी होवे तो दूसरेदिन करनी श्रेष्ठ है विषमव्यापिनी होवे तो पूर्व करनी भाद्रपद ३० पिठोरी अमावास्या सायंकालव्यापिनी लेनी यदि दोदिनमें भी सायंकालव्यापिनी न होवे तो दूसरी लेनी और ३सीदिन कुशाका ग्रहण करना भाद्रपदशुक्ला ३ हरितालिका उदयव्यापिनी करनी जब दूसरेदिन २घटी भी होवे तो दूसरे दिनही हरितालिकाव्रत करना भाद्रपदशुक्ला ४ सिद्धि-विनायक व्रतमें मध्याह्नव्यापिनी लेनी यदि प्रथमदिन मध्याह्न व्यापिनी नहीं होवे और दूसरे दिनभी नहीं होवे तो दूसरे दिनही करनी मध्याह्न घटी १२ से १८ तक होता है भाद्रपद शुक्ला ५ ऋषिपंचमीका व्रत स्त्रियोंको करना योग्य है पंचमी मध्याह्न व्यापिनी लेनी यदि दोदिन मध्याह्नव्यापिनी होवे तो चतुर्थीयुक्त पंचमी लेनी भाद्रपद शुक्ला ७ महालक्ष्मीका व्रत करना अनुराधासे प्रारंभ और मूलमें व्रतकी समाप्ति करनी भाद्रपदशुक्ला १२ श्रवणयुक्ता १२ घटीपर्यंत होवे तो उपवास करना इसका नाम श्रवण द्वादशी यदि दूसरेदिनभी ६ घटीपर्यंत श्रवण और द्वादशीका योग होवे तो दूसरे दिनही उपवास करना वैष्णवोंको तो अवश्यमेव करना चाहिये भाद्रपद शुक्ला १२ श्रवणयुक्त वामन जयंती मध्याह्नव्यापिनी लेनी भाद्रपद शुक्ला १४ अनंत

निष्कार्कसंपदायमें तो सप्तमीविदा त्यागके जन्माष्टमी करने हैं और रामानुजसंपदायमें सिद्धपद सूर्यमें गण रोहिणी उदयमें ही तब जन्माष्टमी मत करते हैं और स्मार्तोंको तो केवल अर्धरात्रव्यापिनी अष्टमी ग्राहिये.

चतुर्दशी उदयव्यापिनी लेनी यदि दोदिन उदयव्यापिनी होवे तो पूर्वलेनी जब पूर्वदिन उदयव्यापिनी न होवे और चतुर्दशीका क्षय होवे तोभी पूर्वही लेनी यदि पूर्वदिन उदयव्यापिनी न होवे और दूसरे दिन घटी २ पर्यंत चतुर्दशी होवे तो दूसरे दिनही अनंतव्रत करना भाद्रपद शुक्ला १५ श्रौष्ठपदी कहलाती है;

अथ आश्विनमासः—भाद्रपद शुक्ला १५ से दिन १६ महालय श्राद्ध कहलातेहैं जिसमें सर्वतिथि मध्याह्नव्यापिनी लेनी और सौभाग्यवतीका श्राद्ध नवमीको करना और शस्त्रादिकसे मृतकका श्राद्ध चतुर्दशीको करना और कोईभी कारणसे महालय श्राद्ध उक्त नियमपर रहता चलाजावे तो वृश्चिकसंक्रांतिपर्यंत करना फिर नहीं करना चाहिये आश्विनकृष्णा अमावस्या हस्त युक्त होवे तो गजच्छाया कहलाती है आश्विन शुक्ला १ को माता-महका श्राद्ध दौहित्रको अवश्य करना चाहिये और उस दिन नवरात्रकाभी प्रारंभ होताहै उक्त प्रतिपदा घटस्थापनमें अमायुक्त नहीं लेना और उसदिन वैधृतियोग होवे तो वैधृति छोडके घटस्थापन करना यदि वैधृत और चित्रानक्षत्रका योग होवे तो वैधृतजन्य दोष नहीं यदि प्रतिपदाका क्षय होवे तो अमावास्या युक्त प्रतिपदा घटस्थापनमें श्रेष्ठ कहलातीहै. आश्विनशुक्ला ५ उपांग ललिता व्रतमें मध्याह्नव्यापिनी पूर्व लेनी आश्विनशुक्ला ७ मूल नक्षत्रमें प्रातः सरस्वतीका आवाहन करके फिर पूर्वापाठमें पूजन और उत्तरापाठमें बलिदान और श्रवणके प्रथम चरणमें विसर्जन करना चाहिये आश्विनशुक्ला ८ दिन मध्यरात्रिमें भद्रकालीका अवतार हुवाहै उक्तअष्टमी नवमी युक्त लेनी यदि अष्टमी सूर्योदय समयमें मूल नक्षत्रमें होनी बड़ी दुर्लभ है. क्यों कि उसको महानवमी कहनी चाहिये और सप्तमीयुक्त अष्टमीका सदाही त्याग करना यदि अष्टमीका क्षय होवे तो सप्तमीयुक्त अष्टमी श्रेष्ठहै उक्त अष्टमीमें होम शुरू करके नवमीमें पूर्णाहुति देनी चाहिये. और इसीदिन सर्व शस्त्रों अस्त्रोंकी पूजा करनी. आश्विन शुक्ला ९ पूर्वविद्धा लेनी वेध ६

घटी अष्टमीसे पीछे नवमीकी प्राप्ति होवे तो दूसरे दिन करनी आश्विन शुक्ला प्रतिपदासे नवमीपर्यंत अश्वदिकोंके पालकको नीराजनविधि अर्थात् उनको वस्त्रादिकोंसे सजाके पुष्पादिकोंकी माला पहराके और स्नान पान अच्छा देना और जलसे नेत्रोंको आँजना चाहिये शुक्ला १० विजया दशमी सो अपराजिता पूजाके विषयमें नवमी युक्ता दशमी लेनी. सीमोल्लंघनविषयमें सायंकाली दशमी लेनी. यदि मायंकाली न होवे तो विजय मुहूर्तव्यापिनी श्रवणनक्षत्रयुक्त लेनी चाहिये विजयमुहूर्तकी दिनकी २० घटी ऊपर प्राप्ति है. यदि पूर्व दिनमें सायंकाली दशमी और श्रवण नक्षत्र होवे तो पूर्वदिन ही श्रेष्ठ है पूर्वदिनमें श्रवण नहीं होवे तो उदयव्यापिनी श्रेष्ठ है. परंच इसमें श्रवणकी बलिष्ठता विशेष है. राजपट्टाभिषेक उदयव्यापिनी दशमीके दिन करना आश्विनशुक्ला १५ को जा गरीव्रत उदयव्यापिनीमें करना इसी दिन नवान्नभक्षण करना और अश्वयुजी कर्ममें पूर्वाह्नव्यापिनी लेनी चाहिये ।

अथ कार्तिकमासः—तुलासंक्रांतिसे वृश्चिकसंक्रांतिपर्यंत तिल तैलका आकाश दीप करना आश्विनशुक्ला १५ से कार्तिकस्नान प्रारंभ करना कार्तिक कृष्णा ४ कर्क चतुर्थी चंद्रोदयव्यापिनी लेनी कार्तिक कृष्णा १२ गोवत्सपूजा विषयमें प्रदोषव्यापिनी लेनी. कार्तिक कृष्णा १३ के दिन अपमृत्यु निवारणके अर्थ यमराजके प्रीत्यर्थ घरसे बाहिर दीपक करना और धनकी पूजा करनी कार्तिक कृष्णा १४ नरक चतुर्दशी वा रूप १४ चंद्रोदयव्यापिनी लेनी. उसीदिन तिल और आमलकसे अभ्यंग कर फिर स्नानकर अपामार्ग तुंबी और पद्मपावड़ इन तीनोंका पत्र अपने शरीर ऊपर भ्रमायके फेंक देना चाहिये कार्तिक कृष्णा ३० दीपमालिका महालक्ष्मी पूजाविषयमें प्रदोष व्यापिनी लेनी यदि उभयदिन प्रदोषव्यापिनी होवे तो दूसरे दिन करनी चाहिये कार्तिक शुदि १ बलिपूजनमें पूर्वविद्धा लेनी गोवर्धनपूजा इसीदिन करनी. शुक्ल २ यमद्वितीया कहलाती है यही भार्वाज वा भारुबीज समझलेना.

सो पूर्वविद्धा लेनी कार्तिकशुक्ला ८ गोपाष्टमी सायंकालव्यापिनी लेनी कार्तिक शुक्ला ९ कृष्णाण्डनवमी वा अक्षयनवमी वा युगादि तिथि पूर्वाह्नव्यापिनी लेनी कार्तिक शुक्ला ११ के दिन तुलसीका विवाह करना शुक्ला १२ के दिन रेवतीका अंत्यपाद छोड़के पारणा करना. उक्त एकादशी प्रवोधिनी कहलातीहै कार्तिकशुक्ला १२ मन्वा-दितिथि पूर्वाह्नव्यापिनी लेनी शुक्ला १४ वैकुण्ठचतुर्दशी निशीथव्यापिनी लेनी दोदिन होवेतो दूसरेदिनकी लेनी. कार्तिकशुक्ला १५ परदिनकी लेनी । इतिकार्तिक मासः ॥

अथ मार्गशीर्षमासः—मार्गशीर्ष शुक्ला ५ नागपंचमी परदिन करनी मार्गशीर्ष शुक्ला ६ चंपापत्री सप्तमीविद्धा करनी मार्गशुक्ला १४ के दिन पिशाचमोचन श्राद्ध करना मार्गशीर्षशुक्ला १५ दत्तजयंती प्रदोषव्यापिनी लेनी ॥

अथ पौषमासः—पौषशुक्ला ११ मन्वादि तिथि कहलातीहै पौषशुक्ला १५ से माघशुक्ला १५ पर्यंत माघस्नान करना ॥

अथ माघमासः—माघशुक्ला ४ तिल चतुर्थी प्रदोषव्यापिनी लेनी माघ शुक्ला ५ वसंत पंचमी वा श्रीपंचमी माघव मतसे पूर्वा और हेमाद्रिमतसे पुरा करनी माघशुक्ला ७ रथसप्तमी अरुणोदयव्यापिनी लेनी उक्त सप्तमी मन्वादि तिथि भी है माघशुक्ला ८ भीष्माष्टमी पूर्वाह्नव्यापिनी लेनी माघ-शुक्ला १२ भीष्मद्वादशी परविद्धा लेनी माघशुक्ला १५ परविद्धा लेनी यदि सोम गुरु युक्ता पौर्णिमा होवेतो स्नानदानमें महापुण्यदायक है ॥

अथ फाल्गुनमासः—फाल्गुनकृष्णा १४ महाशिवरात्रि निशीथ-व्यापिनी होवेतो पूर्व लेनी दोदिनहीं निशीथव्यापिनी नहीं होवेतो पर करनी फाल्गुन शुक्ला १५ सायाह्नव्यापिनी लेनी सायाह्नव्यापिनी नहीं होवेतो प्रदोषव्यापिनी लेनी दोदिन प्रदोषव्यापिनी होवे तो दूसरी लेनी भद्राको त्याग करके होलिका दीपन करना यदि कोई ग्रहणादि संकट आजावे तो भद्राके मुखकी ५ घटी त्याग करके होलिकादीपन करना ग्रहण ग्रस्तोदय नहीं होवे तो सायंकाली भद्रारहित होलिकादीपन करना परंतु दिनमें नहीं करना

और प्रतिपदामें भी नहीं करना पूर्णिमा वर्तमानमेंही होलिकादीपन करना
 अथ प्रदोषनिर्णयः—शुक्ला १३ त्रयोदशी प्रदोषकालव्यापिनीमेंही
 प्रदोषका व्रतकरना यदि दोदिन प्रदोषव्यापिनी होवे तो शुक्लपक्षकी पूर्व
 और कृष्णपक्षकी पर लेनी यदि दोदिन प्रदोषव्यापिनी नहीं होवे तो भी पर-
 करनी यदि शनिवार युक्त होवे तो महापुण्यदायक कहनी प्रदोष काल सूर्या
 स्तपीछे ३ घटीपर्यंत होता है ।

अथ संकष्ट चतुर्थीनिर्णयः—सारे महीनोंकी कृष्णपक्षकी चतुर्थी संकष्ट
 चतुर्थी चंद्रोदय व्यापिनी लेनी यदि दोदिन चंद्रोदय व्यापिनी होवे तो दूसरे
 दिनकी लेनी यदि दोनोंदिन चंद्रोदयव्यापिनी नहीं होवे तो भी दूसरेदिनही
 की लेनी चाहिये ।

अथ एकादशी निर्णयः—एकादशीके व्रतमें ३ तीन भेद हैं स्मार्त १
 वैष्णव २ भागवत ३ जिसमें दशमीविद्धा हो वा शुद्धाहो परंच द्वादशीमें
 पारण होवे सो स्मार्त कहलाती है और ५६ घटीसे एक पल भी अधिक
 दशमी होवे तो वह एकादशी वैष्णव और भागवतोंको त्याज्य है द्वादशीमेंही
 व्रत करना होता है और ४५ घटीसे दशमी एक पल भी अधिक होवे तो
 केवल निम्बार्कसंप्रदायी एकादशी त्यागके द्वादशीका व्रत करते हैं और
 वैष्णव सभी एकादशीकोही करते हैं अथैकादशीनामानिः—चैत्र शुक्ला
 ११ कामदा, वैशाखकृष्णा ११ वरूथिनी, वैशाखशुक्ला ११ मोहिनी,
 ज्येष्ठकृष्णा ११ अपरा, ज्येष्ठशुक्ला ११ निर्जला, आपाढकृष्णा ११ योगिनी,
 आपाढशुक्ला ११ शयनी, श्रावणकृष्णा ११ कामिका, श्रावणशुक्ला ११
 पुत्रदा, भाद्रपदकृष्णा ११ अजा, भाद्रपदशुक्ला ११ पद्मा, आश्विनकृष्णा
 ११ इंदिरा, आश्विनशुक्ला ११ पाशांकुशा, कार्तिककृष्णा ११ रमा,
 कार्तिकशुक्ला ११ प्रबोधिनी, मार्गशीर्षकृष्णा ११ उत्पत्ति, मार्गशीर्षशुक्ला ११
 मोक्षदा, पौषकृष्णा ११ सफला, पौषशुक्ला ११ पुत्रदा, माघकृष्णा ११ षडनिला,
 माघशुक्ला ११ जया, फाल्गुनकृष्णा ११ विजया, फाल्गुनशुक्ला ११

सो पूर्वविद्धा लेनी कार्तिकशुक्ला ८ गोपाटमी सायंकालव्यापिनी लेनी कार्तिक शुक्ला ९ कूष्माण्डनवमी वा अक्षयनवमी वा युगादि तिथि पूर्वाह्नव्यापिनी लेनी कार्तिक शुक्ला ११ के दिन तुलसीका विवाह करना शुक्ला १२ के दिन रेवतीका अंत्यपाद छोडके पारणा करना. उक्त एकादशी प्रवोधिनी कहलातीहै कार्तिकशुक्ला १२ मन्वादि तिथि पूर्वाह्नव्यापिनी लेनी शुक्ला १४ वैकुण्ठचतुर्दशी निशीथव्यापिनी लेनी दोदिन होवेतो दूसरेदिनकी लेनी. कार्तिकशुक्ला १५ परदिनकी लेनी । इतिकार्तिक मासः ॥

अथ मार्गशीर्षमासः—मार्गशीर्ष शुक्ला ५ नागपंचमी परदिन करनी मार्गशीर्ष शुक्ला ६ चंपापत्री सप्तमीविद्धा करनी मार्गशुक्ला १४ के दिन पिशाचमोचन श्राद्ध करना मार्गशीर्ष शुक्ला १५ दचजयंती प्रदोषव्यापिनी लेनी ॥

अथ पौषमासः—पौषशुक्ला ११ मन्वादि तिथि कहलातीहै पौषशुक्ला १५ से माघशुक्ला १५ पर्यंत माघस्नान करना ॥

अथ माघमासः—माघशुक्ला ४ तिल चतुर्थी प्रदोषव्यापिनी लेनी माघ शुक्ला ५ वसंत पंचमी वा श्रीपंचमी माधव मतसे पूर्वा और हेमाद्रिमतसे पुरा करनी माघशुक्ला ७ रथसप्तमी अरुणोदयव्यापिनी लेनी उक्त सप्तमी मन्वादि तिथि भी है माघशुक्ला ८ भीष्माष्टमी पूर्वाह्नव्यापिनी लेनी माघशुक्ला १२ भीष्मद्वादशी परविद्धा लेनी माघशुक्ला १५ परविद्धा लेनी यदि सोम गुरु युक्ता पौर्णिमा होवेतो स्नानदानमें महापुण्यदायक है ॥

अथ फाल्गुनमासः—फाल्गुनकृष्णा १४ महाशिवरात्रि निशीथव्यापिनी होवेतो पूर्व लेनी दोदिनहै निशीथव्यापिनी नहीं होवेतो पर करनी फाल्गुन शुक्ला १५ सायाह्नव्यापिनी लेनी सायाह्नव्यापिनी नहीं होवेतो प्रदोषव्यापिनी लेनी दोदिन प्रदोषव्यापिनी होवे तो दूसरी लेनी भद्राकी त्याग करके होलिका दीपन करना यदि कोई ग्रहणादि संकट आजावे तो भद्राके मुखकी ५ घटी त्याग करके होलिकादीपन करना ग्रहण ग्रस्तोदय नहीं होवे तो सायंकाली भद्रारहित होलिकादीपन करना परंतु दिनमें नहीं करना

अथवारुणीयोगः—चैत्ररुग्णा १३ शततारकानक्षत्रयुता वारुणीसंज्ञका शनिवारयुक्ता महावारुणी शुभयोगयुक्ता महामहावारुणीसंज्ञका । अथ व्यतीपातयोगः—पंचाननस्थौ गुरु भूमिपुत्रौ भेषे रविः स्याद्यदि शुक्लपक्षे । यासाभिधानाकरभेण युक्ता तिथिर्व्यतीपात इतीह योगः । इतिव्यतीपातयोगः ॥

अथगजच्छायायोगः—आश्विनरुग्णपक्षे हस्तनक्षत्रे सूर्ये मघानक्षत्रयुता त्रयोदशी गजच्छायासंज्ञका ॥

अथ अर्द्धोदययोगः—अमार्कपातश्रवणे युताचेत्पौषमाषयोः । अर्द्धोदयः सविज्ञेयः कोटिसूर्यग्रहैः समः । इतिअर्द्धोदययोगः ॥

अथ ग्रंथवनानेका प्रयोजनः—ज्योतिष शास्त्रके ग्रंथ फलादेश कहनेका तो देवभाषासे मनुष्यभाषामें निर्माण कियाहुवा बहुत जगह देखा परंच सिद्धांत-भागका उदाहरण जो कठिन है सो आजतक हिंदी भाषामें नहीं देखा अतएव सर्व सज्जनोंके सुभीतेके लिये परोपकार समझके अनेक ग्रंथोंका सारसंग्रह करके इस ग्रंथको मनुष्यभाषा (आर्यहिंदुस्थानी) में निर्माण कियाहै और पंचांग पद्धति जो कि पंचांग बनानेकी विद्या विविध शास्त्रोंसे ज्योतिर्विदोंको प्रतिवर्षके पंचांग बनानेमें बहुत प्रयास होताथा जिससे उक्त पद्धतिको भी व्रतादिनिर्णय सहित सांगोपांगसे परिपुरित करके जो पंचांगके प्रयोजन सिद्ध होनेयोग्य बातथी वह भेरी स्वल्प बुद्धचनुसार शंका समाधान सहित लिखी है और भूगोल खगोलका नकसाकी जिसके केवलमात्र देखनेसेही पृथ्वीपर विविधराज्यकी रचना और जलस्थलका नील और श्वेतरंगसे पृथक् भेद समझना और खगोलमें आकाशचारी ग्रहोंकी यथास्थिति राशिचारादि सब अवयवोंसे सुशोभित कियागयाहै अब इस ग्रंथके निर्माण करनेका भेरक सर्वांतर्यामी मुझको और ग्रंथपठनकरनेवालोंको चतुर्वर्गकी सिद्धि सम्यक् प्राप्ति करंगे.

आमलकी, चैत्रकृष्णा १ १ पापमोचनी अधिकमासे उभयपक्षयोः १ १ कमला ।
इति एकादशीनिर्णयः ।

अथ ग्रहणपर्वकालनिर्णयः—ग्रहणस्पर्शकाल चंद्रमाका हो जिस प्रहरसे पहले तीनप्रहर और सूर्यग्रहणसे चार प्रहर पहले भोजन करके पीछे ग्रहण शुद्ध नहीं हो जितने भोजन नहीं करना चंद्रमा ग्रस्तास्त होवे तो वह दिनमें भोजन नहीं करना रात्रिके चंद्रोदय शुद्धबिंब देखके सचैल स्नान करके भोजन करना यदि सूर्यग्रहणभी ग्रस्तास्त होवे तो रात्रिको भोजन नहीं करना दूसरे दिन सूर्योदयात् शुद्धबिंब देखके मुक्तस्नान करके भोजन करना चाहिये.

अथ ग्रहणे धर्मशास्त्रं—ग्रहणप्रहरात्पुराविधोःप्रहराणां त्रितयेन भुज्यते ॥ सवितुश्च तथा चतुष्टये शिशुवृद्धातुरवर्जितैर्जनैः ॥ १ ॥ ग्रहयामादितः पूर्वं प्रहरे नहि भोजनम् ॥ शिशुवृद्धातुरैः कार्यमिति शास्त्रविदोविदुः ॥ २ ॥ ग्रस्तास्तयोः पुष्पवतोस्तु पश्चाद्भुज्यात् बिंबं विमलं विलोक्य ॥ अतीत्यकालं ग्रहणस्य संध्याहोमादिके स्यादिह नैव दोषः ॥ ३ ॥ आरनालमथिते दधिदुग्धे तैलसर्पिरिह पाचितमन्नम् ॥ सतिलैः कुशयुतैः समवेतं नो भवेद्ग्रहणजवेधविदग्धम् ॥ ४ ॥ गांगं च पणिकस्थंचजलं तदन्नं दुप्यति ॥ अत्रामात्रेन हेम्ना वा श्राद्धदानादि निश्यपि ॥ ५ ॥ प्रत्याब्दिकं चापि विधेयमन्नैरामेन हेम्नापितथोपरामे ॥ त्रिभिर्विभागैर्जपहोमदानं दिशेदिहाग्ने दिनसप्तकेपि ॥ ६ ॥ विशेषतो भास्करपर्वण्यिमाशौचमध्येपि च सर्वकर्म ॥ अशुद्धबिंबे तु रजस्वलापि स्नायात्पृथक्पात्रगताभिरद्भिः ॥ ६ ॥ मुक्तिस्नानं सचैलं तु मंत्रकृत्यविवर्जितम् ॥ अवश्यमेव कर्तव्यमिति ग्रहणनिर्णयः ॥ ८ ॥ इतिग्रहणपर्वकालनिर्णयः ॥

अथकपिलाष्टमीः—भाद्रपदे सिते पक्षे पष्ठी शौमेन संयुता ॥ व्यतीपाते च रोहिण्यं सा पष्ठी कपिला स्मृता ॥ १ ॥

अथवारुणीयोगः—चैत्रकृष्णा १३ शततारकानक्षत्रयुता वारुणीसंज्ञका शनिवारयुक्ता महावारुणी शुभयोगयुक्ता महामहावारुणीसंज्ञका । अथ व्यतीपातयोगः—पंचाननस्थौ गुरु भूमिपुत्रौ मेषे रविः स्याद्यदि शुक्लपक्षे । यासाभिधानाकरभेण युक्ता तिथिर्व्यतीपात इतीह योगः । इतिव्यतीपातयोगः ॥

अथगजच्छायायोगः—आश्विनकृष्णपक्षे हस्तनक्षत्रे सूर्ये मघानक्षत्रयुता त्रयोदशी गजच्छायासंज्ञका ॥

अथ अर्द्धोदययोगः—अमार्कपातश्रवणे युताचेत्पौषमाघयोः । अर्द्धोदयः सविज्ञेयः कोटिसूर्यग्रहैः समः । इतिअर्द्धोदययोगः ॥

अथ ग्रंथवनानेका प्रयोजनः—ज्योतिष शास्त्रके ग्रंथ फलादेश कहनेका तो देवभाषासे मनुष्यभाषामें निर्माण कियाहुवा बहुत जगह देखा परंच सिद्धांत-भागका उदाहरण जो कठिन है सो आजतक हिंदी भाषामें नहीं देखा अतएव सर्व सज्जनोंके सुभीतेके लिये परोपकार समझके अनेक ग्रंथोंका सारसंग्रह करके इस ग्रंथको मनुष्यभाषा (आर्यहिंदुस्थानी) में निर्माण कियाहै और पंचांग पद्धति जो कि पंचांग बनानेकी विद्या विविध शास्त्रोंसे ज्योतिर्विदोंको प्रतिवर्षके पंचांग बनानेमें बहुत प्रयास होताथा जिससे उक्त पद्धतिको भी व्रतादिनिर्णय सहित सांगोपांगसे परिपूरित करके जो पंचांगके प्रयोजन सिद्ध होनेयोग्य बातथी वह मेरी स्वल्प बुद्धचनुसार शंका समाधान सहित लिखी है और भूगोल खगोलका नकसाकी जिसके केवलमात्र देखनेसेही पृथ्वीपर विविधराज्यकी रचना और जलस्थलका नील और श्वेतरंगसे पृथक् भेद समझना और खगोलमें आकाशचारी ग्रहोंकी यथास्थिति राशिचारादि सब अवयवोंसे सुशोभित कियागयाहै अब इस ग्रंथके निर्माण करनेका भेरक सर्वोत्तरीामी मुझको और ग्रंथपठनकरनेवालोंको चतुर्वर्गकी सिद्धि सम्पक् प्राप्ति करेंगे.

(२९२) दैवज्ञविनोद-पंचविंशतितमविनोदः २५.

श्लोक ।

श्रीमत्सीकरयत्तनादिनगराधिष्ठातृदेवः सदा ब्रह्मण्यः क्षितिपालक
समुदितैर्विद्वद्गणैः सेवितः ॥ ग्रामैः पंचशतैः शतार्द्धसहितैर्वाणैः पुरैः
संयुतः श्रीमन्माधवसिंहवर्मनृपतेर्भूयात्सदा मंगलम् ॥ १ ॥ तद्वाज्येश्वरवि-
द्ययाविलसितो मान्यो महाभूभुजां श्रीगौडान्वयवल्लभोतिकुशलः संगीत-
शास्त्रेन्वितः ॥ तत्सूनुर्मनिरामनामगणकः श्रीरामदुर्गे वरे प्राप्नो ज्येष्ठसहो-
दरात्सुविमलं ज्ञानं नृसिंहाभिधात् ॥ २ ॥ भूयो वेदनिधेः प्रगल्भगण-
कात्प्राप्तं विशालापुरे यस्मात्सारविचारचारुगणितं सज्ज्योतिषं निर्मलम् ॥
पाखंडद्रुमखंडखंडनकृतस्तस्यास्तु पूर्णा कृपा दीनानाथगुरोरखंडकरु-
णापूरान्मतिर्मे सती ॥ ३ ॥ शक्रे पद्मशशिनागचंद्रसहिते सूर्येहिदी-
पोत्सवे चोर्जे मास्यसिते दले सुविमलं ग्रंथं ह्यकार्पीन्मतुः ॥ दिव्यं
भूयहवासनास्फुटतरैर्भेदैरेनेकैर्युतं यं दृष्ट्वोपहसन्ति मत्सरधियस्तेभ्यो
महद्भ्रयो नमः ॥ ४ ॥

इति श्रीज्योतिर्विद्मनीरामविरचिते दैवज्ञविनोदे सुभाषाविभूषिते व्रता-
दिनिर्णयवर्णनं नाम पंचविंशतितमविनोदः ॥ २५ ॥



समाप्तोज्यं दैवज्ञविनोदः ।

पुस्तक मिलनेका ठिकाना-खेमराज श्रीकृष्णदास,

“श्रीवेङ्कटेश्वर” स्टीम् प्रेस, सेतवाडी-बंबई.

